श्रीश्री आनंदमूर्ति

उनके जीवन, मिशन और उपदेशों के सौ पहलू
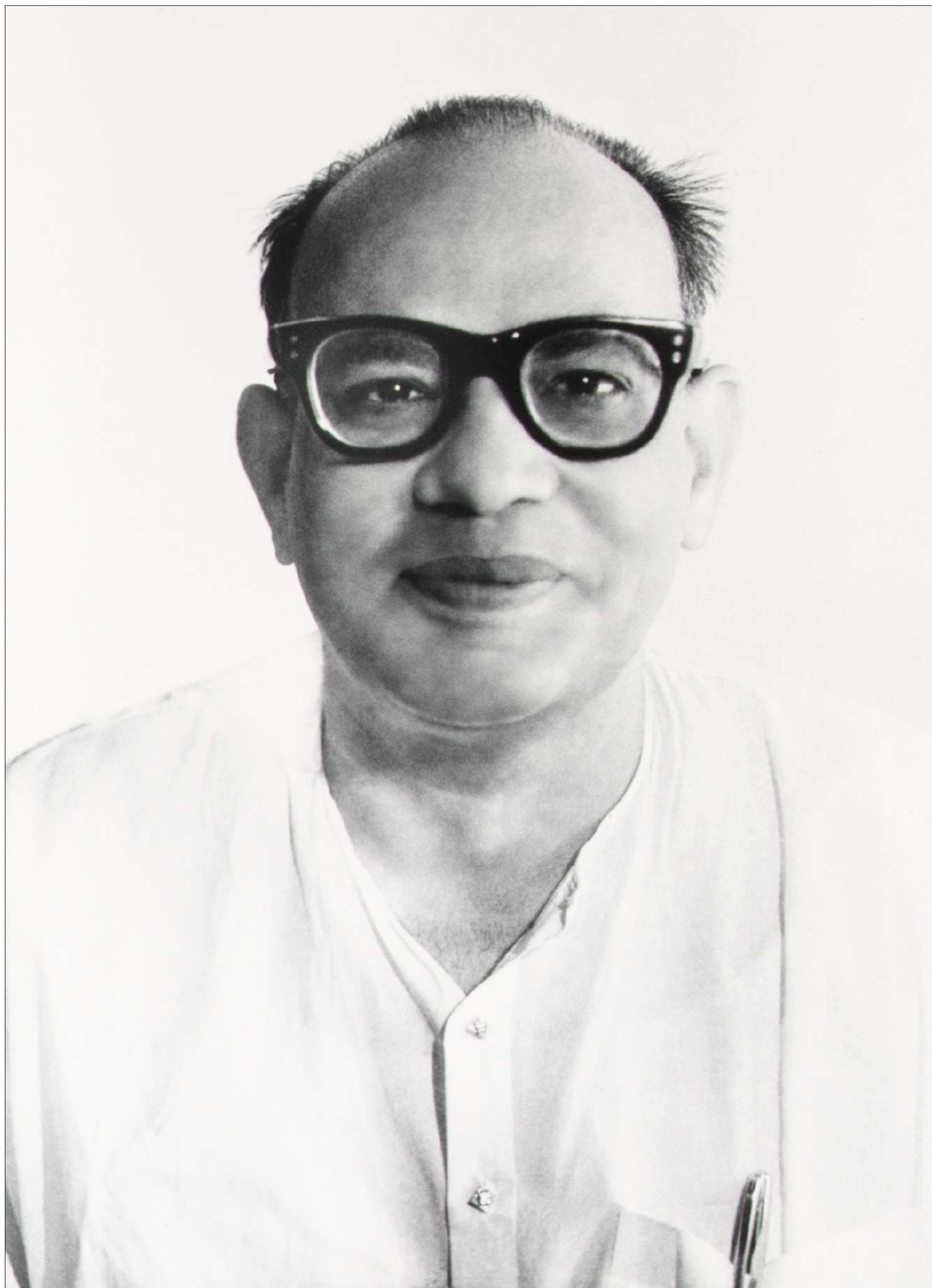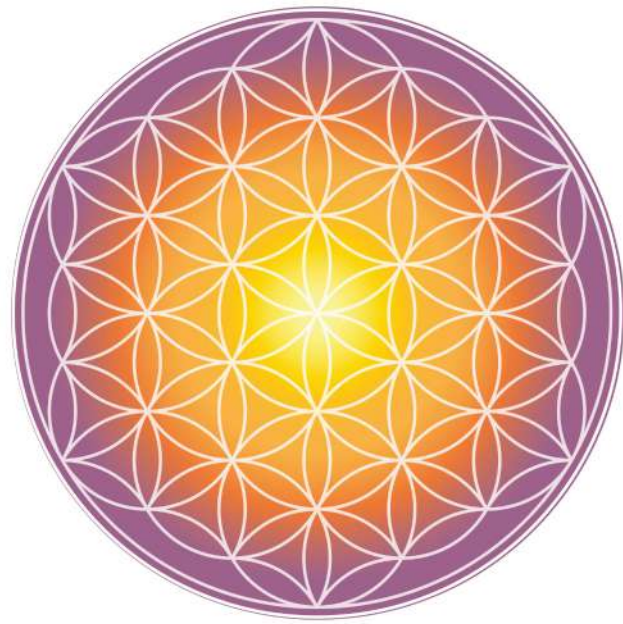
''श्री श्री आनंदमूर्ति, उनके जीवन, मिशन और शिक्षाओं के सौ पहलुओं'' की रचना श्री श्री आनंद मूर्ति (श्री पी.आर. सरकार) के जन्म की सौंवीं वर्षगाँठ के अवसर पर की गई।

यह प्रिंट संस्करण है और यह प्रदर्शनी की जगह में प्रकाशित करने के लिए उपयुक्त है। हमारी राय है कि प्रदर्शनी की जगह नाप कर फिर जगह के लिये उपयुक्त माड्यूल प्रकाशित करें। ध्यान दें कि यह ले आऊट ए–3 पोरट्रेट के अनुसार है। हमारा परामर्श है कि आंतरिक डिसप्ले के लिए ग्लोसी कार्ड बोर्ड और बाह्य प्रदर्शन के लिए फ्लेक्स का फोमकोर का प्रयोग करें।

ध्यान दें कि यह प्रिंट संस्करण मौलिक सामग्री का संस्करण है। स्‍ीन और पुस्तक संस्करण दोनों में इमेज, कहानियों आदि की विस्तृत सामग्री है। स्क्रीन संस्करण को डाउनलोड करने के लिए www.prsinstitute.org/outreach/exhibitions पर जायें। पुस्तक खरीदने के लिये www.prsinstitute.org/outreach/publicaions पर जाएँ।

प्रिंट, स्क्रीन और पुस्तक संस्करणों के साथ एक फिल्म (www.prsinstitute.org/outreach/films)

और पूजा टेबल फोटो (www.prsinstitute.org/outreach/publicaions) भी मिलती है।

धन्यवाद ज्ञापन
बाबा अर्काइव्स से सहायता प्राप्त पी. आर. सरकार इंस्टीट्यूट (एवं बाबा म्यूजियम), पी.आर. सरकार अर्काइव्स और आनंद मार्ग डिजिटल अर्काइव, श्री आनंद मूर्ति (श्री प्रभात रंजन सरकार) के सौवें जन्म दिवस के अवसर पर।

आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत द्वारा संकलित,
आचार्य गुणमुक्ता नंद अवधूत द्वारा निम्न के सहयोग से संकलित –
आचार्य लोकेशानंद अवधूत
आचार्य महेश्वरानंद अवधूत
ज्योत्सना काजोले
कालीशंकर मुखर्जी
शिव प्रिया (एलेन लंडाऊ)
श्रवण कुमार
इन्हं भी धन्यवाद्
आचार्य अच्युतानंद अवधूत
आचार्य प्रणवात्मकानंद अवधूत
आचार्य शंभूशिवानंद अवधूत

पुस्तक विन्यास– प्रतीक कुमार
लेआउट पुस्तक विन्यास– प्रतीक कुमार
हिन्दी अनुवाद – नहीम खान एवं मधु माहेश्वरी
हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराने का माध्यम
अवधूत सुस्मितानन्दा

विषय चयन –
आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत, आचार्य शंभूशिवानंद अवधूत, अवधूतिका का शिवप्रिया (एलेन लंडाऊ)

अर्काइवल सामग्री हेतु सहयोग –
बाबा अर्काइव, कोलकाता (आचार्य प्रणवात्मकानंद अवधूत को धन्यवाद), पी.आरसरकार
अर्काइब्स, वरमोन्ट (गिरधर टाम बेअर फूट को धन्यवाद)
आनन्द मार्ग डिजिटल अर्काइव (आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत और आचार्य लोकेशानन्द अवधूत को धन्यवाद)
अतिरिक्त अर्काइवल सामग्री हेतु इन्हें धन्यवाद :
आचार्य मानवेन्द्रानंद अवधूत
आचार्य नारद मुनि, आचार्य विश्वोदगतानंद अवधूत
मुक्ति हव बॉमेन
शाली शान्तात्मा
सुखदेव (सिल्वेनो रोसेटो)
विश्वशांति (ओले ब्रेक्के)
प्रसंग सामग्री :
'दि वर्क्स आफ पी.आर. सरकार का इलेक्ट्रानिक संस्करण
अतिरिक्त प्रसंग सामग्री :
आचार्य नगीना द्वारा आनंद कथा
'आनंद मूर्तिः दि जमालपुर इयर्स देवाशीष द्वारा
एज आई न्यू हिम, आचार्य विजयानंद अवधूत द्वारा
'आशुतोष बाबा', आचार्य रामानंद द्वारा
'ए गारलेंडआफ लाइट्स : बाबाज लव फार ताइवान, अवधूतिका आनंद ललिता आचार्या द्वारा
'बाबा इन फीस्क', कुशुमिता द्वारा
'बाबा इन महार्लिका,' दीपानविता द्वारा
'बाबाज लव फार साउथ अमेरिका (विविध)
'भगवान आनंद मूर्ति', आचार्य नारद मुनि द्वारा
'डिवाइन एक्सपीरियंस' आचार्य परमेश्वरानंद अवधूत द्वारा
'डिवाइन फुट प्रिंट्स' : बाबा इन काहिरा सेक्टर (विविध)
'एक्सपीरियंस ऑफ माई बिलव्ड मास्टर' आचार्य शीलभद्रानंद अवधूत द्वारा
'फ्राम बुकलिन टू बनारस एण्ड बैक' आचार्य वेदप्रज्ञानंद अवधूत द्वारा
'ग्लिंपसेस आफ ए मिस्ट्री' आचार्य भास्करानंद अवधूत द्वारा
'आई एम योर्स' (विविध)
'आई मीट माई बिलब्ड़' आचार्य धर्मदेवानंद अवधूत द्वारा
'लिविंग विद बाबा' आचार्य तपेश्वरानंद अवधूत द्वारा
'मीटिंग विद माई मास्टर : ए वूमैन्स एक्सपीरियन्स' नैन्सी नीति गैनोन द्वारा
'माई बाबाज़ स्टोरीज फ्राम बांकीपुर जेल' पराशक्ति द्विवेदी द्वारा
'माई डेज विद बाबा' आचार्य सर्वेश्वरानन्द अवधूत द्वारा
'नेव्हर शैल वी फारगेट यू' आचार्य चन्द्रनाथ कुंवर द्वारा
'रेमिनेन्सेस ऑफ बाबा' आचार्य केशवानन्द अवधूत द्वारा
'श्री श्री आनंद मूर्ति' : एडवेंट आफ ए मिस्ट्री' आचार्य प्रणवात्मकानंद अवधूत द्वारा
'स्ट्रेंज एक्सपीरियेंसेज' श्री प्रभात रंजन सरकार द्वारा
'दि लाइफ एण्ड टीचिंग्स आफ श्री श्री आनंद मूर्ति,' आचार्य विजयानंद अवधूत
द्वारा
'दि तांत्रिक गुरू : इनचेंटिंग स्टोरीज आफ हिज लाईफ' आचार्य महावीरानंद
अवधूत द्वारा
'दि अनरिजालब्ड मिस्ट्री' आचार्य अमितानंद अवधूत द्वारा
'दि वेंडरिंग एसेटिक लाइफ आफ आचार्य सत्यानंद अवधूत
'दिस लाईफ विद माई एडोरेबल विलब्ड' अवधूतिका आनंद हरीमाया आचार्या
'टूवर्ड्स ए ब्राइटर फ्यूचर : फ्रेगरेंट पेटल्स फ्राम दि लाइफ आफ बिलव्ड बाबा'
आचार्य शंभूशिवानंद अवधूत द्वारा
'ट्रैवल्स विद दि मिस्टिक मास्टर' आचार्य धर्मवेदानंद अवधूत द्वारा
'वाकिंग विद माई मास्टर श्री श्री आनंद मूर्ति'' फ्रांसिस्को पेना डिवेरा द्वारा
व्हेन दि टाइम कम्स : कनवरजेसन्स विद आचार्य चन्द्र नाथ कुंवर' देवाशीष द्वारा
'हू कैन राइड दि टाइगर ?' स्टोरीज आफ बाबाज लाइफ अवधूतिका आनंद रमा
आचार्या द्वारा
'विद माई मास्टर' आचार्य कृपानंद अवधूत द्वारा
'यू आर नेव्हर एलोन : बाबा इज हियर' आचार्य वंदनानंद अवधूत द्वारा

हस्तलिपि शोध :
कालीशंकर मुखर्जी
उत्पल बेनर्जी
बंगाली हैंड राइटिंग का अनुवाद
आचार्य प्रियशिवानंद अवधूत
कालीशंकर मुखर्जी
प्रभात संगीत अनुवाद इनसे,
''प्रभात संगीत'' श्री प्रभात रंजन सरकार द्वारा
'प्रभात संगीत : सांग्स ऑफ दि न्यू डान' श्री प्रभातरंजन सरकार द्वारा

अतिरिक्त प्रभात संगीत अनुवाद :
काली शंकर मुखर्जी
श्रवण कुमार
कला :
अवधूतिका आनंद चारुशीला आचार्या
अवधूतिका आनंद रमा आचार्या
कंचन कर्माकर
माणिक बंदोपाध्याय
अतिरिक्त फोटोग्राफी :
आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत
आचार्य सुबुद्धानंद अवधूत
महेश कुमार
इमेज एडिटिंग :
आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत
आचार्य नारद मुनि
जगतबन्धु (जान ग्रास)
डिजाइन और ले आउट,
आचार्य गुणमुक्तानंद अवधूत
इन्हें भी धन्यवाद :
अवधूतिका आनंद अद्वैत आचार्या
जगदीश (जार्ज अज्जोपार्डी)
कवर इमेज
अनंत (एरोन स्टैंगी)
इन्हें धन्यवादए
आनंद मार्ग गुरुकुल
आनंद मार्ग प्रचारक संघ
आनंद मार्ग पब्लिकेशन्स
पब्लिकेशन की अधिक जानकारी हेतु w.w.w.prsintitute.org पर जाएँ।

प्रस्तावना

श्री श्री आनंद मूर्ति, जिन्हें प्रभात रंजन सरकार के नाम से भी जाना जाता है और उनके शिष्य उन्हें प्यार से बाबा कहकर बुलाते हैं। उनका जन्म बैशाखी पूर्णिमा के दिन सूर्योदय के समय जमालपुर, बिहार, भारत में हुआ था। पहले जन्म की तिथि 21 मई 1921 मानी जाती थी, किन्तु अब ज्ञात स्त्रोतों के अनुसार यह तिथि 21 मई 1922 होने के अधिक संभावना है। चाहे जिसे भी माने, उनका जन्म प्रतिवर्ष आनंद पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है।

सद्गुरू के रूप में बाबा अपने लाखों भक्त शिष्यों के लिए अतुलनीय गुरू एवं पिता थे और हैं। वह अपने शिष्यों से प्यार करते थे और उनका पथ प्रदर्शन करते थे, जिसका एक ही उद्देश्य था – हर व्यष्टि का पूर्ण हित और हर व्यष्टि और समूचे समाज की आध्यात्मिक प्रगति। और अपने गुरू के रूप के अंदर वे कई अन्य भूमिकायें निभाते रहे इनमें से कुछ हैं, : दार्शनिक, लेखक, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, भाषाविद्, उपचारक, मानवतावादी, समाज सुधारक और क्रांतिकारी। वह भूमंडलीय संगठन आनंद मार्ग के संस्थापक और गुरू हैं, उन्होंने एक सामाजिक, आर्थिक सुधार की व्यवस्था दी, जिसका नाम प्रउत है, नव्यमानवतावाद नाम से सामाजिक दर्शन दिया और एक नवीन विज्ञान दिया जिसे माइक्रोवाइटा कहा जाता है। और उन्होंने 5000 से अधिक गीतों की रचना की, जिन्हें प्रभात संगीत कहा जाता है। अपनी शिक्षाओं और स्वयं के उदाहरण से उन्होंने लाखों लोगों को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा दी। यही नही उन्होंने लोगों को इस पृथ्वी और समूचे ब्रम्हाण्ड के मनुष्यों, पशु पक्षी और वनस्पति के कल्याण के लिए गुरुतर जिम्मेदारी उठाने हेतु प्रेरित किया।

प्रस्तुत रचना का उद्देश्य बाबा के जीवन, मिशन और शिक्षाओं का विस्तृत ब्यौरा देना नहीं है। बल्कि इसका उद्देश्य है महत्वपूर्ण घटनाओं का विस्तृत आख्यान और इतिहास के इस पल में तारक ब्रम्ह की हमारे ग्रह पर बिताये गये अद्वितीय दिनों की कई मोहक झाकियाँ प्रस्तुत करना।

''तंत्र में सम्पूर्ण संरचना को संभूति कहा जाता है। जब तारक ब्रम्ह स्वेच्छा से पंचभूतों की सहायता लेते हैं तो उनकी भौतिक देह सगुण ब्रम्ह की सीमा में आती है अन्यथा वे निर्गुण ब्रम्ह हैं। जब तारक ब्रम्ह, पंचभूतों की सहायता लेते हैं तो तंत्र में इसे उनकी महासंभूति कहते हैं .... तारक ब्रम्ह दर्शन की अभिव्यक्ति
नहीं है – यह भक्ति भाव से निर्मित है।''

महत्वपूर्ण विवरण जिसमें तिथि, स्थान और अन्य सूचनाएँ शामिल हैं, उनकी विस्तृत छानबीन की गई है और प्रकाशन की तिथि तक जितना संभव है सत्य हैं। कहानियों का चयन बाबा की आश्चर्यजनक और प्रेरणा देने वाली कहानियों से किया गया है जिससे उनके जीवन और समय का सुरूचिपूर्ण पक्ष दर्शित हो। और जो छबियाँ चुनी गई हैं वे न केवल ऐतिहासिक कथा पक्ष को दर्शाती हैं बल्कि दृश्य गुणवत्तायुक्त एवं दुर्लभ हैं। (प्रारंभिक दिनों में बाबा ने यह कहकर अपनी छबि के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया था, कि वे वैयष्टिक पंथ का निर्माण नहीं चाहते – कि उनके दर्शन और मिशन पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। हालांकि पृथ्वी पर अपने प्रवास के अंतिम दिनों में, संगठन के विस्तार और फोटोग्राफिक और वीडियो तकनीक के विस्तार के साथ उन्होंने अपनी छबि के निजी और सार्वजनिक प्रदर्शन के नियम में कुछ अधिक ढ़ील दे दी थी, किन्तु यह सार्वजनिक प्रदर्शन विशेष छबियों के लिए था और इसके लिये संगठन की अनुमति आवश्यक थी। यहाँ उपयोग की गई सामग्री के लिए आनंद मार्ग प्रचारक संघ के पब्लिक रिलेसन विभाग के अर्काइव सेक्सन से अनुमति ले ली गई है।)

संपादक मंडल

1. रहस्यमय शिशु

१६७१, राँची में शीत ऋतु की देर रात संध्या भ्रमण से लौटने के उपरांत दादा अमितानन्द जी को बाबा अपने बचपन की कुछ यादें बता रहे थे, बाबा की उस रात की कही बात, जो बाबा के ही शब्दों में अमितानन्द दादा ने अपनी स्मृति से बतायीः

""मैं अपनी माँ के गर्भ में हूँ। गर्भ से ही मैं अपनी माँ को देख पा रहा हूँ, और मैं उन्हें अच्छे से पहचानता हूँ। मैं अपने पिताजी, दीदी एवं और भी रिश्तेदारों को देख रहा हूँ और मैं इन सबों को कितने अच्छे से पहचानता हूँ! मुझे इन सबों के नाम भी पता है।"

"मैं जन्म लेता हूँ। सामान्य रूप से जन्मोपरांत बच्चे रोते हैं, किन्तु मै नहीं, मैं मुस्कुरा रहा हूँ। मैं जन्म लेकर प्रसन्न हूँ। मैं अपने आस पास के सभी लोगों को उनका नाम लेकर पुकारना चाहता हूँ, क्योंकि मैं सबों को अच्छी तरह से पहचानता हूँ। परंतु अफ़सोस की बात है मैं इस नवजात शिशु रूपी शरीर में विवश हूँ, क्योंकि इस शरीर के स्वर तंत्र पूर्णरूपेण विकसित नहीं हुए।"

"वे मुझे खिलाना चाहते हैं। मुझे खिलाने के लिए दूध के प्याले में उन्होंने एक रुई का टुकड़ा रखा है, उस टुकड़े को दूध में डूबो डुबो कर मेरे मुँह में बूंद– बूंद कर टपकाया जायेगा। यह क्या नादानी है? क्या मैं कोई बच्चा हूँ, जो इस तरह से मुझे खिलाया जाएगा ? मैं कप से पीऊंगा, रुई से टपकी बूंदों से नहीं नहीं। इसलिए विरोध स्वरूप मैंने प्याले को दोनों हाथों से पकड़ लिया। यह देख सभी अचंभित हो गए और मुझे महसूस हुआ मैंने इन लोगों को हैरानी में डाल दिया है, इसलिये वापस मैं एक नवजात शिशु की तरह व्यवहार करने लग गया।

" मैं मां के बगल में सोया हूँ। आधी रात के वक़्त नींद खुल जाती है, और मैं एक असामान्य दृश्य देखता हूं, कि मेरा पूरा अस्तित्व, मेरी मां, मेरा बिस्तर, कमरा, हर जगह, एक अलौकिक आभा से भरा हुआ है, क्या ही मधुर प्रभा है, इसे देख मुझे बहुत ही आनंद महसूस हो रहा है द्य उस प्रकाश में, मैं विलीन होता जा रहा हूं। मेरे मन में सवाल उठता है, अगर मेरी मां ने भी इस पूर्ण रूप से खुद में समाहित करने वाले प्रकाश को देखा होता तो क्या होता?"

"कई बार रात्रि में, मैं नींद से उठता हूं तो देखता हूं कि हर प्रकार और आकार के जीव जंतु मेरे बाएं कान से बाहर निकल रहे हैं, एवं नृत्य करते चल रहे हैं, मैं यह सब कौतूहल से देख रहा हूं, फिर जैसे इस नाटक का पटाक्षेप करने हेतु एक आश्चर्यजनक घटना होती है, एक अजीब बात होती हैः ये जीव अब मेरे दाहिने कान के पास भीड़ लगाते हैं और उसमें प्रवेश करते हैं। यह बहुत ही डरावना लगता है और मैं चिल्ला कर मां से लिपट जाता हूं जो मेरी बातों को सुन उलझन में पड़ जाती है।"

यह वृतांत 'द अनरिजॉल्वड मिस्ट्री' नाम से पहली बार १६७५ के जनवरी में बोधिकल्प में प्रकाशित हुआ था।

बाबा जब ५ वर्ष की आयु के हुए तो उन्होंने प्रतिदिन प्रातः कालीन एवं संध्याकालीन साधना में बैठने का अभ्यास शुरू कर दिया, जो उन्होंने आजीवन निभाया। परिवार में कोई भी नहीं जानता कि बाबा ने यह अभ्यास कब शुरू किया, या कहां से सीखा, ना उन्होंने ही किसी को यह बात बताई, लेकिन तब तक परिवार वाले स्वतंत्र मानसिकता वाले बच्चे को इन मामलों में अकेला छोड़ देना है, यह बात समझ गए थे।

इसके साथ ही उन लोगों को अचंभित करता था, बाबा का शाकाहारी भोजन करना जबकि बाबा का परिवार पूर्णरूपेण शाकाहारी नहीं था।

आनंदमूर्ति : दी जमालपुर इयर्स

2. बाबा का नाम

जब नवजात शिशु के रूप में रुई के टुकड़े के द्वारा दूध पिलाया जा रहा था, तब उन्होंने सीधे दूध के प्याले को ही लेना चाहा था, तो बाबा की दादी श्रीमती वीणापाणि ने हैरानी से भरकर कहा– " यह कोई शिशु नहीं है बल्कि बूढ़ा है", तभी से वे बाबा को बूढ़ा कहकर पुकारती थी और बाकी परिवार वाले एवं उनके दोस्तों के लिए बूढ़ा ही सहज रूप में "बब्बू " पुकारु नाम बन गया।
५ वर्ष के उम्र में बाबा का नाम अरुण से बदलकर प्रभात रंजन कर दिया गया, क्योंकि उनके चचेरे भाई का नाम बंगाल के क्रांतिकारी श्री देशबंधु चितरंजन दास के नाम पर रखा गया था क्योंकि देशबंधु के मृत्यु के दिन ही शिशु का जन्म हुआ था और परिवार की यह प्रथा थी कि सभी पुरुषों के मध्य नाम एक ही होंगे।
छोटी उम्र से ही बाबा को, जमालपुर के पूर्व में स्थित पहाड़ों की तरफ स्थित काली पहाड़ी, एवं वहां स्थित काली मंदिर और मृत्यु घाटी, जो उन दिनों में दोपहर के वक्त में भी काफ़ी खतरनाक जगह थी, तो रात के वक्त का तो कहना ही क्या, उन्हें वहां संध्या भ्रमण के लिए जाना पसंद था।

सम्पादक

काफी वर्षों के बाद बाबा ने कहा "बचपन से ही मैं साहसी था, डर के अस्तित्व से मैं परिचित ही नहीं था। मैं बाघ की कब्र पर देर– रात तक जाया करता था। एक रात जब मैं ६ वर्ष का था, मैं वहां मध्यरात्रि के बाद भी बैठा हुआ था और मैंने देखा एक प्रकाश सत्ता मेरी तरफ आ रही है, मुझे उससे किसी भी प्रकार का डर नहीं लगा। वह सत्ता मेरी तरफ आई एवं रुक गई। मैंने उस सत्ता से पूछा–" कौन हो तुम?" सत्ता ने जवाब दिया क्या तुम मुझे नहीं जानते ? मैं तुम हूँ। यह कहने के बाद प्रकाश की सत्ता आकर मुझ में समाहित हो जाती है। उस क्षण मुझे अनुभव हुआ कि समस्त विश्व–ब्रह्मांड मुझ में है, और मैं समस्त विश्व–ब्रह्मांड के कण–कण में हूँ ।

बाघ की सवारी कौन कर सकता है (स्त्रोत–असत्यापित)
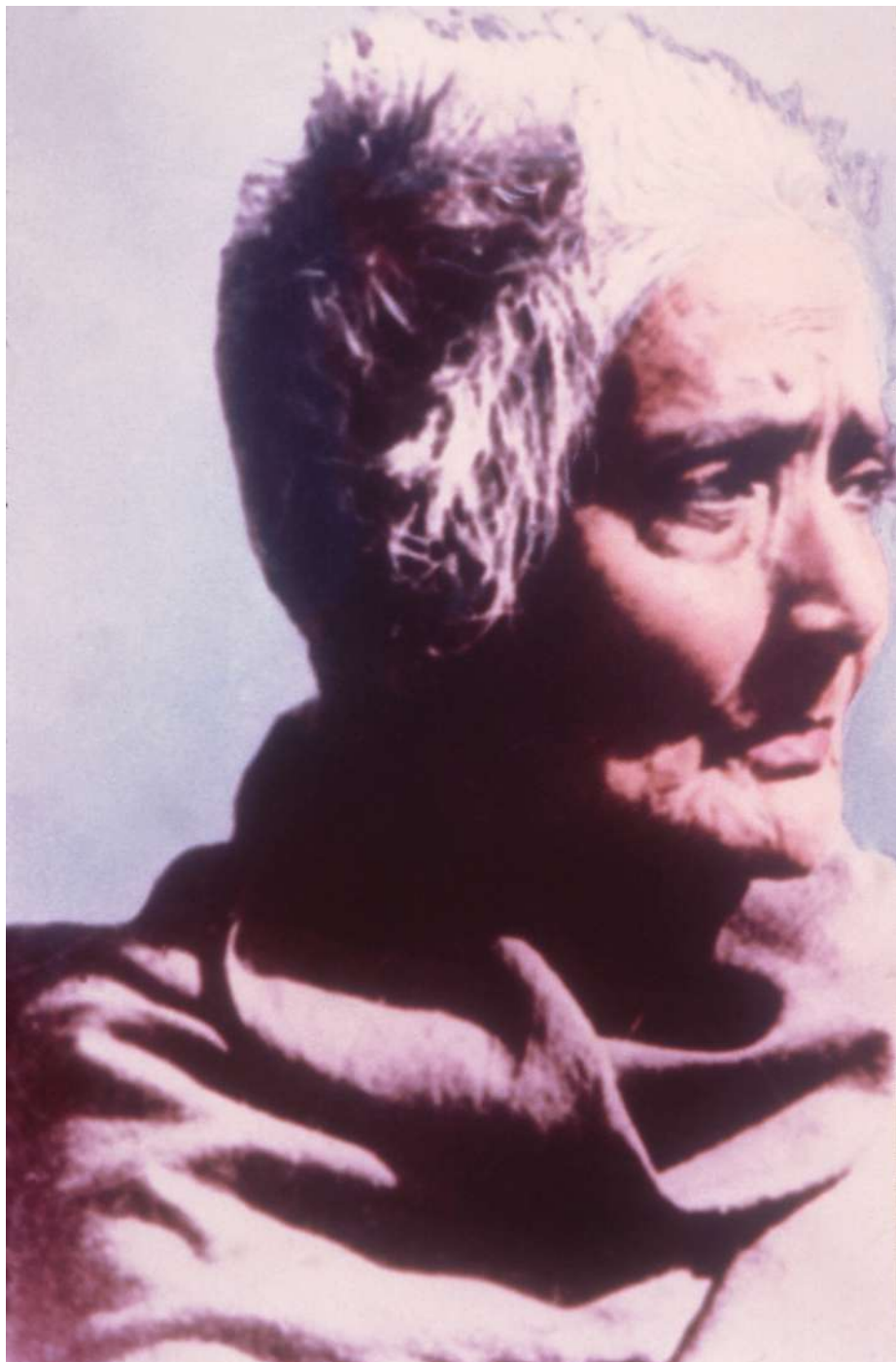
बाबा की दादी, स्वर्गीय वीणापाणि सरकार
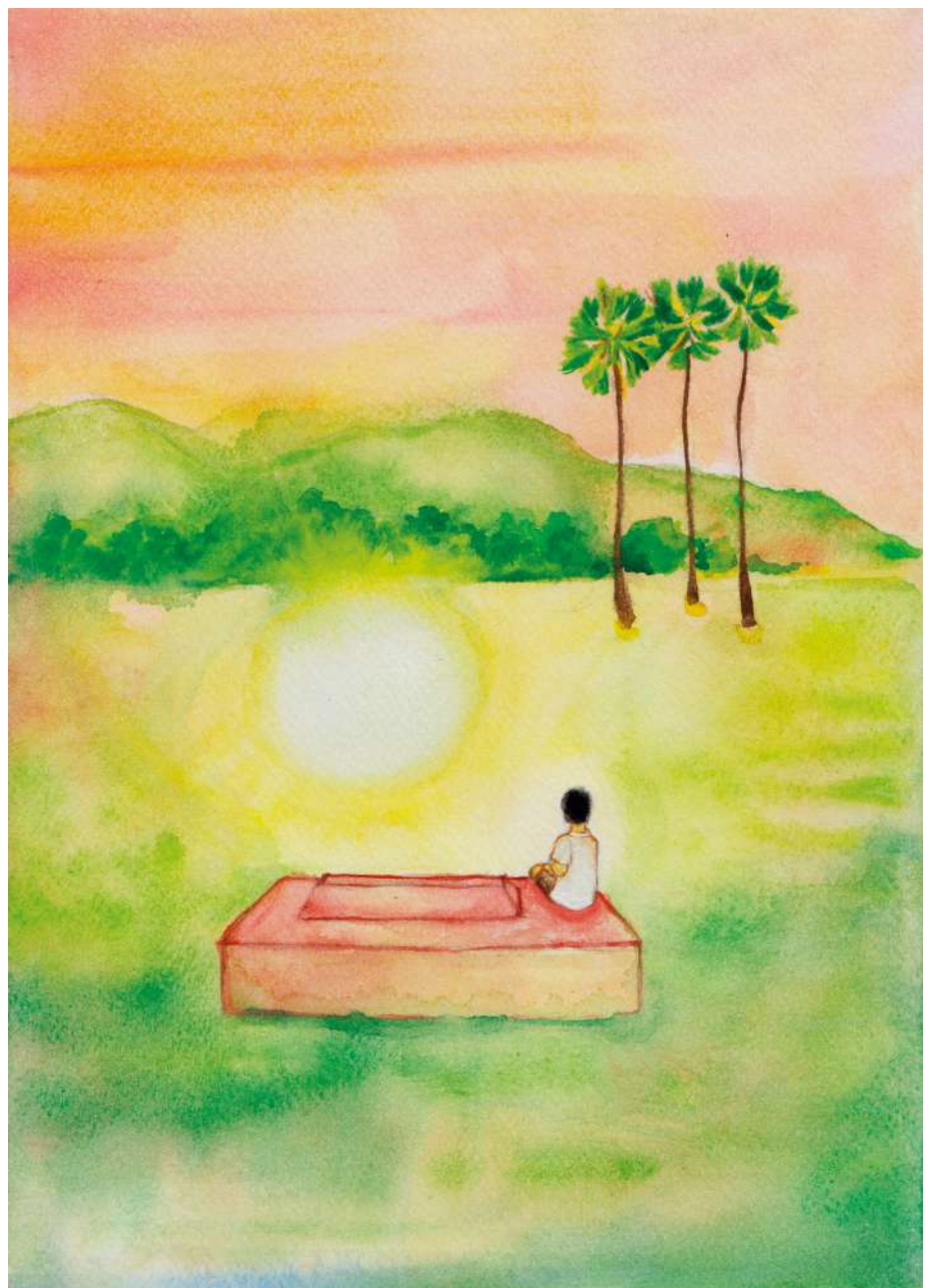
"मैं जमालपुर की पहाड़ियों में साधना के लिए एक स्थान पर बैठा हूं, तब मेरे कानों में कोई कहता है– 'मेरे साथ आओ मैं तुम्हें साधना करने के लिए एक बेहतर स्थान दिखाता हूँ, मेरे पीछे आओ ।' मुझे कोई दिखाई नहीं देता, किंतु मैं उस आवाज के पीछे जाता हूँ, जिसकी मौजूदगी मुझे स्पष्ट रूप से महसूस हो रही है ।आवाज मुझे दूसरे स्थान पर ले जाकर वहां साधना करने को कहती है। कुछ देर बाद वह मुझसे कहती है– 'क्या तुम पागल हो? माया में मत रहो। क्या तुम प्रभात रंजन सरकार हो? देखो तुम कौन हो?' और मेरे पूर्व जन्म की छवि, एक सिनेमा की तरह मेरी आंखों के सामने चलती हैं, और मुझे आभास होता है कि मैं कौन हूँ?"
"बोधि कल्प" पत्रिका (जनवरी १६७५) में पहली बार "अनसुलझे रहस्य" शीर्षक से प्रकाशित हुआ था।
एक रात,१६५६ की शुरुआत में मैं बाबा के साथ मैदान में टहल रहा था जहां बाबा अक्सर देर शाम को टहलने के लिए जाते थे। हम लोग सिर्फ दो व्यक्ति ही थे, और उस रात परम–पिता कल्याण सुंदरम् रूप में थे। बाबा आधे रास्ते में रुक गए और अपने बचपन की एक घटना बताने लगे। बाबा ने कहा " एक प्रकाश स्तंभ मेरे सामने अवतरित हुआ, और वह सारे वातावरण को अपने अलौकिक आभा से दैदीप्यमान कर रहा था। मैंने पूछा, " कौन हो तुम?" जवाब आया 'आनन्दमूर्ति' और मैंने देखा धीरे–धीरे वह प्रकाशमय सत्ता मुझमें समाहित हो गई उस दिन से मैं 'आनन्दमूर्ति' हो गया।

आचार्य हरीवल्लभ जी

प्रणय दादा अपनी दीक्षा उपरांत बाबा का आदर गुरु की तरह करने लगे थे, किन्तु उन्हें दोस्त या सहकर्मी जैसा ही पुकारते थे,' दादा' या 'प्रभात दा' कहकर। एक दिन मैदान में टहलते हुए बाबा ने उन्हें बताया कि गुरु एवं शिष्य के मध्य ऐसा संबोधन उचित नहीं है। ऑफिस में, पब्लिक में, दादा बुला सकते हो, परंतु उसके अलावा 'बाबा' कहकर ही संबोधित करना है। उस दिन से प्रणय दादा जब भी परम पिता के साथ अकेले होते थे, तो परम पिता को बाबा कहकर ही संबोधित करते थे। बाबा ने अपने सारे शिष्यों को, यही संबोधन करने को कहा। जल्द ही सारे साधक उन्हें बाबा कहकर पुकारने लगे, जबकि उनमें से कुछ जैसे चंद्रनाथ जी एवं नगीना जी उम्र में उनसे बड़े थे।

आनन्दमूर्ति: दी जमालपुर इयर्स

3. बाबा की बाघ पर सवारी

१६३२ के जनवरी माह में सचिंद्रनाथ मारिक जो की बाबा से आयु में २ वर्ष छोटे थे एवं बाबा के घर से कुछ ही दूरी पर रहते थे, उन्होंने एक रहस्यमयी घटना देखी। यह घटना उन्होंने एक साक्षातकार के दौरान बतायी।

बाबा उस समय १० वर्ष के थे, खेलने के लिए हम सब बच्चे शाम में पोलो–ग्राउंड जाया करते थे, और बुबु दा भी हमारे साथ जाते थे। किंतु जब हम लोग खेलते रहते थे, तो वे कहीं चले जाते थे और जब अंधेरा होने पर हम घर लौटने लगते थे, तब वह वापस हमारे साथ आ मिलते थे, ऐसा लगता था वह कहीं गए ही ना हो। शुरुआत में हमें कुछ भी असामान्य नहीं लगा, लेकिन जब यह घटना लगातार होने लगी तो हम सबके मन में सवाल उठने लगे। मेरे प्रश्न पूछने पर जब उन्होंने जवाब नहीं दिया, तो हमारी उत्सुकता और बढ़ गई। इसलिए एक दिन मैंने और दो अन्य दोस्तों ने उन पर नज़र रखने का फैसला किया।
खेल के मैदान में पहुंचने के बाद, जब हम सब खेलने में व्यस्त हो गए, तो हमने ध्यान दिया कि बुबु दा वहाँ पर नहीं है। आसपास नजरें घुमाने पर हमने देखा, कि बब्बू दा जल विभाग की दीवार को पार करते हुए मृत्यु घाटी (डेथ वैली) की तरफ जा रहे हैं। हमने भी खेलना छोड़ चुपचाप दूर से उनका पीछा किया। हमने हैरान होकर देखा कि बब्बू दा उस खतरनाक मौत की घाटी में जंगलों की तरफ जा रहे हैं। हमारी हिम्मत नहीं हुई कि हम उनके पीछे अंदर जाएं। जहाँ जंगली जानवर और भूतों के घूमने की कहानियां प्रचलित थी। हम वहाँ से कुछ दूर रुक के इंतजार करने लगे। हमें पता था कि बब्बू दा शाम से पहले लौट आएंगे। दिन की रोशनी धीरे–धीरे मंद पड़ने लगी, लेकिन उनका कहीं कोई निशान नहीं था तब बुबु दा की सुरक्षा के प्रति हम चिंतित होने लगे पर अचानक ही हमने अपने सामने जो दृश्य देखा वह किंकर्तव्यविमूढ़ कर देने वाला था। सामने जंगल में पेड़ों के बीच से बब्बू दा बाघ पर सवार दिखाई दिए। बब्बू दा ने जंगल के किनारे आकर बाघ से उतरकर उस को थपथपाया, और वह बाघ वापस जंगल में चला गया। जब वह हम लोगों के पास पहुँचे तो उन्होंने पूछा कि हम सब वहाँ क्या कर रहे हैं? हम सब खुद को रोक न सके और उनसे कहा हमने सब देख लिया है कि आपने क्या किया?
बुबु दा ने पूछा "तुमने क्या देखा?"
"हमने देखा कि आप बाघ की सवारी कर रहे थे। हम आपकी माँ से सब कह देंगे और आपको जोरदार डांट पड़ेगी।"
"क्या तुम पागल हो? मैं और बाघ की सवारी! ऐसी मन–गढंत बातों पर कौन विश्वास करेगा? डांट मुझे नहीं तुम्हें पड़ेगी।"
"हम सब ने देखा है। आप हमसे झूठ नहीं कह सकते।"
घर पहुँचते ही हमने अपने घरवालों को यह अविश्वसनीय घटना बताई, कि हमने बब्बू दा को बाघ की सवारी करते देखा है। परंतु किसी ने भी हमारी बातों का विश्वास नहीं किया और उल्टे हमारा मजाक उड़ाया, ऐसी झूठी कहानी बनाने के लिए। हम सब खुद को और रोक ना पाए, हम बब्बू दा की माँ के पास गए और हमने जो कुछ भी देखा था वह कह सुनाया। उन्होंने भी हमारी बातों पर विश्वास नहीं किया, तब भी उन्होंने बब्बू दा को सच्चाई जानने के लिए बुलाया।
बब्बू दा ने कहा, "मां तुम ऐसी कहानी पर कैसे विश्वास कर सकती हो? आज खेलते वक्त इन लोगों की मुझसे लड़ाई हो गई थी, इसलिए बदला लेने के लिए सारी कहानियां बना रहे हैं।"
बब्बू दा की माँ ने हमें ही डाँटा कहा, "शरारती लड़को" तुम लोगों का झगड़ा हुआ, सिर्फ इसलिए बब्बू के बारे में झूठ बोलते तुम लोगों को शर्म नहीं आई? हमने अपनी तरफ से भरसक कोशिश की, माँ को विश्वास दिलाने की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
माँ ने हम से ही पूछा, "क्या कोई बाघ की सवारी कर सकता है? क्या तुम लोगों को लगता है कि मैं ऐसी झूठी कहानियों पर विश्वास करूंगी?" हमने यह घटना और भी बहुतों को बताई, पर किसी ने भी हमारा विश्वास नहीं किया।
अगले दिन बब्बू दा ने मुझसे पूछा, "अच्छा सचिन क्या किसी ने तुम्हारी बातों पर विश्वास किया? आखिर मेरी जगह डांट तुम्हें ही पड़ी ना? इस घटना के बारे में कभी किसी से नहीं कहना कोई भी विश्वास नहीं करेगा।"
इस घटना के बाद से बब्बू दा ने हमारे साथ पोलोग्राउंड आना छोड़ दिया। काफी दिनों बाद मैंने बब्बू दा को तालाब और डेथ वैली के तरफ जाते देखा, वह भी सूर्यास्त के बाद जहां लोग दिन में भी नहीं जाते थे। मैंने यह बहुत बार देखा, परंतु उनका पीछा करने की हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि उस खतरनाक जगह में जाने से मैं डरता था। मैं हमेशा सोचा करता था, कि बब्बू दा इतनी कम उम्र में ही इतने साहसी कैसे थे?
कुछ साल बाद, मैंने एक महिला तांत्रिक के बारे में सुना जो खड़गपुर की पहाड़ियों में रहती थी। लोगों का कहना था कि अपनी रहस्यमय शक्ति के द्वारा वह बाघों को पालतू बना लेती थी। मुझे लगा, शायद बब्बू दा जंगल में उस तांत्रिक से मिलने जाते होंगे ।
काफी सालों बाद मुझे जब पता चला कि हमारे बब्बू दा ही आनंदमूर्ति जी है – महान आध्यात्मिक गुरु, तब उनकी बचपन की अलौकिक घटनाओं और उनके उच्च आध्यात्मिक स्तर का संबंध मुझे समझ आने लगा।

श्री श्री आनंदमूर्ति : ऐड्वेंट ओफ़ मिस्ट्री
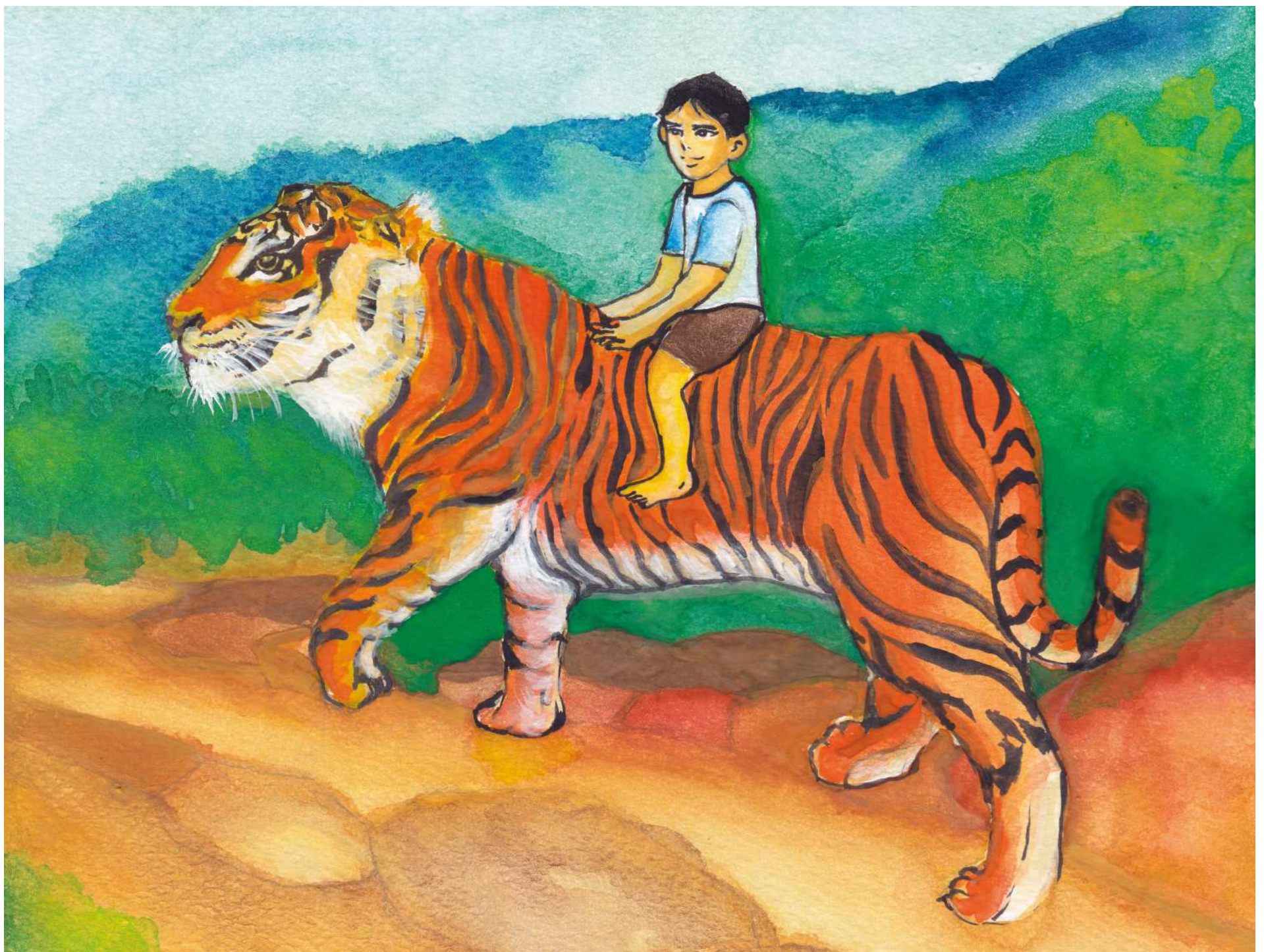
4. प्राथमिक प्रस्तुति

बाबा के बाल्यकाल के दौरान उनका परिवार, उनके पिताजी के पूर्वजों के गाँव बामूनपारा अक्सर जाता था। खासकर गर्मी की छुट्टियों के दौरान जब गाँव का खुला वातावरण और पेड़ पौधे जमालपुर की भीषण तपिश से ठंडी राहत देते थे।

बाबा ज्यादातर समय अपने खटिया पर लेट कर आसमान की तरफ देखते हुए बिताते थे। बाबा की बड़ी बहन हीरा–प्रभा (जो उस समय 14 साल की थी, एक समझदार युवती थी) ने अपने 7 साल के भाई से पूछा कि सारा दिन बिस्तर पर लेटे लेटे क्या करता है? इस पर बाबा ने जवाब दिया "मैं ब्रह्मांड के इतिहास की समीक्षा कर रहा हूं " इस जवाब से दीदी खुश नहीं हुई। अगले दिन उन्होंने बाबा से फिर वही प्रश्न पूछा इस पर बाबा ने जवाब दिया, "इस धरती पर हजार साल बाद क्या होने वाला है, मैं वह देख रहा हूं।" आखिर कर हीरा–प्रभा अपने आलसी भाई को देखते हुए और उनकी बातों से तंग आ कर उन्हें ताना मारते हुए कहा, "यहां पर तुम सारा दिन लेटे हुए अपना समय यूं ही बर्बाद कर रहे हो तुमने अभी तक अपना नाम तक अपनी मातृ–भाषा में लिखना नहीं सीखा है।" बाबा कुछ क्षणों तक मधुर मुस्कान के साथ देखते रहे, और फिर एक दराज से उन्होंने कागज और कलम निकालकर अपना नाम १० अलग–अलग लिपियों में लिख दिया, जिनमें इंग्लिश, अरबी और विभिन्न प्रकार की भारत की लिपियां शामिल थी। उसे देख हीरा–प्रभा इतनी चौंक गई, कि वह एक डरे हुए पक्षी के समान वहां से गायब हो गईं और उन छुट्टियों के दौरान वह अपने भाई से दूर ही रही।

.

सालों बाद विजयानंद को डिक्टेशन देते हुए, बाबा ने बामुनपारा कि उस छुट्टी के बारे में बताया। उन्होंने बताया, कि जब वह अपने बिस्तर पर घंटों लेटे होते थे, जिसे माना जाता था कि वह बस समय बर्बाद कर रहे हैं, उस समय बाबा, उन्हें क्या–क्या कार्य करने हैं, इसकी योजना बनाने में व्यस्त होते थे । जिसमें जातिवाद का विरोध और भी कई तरह की सामाजिक कुरीतियों से लड़ना भी शामिल था। बाबा ने बताया उसी छुट्टी के दौरान उन्होंने आनंद मार्ग एक सामाजिक–आध्यात्मिक संस्था जो उन्होंने १९५५ में स्थापित की, उसकी संरचना तैयार कर ली थी। यानी, २५ वर्षों बाद जो संस्था स्थापित करने वाले थे उसकी रूपरेखा उन्होंने तभी बना ली थी। फिर बाबा अपने डेस्क की तरफ गए और दराज में से एक कागज का काफी पुराना टुकड़ा निकाला जो पीला हो चुका था। उस कागज को उन्होंने अपने शिष्य के सामने मेज़ पर सीधा किया । उस कागज़ पर धुँधली लिखावट में, जो अभी भी पढ़ी जा सकती थी, जो संस्था बाबा स्थापित करने वाले थे उसकी रूपरेखा थी।

बाबा आनंदमूर्ति : दी जमालपुर इयर्स

बाबाः
बाबा ने एक बार कहा था "जो कुछ भी तुम लोग आज देख रहे हो वो ७ वर्ष की उम्र में मैंने जो सोचा– विचारा था उसका परिणाम है। मेरे सारे कार्य जमालपुर में, मैं जब १२ वर्ष की उम्र का था तब तक समाप्त हो गये थे।

अज्ञात स्रोत

बामनपुरा के गांव वाला घर, बाबा की माँ और दादी माँ आँगन में बैठे हुए।
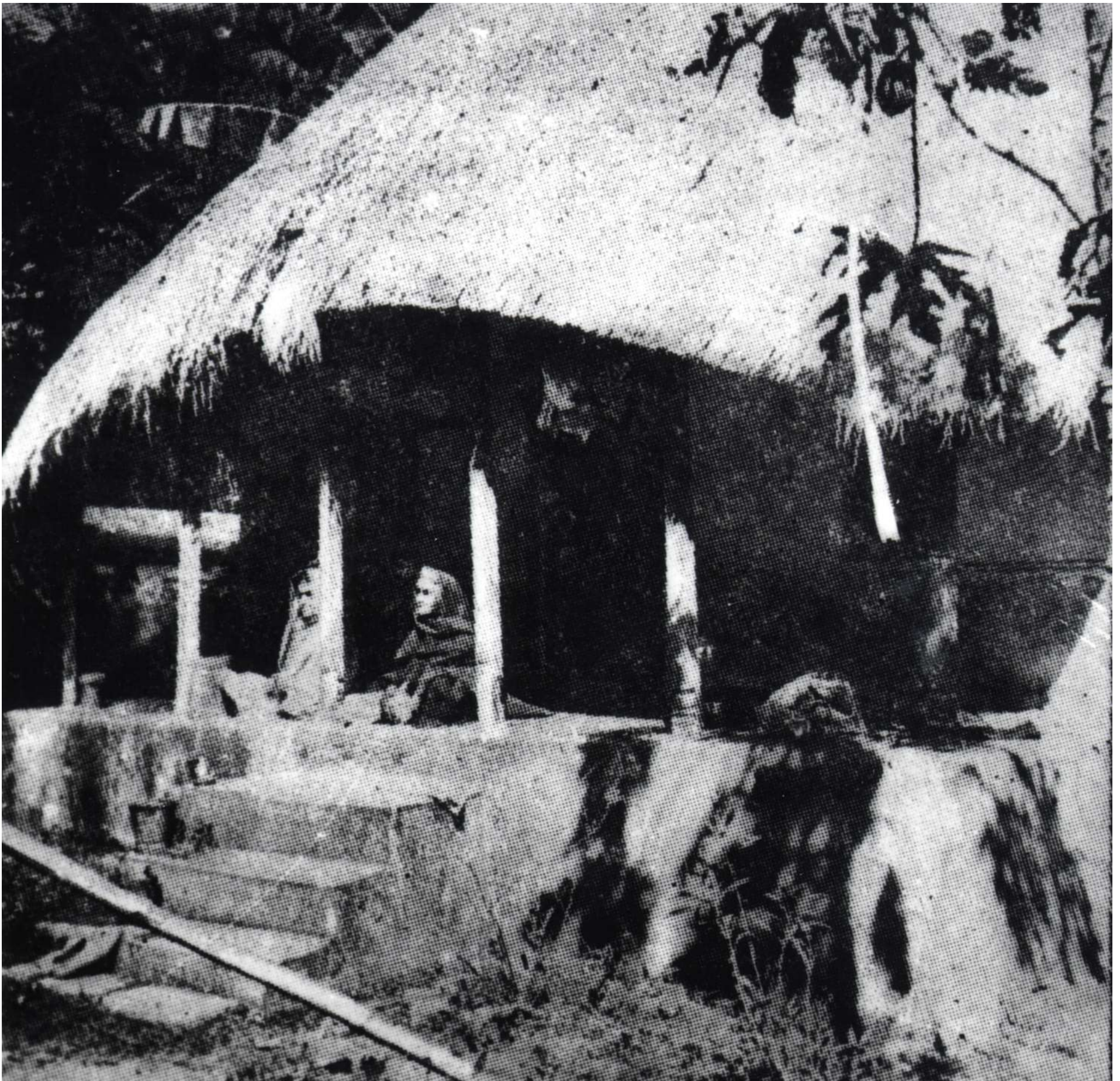
5. पुराने पारिवारिक चित्र

१६२० से बाबा और उनके लौकिक परिवार का सबसे पुराना फोटो एलबम
बाबा शिशु रूप में

बाबा (मध्य) के साथ बड़ी दीदी (बाईं ओर) और छोटे भाई के दाईं ओर

बाबा की माँ, स्वर्गीय आभा रानी सरकार

बाबा के पिता श्री लक्ष्मी नारायण सरकार

परिवार के चित्र, १६३० के लगभग। बाबा नीचे बाईं ओर है।

6. प्रिय सहपाठी और एक आदर्श मित्र

१६२७ से १६३० तक बाबा ने केशवपुर प्राथमिक विद्यालय से शिक्षा पूरी की, जहाँ पर अपनी बुद्धिमता, लगन, दृढ़ता और सबों के प्रति प्रेम के कारण वे सब के प्रिय थे। विज्ञान एवं भौगोलिक तथ्यों पर उनकी आश्चर्यजनक पकड़ के कारण वह "जीवित ज्ञान के सागर" के रूप में जाने जाते थे। अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद १६३१ से १६४० तक बाबा ने ईस्टर्न इंडियन रेलवे हाई स्कूल से पढ़ाई की। वहां पर भी बाबा एक आदर्श विद्यार्थी रहे, वे कक्षा में सतर्क एवं अनुशासित और बाहर की गतिविधियों में सक्रिय एवं खेलकूद में आगे थे। उन्हें बांसुरी बजाना एवं कविताएं और लघु कथाएं लिखना भी काफी पसंद था।

सम्पादकीय

यहाँ भी विद्यार्थियों के बीच यह आम प्रक्रिया बन गई थी, कि कोई भी, जिसके सवालों का जवाब किसी के पास ना हो उसे बाबा के पास भेजते थे। एक दोपहर जब बाबा एवं उनके सहपाठी भोजनावकाश के दौरान, भूगोल की नई किताब जो अभी–अभी ही आई थी देख रहे थे। बाबा ने भी सबों के जैसे पन्ने पलटकर देखा और उसके बाद किताब बंद कर दी एवं अपने सहपाठियों को चुनौती दी कि उस पुस्तक के किसी भी पन्ने से कोई भी प्रश्न उनसे पूछे। सहपाठियों ने भी ये चुनौती तुरंत स्वीकार की, उन्होंने किताब इस तरह खोली के बाबा को दिखाई ना दे, और प्रश्न पूछने लगे। एक एक कर बाबा ने सारे प्रश्नों का सही जवाब दे दिया। सभी प्रभावित थे, लेकिन उन बच्चों के लिए ये आम बात हो गयी थी, परंतु विमलेंदु चटर्जी नए विद्यार्थी थे, जो पूर्वी बंगाल के सिलहट जिला से कुछ समय पहले ही जमालपुर आए थे। उनके लिए नहीं। जब उन्होंने अपनी हैरानी जताई, तब बाबा ने उनसे उनके गांव का नाम पूछा और उनके गांव के बारे में विस्तार से बताने लगे। बाबा ने उस गांव की छोटी सी छोटी बातों तक का विवरण दे दिया, यहाँ तक की धान के खेतों का बंटवारा किस तरह से है और कुएँ कहाँ–कहाँ पर स्थित है। बाबा जैसे जैसे विवरण देते जा रहे थे। विमलेंदु उतने ही चकित होते जा रहे थे। सब कुछ वैसा ही था जैसे बाबा बता रहे थे आखिर में वह कह उठे "लेकिन तुम्हें यह सब कुछ कैसे पता है ?" बाबा ने हल्का असंतोष जताया और कहा "तुम लोग पढ़ते नहीं हो, इसलिए ये सब बातें तुम्हें नहीं पता" कुछ सालों बाद विमलेंदु को यह एहसास हुआ कि बाबा ने जो जानकारी दी थी वह किन्हीं किताबों में मौजूद नहीं है।

कुछ युवा लड़कों ने, स्कूल की छुट्टी के बाद बाबा के साथ रहना शुरू कर दिया था। वह बाबा के साथ फील्ड तक जाते, और फिर बाबा जब पहाड़ी से लौटते तो उनके साथ वापस शहर में आते। एक बार एक लड़के के मां–बाप उसके देर से घर आने के कारण पर उस पर गुस्सा गए और उसे बाबा के साथ जाने के लिए मना कर दिया। जब लड़के ने इस बात का विरोध किया तो उन्होंने जानना चाहा, आखिर क्यों वह बाबा के प्रति इतना आकर्षित है?

"तब उसने जवाब दिया" मैं जब भी उनके नज़दीक होता हूँ, मुझे अच्छा लगता है। एक बार जब मैंने प्रभात को रास्ते पर रुकते हुए देखा, तो मैंने देखा कि वो बहुत ही चमकदार आभा से घिरे हुए हैं, और कोई भी जो ऐसे दिव्य मण्डल से घिरा हो, वह सामान्य नहीं हो सकता? हो सकता है क्या वह?

उसके माता–पिता के पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं था। इसके बाद उन्होंने कभी भी इस बात का विरोध नहीं किया।

आनंदमूर्ति : दी जमालपुर इयर्स

बाबा के पिता श्री लक्ष्मी नारायण सरकार काफी आदरणीय होम्योपैथी के डॉक्टर एवं सामाजिक नेता थे। १६३४ के बिहार के भूकंप में बाबा ने राहत कार्य में उनका काफी सहयोग किया था, उन्होंने अपने दोस्तों को जुटाया और अपना जेब–खर्च राहत कोष में दान दे दिया था।

रेलवे हाई स्कूल जमालपुर

7. हस्त रेखा विशेषज्ञ, ज्योतिष, अद्भुत कर्मचारी।

एक बार बाबा से उनके युवा रिश्तेदार ने पूछा, बब्बू दा, क्या आप कुछ भी या जो भी आप चाहें कर सकते हैं? क्षणिक रुक कर बाबा ने कहा "हाँ मैं कर सकता हूँ।"

एक दिन बाबा की माँ की अपनी सास बीणापाणी सरकार के साथ, किसी काफी पुरानी बात को लेकर बहस हो रही थी। बहस थोड़ी देर के लिए रुकी, जब दोनों उस दिन की घटना को याद करने की कोशिश कर रही थीं तब बाबा ने उन्हें याद दिलाते हुए कहा "मुझे वह घटना याद है।" और उन्होंने उस दिन की घटना का विवरण जो दोनों भूल गई थीं, उसको याद दिला दिया।

उनकी दादी माँ चौंकते हुए पूछा "तुम्हें ये सब कैसे पता? तुम्हारा तो जन्म भी नहीं हुआ था।"

बाबा ने संक्षिप्त में जवाब दिया "मुझे ज्ञात है बस"

बाबा की माँ आभा रानी बस मुस्कुरा दीं। आने वाले सालों में जब भी उनके दूसरे बच्चे उनसे कुछ पूछते, जिनका जवाब उनके पास नहीं होता, तो वह कहती, बब्बू से पूछो उसे सब पता है जो मैं भी नहीं जानती, उसे वह भी पता है।

आनंदमूर्ति : दी जमालपुर इयर्स

बाबा अपने विद्यार्थी काल से ही रहस्यमय विज्ञान (वबबनसज`बपमदबम) में पारंगत थे। जो भी व्यक्ति उनसे रहस्य की बातें जानने का इच्छुक होता था, बाबा उससे पहले अपनी माँ, आभा रानी से आज्ञा लेने को कहते थे। इस सरकार परिवार के नजदीकी दोस्त व रिश्तेदार बाबा की अद्भुत प्रतिभा के बारे में जानते थे। युद्ध के कारण विदेशों से संपर्क कट गया था, और काफी रिश्तेदार अपने प्रिय जनों के लिए परेशान थे। चिंतित माता–पिता अपने विदेशों में रह रहे बच्चों के बारे में जानने के लिए बाबा के पास आते थे, या फिर जैसे किसी की मृत्यु हो गई और शोक संतप्त रिश्तेदार सांत्वना के लिए दिवंगत व्यक्ति के बारे में जानना चाहते थे। इस तरह से व्यग्र एवं जिज्ञासु व्यक्ति आभा रानी जी से निवेदन करते थे, कि वह अपनी आज्ञा अपने पुत्र को दे दें, अपनी माँ से आज्ञा मिलने के बाद, बाबा उस व्यक्ति को अपने कमरे में ले जाते थे एवं कमरा अंदर से बंद कर लेते थे। कमरे के कोने में मध्यम आकार का आईना रखा था। जिज्ञासु व्यक्ति कमरे के कोने में रखी कुर्सी पर बैठता बाबा साधना की मुद्रा में दूसरी तरफ बैठते थे उस व्यक्ति को निर्देश दिया जाता था कि वह आईने में बिना पलकें झपकाये देखें और बाबा भी आईने को एकटक देखते थे कुछ क्षणों में आईने में एक प्रतिकृति उभरती थी, जिससे में कि जिज्ञासु व्यक्ति अपने प्रिय जनों को देख उनका समाचार जान सकते थे। काफी वर्षों तक बाबा ने इसी आईने के द्वारा चिंतित माता–पिता व रिश्तेदारों के दिलों को राहत पहुँचाई, हालांकि हर बार इस प्रयोग के बाद बाबा अस्वस्थ हो जाते थे । अंततः माँ आभा रानी अपने पुत्र के स्वास्थ्य के लिए चिंतित होकर उस जादुई आईने को तोड़ दिया,और बाबा ने इस तरह की रहस्यमय बातों को बतलाना बंद कर दिया। १९८२ में बाबा ने प्रभात संगीत "माया मुकुरे..." में इसी जादू के आईने के बारे में लिखा है।

श्री श्री आनंदमूर्ति जी का जीवन और शिक्षा

मनोरंजन बनर्जी जो बाबा से काफी साल छोटे थे, बाबा को कई बार, केशवपुर के शिव मंदिर में लंबे समय तक ध्यान में बैठे देखा करते थे और प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थे एक दिन उन्हें कुछ ऐसा देखा जिसने उन्हें और भी चकित कर दिया।

"एक दिन, जब मैं कक्षा ६ में पढ़ता था, ४ या ५ बैलों का झुंड एक पतली सी गली में मेरा पीछा करने लगा, मैं अपनी जान बचाने के लिए तेजी से दौड़ा, किताबों को रास्ते में ही गिराते हुये दौड़ते हुए मैंने देखा कि, उस गली के अंत में बब्बू दा खड़े हैं, जब मैं उनके पास पहुँचा तो वे ढाल की तरह मेरे आगे आ गए। बब्बू दा तक पहुंचने के तुरंत पहले वे बैल रुक गए, और मूर्ति की तरह स्थिर खड़े हो गए। मैं बिल्कुल हैरान हो गया फिर उन्होंने मुझसे कहा कि जाकर अपनी स्कूल की किताबें उठा लो। किंतु मुझे डर लग रहा था, क्योंकि किताबों तक पहुँचने के लिए मुझे पहले वे बैल जहां खड़े हैं उन्हें पार करना पड़ेगा। लेकिन बब्बू दा ने मुझे बार–बार विश्वास दिलाया कि कुछ नहीं होगा। वे तुम्हें चोट नहीं पहुंचाएंगे। मैं हिचकिचाया लेकिन अन्ततः मैंने उन बैलों को पार करके अपनी किताबें उठा ली, फिर मैं बब्बू दा के बस वापस आ गया इस पूरे समय बैल अपनी जगह से बिल्कुल भी नहीं हिले। मेरे वापस आने के बाद बब्बू दा ने बैलों की तरफ हाथों को हिलाया, तब जाकर वे हिले और पीछे मुड़ के वापस चले गए। इस घटना से मुझे आभास हुआ कि बब्बू दा के पास विशेष शक्तियां हैं।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

मौत की घाटी, जमालपुर

8. कविताएं, गाने और बच्चों की कहानियाँ

१९४० से १९४६ तक, जब बाबा कोलकाता में कॉलेज में पढ़ते थे, जमालपुर के रेलवे के कार्यालय के शुरुआती दिनों में, बाबा ने कई कविताएं, कहानियाँ, निबंध व गीत लिखे, जिनमें से कई उस समय के लोकप्रिय पत्रिका में प्रकाशित हुए, किंतु बाद में लुप्त हो गए।

एक बार जब हम में से कुछ लोग बाबा से महत्वपूर्ण श्रुतिलेख ले रहे थे अचानक रुक कर उन्होंने कहा "जब मैं २०–२१ वर्ष के करीब था तब मैंने इंग्लिश में १५० कविताएं लिखी थी।"

सूत्रः अज्ञात

यह उन कविताओं में से एक है, इसकी मूल प्रति हमारे पास है। जब बाबा और उनके सहकर्मी रेलवे वर्कशॉप कार्यालय के लिए हस्तलिखित पत्रिका का संकलन कर रहे थे, उस वक्त बाबा ने यह कविताएं लिखवाई थी, जिसे उनके एक सहकर्मी ने नोट किया था।

* निरालाय़

(১)

যখন আমি আপন কাজে
যাইবো একা হাটের মাঝে,
বহুর মাঝে পারি যেন
রাখতে তোমায় হৃদয় মাঝে।

(২)

নীরবতায় শান্তি প্রভু
শূন্য হৃদয় কক্ষখানি,
এস তুমি সেথায় মাঝে
তোমার পুণ্য পরশখানি।
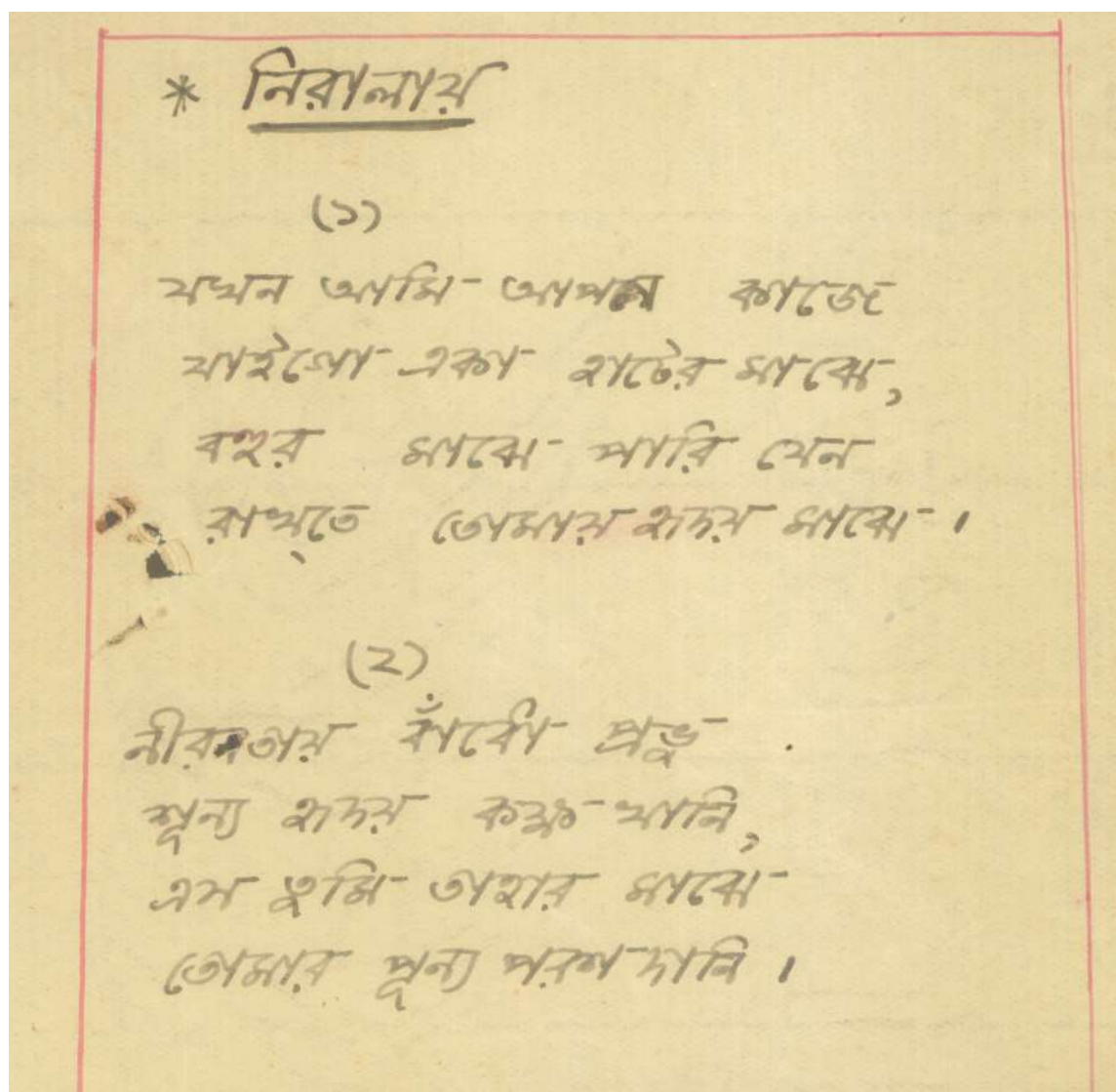
Translation:

Solitude

(1)

When I enter alone into the world
For a secret mission
May I keep you
Within my heart
Among all the distractions.

(2)

Fill my empty heart
With silent tranquility
Oh Lord
Come therein
Giving Your touch Divine.

जब बाबा २३ वर्ष के थे, तब उन्होंने बच्चों की कहानियाँ "नील सरोवर का स्वर्ण कमल" और नील सरोवर के अतल तल से "दोनों ही आनंद मार्ग प्रकाशन के द्वारा तीसरी किताब हठमाला के देश के साथ प्रकाशित की गईं, जो बाबा ने कुछ वर्षों के बाद में लिखी।

"नील सरोवर के अतल तल से" इस संपादकीय नोट के साथ प्रकाशित हुआ था :

लेखक कम उम्र के थे जब उन्होंने यह कहानी लिखी। इसलिए, लेखक की अनिच्छा के बावजूद हम इतनी हास्यपूर्ण कथा को छापने के लोभ से खुद को रोक न सके। इसलिए संपूर्ण जिम्मेदारी प्रकाशकों पर है।

9. विद्यासागर कॉलेज

१६३६ की फरवरी में जब बाबा १४ वर्ष के थे उनके पिता श्री लक्ष्मी नारायण की मृत्यु काले–ज्वर से हो गई। परिवार की आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद माँ के जोर देने पर उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और १६३६ में उच्च विद्यालय समाप्त करने के बाद उसी साल कोलकाता के विद्यासागर–कॉलेज में विज्ञान संकाय में दाखिला ले लिया जहां वह अपने मामा शरद चंद्र बोस के साथ रहते थे।

बाबा ने अपने कॉलेज के दिनों के बारे में "विचित्र अभिज्ञता" पुस्तक में उल्लेख किया है।

"उस समय मैं कॉलेज में था, माँ के भाई के घर कोलकाता के उत्तर में रहता था। उनका घर गंगा नदी के काफी नजदीक था, नजदीक में श्मशान घाट भी था। उस घर के ३ तल्ले थे। सबसे ऊपर के तल्ले पर दो कमरे थे। एक कमरे में बालकृष्ण की तस्वीर थी, उसी कमरे के कोने को लाल पर्दे से ढका हुआ रखते थे, जहां घर के पुरुषों में सबसे बड़े सदस्य तंत्र साधना करते थे। उत्तर कोलकाता का वह भाग घनी आबादी वाला था। कोई भी आसानी से पड़ोसी की छत को फांदकर इस घर की छत पर आ सकता था। इसी डर की वजह से कहीं कोई इसी तरह से छत पर पहुंचकर तीसरे तल्ले पर उतर आए, और वहां से घर के अंदर घुसने की कोशिश ना करने लगे, इसलिए रात्रि साधना के उपरांत मेरे रिश्तेदार दूसरे और तीसरे तल्ले को जोड़ने वाली सीढ़ियों के दरवाजे को अंदर से बंद कर देते थे, अर्थात् रात के वक़्त मैं, घर के बाकी सदस्यों से बिल्कुल अलग हो जाता था। रात और दिन घर के पास से जो रास्ता शमशान घाट को जाता था उस पर लोग अर्थी लेकर आते जाते रहते थे।"

"दीपेन, प्रशांत और मैं तीनों ही विद्यासागर कॉलेज में पढ़ते थे। हम तीनों में गहरी दोस्ती थी। किसी एक के अनुपस्थित रहने पर उसकी उपस्थिति परोक्ष रूप से दर्ज करा देते थे। कभी तीनों ही अनुपस्थित रहते और साथ में मूवी देखने जाते, या कैफे में बैठ बातचीत करते। इतनी नजदीकी होने के बावजूद किस का परिवार कहाँ रहता है हमें यह भी नहीं पता था। अच्छे दिन हमारी आँखों के सामने अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंच गए। प्रशांत और मेरी, दोनों की ही पारिवारिक स्थितियां मुश्किलों से भरी थी। मेरी कठिनाइयां विशेष रूप से ज्यादा विकट थी हमारी विदाई के दिन, हम तीनों एक साथ सिनेमा देखने गए जी भर कर खाया और एक दूसरे का पता नोट कर लिया। हमने यह वादा किया कि चाहे सामान्य परिस्थितियों में हम एक दूसरे को न भी लिखें, लेकिन कोई भी बड़ी अच्छी या बुरी खबर निश्चित रूप से एक दूसरे को बताएंगे।"
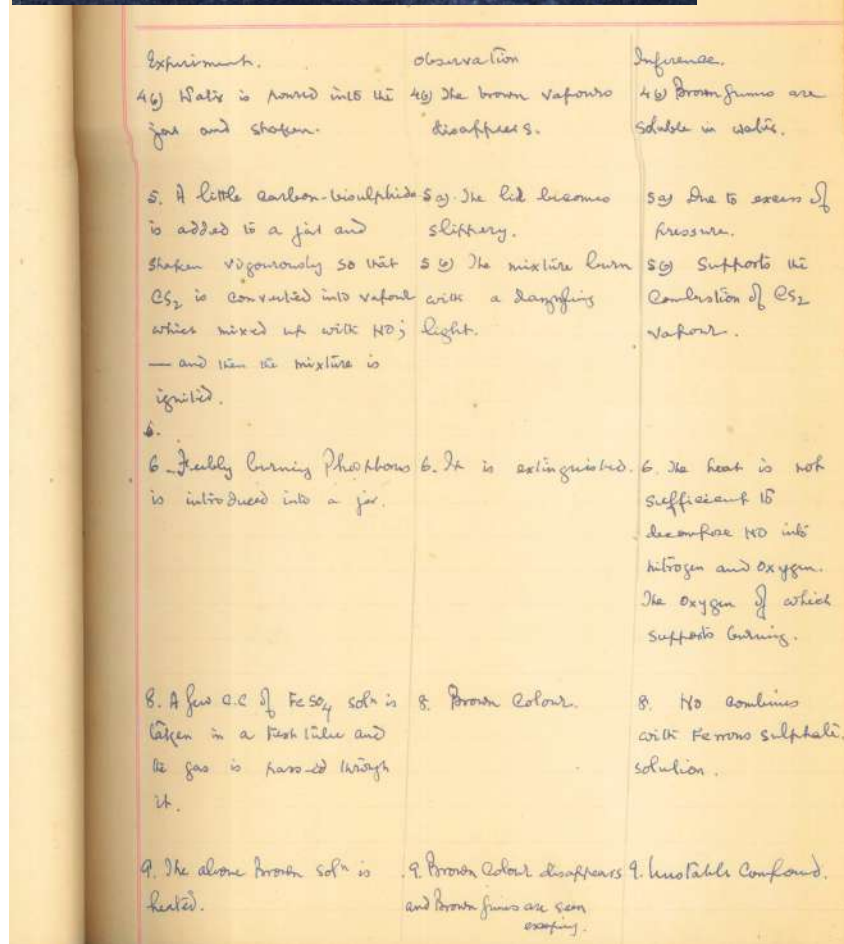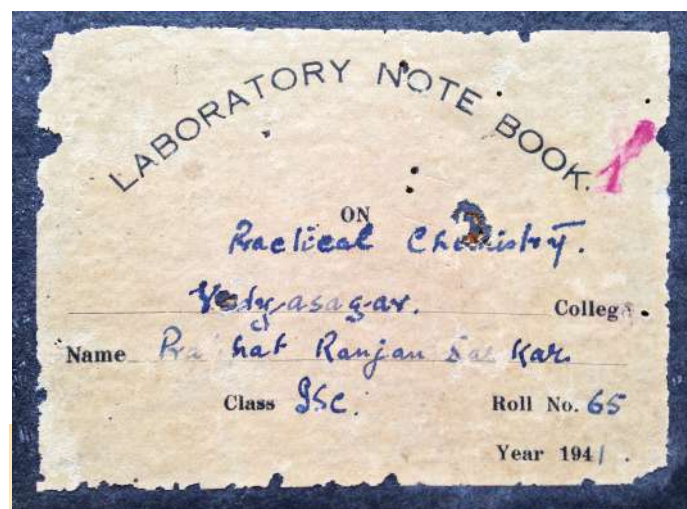
विद्यासागर कॉलेज में पढ़ते वक्त हुए बाबा की लाइब्रेरी नोटबुक।

विद्यासागर कॉलेज में जब बाबा पढ़ते थे

10. कालिका नंद

जब बाबा कलकत्ता में कॉलेज की पढ़ाई कर रहे थे, तब संध्या भ्रमण के लिए हुगली नदी के तट पर काशीमित्र घाट, जो नदी के तट पर श्मशान घाट था वहां जाते थे। वहाँ सूर्यास्त के बाद अंधेरे में छुपे चोरों व डाकुओं के कारण उस घाट को खतरनाक जगह कहा जाता था। बाबा वहाँ बैठकर साधना करते थे। १६३६ के अगस्त माह में श्रावणी पूर्णिमा की शाम जब वे १७–१८ वर्ष के थे, बाबा पूर्णिमा का चाँद का आनंद ले रहे थे जिसका प्रतिबिंब शांत पानी की लहरों पर पड़ रहा था। तब उनके पीछे से एक लुटेरा आया जिसका उद्देश्य उन्हें लूटना था। बिना पीछे देखे ही बाबा ने कहा " कालीचरण क्या तुम हो ? आओ कालीचरण बंदोपाध्याय बैठो।" डाकू चकित रह गया कि बिना उन्हें जाने और बिना पीछे मुड़े बाबा ने नाम लेकर पुकारा। बाबा बोले कि उनके पास जो भी रुपया है वह उसे दे देंगे लेकिन पहले उसे नदी में स्नान कर रुपए से ज्यादा कीमती चीज लेनी होगी – दीक्षा। युवक के साहस और उसकी उपस्थिति से विनम्र हो चुके कालीचरण ने अश्रुपूर्ण नैनों से पश्चाताप करते हुए नदी में स्नान कर दीक्षा ली। तत्पश्चात उसका व्यक्तित्व पूर्ण रूप से बदल गया, वह कालीचरण से कालिकानंद अवधूत बन गए। उसके पश्चात उन्होंने बाबा से जोर देकर आग्रह किया कि वे बाबा को उनके घर तक पहुँचाएंगे। कलिकानंद जी के अश्रुपूर्ण विरोध के बावजूद बाबा ने उन पर दबाव दिया, कि बाबा की जेब में जो कुछ सिक्के थे उन्हें वो ले लें । क्योंकि उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी, इसीलिए हर श्रावणी पूर्णिमा को हम यह अवसर हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं।

वर्षों बाद २५ अगस्त १६८० को श्रावणी पूर्णिमा के अवसर पर बाबा ने घटना याद करते हुए बताया–

"आज श्रावणी पूर्णिमा है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है ।उस समय मैं जवान था एवं कोलकाता के विद्यासागर कॉलेज में पढ़ता था। एक संध्या बहुत ही रोचक घटना घटी। अचानक से एक दुष्ट व्यक्ति मेरे पास आया। मैंने 'दुष्ट' शब्द का व्यवहार किया है, लेकिन यह मनुष्य की स्थाई अवस्था नहीं है। जो व्यक्ति आज दुष्ट है, वह कल को महान बन सकता है। और जो आज मूर्ख बेवकूफ है वह कल बुद्धिमान भी हो सकता है। यह सब कुछ सापेक्षता के बंधन में बंधा सापेक्ष पूर्ण मामला है। किसी को भी स्थायी रूप से दुष्ट नहीं कहा जा सकता। यह बात हमेशा मन में रखनी चाहिए कि कोई दुष्ट व्यक्ति है तो उसके अंदर की अच्छाइयों को बाहर लाने की कोशिश हमेशा करनी चाहिए। उस शाम कोई दुष्ट व्यक्ति मेरे पास आया, वह मुझ से क्या उम्मीद कर सकता था, लेकिन फिर भी स्वाभाविक मानवता के अनुसार मैंने पूछा "तुम क्या चाहते हो? तुम ने इस दुष्टता भरे पथ को क्यों चुना है?" हमारी बातचीत के दौरान, उसे आभास हुआ कि उसे अपने जीवन की राह बदलनी चाहिए और उस ने दीक्षा ली। वह पहली आध्यात्मिक दीक्षा थी, जो मैंने किसी को प्रदान की थी और श्रावणी पूर्णिमा का वह दिन फिर लौट आया है। तब से लंबा समय बीत गया है, शायद वह साल १६३६ में था। यह सब कुछ आज से ४१ वर्ष पूर्व घटा था।"

11. रेलवे वर्कशॉप ऑफिस

१६४१ में, बाबा को मजबूरन कोलकाता में अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी, और अपने परिवार को सहारा देने के लिए वापस जमालपुर आना पड़ा। वहां पर उन्होंने रेलवे कारखाना जो उस समय एशिया का सबसे बड़ा कारखाना था के लेखा विभाग में नौकरी कर ली।

"कुछ समय भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के बाद, मेरे परिवार की मुश्किल परिस्थितियों को देखते हुए एक अच्छे बेटे की तरह मुझे सरकारी नौकरी करनी पड़ी।"

विचित्र अभिज्ञता

१६६० तक, बाबा लेखा विभाग में लेखा–परीक्षक हो गए थे। वह अपनी विलक्षणता और कठोरता, जो कि कार्यस्थल में बेजोड़ थी को लेकर प्रसिद्ध हो गए। यहाँ तक कि उच्च पद पर पदासीन अधिकारी भी जब यह सुनते कि प्रभात रंजन सरकार उनके कार्यालय निरीक्षण के लिए आ रहें हैं, तो आशंकित हो उठते। आमतौर पर, दबी जबान में कहा जाता था कि अगर खाते में कहीं भी अनियमितता होगी तो प्रभात रंजन सरकार उसे पक्का ढूंढ लेंगे। उनके अधीनस्थ कर्मचारी याद करते हैं, कि जब भी बाबा के साथ निरीक्षण के लिए जाते तो वह सामान्यतः उन्हें निर्देश देते थे कि कौन से बही खाते में कौन से पन्ने पर त्रुटि हुई है। यह चीज उन लोगों के लिए कोई नई नहीं थी, क्योंकि कार्यालय में काम करते हुए किसी से भी अगर गलत प्रविष्टि होती, तो बाबा कमरे के दूसरे तरफ से पुकार कर उन्हें सतर्क कर देते। यह भी कोई रहस्य नहीं था कि कुछ वरिष्ठ अधिकारी जिस तरह से अपने अधिनस्थ कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार करते थे बाबा मुखर होकर उसकी निंदा करते थे।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

एक बार ७० के दशक के अंत में, बाबा अपने जमालपुर रेलवे कार्यालय के दिनों के बारे में बता रहे थे। उनके कार्य का एक हिस्सा था विभागों के अलग–अलग कार्यालय व स्टोर्स का निरीक्षण कर उनके कार्य व बही खातों का जांच करना। एक बार की बात है, बाबा ने स्टोर में फोन किया, ताकि अपने आने की सूचना अधिकारी को दे दें। अधिकारी की जगह उनके अधीनस्थ ने फोन का जवाब दिया।

बाबाः "मैं हेड क्वार्टर से प्रभात रंजन सरकार बोल रहा हूँ, मैं कल आपके स्टोर्स निरीक्षण के लिए आऊंगा। कृपया अपने पद–अधिकारी को फोन पर आने के लिए कहें।

बाबा के शब्द वज्र घोष की तरह फोन लाइन से गूंजे, कर्मचारी खुद को नियंत्रित नहीं रख पाया, और रिसीवर में ही चिल्ला पड़ा " हे भगवान! प्रभात रंजन सरकार निरीक्षण के लिए आ रहे हैं।" जब वह रिसीवर को छोड़ अपने सुपरवाईजर को बुलाने दौड़ा, तो बाबा ने उस कर्मचारी की काँपती हुई आवाज में भय को महसूस किया, सुपरवाईजर फोन पर आया और उसने खुद का परिचय दिया।

बाबाः "क्या बात है? आपका कर्मचारी मेरे नाम के उल्लेख से सहम सा गया, ऐसा लगा कि उसे दिल का दौरा आ गया हो। क्या मैं कोई बाघ हूँ?"

अधिकारी ने अपने कर्मचारी के व्यवहार के लिए क्षमा मांगी एवं बाबा से निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आने का अनुरोध किया।

बाबा ने हमसे कहा, "जैसा कि तुम सब जानते हो, मैं जब भी निरीक्षण के लिए जाता, सबसे पहले कुछ विशिष्ट फाइलों व दस्तावेजों की मांग करता हूं। जो हालांकि उनके लिए घातक सिध्द होता था, क्योंकि मैं उन्हीं फाइलों व दस्तावेजों की मांग करता था जिनका रखरखाव सही तरीके से ना हुआ होता, और उन्हीं फाइलों व दस्तावेजों में मुझे सभी गंभीर विसंगतियाँ एवं अनियमिततायें मिलती।"

"झूठे दस्तावेजों व दिखावे के द्वारा मुझे गुमराह करने का उनका सारा प्रयास बुरी तरह विफल हो जाता। इसके अतिरिक्त मैं किसी से कुछ भी स्वीकार नहीं करता । न नकदी, ना ही किसी प्रकार की वस्तु और ना ही, मैं उन लोगों के द्वारा पेश किया गया कोई खाना भी ग्रहण करता, क्योंकि अगर मैं यह सब कुछ करता तो यह कृत्य मुझे उनके हित में कार्य करने को बाध्य करते, और मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता था।"

"अब लोग मुझे बहुत अच्छी तरह से पहचान गए, और जब उनके द्वारा की गई धोखाधड़ी के निंदनीय कृत्य को मैं बेनकाब करता, तब वह निराशा से भर मुझसे दया की अपील करतेः 'श्रीमान सरकार, अत्यधिक गरीबी और परिस्थितियों के दबाव ने मुझे ऐसा करने को मजबूर किया था, कृपया मुझे मेरी नौकरी से ना निकाले। मेरे ऊपर बहुत ही बड़े परिवार के भरण–पोषण का दायित्व दायित्व है वे भूख से मर जाएंगे सर।'"

बाबा ने बात जारी रखते हुए कहा "मैं दुविधा में पड़ जाता। एक तरफ मैं अपने अंतर्मन के विरोध में जाकर उनकी सहायता नहीं कर सकता क्योंकि वह दोषी है। दूसरी तरफ क्या मैं ऐसा कदम उठा सकता हूँ, जिससे बेचारे की नौकरी चली जाए और उसके पूरे परिवार को भूखे मरने की नौबत आ जाए? निसंदेह, मेरे कार्यकाल के दौरान किसी के निष्कासन की घटना शायद ही हुई हो। जब तक दोषी को बचाना, मेरे उत्तरदायित्वों के खिलाफ नहीं जाता, मैं उन्हें बचाता और मैं कभी भी ऐसा कोई निर्णय नहीं लेता जिससे किसी व्यक्ति की नौकरी चली जाए। वास्तव में, मुझे इन बेचारों के लिए दुःख होता। इसीलिए, ज्यादातर मामलों में मैं उन्हें सलाह देता कि कैसे उनकी लाज भी रह जाए और विभाग को हानि भी ना हो।"

बाबा के साथ मेरे दिन।

७ जनवरी, १६५४ को रेलवे कार्यशाला की ग्रुप फोटो। बाबा तीसरी पंक्ति में बाएं से तीसरे स्थान पर ।

12. बाबा सेना मं

बाबा सैनिक–वर्दी में अपने भाइयों व बहनों के साथ १६४३ में, उनकी छोटी बहन बिजली प्रभा बाईं तरफ बैठी है, जो जल्दी ही स्वर्ग सिधार गयी।

वर्ष १६४३ के मध्य अंग्रेज सरकार ने निर्णय लिया, सरकारी कर्मचारियों को आई टी एफ़ इंडियन टेरिटोरियल फोर्स में भर्ती करेंगे। जो कि ब्रिटिश इंडियन आर्मी की सहायक संस्था थी। जवान और विशेषतः अविवाहित सरकारी कर्मचारी, जो मुख्य क्षेत्रों में कार्यरत थे जैसे रेलवे, पोस्ट, टेलीग्राम, और लोक निर्माण विभाग, वे भर्ती के योग्य थे। अगर ब्रिटिश प्रशासन को नियमित रूप से कार्य कर रहे सुरक्षा बलों को युद्ध के लिए वापस लेना पड़े, तो इन्हें अपने–अपने विभागों के लिए सुरक्षा प्रदान करने का काम सौंपा जाना था। जिन की भर्ती हो जाती उनकी प्रारंभिक प्रशिक्षण बुन्देल में होता जो कोलकाता के नजदीक है, उसके उपरांत १ माह का प्रशिक्षण सत्र उत्तर बंगाल व असम में होता। सप्ताह में २ दिन सैनी–यात्रा के छोटे प्रशिक्षण सत्र कार्यालय अवधि के बाद होते। जो नये सैनिक भर्ती होते उन्हें कार्यालय में वर्दी पहन के आना होता था और महीने के वेतन में 12 रु और 8 आने का अतिरिक्त व्यय वर्दी के लिए दिया जाता था। चूंकि ये अतिरिक्त वेतन पारिवारिक स्थिति में सहायक होता इसलिए बाबा ने सेना में भर्ती होने के लिए अपना नाम लिखा दिया । वे आई–टी–अफ़ में वर्ष १६४३ में थे या संभव है कि उससे भी लंबे समय तक रहे हों।

श्री श्री आनंदमूर्ति : एक रहस्य का आगमन

"बाकी भाई बहन मानते थे, उनके बड़े भैया सब जानते हैं, जैसा कि उनकी माँ उनसे ज्यादातर कहती थी। एक दिन १६४८ के पूर्वार्ध में बाबा के भाई हिमांशु दादा ने यह बात कही, "दादा आपको सब कुछ पता है। क्या आप मुझे भी सिखा देंगे कि आप यह कैसे करते हैं? मुझे बहुत खुशी होगी अगर मैं भी सब जानने लगूँ तो" बाबा ने गुस्सा होकर कहा "सब कुछ जानना अच्छा नहीं है बिल्कुल भी नहीं है तुम्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा विधाता ने किसी कारणवश ही यह नहीं किया है।"

दो–तीन दिनों बाद, बाबा अपने चचेरे ममेरे भाई अजीत विश्वास, जो कि छुट्टियों में वहां आए थे उनके साथ खाने की मेज पर खाना खा रहे थे तब वह बाबा की छोटी बहन बिजली–प्रभा उन्हें खाना परोस रही थी तभी माँ आभा रानी उसे घरेलू कार्य में निपुण न होने के कारण डांटने लगी। उन्होंने कहा "जल्दी तुम्हारी शादी हो जाएगी और तुम अभी तक नहीं सीखी हो कि मेज़ पर खाना कैसे परोसते हैं। खाना बनाने की बात तो दूर की है– तुम्हारा पति भला क्या सोचेगा?" बाबा बिजली प्रभा का बचाव करने लगे, जब तक कि आभा रानी चुप न हो गई, और अपनी बेटी को उलाहना देना बंद कर दिया।

जब वे दोनों मेज़ पर अकेले थे तब बाबा ने अजीत से कहा "उसे इन घरेलू कार्य में दक्ष होने की कोई जरूरत नहीं है। मेरी मां मेरी बहन के विवाह के लिए जो सोच रही है वह कभी नहीं होगा"

अजीत अपने भाई की अद्भुत क्षमता पर मोहित होते हुए सर हिलाते हुए बोला "प्रभात यह सच में बहुत बढ़िया होता होगा ना कि भविष्य में क्या होने वाला है ये हम पहले ही जान जाए"।

बाबा ने कहा "बिल्कुल भी नहीं। यह कोई वरदान नहीं है, सोचो तो यह एक तरह का अभिशाप है। देखो मेरी बहन की उम्र कम है । वह अपनी विवाह तक जीवित नहीं रहेगी इसलिए मैं चाहता हूँ कि उसे शांति से रहने दिया जाए ताकि वह अपने अंतिम दिनों में किसी मानसिक–यातना से न गुज़रे। जरा सोचो! मैं जब भी उसे देखता हूँ मुझे याद आता है कि उसकी मृत्यु निकट आ रही है। तुम एक स्वस्थ्य नव–युवती को देखते हो लेकिन मैं उसकी मृत्यु को। जरा सोचो कितना मुश्किल होता होगा अपने परिवार व दोस्तों से सामान्य व्यवहार करना जब कोई जानता हो कि उसका कोई अपना मृत्यु को प्राप्त होने वाला है। विधाता का मनुष्यों को ये शक्ति ना देना कि वो जान सके भविष्य में क्या होने वाला है इसके पीछे बहुत ही बढ़िया कारण है।"

अगले दिन बाबा ने हिमांशु को कुछ दिनों के लिए अपने साथ कोलकाता चलने को कहा। जब दोनों भाई चार–पांच दिनों बाद जमालपुर वापस आए उन्होंने परिवार को शोकग्रस्त देखा। उनकी मासूम बहन की काले–ज्वर से मृत्यु हो गई थी, यह ऐसी बीमारी थी जिसने अपने आगमन के कोई संकेत भी नहीं दिया जब ये लोग कुछ दिनों के पूर्व कोलकाता जा रहे थे।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

13. प्रारम्भिक अनुयायी

१६३६ से १६५४ के मध्य बाबा ने काफी लोगों को दीक्षा दी परंतु गोपनीयता की शपथ के साथ एवं उन्हें दूसरे शिष्यों के बारे में कोई सूचना भी नहीं थी। उनके ज्यादा सहकर्मी व उनके घर वाले भी उनको आध्यात्मिक गुरु के रूप में नहीं जानते थे।

७ नवंबर १६५४ को, उन्होंने अपने सारे शिष्यों को एक साथ रामपुर कॉलोनी जमालपुर के क्वार्टर नंबर ३३६ (जो कि रेलवे द्वारा प्रदत्त था) में बुलाया जहां वे सभी एक दूसरे से मिल कर चकित हो गए कि उनके दोस्त और सहकर्मी भी बाबा के शिष्य थे।

एक हफ्ते बाद रविवार 14 नवंबर को, जब दूसरा जनरल दर्शन रामपुर कॉलोनी के क्वार्टर में हुआ तब बाबा ने पहली बार प्रयोग व प्रदर्शन के माध्यम से दिखाया कि सुभाष चंद्र बोस नेताजी जीवित है और तिब्बत में साधना कर रहे हैं ।

करीब १५–१६ शिष्य उस छोटे से कमरे में थे। प्रणय कुमार चटर्जी,चंद्रनाथ जी, वी.के. अस्थाना जी, नगीना जी, डॉ सचिदानंद मंडल जी, रामदास दास जी एवं अन्य।

छोटे से प्रवचन के बाद बाबा ने कृष्णा चंद्रपाल (क्रिस्टो) पर मृत्यु फिर जीवनदान का प्रयोग प्रदर्शन करने की कृपा की। उन्होंने क्रिस्टो के शरीर से प्राण शक्ति को बाहर निकाल दिया व उसके मन को शरीर से अलग कर दिया वह एक महान साधक लाहिड़ी महाशय के विदेही मन को उस शरीर में ले आए। लाहिड़ी जी का विदेही मन क्रिस्टो पॉल जी के शरीर के माध्यम से बातचीत करने लगा। बाबा ने उन्हें कई स्थानों की यात्रा करने के निर्देश दिए जिनमें मंगल ग्रह, चाँद व क्रेमलिन शामिल थे। और उन स्थानों की जानकारी देने को कहा।

आकृति–1

उसके बाद बाबा ने लाहिड़ी महाशय के मन को तिब्बत जाने को कहा। बाबा ने उन्हें तिब्बत की राजधानी ल्हासा की तरफ जाने को कहा। ल्हासा के रास्ते में एक जगह आती है लिंग–पो वहाँ पर एक बौद्ध मठ है उसके नजदीक एक गुफा है उन्होंने उस गुफा के अंदर जाने को कहा व पूछा कि उसने कहा वहां क्या देखा? लाहिड़ी जी ने कहा," वहाँ एक तेजस्वी व्यक्ति साधना कर रहे हैं।" बाबा ने उन्हें नजदीक से जाकर पहचानने को कहा कि, व्यक्ति कौन है? लाहिड़ी जी ने कहा कि वे नेताजी सुभाष चंद्र बोस हैं।

सभा में सभी के मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। वे लोग अद्भुत चीजों को देखने के अभ्यस्त हो गए थे लेकिन यह बिल्कुल ही अलग था।

बाबा ने लाहिड़ी महाशय को नेता जी के मन में जाने का आदेश दिया, व उनसे पूछने को कहा कि क्या वह भारत आना चाहते हैं? इसका जवाब आया कि नहीं वे वापस नहीं आना चाहते।

बाबा ने लाहिड़ी महाशय को वापस आने का निर्देश दिया व क्रिस्टो का शरीर छोड़ देने को कहा। उन्होंने उसके बाद क्रिस्टो के मन को उनके शरीर में वापस ला दिया। क्रिस्टो की चेतना वापस आ गई। अब उन्हें इस प्रयोग का पता भी नहीं चला और ना ही कुछ दुष्प्रभाव ही हुआ।

यह अभी तक के प्रदर्शनों में सबसे अद्भुत था ।

दादा प्रणावत्मकनन्द जी के नोटों से संकलित

प्रारंभिक–कल में हर दिन शिष्य बरामदे पर इकट्ठे होते थे, व साधना करते हुए बाबा का इंतज़ार करते थे। बाद में १६५६ में जब क्वार्टर्स बहुत छोटे पड़ने लगे तब सदर बाजार में एक घर किराए पर लिया गया। उसके बाद वर्तमान जागृति का निर्माण २८ दिसंबर १६५८ को ओलिगंज में हुआ।

कृष्णा चंद्रपाल जी (क्रिस्टोपॉल क्रिस्टो) १६६२ में

14. बाबा और दादा चंद्रनाथ

दादा चंद्र नाथ जी १९५० से ही गुरु की खोज में थे, लेकिन उन्हें कोई भी ऐसा गुरु नहीं मिला, जो उन्हें मानसिक संतुष्टि प्रदान कर सकें। १९५२ ई० में, जब वह छुट्टियों में गद्दोपुर आए तब वह 'महात्मा जी' के नाम से विख्यात संत जिनके शिष्य भारत में कई जगहों पर है, उनसे मिलने गए। उनसे प्रभावित होने पर उसने दीक्षा लेने की इच्छा व्यक्त की। महात्मा जी कुछ क्षणों तक मौन रहे, और भोजपुरी भाषा में कहा "समय आई त मिली", यानी समय होने पर मिलेगा। १ वर्ष के उपरांत, अपने सहकर्मी श्री शिवशंकर बनर्जी से उन्हें बाबा के विषय में जानकारी मिली, वह बाबा से मिलने पहली बार जमालपुर गए, जब चंद्रनाथ जी बाबा के घर पहुंचे तब बाबा के भाई बाहर बैठे थे, उन्होंने चंद्रनाथ जी से कमरे में अंदर आकर कुर्सी पर बैठने को कहा और वे भीतर बाबा को खबर देने चले गए। बाबा के उस कमरे में प्रवेश करने के ठीक पूर्व कानों में आवाज़ आयी "की समय होलो"। ये शब्द बांग्ला भाषा के हैं जिनका अर्थ हुआ "क्या समय हो गया?"

वेन दी टाइम् कम्स : कॉन्वर्सेशन विद आचार्य चंद्रनाथ कुमार

दादा चंद्र नाथ जी ने अपनी किताब " हम न भूलेंगे तुम्हें" में इस घटना के बारे में लिखा हैः

मैंने खड़े होकर प्रणाम किया। प्रणाम का प्रयत्तुतर मिला। आदेश मिलने पर मैं पुनः बैठ गया। उन्होंने कहा "आओ कैसे आये, क्या प्रश्न है आपके कहिये ? मैं पंडित नहीं हूँ फिर भी यथा शक्ति उत्तर दूँगा।"

मैंने कहा मैं कोई प्रश्न लेकर नहीं आया हूँ, मैं गुरु की खोज में आया हूँ।

मेरे इतना कहते ही उनकी बोली में परिवर्तन आया। उन्होंने गंभीर हो–कर आदेश दिया कि दरवाजा और खिड़की बन्द कर दो, मेरे पास बैठो। बैठने के उपरांत दीक्षा–दान वहीं उसी समय मिला।

आचार्य चंद्रनाथ कुमार एंव उनकी पत्नी आचार्या रामपरी देवी (बाद के सालों में)

१९५५ आचार्य शिवशंकर बैनर्जी, आचार्या लीला बनर्जी, आचार्या रामपरि देवी एवं आचार्य चंद्रनाथ कुमार

आचार्य शिवशंकर बैनर्जी, आचार्य चंद्रनाथ कुमार, आचार्य रामचंद्र पांडेय (सिरका १९५५)
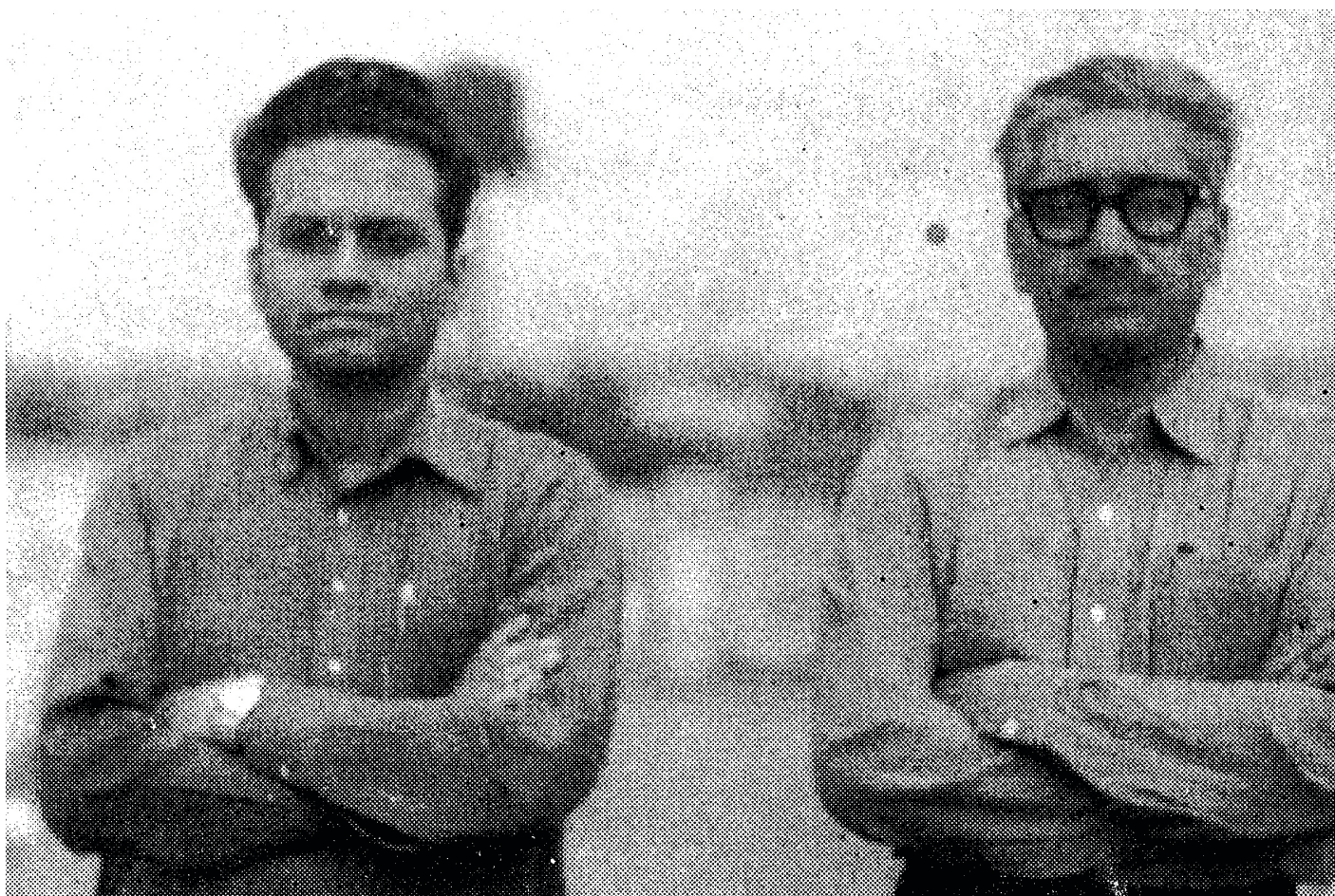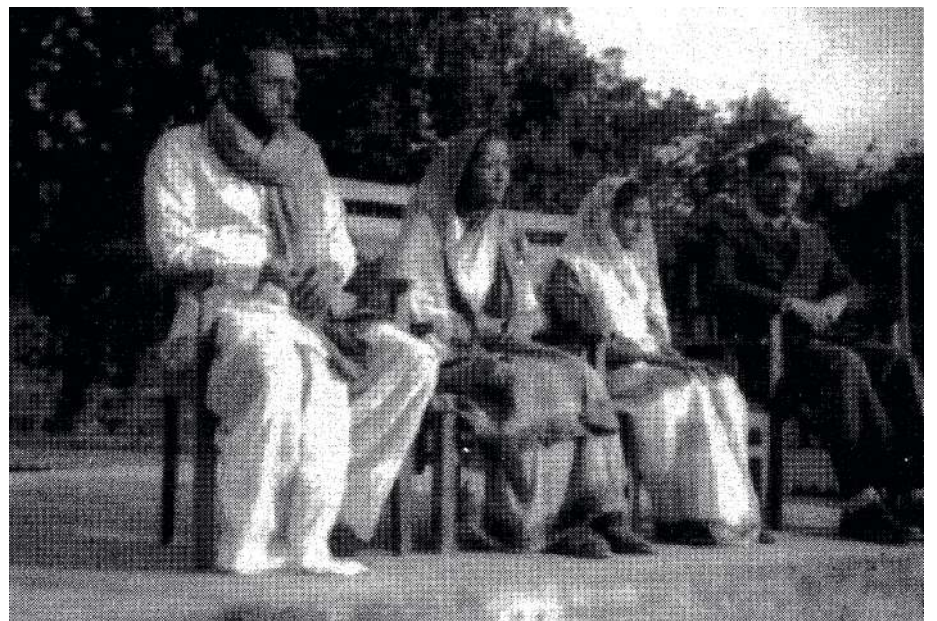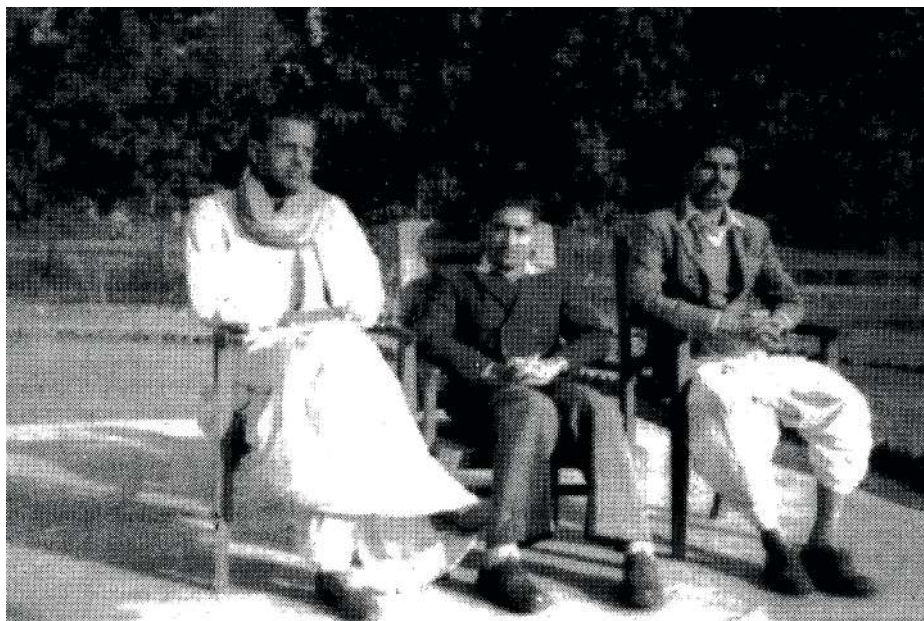
आचार्य चंद्रनाथ कुमार एंव उनकी पत्नी आचार्या रामपरी देवी (बाद के सालों में)

१९५५ में प्रणय कुमार चटेर्जी और आचार्य चंद्रनाथ कुमार

15. आनंदमार्ग प्रचारक संघ

२५ दिसम्बर १६५४ को बाबा ने अपने शिष्यों को एक नई संस्था के उपनियम एंवम सविंधान का प्रारूप तैयार करने को कहा, और १ जनवरी १६५५ को रामपुर कॉलोनी के क्वार्टर में उन्होंने नई संस्था के नामकरण के लिए सभी से प्रस्ताव मांगा। पहला नाम जो लोगों द्वारा सुझाया गया वो था "पुष्टि मार्ग" (यानी भक्ति का मार्ग) और दूसरा प्रस्ताव आया "ब्रह्म इष्ट मार्ग"। इसके बाद बाबा ने घोषणा की कि नई संस्था "आनंदमार्ग प्रचारक संघ" के नाम से जानी जाएगी। बाबा ने उसी दिन औपचारिक रूप से उसका उद्घाटन किया और प्रथम धर्म महाचक्र उसी दिन आयोजित हुआ।

बाबा ने पहले धर्म– महाचक्र पर जो प्रवचन दिया था– उसका विषय था "समाज का क्रम विकास " व धर्म–महाचक्र के उपलक्ष्य में पहली वराभय मुद्रा भी दी और उन्होंने कहा कि हर नए वर्ष के प्रथम–दिवस धर्म– महाचक्र आयोजित किया जाएगा। हालांकि, प्राथमिक वर्षों में हर माह की पूर्णिमा तिथि को धर्म महाचक्र आयोजित होता था। इन धर्म–महाचक्रों के उपलक्ष्य में बाबा के दिये हुए प्रवचन सुभाषित संग्रह पुस्तकों की श्रृंखला के रूप में संकलित किये गए। बाद में आनंद वचनामृत श्रृंखला, नमामि कृष्ण सुन्दरम (कलकत्ता में अगस्त १६८० से अप्रैल १६८१ के मध्य दिया गया) और नमः शिवाय शान्ताय (१६८२ में दिया गया) ये ग्रंथ आनंदमार्ग के धर्म शास्त्र कहलाए।

सामाजिक अधिनियम के तहत ६ जनवरी १६५५ को मुंगेर के रजिस्ट्रार कार्यालय में आनंद मार्ग प्रचारक संघ आधिकारिक रूप से पंजीकृत किया गया। श्री प्रभात रंजन सरकार को अध्यक्ष के रूप में एंव प्रणय कुमार चटर्जी को प्रथम जनरल सेक्रेटरी के रूप में चुना गया। उसी दिन दूसरा धर्म महाचक्र रामपुर कॉलोनी, क्वार्टर प्रांगण में आयोजित हुआ।

तीसरा धर्मचक्र भागलपुर के पुलिस क्वार्टर में दादा चंद्रनाथ जी के घर में ६ फरवरी १६५५ को आयोजित हुआ। इसी व ड ८ में बाबा ने कृपा कर बिंदेश्वरी जी को जीवन दान दिया, जिनकी मृत्यु उनके संस्कारों के अनुसार उस दिन लिखी हुई थी। बाबा ने उन्हें जीवन दान दिया उसके बाद कहा :– "जाओ! किसी प्रकार का भय मत करो"। बिंदेश्वरी ने अपनी पत्नी से कहा "मेरा जीवन अभी के लिए बच गया, तुम भाग्यशाली हो कि तुम विधवा नहीं हुई। योगेश्वर आनंदमूर्ति जी ने कृपा कर मुझे नया जीवन दिया।" और बिंदेश्वरी जी एक नए व्यक्ति बन गए उसके बाद कभी वे आनंद में रोते तो कभी हँसते । हमेशा बाबा के भाव में ही रहते।

बाबा रामपुर कॉलोनी क्वार्टर के पिछवाड़े में, सिरका १६५५

16. तांत्रिक गुरु

बबा शायद किसी प्रकार की समाधि में

कापालिक साधना सीखने के पूर्व से ही सभी शिष्य यह जानते थे कि बाबा तांत्रिक गुरु हैं। वे केवल प्यार करने वाले गुरु व कल्याण सुन्दरम या प्रेरणा स्त्रोत ही नहीं थे, वे एक कठोर कार्य–वाहक गुरु और दृढ़–नेता भी थे, जो कि अपने शिष्यों को सजा देने में बिल्कुल भी नहीं हिचकते थे। अगर शिष्य सही राह से भटक गए हों। तांत्रिक गुरु का यह रूप हज़ारों वर्षों से तांत्रिक परंपराओं का हिस्सा रहा है। तांत्रिक–गुरु केवल अपने शिष्यों को आध्यात्मिक साधना का ज्ञान ही नहीं देते परंतु उन को पथ पर चलने के लिए प्रेरणा भी देते हैं। बाबा ने १९६० के व ड ६ के प्रवचन में कहा कि "तांत्रिक गुरु अपने शिष्यों की देखभाल पूरी सतर्कता से करते हैं, और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके शिष्य उनके दिखाए पथ पर अग्रसर हों, व उनकी शिक्षाओं का पालन करें। जब उन्हें जब पता चलता है कि उनके शिष्यों से किसी तरह की लापरवाही हुई है तो वे पारिस्थितिक दबाव के द्वारा उन्हें अधिक अभ्यास करने को बाध्य करते हैं। गुरु को निग्रह (सजा देने वाला) अनुग्रह (कृपा दान में सक्षम) दोनों होना चाहिए। वह जो सिर्फ सजा दे और वह जो सिर्फ कृपा ही करें, वे आदर्श गुरु नहीं होते।

तन्त्र की परंपरा में गुरु अपने शिष्य की परीक्षा लेते रहते हैं। ये परीक्षाएं शिष्यों की कई प्रकार की मानसिक कमजोरियां हटाने के लिए ली जाती है। हालांकि बाबा की ज्यादातर परीक्षाएं शिष्यों के सामान्य अनुभव के दायरे में ही होती थी, लेकिन कभी–कभी परीक्षाओं को ज्यादा चुनौती–पूर्ण बनाने के लिए बाबा अविद्या की शैली का भी प्रयोग करते थे।

एक बार बाबा ने किशुन जी को बताया कि अविद्या तंत्र के गुरु कभी ऐसे तरीके इस्तेमाल करते हैं, ताकि उनके शिष्यों के मन से नफरत व घृणा जैसी वृतियां जिन पर काबू पाना बहुत ही मुश्किल होता है, वे उन वृतियों पर काबू पा सके। बाबा ने कहा " मैं लोगों को ऐसा करने को नहीं कहता, किन्तु मैं पहले अपने साथ मिश्री लेकर चलता था और माया की मदद से यह मिश्री शिष्यों को मानव शव के समान दिखती थी, जो मैं शिष्यों को प्रसाद के रूप में खाने को देता था। यह क्रिया शिष्यों के षटरिपु व अष्टपाश के बंधन को नष्ट करने के लिए करता था। बाद में मैं जब उनसे पूछता था कि प्रसाद का स्वाद कैसा था तब वे बताते थे कि मिश्री जैसा था।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

अनिरुद्ध जी बाबा से भयभीत रहते थे। वे बाबा को महान तांत्रिक मानते थे, लेकिन फिर भी बाबा के पास जाने से खुद को रोक नहीं पाते थे। एक साक्षात्कार में उन्होंने बाबा के साथ जो प्रथम फ़ील्ड– वाक ली उसका अनुभव हमारे साथ साझा किया।

बाबा ने मुझसे पूछा कि क्या मैं कुछ देखना चाहता हूँ। मैंने आँखों से उनसे कहा "अगर आप मुझे दिखाना चाहते हैं तो मुझे दिखाएं। उन्होंने मुझसे दुबारा पूछा और जब मैंने हामी भरी, तब उन्होंने मुझे आँखें बंद करने को कहा, और कहा कि आँखें तब तक न खोलूं जब तक बाबा न कहे कि सब कुछ ठीक है। उसके बाद उन्होंने अपनी टार्च जलाई व मुझे आँखें खोलने को कहा।

उन्होंने पूछा "तुम्हें क्या दिख रहा है?"

वहाँ एक व्यक्ति खड़ा था, जो कि करीब ७ फ़ीट लम्बा था। बाबा ने अपनी फ्लैश–लाइट घुमाई ओर वह व्यक्ति बढ़ता हुआ ३० फ़ीट का हो गया, ताड़ के पेड़ जितना। मैंने भयभीत होकर बाबा के पाँव पकड़ लिए। मैंने उन्हें मुझे छोड़ने के लिए 1,00,000 रुपये देने की पेशकश की। मैंने पूछा क्या आप मुझे भी ताड़ का वृक्ष बना देंगे?

बाबा ने कहा चिंता मत करो, मैं तुम्हें मारूँगा नहीं या ताड़ का वृक्ष नहीं बनाऊंगा, बस मेरे चरणों को पकड़े रहो। "तब बाबा ने व्यक्ति को ६ फ़ीट का कर दिया और उसको पास बुलाया। जब मैंने बाबा से रुपये देने की पेशकश की थी मुझे छोड़ देने को तब वह व्यक्ति अट्टहास करके हंसा था। बाबा और वो व्यक्ति दोनों मुस्कुरा रहे थे और मैं सोच रहा था कि दोनों ही महान तांत्रिक है, या वह व्यक्ति भूत भी हो सकता है, जिसे बाबा ने मुझे मारने के लिए बुलाया है। बाबा ने कहा "चिंता मत करो, ये कालिकानंद है "। बाबा ने उन्हें जाने को कहा और वह अचानक से गायब हो गए। फिर बाबा ने कहा " काफी देर हो गयी, हमें अब लौटना चाहिए वरना तुम्हारी ट्रेन छूट जायेगी।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

17. यम और नियम

शुरु के दिनों से बाबा ने नैतिकता के महत्व पर ज़ोर देकर कहा था "नैतिकता आधार है, साधना माध्यम है और दिव्य जीवन लक्ष्य है"।
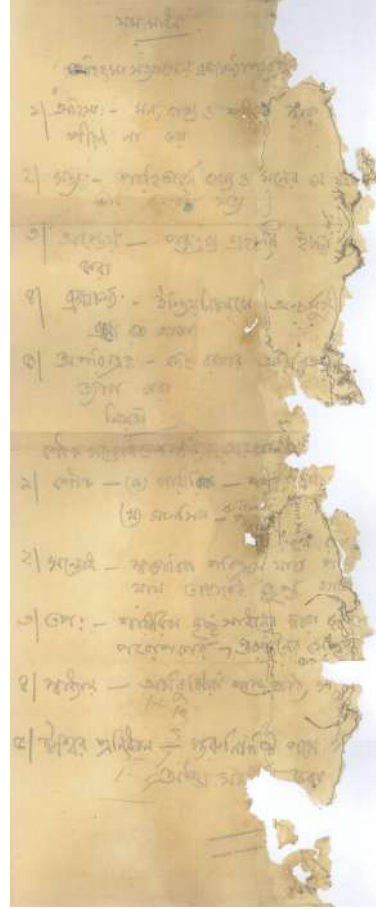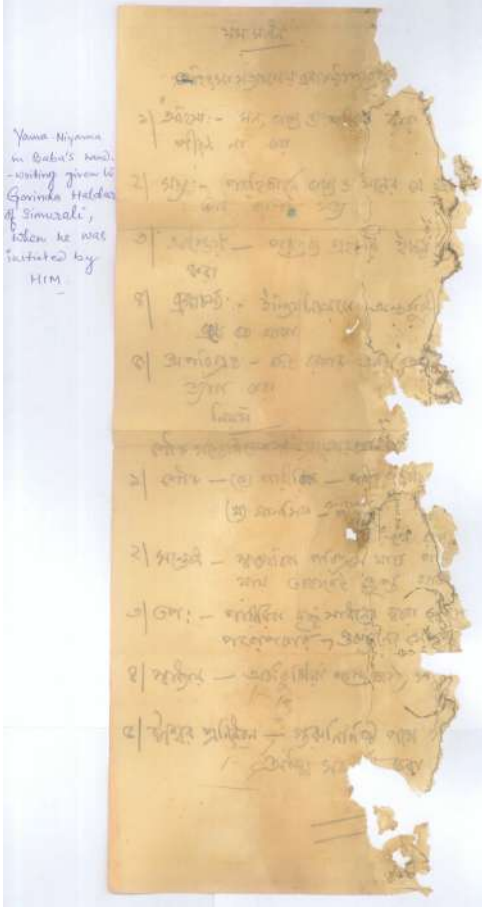
बाबा के द्वारा हस्तलिखित यम नियम जो बाबा ने गोबिन्द हल्दर जी को दीक्षा देने के समय दिये थे।

वर्ष १९५७ में, आनंद पूर्णिमा के मौक़े पर जमालपुर में एक बैठक में, बाबा ने यम नियम पर आलेख दिया 'जीवन वेद' जिसके परिचय में बाबा ने कहा

"नैतिकता साधना की आधार भूमि है। पर यह याद रखना चाहिए कि नैतिकता साधना का चरम लक्ष्य नहीं है, और नीतिवादी होना दूसरों के लिए भले ही चरम आदर्श हो, पर एक साधक के लिए जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है। साधना के प्रारंभ में ही मानसिक सामंजस्य की आवश्यकता होती है। इसी मानसिक सामंजस्य का नाम नैतिकता है।

"नैतिक आदर्श ऐसा होना चाहिये जिससे मनुष्य को साधना मार्ग में चलने की योग्यता के साथ प्रेरणा भी मिले। नैतिकता देश, काल और पात्र के बीच सामंजस्य रखने के प्रयत्न पर निर्भर होती है क्यों कि देश, काल और पात्र में विभिन्नता सम्भव हो सकती है, इसलिए नैतिकता के मापदण्ड भी अलग हो सकते हैं। किंतु नैतिकता का चरम लक्ष्य है अणु–मन का भूमा–मन में समाहित हो जाना इसलिए इसमें आपेक्षिक रूप से त्रुटि की कोई संभावना नहीं होनी चाहिए ।

"आनंद मार्ग की साधना में इसी ब्रह्म–आदर्श को सामने रख कर पहले नैतिक शिक्षा दी जाती है। नैतिक शिक्षा के बिना साधना असंभव है।

"इसलिए कह जाता है कि साधना आरम्भ करने के ठीक पहले से ही सच्ची नैतिकता अपनानी होगी जो व्यक्ति नैतिकता के सिद्धांतों का दृढ़ता से अनुसरण नहीं कर सकता वो आनंद मार्ग में आ कर अपना तथा दूसरों का अहित ना करें।

On 1-1-61.

Your ideal is represented by your conduct. Your learning, your social or economic status have got nothing to do with your ideal.

Anandamurti
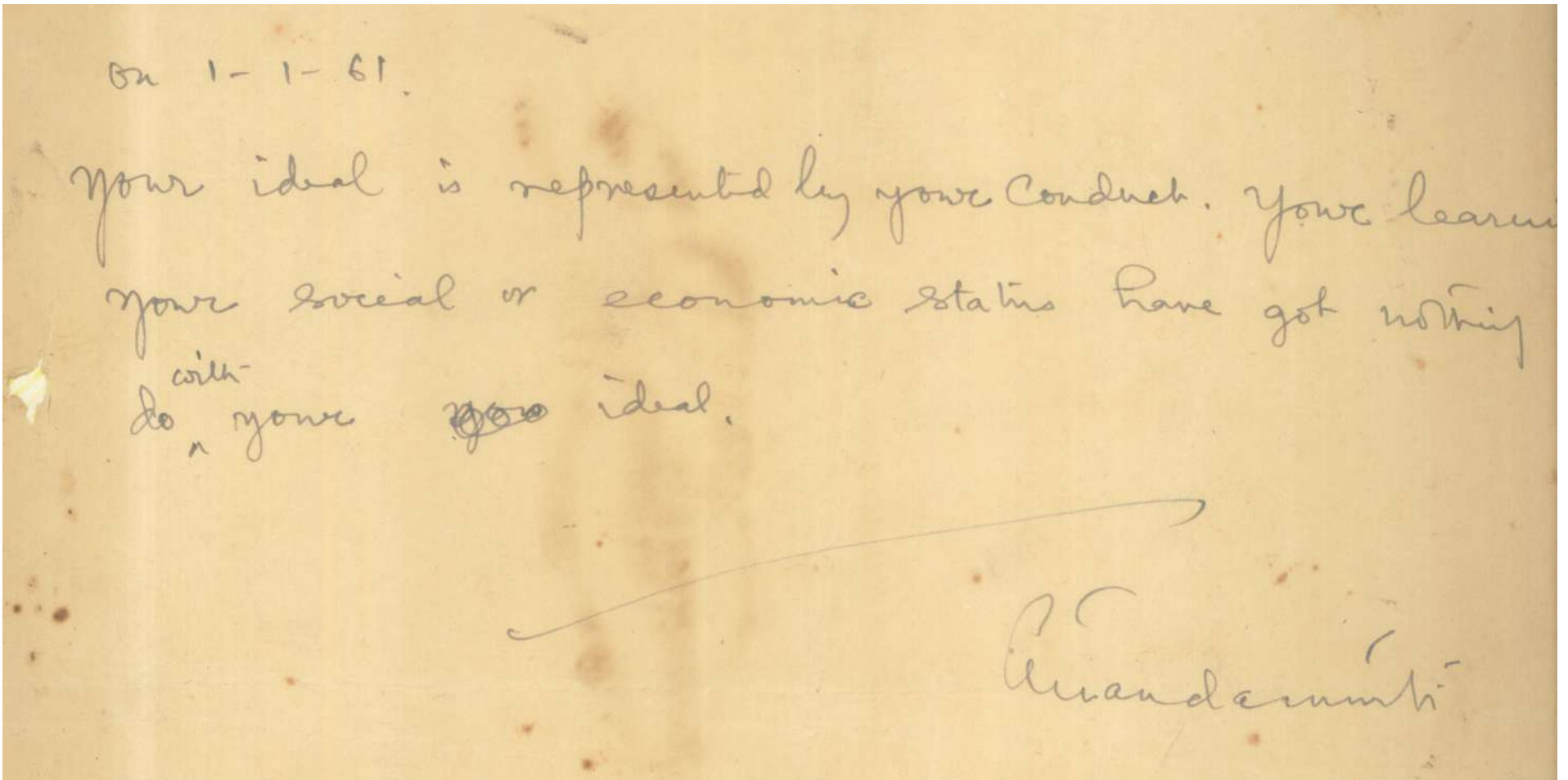
आनंद वाणी, १ जनवरी १९६१, बाबा की हस्तलिपि में : "तुम्हारा आचरण ही तुम्हारे आदर्श का परिचायक है। तुम्हारी शिक्षा के बिना तुम्हारे सामाजिक या आर्थिक स्थिति का तुम्हारे आदर्श से कोई वास्ता नहीं है।"

एक बार बाबा हिसार आए थे, जहाँ कि कृषि महाविद्यालय में मैं प्राध्यापक था। मैं बाबा को जब भ्रमण के लिए महाविद्यालय के नए प्रांगण में ले गया, तो मैं उसकी सुंदरता कि प्रशंसा करते जा रहा था। बाबा ने मेरी बातें सुनी और अंत में कहा, "सिर्फ़ एक बूँद अनैतिकता की, इन सारे सुंदर संरचनाओं को नष्ट कर सकती है।" आज मैं उनके वक्तव्य कि महत्ता समझ पा रहा हूँ।

जी0डी0 शर्मा

बाबा की हस्तलिपि "जो लोग ईमानदार हैं और व्यवहार में अच्छे हैं किसी को भी उन्हें क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए"।
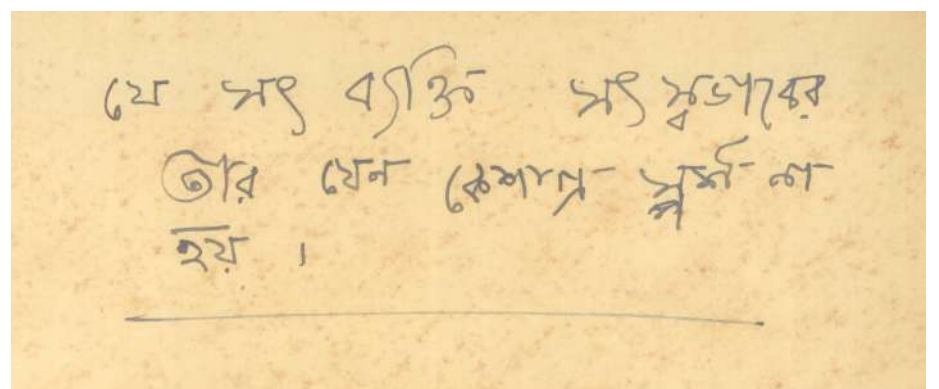
18. चर्याचर्य

बाबा ने मूल आनंद मार्ग चर्याचर्य १६५५ में, आनंद मार्ग प्रचारक संघ के स्थापना के तुरंत बाद ही लिखवायी, प्रथम संस्करण बंगला में अप्रैल १६५६ में; इस प्रस्तावना के साथ प्रकाशित हुईः

"मानव जाति की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक प्रगति कि लिए पहली आवश्यकता एक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था है। आम लोगों के हित–अहित कि बारे में सोचते हुए और उनके स्वाभाविक आदतों पर विचार करते हुए, आनंद मार्ग ने एक नए सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करने का संकल्प लिया है जो वह अपने हाथों से करना चाहता है। जो भी सत्य और स्वाभाविक है उसे स्वीकार किया गया है एवं साथ साथ सामाजिक सुधार के लिए कुछ उपायों का सुझाव दिया गया है। झूठी सभ्यता की आड़ में सामाजिक बुराइयों व मानसिक बीमारियों को छुपाते हुए समाज रूपी शरीर के सड़े घाव को किसी भी रूप में कोई समर्थन नहीं दिया गया है।

यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि पृथ्वी पर सभी शिक्षित और विवेकशील लोग, विशेष रूप से युवा पीढ़ी, निसंकोच तुम लोगों के आदर्श का समर्थन करेंगी। दरअसल, वे ऐसी विचारधारा की ही उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। तुम लोगों की जय हो।"

बाबा ने और निर्देश १६६०,१६७० व १६८० के दौरान दिए, जब नए संस्करण प्रकाशित हुए, व तीन भागों में बाँट दिए गए। पहला अंग्रेज़ी संस्करण, १६६२ के आनंद पूर्णिमा को प्रकाशित किया गया। ये तीनों भाग आनंद मार्ग का समाज शास्त्र है। पहली प्रकाशित पुस्तक जेब के आकार की थी, ताकि लोग उसे आसानी से अपने साथ रख सके।

यह पृष्ठ चर्याचर्य की पहली हस्त लिखित पांडुलिपि से है, जिसे १६५५ में बाबा के द्वारा निर्देशित किया गया, उन्हीं के द्वारा जाँचा गया और उन्हीं के द्वारा सुधार किया गया। उनके द्वारा किए गए सुधारो को लाल रंग में देखा जा सकता है।

सूचीपत्र

१. शिशु जातक कर्मः
२. गृह प्रवेश समारोह
३. विवाह समारोह
४. औपचारिक ब्रह्मचर्य और पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक संबंध
५. आचार्य के साथ संबंध
६. आजीविका
७. स्नान प्रक्रिया
८. आहार (भोजन की प्रक्रिया)
६. पोशाक
१०. सामाजिक उत्सव–अनुष्ठान
११. वृक्षारोपण समारोह
१२. यात्रा शुभारंभ
१३. महिलाओं का स्वास्थ्य
१४. सामाजिक दंड
१५. अंतिम संस्कार (मृत्यु)
१६. श्राद्ध समारोह
१७. नमस्कार की विधि
१८. धर्मचक्रः
१६. ग्राम समिति या जिला समिति
२०. विभिन्न संगठन
२१. विज्ञान और समाज
२२. साधना
२३. आनंदमार्ग की निधि
२४. आसन
२५. समापन शब्द
2६. आचार्य, तात्विक, पुरोधा, धर्ममित्रम्

19. कल्पतरु बाबा

कभी कभी बाबा कल्पतरु रूप में परिवर्तित हो जाते थे।

एक ऐसे ही अवसर पर, १९८१ में, धर्म समीक्षा कार्यक्रम की समाप्ति के एक दिन बाद हम सब बाबा के कमरे में इकट्ठे थे एवं उनकी मालिश कर रहे थे। हमें ऐसा प्रतीत हुआ कि बाबा एक तरह की अलग दुनिया में चले गए हैं। उनकी भाव–भंगिमा और मुख के भाव बिलकुल बदल गये। बाबा बिस्तर पर आधे लेटे हुए थे और अपने एक कुहनी को बिस्तर पर टिका उस हाथ से अपने सिर को सहारा दिए हुए थे। इसे विष्णु मुद्रा कहते हैं, हम सब चुप रहे, एवं उनके शरीर कि मालिश करते रहे।

कुछ क्षणों के बाद बाबा ने कहा, "एकोहम बहुश्यामी ! मैं इस ब्रह्मांड में अकेला था, लेकिन मैंने खुद का कई रूपों में सृजन किया।"

इसके बाद वे चुप हो गए हम लोग उनके शरीर के विभिन्न भागों की मालिश करते रहे। तभी एक विचित्र घटना हुई, बाबा को मालिश करते हुए, अचानक से मुझे उनके शरीर का आभास नहीं हुआ, मैं हतप्रभ था। मैंने दूसरे दादाओं की तरफ़ देखा, एवं हर एक का हाल यही था कुछ क्षणों कि लिए सभी ने महसूस किया कि बाबा का स्वरूप दिखायी दे रहा है।

Handwritten,एक मार्गी को बाबा द्वारा भेजा हुआ आशीर्वचन:"I wish you success against all sins, dogmas and deviations generated by your small 'I'. Life itself is a fight. For a sádhaka this is especially true."८/७/७७

परंतु उनका स्थूल शरीर वहाँ नहीं है ऐसा था, जैसे स्थूल शरीर की जगह बस प्रकाशमय सत्ता है। फिर धीरे–धीरे उनका शरीर वापस से अपने ठोस रूप में आने लगा। इसके बाद, उन्होंने हमसे कहा, " मैं अभी कल्पतरु मुद्रा में हूँ। सिर्फ़ महासम्भूति में ही यह क्षमता है। तुम्हारी जो भी इच्छा है, तुम्हें मुझसे माँग सकते हो और मैं उसे प्रदान करूँगा।"

पूरे कमरे में निःशब्द शांति छा गयी, और कमरा सुगंध से भर गया। वातावरण बहुत ही आध्यात्मिक और सुंदर हो उठा। बाबा ने कहा, "तुम सब सही हो। मनुष्य के रूप में, परम पुरुष से माँगने को कुछ नहीं है। उन्हें सब पता है, अगर वे देखते है कि तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है, तो वे तुम्हें दे देंगे। तुम्हें बस इनकी लीला देखनी है।"

उन्होंने आगे कहा, "उनसे माँगने के लिए सिर्फ़ एक ही चीज़ है, उनके लिए परम भक्ति व प्यार ताकि हर समय तुम उनकी शरण में रहो यह सिर्फ़ परमपुरुष की कृपा से ही मुमकिन है। तुम सभी परमपुरुष के बेटे बेटियाँ हो। वे अपनी इच्छा के अनुसार जो भी चाहे दे सकते हैं वे तुम्हारे पिता हैं। ये उनका कर्तव्य है कि तुम्हारी जो ज़रूरत है वे तुम्हें दें। कुछ भी माँगने की आवश्यकता नहीं है ।

बाबा के साथ रहते हुए

"मैं कामना करता हूँ कि नये भाग्य, नयी संभावनायें व नये अवसरों की तुम पर वर्षा होती रहे।"तुम्हारा आनंदमूर्ति ३/५/५८

20. बाबा प्रतीक को मूर्त रूप देते है।

१६५० की मध्यावधि में बाबा ने प्रतीक की संरचना की। यह आनंद मार्ग का प्रतीकात्मक चिन्ह है जो कि आनंद मार्ग की विचार–धारा के सिद्धांतों का सारगर्भित रूप है।

आनंद मार्ग प्रकाशन द्वारा प्रतीक की परिभाषा

प्रतीक, यंत्र के रूप में आनंद मार्ग की विचारधारा को सारगर्भित रूप से प्रतिनिधित्व करता है। छह–बिंदु वाला तारा दो समबाहु त्रिभुजों से बना है। ऊपर की ओर इशारा करता हुआ त्रिकोण, मानवता के लिए निस्वार्थ सेवा के माध्यम से कार्य करने की ऊर्जा के बाहरी प्रवाह का प्रतिनिधित्व करता है। नीचे की ओर इंगित त्रिकोण ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, ऐसा ज्ञान जो ध्यान के माध्यम से आंतरिक आध्यात्मिक बोध की खोज करता है। केंद्र में सूर्य बहुमुखी सर्वांगीण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है। साधक का लक्ष्य है, इस जीवन में चलते जाना और इसी गति का प्रतीक स्वस्तिक है, जिसका अर्थ है आध्यात्मिक विजय। "

दादा केशवानंद जी ने एक बार बाबा से पूछा कि बाबा द्वारा किए गए कार्यो में से सबसे ज़्यादा किस कार्य में समय और ऊर्जा लगी है।

बाबा ने उत्तर दिया, " वो कार्य जिसने सबसे ज़्यादा मेरा समय लिया, वो है हमारा 'प्रतीक' (आनंद मार्ग का चिन्ह) का आविष्कार, इसमें मुझे आधा घंटा लगा।
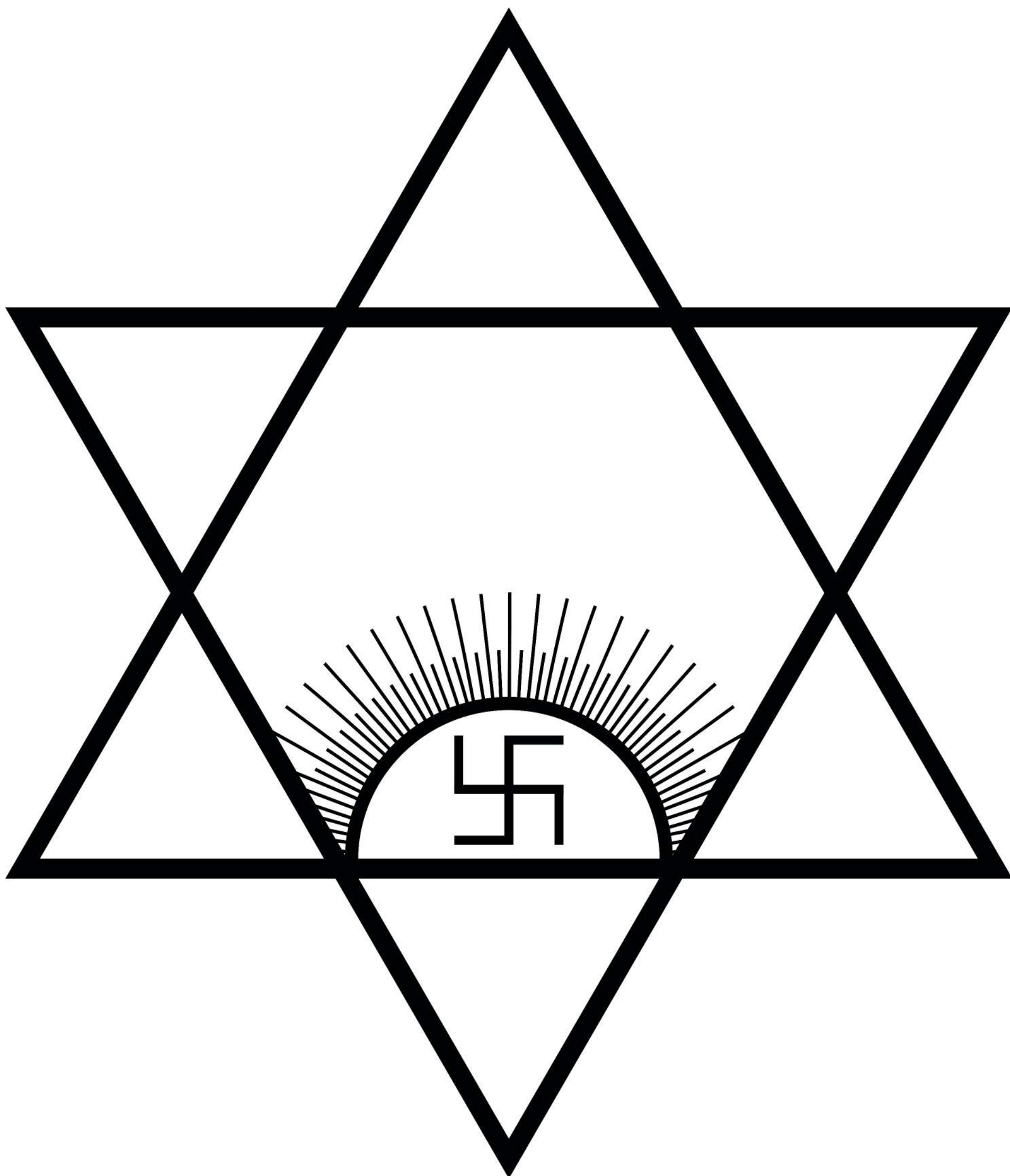
21. मार्गि़य सम्पदा

बाबा ने मार्गि़य सम्पदा नामक अध्याय पहली बार १६५५ में चर्याचर्य में मूल हस्तलिखित पांडुलिपि के रूप में दी और कुछ समय बाद चर्याचर्य १६५६ में प्रकाशित हुआ। बाबा के द्वारा किये गये सुधार लाल स्याही से अंकित हैं।

उस अध्याय का यह अंग्रेज़ी संस्करण है। जो कि १६६२ में पहली बार अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुये चर्याचर्य भाग –१ का भाग था:

तुम लोगों की संपदा

उन्नत दर्शन, विश्व प्रेम, अक्षुण्ण एकता।

तुम लोगों का पताका

त्रिकोण गेरवा रंग का पताका के बीच श्वेत स्वस्तिक चिन्ह।

तुम्हारा प्रतीक

ऊर्ध्व त्रिकोण, अधः त्रिकोण, उसके मध्य में उदीयमान सूर्य और उसके भीतर स्वस्तिक क्रमशः तेज, ज्ञान, अग्रगति और जय का प्रतीक है।

तुम लोग सब तरह से अपने संपद, पताका, प्रतीक और मार्ग गुरु की प्रतिकृति की मर्यादा की रक्षा प्रत्येक अवस्था में किसी भी क़ीमत में करोगे।

१६५६ जमालपुर

यह पताका मई १६७६ के बाबा के यूरोप यात्रा में उनके कार के सामने लगी हुई थी।

22. नगीना जी को लिखे पत्र

१६५० के दशक में जब शिष्य बाबा कि साथ बहुत ही नज़दीकी व आत्मीय रिश्ते का आनंद लेते थे, उस समय बाबा उनमें से कुछ को चिट्ठियाँ भेजते थे। उन्हीं में से एक थे आचार्य नगीना प्रसाद।

यह चिट्ठी बाबा ने आचार्य नगीना जी को १६५६ में 'संस्कार' के ऊपर लिखी थी। चिट्ठी के मुख्य भाग का अनुवाद :–

संस्कार भूमा–मन से अधिक शक्तिशाली नहीं हो सकते। जब अणु–मन भूमा–मन की तरफ़ अपनी यात्रा शुरू करता है– तब वह अविद्या से लड़ता हुआ अपने प्रारब्ध भोग करता हुआ आगे बढ़ता है।

उसकी यह यात्रा एक सैनिक की निर्भीक यात्रा की भांति अटूट यात्रा होती है। उसकी यात्रा का अंतिम ठहराव विजय का मुकुट हासिल करना है– यह वह आभास है जहां उसका अणु–मन भूमा–मन के साथ एकाकार हो जाता है। यह विजय उसको अपने जीवन के आंतरिक और बाहरी दोनों क्षेत्रों में वीर भावना द्वारा अर्जित होती है।

चिट्ठी के बाहर बाबा ने आचार्य नगीना जी ठिकाना लिखा था और उसको डाक से प्रणय दादा ने १६५६ में भेजा था।

शुभाशीर्वाद

Jamalpur
27.4.56

शुभाशीर्वाद विशेष

Kalyáńiiyesú,
नगीना

Samskára Can not be
Stronger than cosmic consciousness.
When unit-consciousness starts
its march towards its supreme
self – the cosmic consciousness,
it advances through fight against
Avidyá and Bhoga of its
Prárabadha. Its march is the
march of a soldier undaunted
and unbaffled. It gets the
final rest when crowned
with victory, – the feeling
of oneness with Him, earned
by the heroic Spirit both
in the inner and outer
Spheres of life.

आनन्दमूर्त्ति

27–4–56.

23. बाघ की कब्र तक के लिए फील्ड वॉक।

बाबा के बचपन के दौरान खड़गपुर की पहाड़ियां और मृत्युघाटी उनकी निजी व् गुप्त घूमने की जगह रही. इन जंगलों ने उन्हें उनकी आध्यात्मिक साधना के लिए आवश्यक एकांत प्रदान किया. जब वे रेलवे कार्यशाला (वर्कशॉप) में नौकरी हेतु कॉलेज के बाद जमालपुर लौटे तो अपने बचपन के दिनों के नैसर्गिक वातावरण में अपनी शाम बिताने की आदत बना ली. वे घास के मैदानों से पहाड़ियों की तरफ जाते, वहां से फिर जलाशय और मृत्युघाटी से आगे जाते और वहाँ से वापस घूमते इस तरह से एक परिक्रमा पूरी करते. मौसम ठीक रहने पर वह अपने घर से ७–७:३० तक निकल जाते और शायद ही १० बजे के पहले घर लौटते. कभी कभी उनके कार्यालय के कोई सहयोगी या उनके पुराने दिनों के दोस्त भी घूमने में शामिल होते. प्रणय दादा व् अन्य लोगों के दीक्षा लेने के बाद बाबा के साथ किसी न किसी का टहलने जाना आम हो गया, लेकिन जमालपुर लौटने के बाद पहले के कुछ वर्षों में वे अकेले ही जाते थे. आमतौर पर टहलने के बीच में बाबा थोड़ी देर ठहर कर बाघ के कब्र पर आराम करते थे. वे वहाँ पर बैठ कर रात्रि के विशालकाय आसमान को निहारते थे.

जब उनके शिष्य इकट्ठे होने लगे तो बाघ की कब्र पर टहलने के बीच में रुककर बैठना उनके संध्या कालीन भ्रमण का स्थायी हिस्सा बन गया. वहां बैठ कर कुछ घंटों के लिए बातें करना, कहानियाँ सुनाना, आध्यात्मिक निर्देश और प्रदर्शन देना और मोमबत्ती की रोशनी में किताबें लिखवाना यह बिलकुल भी असामान्य नहीं था. बाबा उन सभी चीज़ों के बारे में बतलाते थे, जो शिष्य कल्पना कर सकते थे और वैसी भी चीज़ें जिनके बारे में वो कल्पना नहीं कर सकते थे. वे यादें भक्तों के जीवन की सबसे प्यारी यादें रहीं

१९६० तक प्रत्येक दिन फील्ड वाक पर जाने के इच्छुक लोगों की संख्या काफी हो गयी थी, तो उन्हें तीन समूहों में विभाजित किया गया एवं प्रत्येक समूह में अधिकतम चार लोग ही होंगे. एक समूह बाबा के साथ बाघ की कब्र तक जाता जहां दूसरा समूह उनका इंतज़ार कर रहा होता. तीसरा समूह कुछ समय बाद आता जो उनके साथ घर वापस आता।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

बाघ की कब्र, बाबा की प्रिय जगह संध्या भ्रमण के दौरान बैठने के लिए. एक अंग्रेज का बाघ से आमना सामना १९वी सदी के दौरान हुआ, और उस युद्ध में बाघ और अंग्रेज दोनों की मृत्यु हो गई.

बाघ की कब्र, पीछे अंग्रेज की कब्र

24. बाबा और नेताजी

एक बार गुरु पूर्णिमा की रात्रि, बाबा काली पहाड़ी के पास पोलो ग्राउंड में टहल रहे थे। उस दिन बाबा के साथ सिंहभूम के मार्गी श्री हेमचंद एवं अन्य 2 लोग थे। जब वे लोग बाघ की कब्र के पास पहुंचे, बाबा ने अब तक अज्ञात एक घटना बताई, जो कई वर्षों पूर्व घटी थी। बाकी कब्र की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने कहा "देखो हेमचंद, कई वर्षों पूर्व आज के ही दिन सुभाष चंद्र बोस (महान स्वतंत्रता सेनानी जो लोगों के मध्य नेताजी के नाम से लोकप्रिय थे) एवं एम.एन. रॉय मुझसे मिलने बाघ की कब्र पर आए थे।"

वर्षों बाद बाबा ने कहा, "सुभाष ने भारतवर्ष को विदेशी शासन से मुक्त कर अपना कर्तव्य पूरा किया। सुभाष के कार्यों ने सिलसिलेवार रूप से वैसी घटनाओं का सूत्रपात कर दिया, जिसके फलस्वरूप सिर्फ भारत स्वतंत्र ही नहीं हुआ वरना ब्रिटिश साम्राज्य का भी पतन हो गया। भारत की स्वतंत्रता के साथ ही, बाकी औपनिवेशिक शक्तियों को भी अपनी उपनिवेशों को स्वतंत्र करना पड़ा। तो ये कहा जा सकता है की दुनिया में उपनिवेश वाद का अंत सुभाष ने ही शुरू किया था।"

काफी अवसरों पर बाबा ने दिखाया था कि सुभाष ताइवान के विमान दुर्घटना में नहीं मरे थे, जैसा कि आमतौर पर सूचना दी गई थी। बल्कि तिब्बत की गुफा में साधना करते हुए उन्होंने खुद को आध्यात्मिक जगत को समर्पित कर दिया था। १९६९ के अंतिम में या १९७० की शुरुआत में, राँची में बाबा अपने भ्रमण के दौरान लंबी दाढ़ी वाले रहस्यमई शख्स से मिले। जिसके बारे में बाबा ने बताया कि वो सुभाष थे। और १९७० के अंत में या, १९७१ की शुरुआत में बाबा रांची में पुलिस परेड ग्राउंड में दादा अमितानंद के साथ टहलने गए, साथ में वीएसएस सिक्योरिटी की तरफ से गोपाल जी एवं अन्य दो लोग भी थे । परेड ग्राउंड का एक चक्कर लगाने के बाद, बाबा, फ्लैग पोल के नीचे चबूतरे पर बैठ गए। सामान्यतः बाबा किसी न किसी टॉपिक पर कुछ कहते थे, परंतु उस दिन उन्होंने कुछ नहीं कहा। वे बिल्कुल चुपचाप, आसमान की ओर एकटक देख रहे थे, और मौके की गंभीरता को महसूस करते हुए, उनकी शांति में विघ्न डालने की किसी की हिम्मत नहीं हुई । ऐसा करीबन १०–१५ मिनट तक चला अचानक बाबा ने कहा "शाबाश सुभाष शाबाश"। उसके बिना कुछ और कहे बाबा उठे और खामोशी से अपने कार में वापस आ गए।

यहां तक अमितानंद दादा, जो बाबा से बात करने में कभी नहीं हिचकिचाते थे, उन्होंने भी बाबा से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की।

तीन–चार दिनों के उपरांत, दादा अमितानंद जब बाबा के कमरे में बाबा की मालिश कर रहे थे, तब बाबा ने उनसे उस दिन के बारे में पूछा कि उस दिन टहलने के दौरान उन्हें कैसा महसूस हुआ था, और क्या वह यह जानने को उत्सुक नहीं है। कि उन्होंने "शाबाश, सुभाष, शाबाश" क्यों कहा। अमितानंद दादा ने कहा कि, वे वास्तव में जानने के लिए बहुत ही उत्सुक थे, लेकिन परिस्थिति को देखते हुए, बाबा से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं की।

बाबा ने तब बताया कि, "उस दिन सुभाष ने निर्विकल्प समाधि अपने प्रयासों से प्राप्त की थी। निर्विकल्प समाधि सद्गुरु की सहायता के बिना प्राप्त करना आसान नहीं है, किंतु सुभाष ने इस अवस्था को बिना मेरी सहायता के प्राप्त किया। देखो अमितानंद , सुभाष अगर चाहते तो वे भारत के प्रधानमंत्री बन सकते थे, किंतु आध्यात्मिक जगत के परम लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु उन्होंने यह सब त्याग दिया। त्याग का स्तर जो सुभाष ने दिखाया है वह अनुकरणीय है। सुभाष ने जो किया, वह हर मनुष्य को आने वाले समय में प्रेरित करेगा। अगर एक व्यक्ति, जो कि दुनिया में इतना लिप्त रहा हो तो वह क्या सिर्फ अपने प्रयास से जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, हां क्यों नहीं जैसे कि सुभाष ने निर्विकल्प समाधि को प्राप्त किया तो फिर और लोग क्यों नहीं?

कुछ सालों बाद, लेक गार्डन, कोलकाता में, कुछ कार्यकर्ता बाबा के कमरे से बाहर बैठे थे। अचानक बाबा ने अपने कमरे का दरवाजा खोला और कहा "सुभाष अब नहीं रहे", और फिर दरवाजा बंद कर लिया। वह अंतिम बार था, जब बाबा ने सुभाष का उल्लेख किया। उन्होंने कब और कहां शरीर छोड़ा यह अज्ञात है।

बबा प्रणवात्माकानन्दा के नोट्स से संकलित

बबा द्वारा बनाई गई नेता जी की ड्राइंग, उनके लेबोरेट्री नोटबुक से ली गई है।
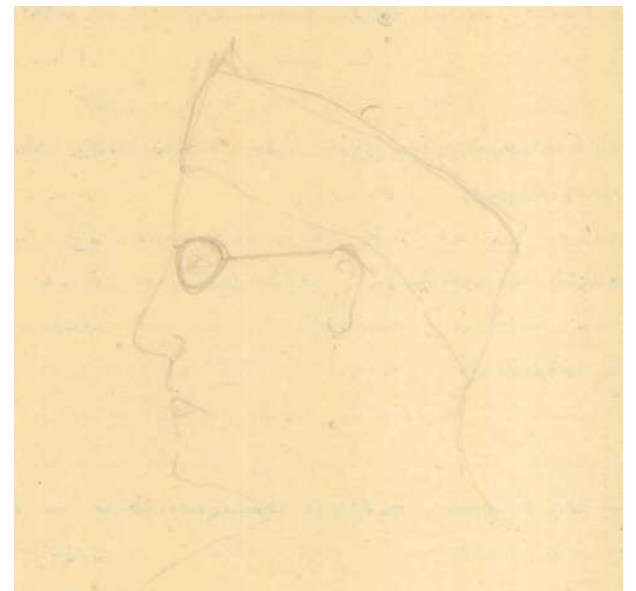
नेताजी सुभाष चन्द्रबोस

25. शिक्षक और परीक्षक की भूमिका में बाबा

मार्च १६५५ में, बाबा ने पहले तात्विक और गृहस्थ आचार्य बनाये – श्री प्रणय कुमार चटर्जी, फिर श्री चंद्रनाथ कुमार, उनकी पत्नी श्रीमती रामपरी देवी, श्री शिशिर दत्त, श्री शिवशंकर बनर्जी और श्री सुकुमार बोस। उनके प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद, बाबा ने शिष्यों को स्वयं दीक्षा देना बंद कर दिया।

सम्पादकीय

१६६० के दशक में, बाबा ने आनंद मार्ग की गतिविधियों का दायरा और गति को बढ़ाकर परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने इस चरण का नाम 'इंटेलेक्चुअल फेज '(बौद्धिक – चरण) रखा। उनके इस कार्य का मुख्य कारण आचार्यों की संख्या में तेजी से वृद्धि लाना था. १६६० तक में, उन्होंने लगभग एक सौ आचार्य बनाए। अगले कुछ वर्षों में, इससे भी अधिक आचार्यों ने परीक्षा उत्तीर्ण की। बाबा का ज्यादातर समय आचार्यों को प्रशिक्षित करने में व्यतीत होने लगा। वह अक्सर उनकी कक्षाएं जाग्रति में लेते थे। इसी प्रकार एक दिन पाठ के अंत में, उन्होंने सबों को इस कार्य के महत्व पर बल देते हुए उनसे कहा, "मुक्ति और मोक्ष तुम लोगों की मुट्ठी में है. जब चाहोगे अपनी मुट्ठी खोलकर इसे प्राप्त कर सकते हो. लेकिन मेरे लिए वह सोने के पलंग के बराबर है। मैं वहां बैठकर कुछ देर आराम कर सकता हूं। लेकिन मुझे अनंत बार इस धरा पर आकर सृष्टि की सेवा करनी होगी।

अब तुम सब मुझे बताओ तुम लोग क्या चाहते हो? तुम लोग मुक्ति और मोक्ष चाहते हो या तुम सब मेरे साथ जन्म जन्मांतर तक आकर सृष्टि की सेवा करना चाहते हो?" वहाँ मौजूद सभी आचार्य, जिनमें से कइयों की आँखों में आंसु थे ने उत्तर दिया कि वे बाबा के साथ वापस लौट कर सृष्टि की सेवा करना चाहते हैं।

बाबा द्वारा लिए गए आचार्यों की परीक्षा, निश्चित रूप से भावनात्मक होती थी। हालांकि, कभी–कभी नए छात्रों को मौखिक परीक्षा के लिए औपचारिक रूप से बाबा के कमरे में भेजा जाता था। बाबा अक्सर बाघ की कब्र पर बैठते और परीक्षा लेते थे कभी–कभी बिना किसी सूचना के भी परीक्षा लेते थे । टेस्ट में उत्तीर्णांक तीस था । लेकिन ऐसा बहुत कम होता था, कि कोई भी आचार्य बाबा के प्रश्नों का अच्छे से उत्तर देकर परीक्षा पास कर सके। यदि बाबा उनके प्रयासों से संतुष्ट होते, तो वे बाकी के अंक अनुग्रह पर देकर पास कर देते थे, जैसा की अपेक्षित था, परीक्षा बौद्धिक ज्ञान जांचने के लिए नहीं वरना ईमानदारी और समर्पण के लिए होती थी। यह कोई नयी बात नहीं थी कि एक नए आचार्य ने एक अंक अपने उत्तरों के लिए प्राप्त किया और उनतीस अंक ग्रेस के साथ परीक्षा उत्तीर्ण की है।

बबन जी की आचार्य परीक्षा का तो दर्शन से कोई लेना–देना ही नहीं था। गोपेन उन्हें परीक्षा देने के लिए बाबा के घर ले आये। लेकिन बाबा उसे मैदान में ले गए। बाबा पहाड़ी पर चढ़ गए और एक बड़ी चट्टान पर बैठ गए। इसके पश्चात बाबा ने उनसे कहा, "उस छोटी पहाड़ी पर चढ़ जाओ और नीचे कूद जाओ। डरो मत, तुम्हें चोट नहीं पहुंचेगी। "जैसा बाबा ने उन्हें करने को कहा, बबन ने वही किया, और बाबा का नाम लेकर वह कूद गये । और उन्होंने पाया की वह बस दलदल में है और उन्हें कुछ भी नहीं हुआ सिर्फ उनके कपड़े गंदे हो गए। उन्हें उठाते हुए, बाबा ने कहा, तुम्हारी आचार्य परीक्षा समाप्त हुई तुम उत्तीर्ण हो गए।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

आचार्य प्रमाण पत्र, बाबा द्वारा हस्ताक्षरित

Aananda Maarga
Certificate

I hereby authorise Shrii Kishunjee
born on 1st July 1909 of Vill:- Nagwa P.O. Manjhwari Dist Sahabad
(Permanent address) to Serve the Marga founded by Sri Sri Aanandamuurtijii,
as a/an Ácárya on and from 18th January 1956
Sri/Srimati Kishunjee received his/her training
from Márga Guru certificate No.

Anandamurti
19-5-57

REGISTERED
S/No. 52
Date 19.5.1957

Secretary, 19/5/57.
A'nanda Ma'rga Board Of A'ca'ryas (Central)

Examined by:-
1. R/no.
2. ,,
3. ,,
4. ,,
5. ,,

26. रावा
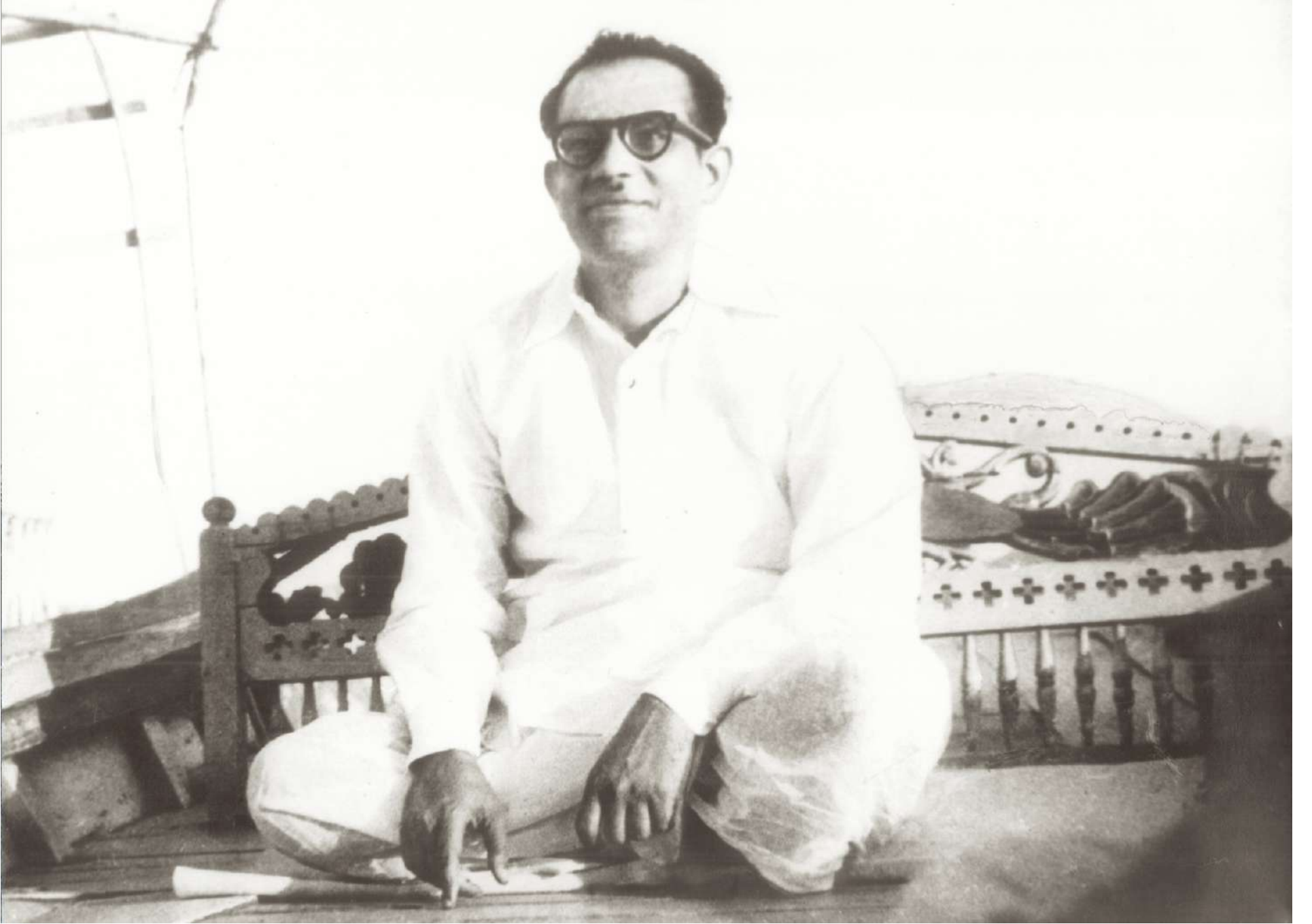
२६. जनवरी १६५८ को, भागलपुर डीएमसी में त्रिमोहन में पुनर्जागरण यूनिवर्सल (आरयू) का उद्घाटन किया गया था, जिसका उद्देश्य समाज में एक बौद्धिक और सांस्कृतिक क्रांति का आयोजन करना था। बाबा ने रावा के उद्घाटन के उपलक्ष्य लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि "आज की समस्या" क्या है। इसी भाषण को बाद में "प्रॉब्लम ऑफ द डे" के रूप में प्रकाशित किया गया था। बाबा ने इस भाषण का समापन प्राचीन ऋगवेद के वैदिक श्लोक "संगच्छध्वं संवदध्वं" से किया था जिसका अर्थ है हम सबको एक मन से साथ चलना है. इसी एकता की भावना के साथ यह भाषण समाप्त हुआ। इस श्लोक को उन्होंने चर्याचर्य के धर्मचक्र अध्याय में जोड़ा और इस श्लोक को सामूहिक ध्यान से पहले तीन बार गाया जाता है ।

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे सञ्जानाना उपासते ।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

(हम एक साथ चलें, हमारी विचार–तरंगें भी एकसी हो, आइए हम अपने मन को एक साथ जानें, दुनिया के सभी संसाधनों का मिल कर उसी तरह उपभोग करें जिस तरह अतीत में ऋषि यज्ञ की हवि स्वीकार करते थे ताकि इस हरी–भरी वसुंधरा पर हम हर्ष से रहे। हमारी आकांक्षाएं एक हो, हमारे दिल अविभाज्य बनें, हमारे मन एक मन के रूप में रहे, ताकि हमारी लय एक हो और समन्वय में रहते हुए हम भूमा–मन में समाहित हो जाएं। यह श्लोक बाद में धर्म– महाचक्र का नियमित हिस्सा बन गया।

आर यू के उद्घाटन के एक हफ्ते बाद, रविवार २ फरवरी १६५८ को, बाबा ने रेनेसां आर्टिस्ट और राइटर्स एसोसिएशन (RAWA) के गठन की घोषणा करते हुए कहा कि यह साहित्य और कला जगत में जान फूंकने के उद्देश्य से रेनेसां यूनिवर्सिटी का एक सहायक होगा। कलाः "साहित्य वह है जो समाज के साथ मिलकर चलता है और समाज को सेवा की प्रेरणा प्रदान करके सच्ची पूर्णता और कल्याण की ओर ले जाता है। कला के लिए 'कला' का कथन स्वीकार्य नहीं हैः बल्कि हमें कहना चाहिए, "कला का उद्देश्य है आहत मानवता की सेवा और चैतन्य की दिशा में बढ़ते मानवता के कदम ।"

रावा में ललित कला की मुख्य शाखाओं को कवर करने वाले पांच उप–वर्ग हैंः कलाकार और चित्रकार संघ, नाटक और सिनेमा–कलाकार संघ, संगीतकार और नर्तक संघ, लेखक संघ और पत्रकार संघ, और संपादक।

रावा की स्थापना में बाबा का उद्देश्य दूरगामी था। उन्होंने कलाकारों और लेखकों को उत्प्रेरक के रूप में देखा जो उच्च मानवीय मूल्यों के आधार पर एक नए समाज के स्तंभों का निर्माण करने में मदद करेंगे। अपनी विशेष प्रतिभा के कारण, वे सामान्य लोगों की सोच को आकार देने और लोगों में एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण और नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर एक नए समाज के निर्माण करने की प्यास मानव मन में जगा देंगे।

बाबा ने कलाकारों को संघर्ष से डरने और विरोध और उत्पीड़न के सामने भी सच्चाई पेश करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने घोषणा की, "अकेले लोक कल्याण की सोच सभी कलात्मक और साहित्यिक सृजन के पीछे प्रेरक शक्ति होनी चाहिए। ऐसी प्रेरक शक्ति जो कला के माध्यम से खुशी बिखेरती हुई नए युग का सूत्र–पात करे। इस तरह के साहित्य से ही मानव के कुंठित मन में सूक्ष्म बौद्धिक चेतना जाग सकती है।"

अपने फ़ील्ड भ्रमण के दौरान एक दिन बाबा ने अस्थाना जी को रावा की एक और भूमिका के बारे में बताया दृ साहित्य को समाज पर छद्म संस्कृति के नकारात्मक प्रभाव को भी हटाना होगा। उन्होंने टिप्पणी की, "भविष्य में छद्म संस्कृति मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा होगी। यह लोगों को पतन की ओर ले जाएगी। रावा को छद्म संस्कृति के भ्रामक प्रभावों से सभी को बचाना होगा।"

श्री श्री आनन्दमूर्ति, एडवेन्ट ऑफ ए मिस्ट्री
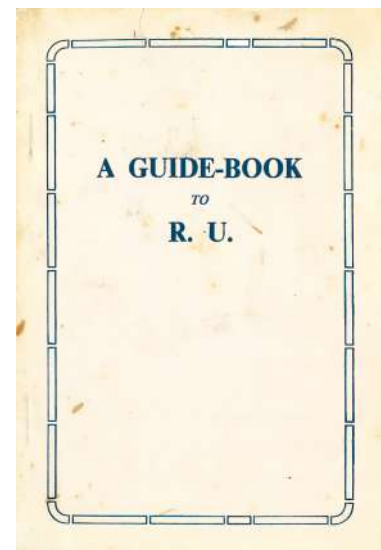
प्रारम्भिक परिचयात्मक पुस्तिका

27. यौगिक चिकित्सा

बाबा ने १९५७ में अपने भोजन के समय के दौरान सुकुमार बोस को यौगिक चिकित्सा ओर द्रव्य गुण (यौगिक उपचार और प्राकृतिक उपचार) के बारे में लिखवाया था। यह पुस्तक अगले वर्ष १९५८ के मई में प्रकाशित हुई थी।

प्रस्तावना में, दिनांकित कार्तिक पूर्णिमा (नवंबर की पूर्णिमा) १९५७, बाबा ने लिखा हैः

"चिकित्सा की कला का उद्देश्य किसी रोगी को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से ठीक करना है। तो मुख्य प्रश्न चिकित्सा विज्ञान के किसी विशेष स्कूल को बनाए रखने के लिए नहीं है; बल्कि, प्रमुख कार्य रोगी का कल्याण है।

"जिस तरह रोगग्रस्त शरीर के अंगों को आंतरिक या बाह्य रूप से दवाई देकर सामान्य रूप से ठीक किया जा सकता है वैसे ही योगासन और मुद्रा की मदद से अधिक सुरक्षित और अधिक पूरी तरह से स्वस्थ्य किया जा सकता है। इसलिए, इस पुस्तक का उद्देश्य आम जनता को विभिन्न बीमारियों के इलाज के यौगिक चिकित्सकीय तरीकों से अवगत कराना है।

मेरा उद्देश्य लोगों को इस पुस्तक में वर्णित आसनों और मुद्राओं का अभ्यास करके वे खुद को ठीक कर सकते हैं। लोगों से अनुरोध किया जाता है कि वे खुद उस आसन और मुद्रा का अभ्यास करने का जोखिम न लें, बल्कि एक अनुभवी आचार्य के मार्गदर्शन में ऐसा करें। आनन्द मार्ग के आचार्य बिना किसी पारिश्रमिक के मदद के लिए हमेशा तैयार रहेंगे।

आनन्द मार्ग के चर्याचर्य भाग तीन में स्नान आदि के लिए अभ्यास करने के विस्तृत निर्देश दिए गए हैं। यदि आवश्यक हो तो पाठक उस पुस्तक से परामर्श कर सकता है।

"आसनों और मुद्राओं के साथ, कुछ मुफ्त या सस्ती और आसानी से उपलब्ध होने वाली सिद्ध और उपयोगी, औषधियां का नाम भी इस पुस्तक में दिया गया है। साथ ही साथ उनके किन तरीकों से लेना है उसका भी विवरण दिया गया है। आवश्यकता के अनुसार लोग अनुभवी आचार्यो से भी परामर्श ले सकते हैं।

"समय की सीमाओं के कारण, मेरे लिए किसी के साथ व्यक्तिगत पत्राचार में प्रवेश करना संभव नहीं है। कोई भी व्यक्ति जिनके पास आसन और मुद्रा और उनके प्रदर्शन या दवाओं और उनके अनुप्रयोगों के बारे में प्रश्न हैं, वे अपने संबंधित आचार्य से संपर्क कर सकते हैं... आज के लिए बहुत कुछ।"

प्रत्यक्ष रूप से बाबा ने श्रुति लेख के दौरान सुकुमार बोस को जिक्र करते हुए कहा कि कालिका नंद ने पौधों को इकट्ठा करके और खुद पर उपचार का परीक्षण करके अपने शोध में उनकी मदद की थी।

यौगिक चिकित्सा ओर द्रव्य गुण के प्रकाशन के समय के आसपास बाबा।
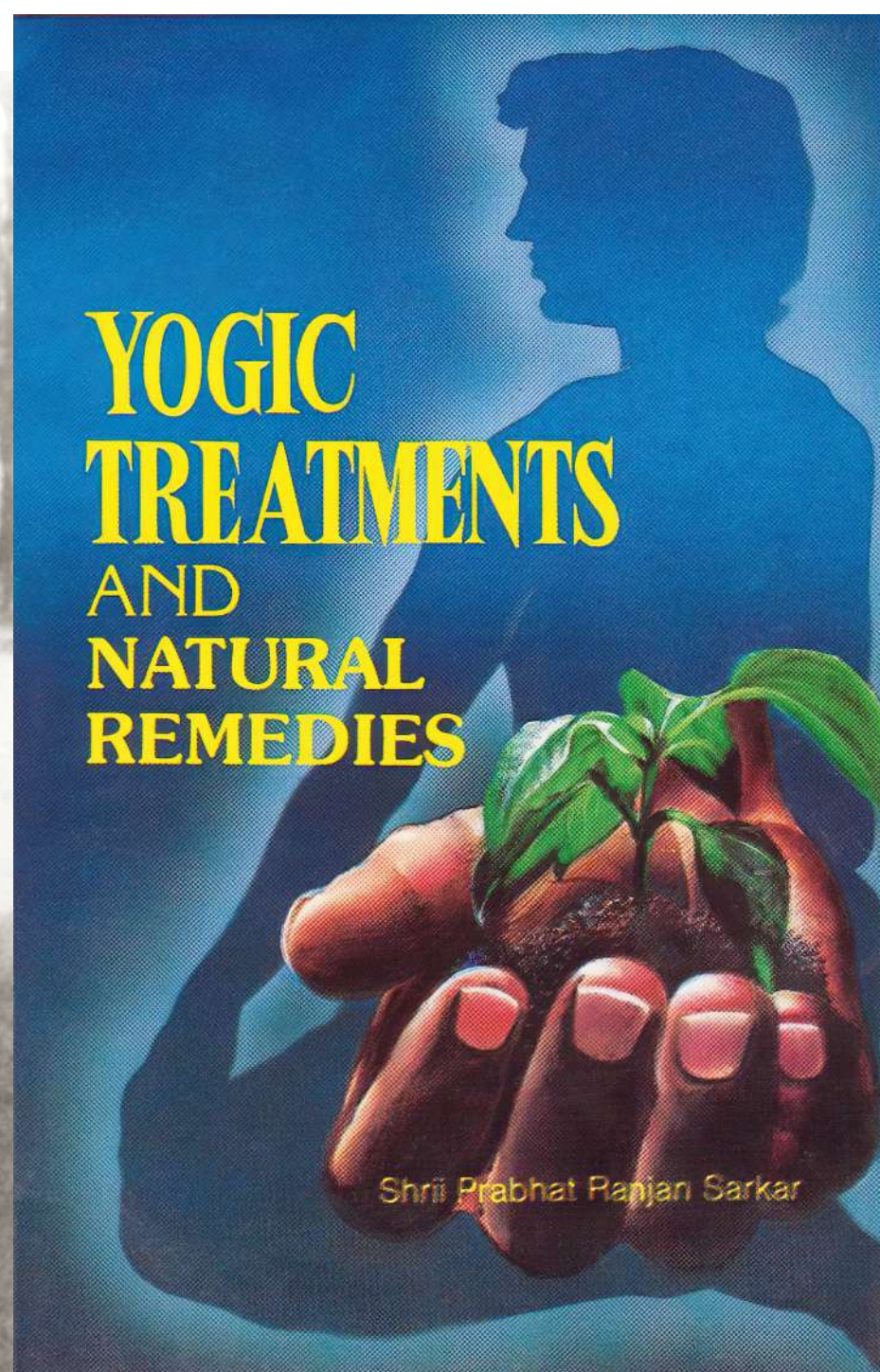
28. प्राउत

बाबा ने १६५८ के जनवरी में भागलपुर में, आज की समस्या, आरयू संबोधन दिया था, जो "महान नायक श्री सुभाष चंद्र बोस, जिनसे मैं अत्यंत स्नेह करता था और जिनसे मैं अब भी प्यार करता हूँ" के लिए समर्पित था।

बाबा का समर्पण केवल उन प्रदर्शनों का संदर्भ नहीं था जिसमें उन्होंने दिखाया था कि नेता जी अभी भी जीवित थे, बल्कि यह भी संकेत था कि यह भौतिकवाद और व्यक्ति वाद के बजाय आध्यात्मिकता पर आधारित एक क्रांतिकारी नए सामाजिक सिद्धांत के लिए समय था।

अगले वर्ष लैंडमार्क दार्शनिक ग्रंथ "आइडिया एंड आइडियोलॉजी" को मुख्य रूप से अंग्रेजी में सामयिक स्पष्टीकरण के साथ हिंदी में दिया गया। सब से पहले, बाबा ने २७ मई से ५ जून १६५६ तक मुजफ्फरपुर मेंडी.एम.सी. के बाद तात्विकों की दस दिनों की प्रशिक्षण कक्षाओं के रूप में इस दार्शनिक ग्रंथ पर व्याख्यान दिये। फिर अगले सप्ताह उन्हीं प्रवचनों को बाघ की कब्र पर संग्रह के रूप में प्रस्तुत किया।

उस श्रृंखला के अंतिम दो प्रवचनों में, बाबा ने औपचारिक रूप से प्राउट (प्रोग्रेसिव यूटिलाइज़ेशन थ्योरी) के सामाजिक आर्थिक सिद्धांत को पेश किया – जिसमें (सामाजिक चक्र), दुखिप्रस (आध्यात्मिक क्रांतिकारियों), और साध्विप्रा सोजा (आध्यात्मिक समाज) की अवधारणाएं शामिल थीं। वह १६६२ में नंदा सूतराम, और १६६७ में ह्यूमन सोसाइटी पार्ट २ में, साथ ही साथ कई अन्य प्रवचनों के साथ पेश की गई. बाबा ने कहा इन दो प्रवचनों को वे उस वर्ष के विस्तार से बताएंगे। प्राउट के पांच मौलिक सिद्धांत "आइडिया एंड आइडियोलॉजी" पुस्तक में प्रकाशित हुए।

"आइडिया एंड आइडियोलॉजी" के अंतिम प्रवचन में बाबा ने कहाः

"आध्यात्मिकता सिर्फ़ एक आदर्शवादी आदर्श नहीं बल्कि एक व्यावहारिक दर्शन है जिसे दैनिक जीवन में अभ्यास से महसूस किया जा सकता है चाहे वो कितना भी साधारण या सरल प्रतीत होता हो... इस प्रकार, आनन्द मार्ग का सामाजिक दर्शन व्यक्ति के सर्वतोमुखी व्यक्तित्व के विकास की वकालत करता है, और विश्व बिरादरी की स्थापना कर के मानव मनोविज्ञान में एक सार्वभौमिक भावना का समावेश चाहता है। प्राउट, प्रगतिशील उपयोग के सिद्धांत की वकालत सारी मानवता के लिए करता है।"

बाद में, १६८७ में, बाबा को कहना पड़ा

"पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों का पतन उनकी अंतर्निहित स्थिरता के कारण अपरिहार्य है। पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों ही इस दुनिया से विलुप्त होने के कगार पर हैं। पूंजीवाद के बाहरी और आंतरिक क्षेत्रों में सामान्य बढ़ोतरी है, लेकिन इसके आंतरिक और बाहरी क्षेत्रों के बीच एक विरोधाभास है। पूंजीवाद आत्म–केंद्रित लाभ प्रेरित मनोविज्ञान है यह सभी के कल्याण के लिए कुछ नहीं करता बल्कि इस वाद में कुछ व्यक्ति धन का आतिशय संचय करते हैं और आम लोगों का शोषण करते हैं। इसलिए, पूंजीवाद मानव प्रगति के समन्वित विकास के लिए स्वाभाविक नहीं है। इसलिए एक दिन आयेगा जब पूंजीवाद पटाखे की तरह फूटेगा।"

आनंद वन, १ जनवरी १६६६, बाबा की अपनी लिखावट मेंः "सभी को एक साथ मिल कर आगे बढ़ने को समाज की संज्ञा दी गई। जो लोग पिछड़ गए हैं, उनका तिरस्कार करने के बजाय, उन्हें आगे बढ़ने में मदद करें। यह अकेले तुम्हारा सामाजिक धर्म होगा।"आनंदमूर्ति १–१–६६

Ref :   Date ....

সবাই মিলে একসাথে চলার নামই
সমাজ। যে পেছিয়ে রয়েছে তাকে
ঘৃণা না করে এগিয়ে যেতে
সাহায্য করো, এটাই হবে তোমার
সমাজধর্ম।

আনন্দমূর্তি
১-১-৬৬
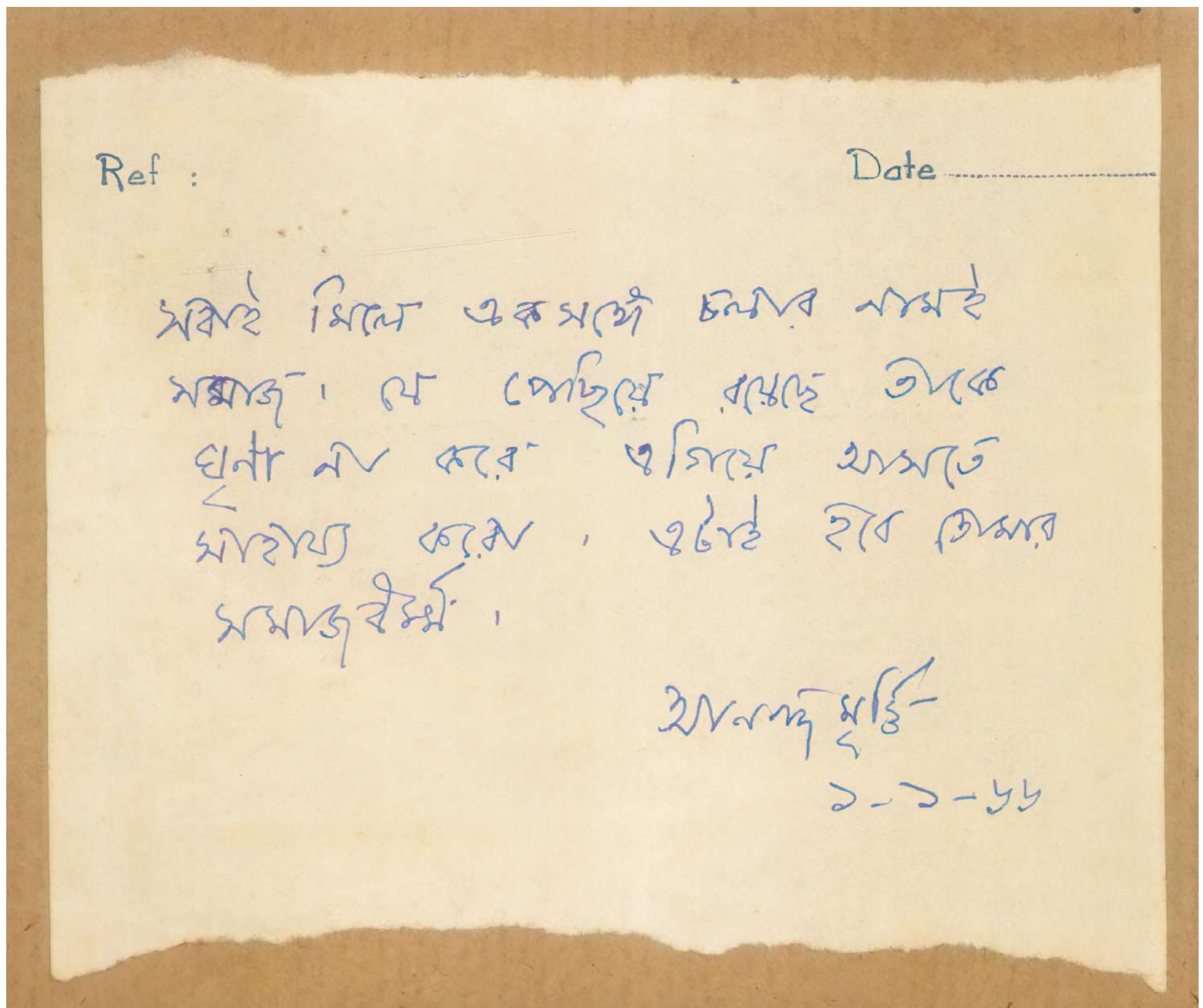
29. आनन्द वाणी

१ जनवरी १९५६ को, बाबा ने अपने आनन्द वाणी १९५६ (आनंद संदेशों) में से पहला दिया:

बहुत दिनों के अवहेलित नर–नारायण आज जाग गये हैं। यह जागृति मानव इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत करेगी। उसी अनागत परंपरा के तुम्हीं लोग प्रथम दूत हो।

इसके बाद आगामी वाणी नए साल के दिन और आनन्द पूर्णिमा (उनके जन्मदिन की पूर्णिमा) पर दी गई, साथ ही कुछ वर्षों से श्रावणी पूर्णिमा, और १ अक्तूबर १९७७ को जेल से एक अतिरिक्त वाणी दी गई।

वाणियों का यह चयन हस्तलिखित और बाबा द्वारा हस्ताक्षरित था:
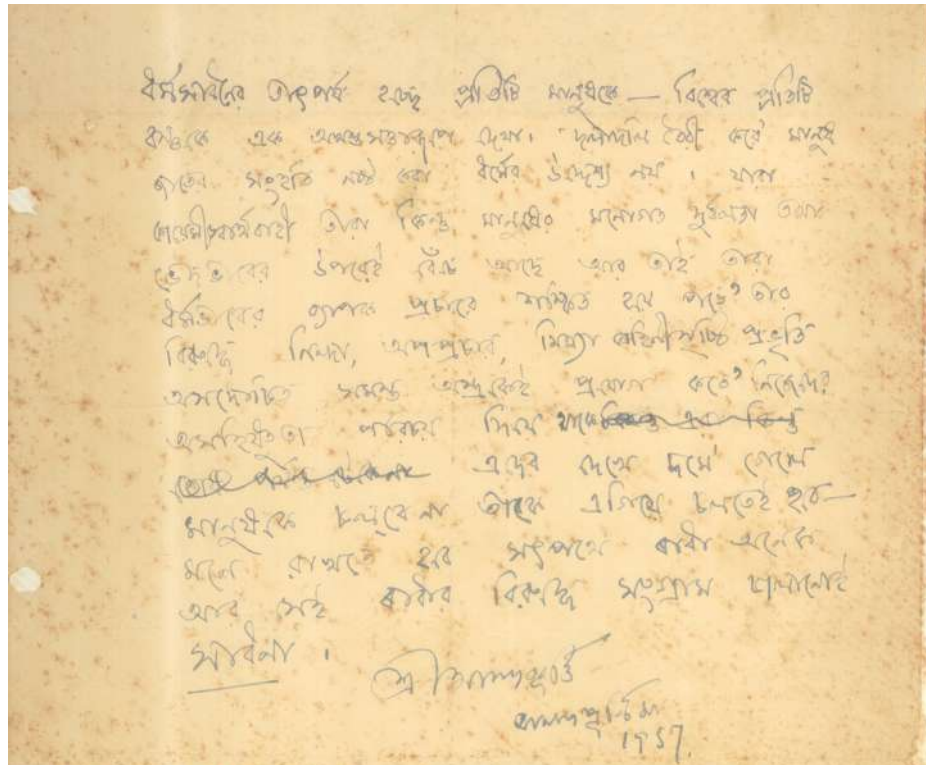
"धर्म साधना का तात्पर्य है प्रत्येक व्यक्ति को इस ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु को एक अखण्ड सत्ता के रूप में देखना है। गुट बनाकर मानव जाति की एकता को खतरे में डालना धर्म का उद्देश्य नहीं है। जो लोग निहित स्वार्थों को प्रोत्साहित करते हैं, वे लोगों की मानसिक कमजोरियों और उनके विघटन पर जीवित रहते हैं, और यही कारण है कि वे धर्म के आदर्शों के प्रसार से डरते हैं और इसके प्रति अपनी असहिष्णुता को सभी प्रकार के अनैतिक तरीकों से प्रदर्शित करते हैं, साथ ही गलत प्रचार करते हैं और झूठ भी फैलाते हैं । इन्हें देखकर लोगों को रुक जाना नहीं चाहिए। उन्हें आगे कदम बढ़ाते चलना है। यह ध्यान में रखना चाहिए कि सत पथ पर मानव के लिए अनेक बाधाएं हैं, और उन्हीं बाधाओं के विरुद्ध संग्राम करना ही साधना है।।"

आनन्द पूर्णिमा १९५७
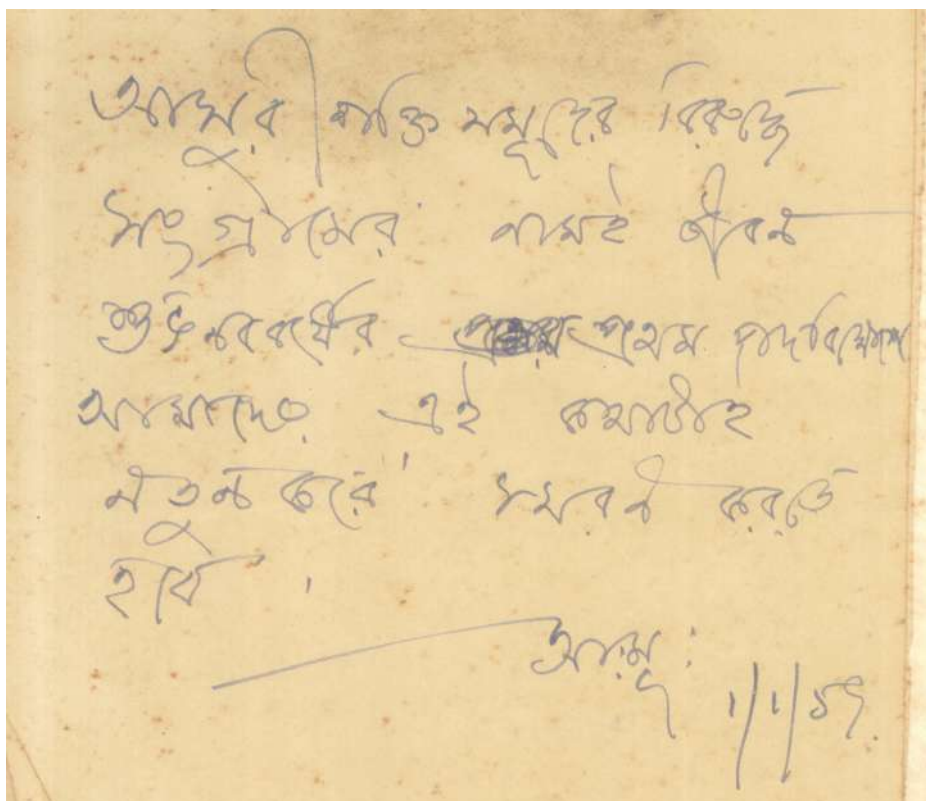
"आसुरी शक्तियों के विरुद्ध संग्राम ही जीवन है। शुभ नव वर्ष के प्रथम चरण हमें इस लक्ष्य को एक बार फिर से स्मरण करना होगा।"

१ जनवरी १९५९

बाबा ने आखिरी वाणी आनन्द पूर्णिमा 1990 पर दी:

"इस ब्रह्मांड में सब कुछ गतिमान है। घंटे, दिन, मनुष्य, तारे, ग्रह, निहारिका – सभी आगे बढ़ रहे हैं। गति सभी के लिए आवश्यक है, इसकी समाप्ति की कोई गुंजाइश नहीं है। गतिशीलता का मार्ग हमेशा न तो फूलों से भरा होता है और ना ही यह कांटों से घिरा होता है और न ही हिंसक झड़पों से भरा होता है। मार्ग की प्रकृति के अनुसार मानव को स्वयं को तैयार करना होता है और साहसपूर्वक आगे बढ़ना होता है। जीवन का सच्चा सार मात्र इसी गतिशीलता में निहित है।"

बाद में सभी वाणियों को संकलित कर आनन्द वाणी संग्रह के रूप में प्रकाशित किया गया।
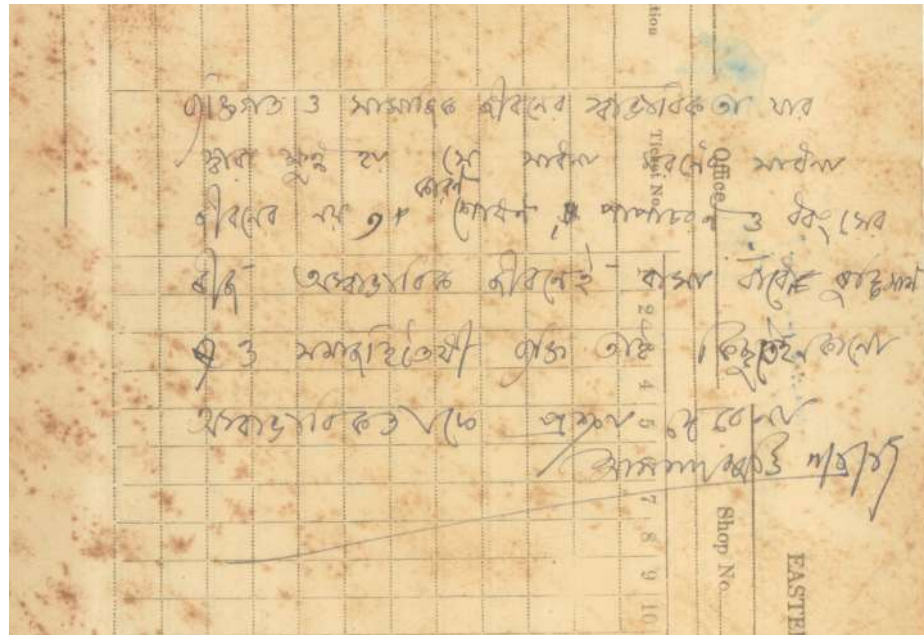
जिस साधना से व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की स्वाभाविकता दूषित होती है, वह साधना मृत्यु की साधना है. जीवन की साधना में अन्याय, अनैतिकता और विनाश के बीज नहीं होते, वे केवल अस्वाभाविक जीवन में रहते हैं। इसलिए, समाज के बुद्धिमान और शुभचिंतक व्यक्ति जीवन में कभी भी अस्वाभाविकता को प्रश्रय नहीं देते हैं।"

आनन्द पूर्णिमा १९५९

For 1st January/60

Struggle is the essence of life. Yours should be a panseless struggle against corruptions, hypocrisy and animality.

Anandamurti
4-12-59.
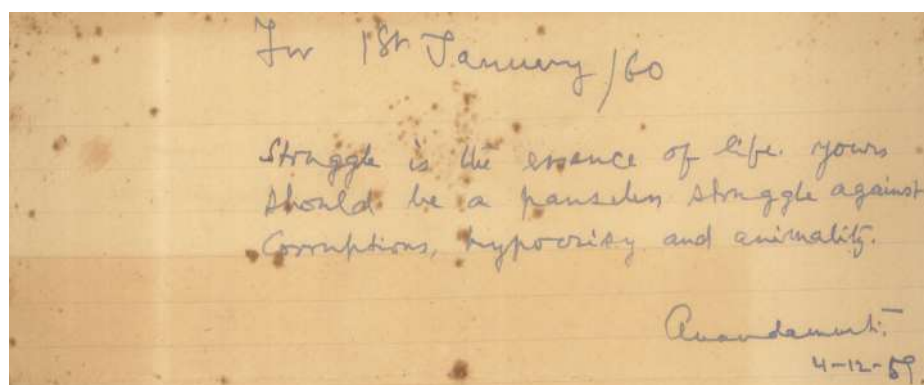
"संघर्ष जीवन का सार है। "भ्रष्टाचार, पाखंड और पशुता के खिलाफ एक हमारा संघर्ष भयरहित होना चाहिए।"

१ जनवरी १९६०
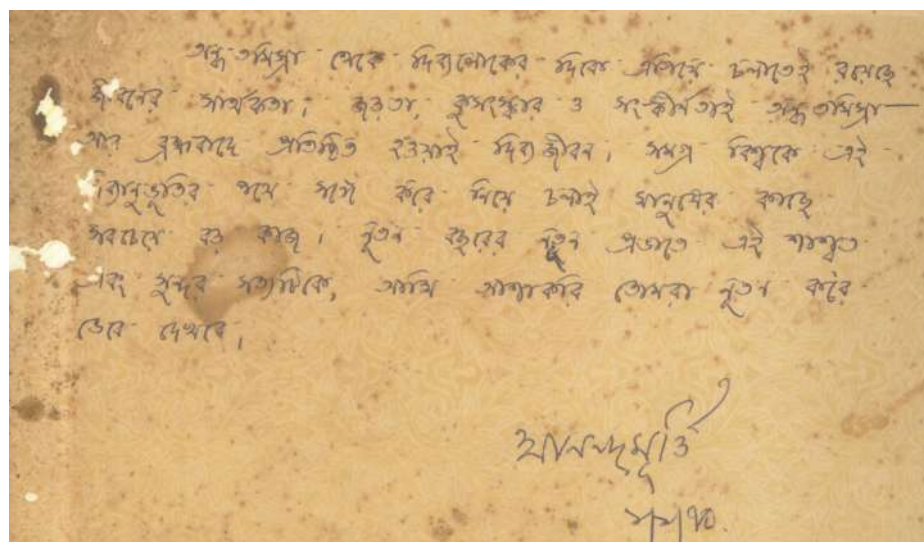
घोर–अंधकार से दिव्य–लोक की और अग्रसर होना ही में जीवन की सार्थकता है। जड़ता, कुसंस्कार, और संकीर्णता ही घोर अंधकार है और ब्रह्म–जीवन में प्रतिष्ठित होना ही दिव्य–जीवन है। समग्र विश्व को इस संस्कार के पथ पर साथ लेकर चलना ही मनुष्य का सबसे बड़ा कार्य है। नूतन वर्ष के नूतन प्रभात में इस शाश्वत एवं सुंदर सत्य को मैं आशा करता हूं, तुम नये रूप में अपना नव–सर्जन करोगे।

१ जनवरी १९७०

30. बाबा का विवाह उमा जी के साथ
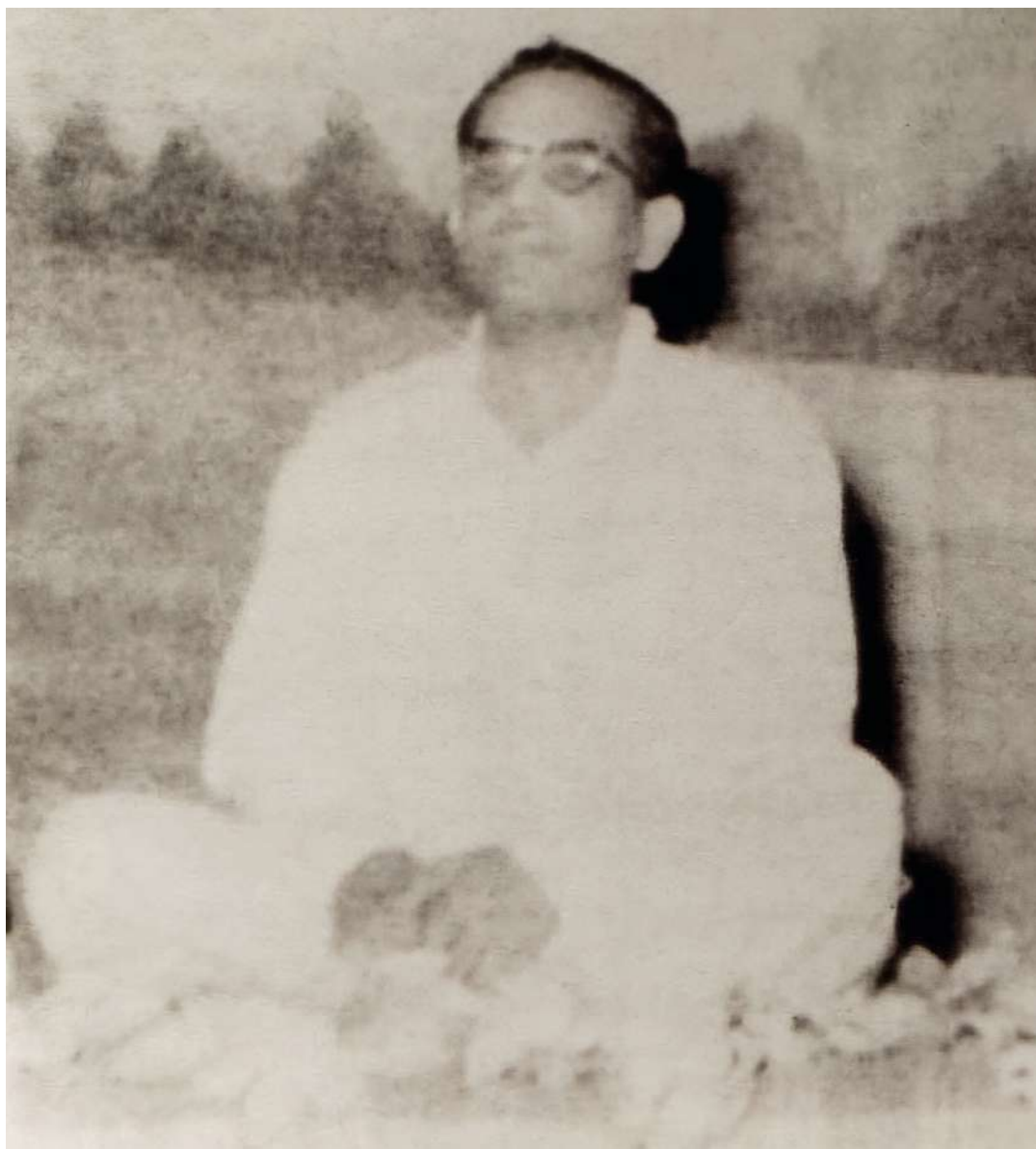
२५. मई १९६० को सहरसा में दिए गए अपने डी॰एम॰सी॰ प्रवचन तंत्र और साधना में बाबा ने कहाः

"तन्त्रसार में श्रेष्ठ उपदेशकों के गुणों को रेखांकित किया गया है
शान्तो दन्तो कुलीनश्च विनीता शुधःवेश्वान ।
शुद्धाचारी सुप्रतिस्ढ्ता सूचिर्दक्षः सुबुधिमान।।
आश्रमि ध्याननिष्ठाश्च तन्त्र मन्त्र विशारदः।
निग्राहानुग्रहे शाक्तिं गुरु इत्यादिभिधियते ।।

(संकलित, स्व–नियंत्रित, कुंडलिनी को बढ़ाने में निपुण, विनम्र कपड़े पहने हुए, आचरण में अनुकरणीय, आजीविका को ईमानदारी से कमाने का साधन होना चाहिए. वे विचारों में शुद्ध, आध्यात्मिक पंथ के व्यावहारिक और सैद्धांतिक पहलुओं में निपुण, अत्यधिक बुद्धिमान, गृहस्थ, पूरी तरह से ध्यान में स्थापित, तंत्र और मंत्र में निपुण, दोनों को दंड देने और शिष्य को अनुग्रह प्रदान करने में सक्षम – केवल ऐसा व्यक्ति ही गुरु कहलाने का हकदार है।)

"गुरु बुद्धिमान ही नहीं उनको सुबुद्धि–मान (अति–बुद्धिमान) होना चाहिए। गुरु का एक आश्रम होना चाहिए। तंत्र के प्रावधानों के अनुसार, केवल गृहस्थ ही गृहस्थ का गुरु हो सकता है, अन्य नहीं।

इसलिए १५ जून १९५६ को बाबा ने उमा दत्त से शादी कर ली। उन्होंने मार्गियों से अपनी पत्नी को मार्गमाता के रूप में संबोधित करने के लिए कहा। लेकिन उन्हें उनकी बराबरी का दर्जा नहीं मिलेगा। क्योंकि उन्होंने कहा कि 'आनंदमूर्ति' एक विलक्षण इकाई है। धर्म महाचक्र हो या कहीं भी किसी दूसरी इकाई के लिए कोई जगह नहीं है।"

प्रणय दा ने याद दिलाते हुए कहा, "शादी के समय, बाबा श्रीमती उमा के साथ विशेष रूप से सजाए गए मंच पर बैठे थे। जब वे एक साथ बैठे थे, तो एक तस्वीर ली गई थी। मुझे नहीं पता कि आपने उस तस्वीर को सुरक्षित रखा है या नहीं?"

संपादकीय

गुरु के विवाह के समय गुरु को देखते हुए, रामस्वरथ जी को संदेह हुआ और उन्होंने सोचा कि इस बार उनके बाबा अपनी आध्यात्मिक शक्ति खो देंगे। अचानक उसे अपनी रीढ़ में तेज झटके महसूस हुए। उस झटके से उबरने में उन्हें लंबा वक्त लगा। उसका शरीर कांपने लगा और चंद्रनाथ जी ने उन्हें पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाएँ । उनके सारे संदेह मिट गए।

आनंदमूर्ति : जमालपुर कथा गाथा

तीन–चार साल बाद, चर्याचर्य को पढ़ाते हुए, बाबा ने कहा, "आनंदमार्ग के अनुसार, धर्मसाधना में विवाह कोई बाधा नहीं है। विवाह एक धार्मिक समारोह है।"

পশ্চিম বঙ্গের ছুটির তালিকা ১৯৬৫

নিউ ইয়ার্স ডে	১৭ পৌষ	১ জানুয়ারী	শুক্র
নেতাজীর জন্মদিন	৯ মাঘ	২৩ জানুয়ারী	শনি
সাধারণতন্ত্র দিবস	১২ মাঘ	২৬ জানুয়ারী	মঙ্গল
ইদলফেতর	২১ মাঘ	৪ ফেব্রুয়ারী	বৃহস্পতি
শ্রীপঞ্চমী	২৩ মাঘ	৬ ফেব্রুয়ারী	শনি
দোলযাত্রা	৩ চৈত্র	১৭ মার্চ	বুধ
বাংলা নববর্ষ	১ বৈশাখ	১৪ এপ্রিল	বুধ
গুডফ্রাইডে	৩ বৈশাখ	১৬ এপ্রিল	শুক্র
মহরম	২৯ বৈশাখ	১২ মে	বুধ
ব্যাঙ্কের ষান্মাসিক হিঃ	১৫ আষাঢ়	৩০ জুন	বুধ
জন্মাষ্টমী	২ ভাদ্র	১৯ আগষ্ট	বৃহস্পতি
মহালয়া	৭ আশ্বিন	২৪ সেপ্টেম্বর	শুক্র
দুর্গাপূজা	১৪-১৮ আশ্বিন	১-৫ অক্টোঃ	শুক্র-মঙ্গল
কালীপূজা	৬ কার্তিক	২৩ অক্টোবর	শনি
খ্রীষ্টমাসডে	৯ পৌষ	২৫ ডিসেম্বর	শনি
ব্যাঙ্কের বাৎসরিক হিঃ	১৫ পৌষ	৩১ ডিসেম্বর	শুক্র

পশ্চিমবঙ্গ সরকারের সমস্ত অফিস নিম্ন দিবসগুলিও ছুটি থাকিবে—
চৈত্র সংক্রান্তি ১৩ এপ্রিল। রবীন্দ্রনাথের জন্মদিন ৮ই মে।
দুর্গাপূজা ৬, ৭, ৮ ও ৯ অক্টোবর। লক্ষ্মীপূজা ১১ অক্টোবর।
ফতেয়াদোয়াজদাহম ১২জুলাই (কেবলমাত্র মুসলমান কর্মচারীদের জন্য ছুটি)।

Rt eye 5.00 Lt eye 5.50

ব্যক্তিগত স্মারকলিপি

বক্সিং নং P.F. a/c
টেলিফোন নং 142802
মোটর গাড়ী নং
মোটর বাইক নং
ট্যাক্স টোকেন শেষ তাং
লাইসেন্স নং
লাইসেন্স রিনিউয়াল তাং
সাইকেল নং
টিকিট নং
পলিসি নং
ইনঃ প্রিঃ দেয় তাং
ওজন ____ তারিখ ____
উচ্চতা ____ তারিখ ____
জন্ম তারিখ 8th July 1960
নাম Prabhat Ranjan Sarkar
ঠিকানা 317 C.H.D. Rampur Colony P.O. Jamalpur, Monghyr

উनके बच्चे गौतम का जन्म ६ जुलाई १९६० को हुआ था। इसकी पुष्टि उनकी व्यक्तिगत डायरी में की गई है, जो बाबा द्वारा १९६३ और १९६५ में लिखी गई थी।

31. वी एस एस

एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में पिता की प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ, यह स्पष्ट हो गया कि (मार्गियों को) कि पिता की सुरक्षा के लिए कोई विशेष व्यवस्था किए बिना बहुत दूर नहीं जाना चाहिए। उन्होंने खुद धर्म महाचक्र और फील्ड वॉक के दौरान स्वयं सेवकों के एक समूह को पिता के अंगरक्षक के रूप में बनाने का फैसला किया। इसके अलावा, जैसे–जैसे मर्गियों की संख्या में वृद्धि जारी रही, सामूहिक कार्रवाई समारोह के दौरान किसी भी अप्रत्याशित गड़बड़ी से निपटने के लिए मर्गियों को स्वयं सेवकों की आवश्यकता थी। जब वे पिता के पास प्रस्ताव लाए, तो पिता ने उन्हें बताया कि मार्गियों का निर्णय उनका होगा।

आनंदमूर्ति : आनंद मूर्ति के साल

१६५६ की गोरखपुर धर्म चर्चा में, बाबा ने वी॰एस॰एस॰ को एक सेवा और सुरक्षा बल के रूप में पेश किया। वी॰एस॰एस॰ को मूल रूप से विश्व शांति सेना कहा जाता था, लेकिन बाद में इसका नाम बदलकर वॉलंटियर सोशल सर्विस कर दिया गया।

दिसंबर १६५६ के अंत में, बिहार के विभिन्न हिस्सों से दर्जनों उत्साही मार्गी युवाओं की भागीदारी के साथ रांची में पांच दिवसीय वी॰एस॰एस॰ शिविर का आयोजन किया गया । यह शिविर भविष्य में आयोजित किए जाने वाले वी॰एस॰एस॰ शिविरों के लिए एक मिसाल बन गया । २६ की सुबह, बाबा ने शिविर का दौरा किया और प्रतिभागियों को वीरता पर एक उत्तेजक भाषण दिया।

संपादक

शिविर में भाग लेने वाले एक मार्गी ने स्मरण किया, "जब वह बात कर रहा था, तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई शेर दहाड़ रहा हो। एक लहर हमारे बीच से गुज़री ताकि अगर वह चाहे तो हम एक ऊँचे पेड़ से कूद सकें। उन्होंने हमें बताया कि परिणाम कुछ भी हो, हम इस धर्मयुद्ध से लाभान्वित होंगे। यदि हम मर जाते हैं, तो हम मुक्त हो जाएंगे, और यदि हम जीवित रहते हैं, तो हम धर्म की विजय का आनंद ले पाएंगे। अगले दिन मेरे पिता ने रांची के मैदान में ध्वज के नीचे हमारा अभिवादन किया। "उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि स्वयं सेवकों को सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने के अलावा, आपदा प्रबंधन और अन्य सामाजिक सेवाएं प्रदान करने का प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।"

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

Cadres of Volunteer's Social Service in attention position
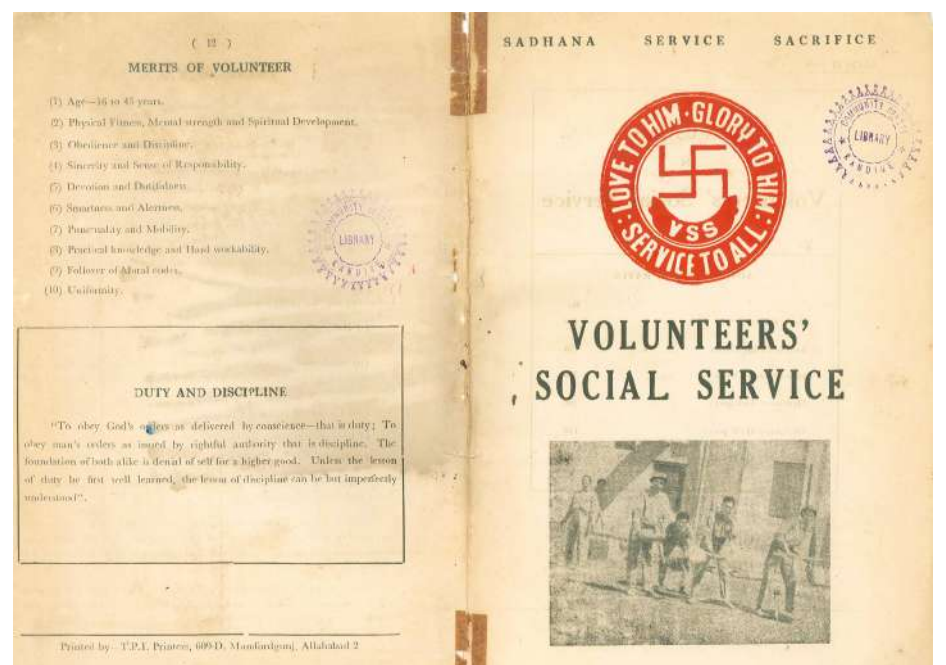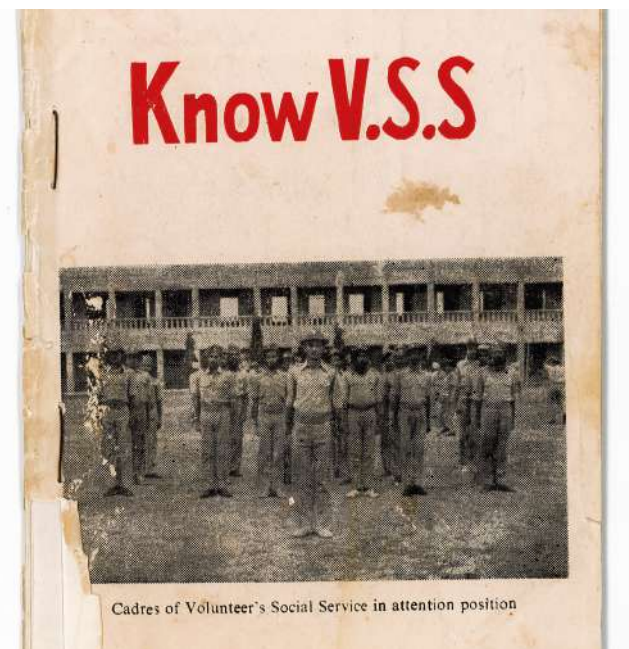
बाबा और दिवंगत वी॰एस॰एस। लंबे समय से प्रमुख सुरक्षा गार्ड विष्णुदेवजी बाद के दिनों में किसी समय वी॰एस॰एस॰ अभ्यास का नेतृत्व कर रहे हैं।

32. बाबा के वचन

१६५८ के अंत में , बाबा कांची शिविर की समाप्ति के बाद कांची के लिए रवाना हुए। रास्ते में वह बरही में राम बहादुर के घर दोपहर के भोजन के लिए रुके। उस समय राम बहादुर पुलिस कांची का पद संभाल रहे थे। बाबा ने उन्हें शिविर में आने और छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके जवाब में, राम बहादुर ने बाबा से छात्रों को आशीर्वाद देने के लिए कहा। एक पल के लिए रुकते हुए, बाबा ने कहा, "ठीक है, मुझे एक कागज दे दो।" सद् विप्र दौड़कर कागज लाने गये और बाबा ने छात्रों के लिए उस पर यह संदेश लिखा।

बाबा के शब्दों ने वी॰एस॰एस॰ की अंतर्निहित सोच को स्पष्ट कर दिया। यह संदेश एक शिविर के छात्रों तक ही सीमित नहीं थंा परंतु इसका अर्थ को व्यापक रूप से लिया गया था और बाद में 'बाबा की वाणी' के रूप में जाना गया।

बाबा ने बाद में "आपको दो बार सोचना चाहिए" को "आपको दो बार नहीं सोचना चाहिए" (जैसा कि एक नेक काम के लिए कूदने से पहले दो बार नहीं सोचने की भावना में) और जोड़ा, "लेकिन बोलने या लिखने से पहले ध्यान से सोचें। "इसके अलावा, "एक पराजित बेटा" "मेरा पराजित बेटा या बेटी" बन गया (दोनों लिंगों को मिलाकर) और अन्य छोटे विराम चिह्न संपादन थे। तो अंतिम शब्द बन गयाः

एक सैनिक के रूप में आपको सांसारिक सुख और आराम की तलाश नहीं करनी चाहिए। हर तरह के कष्टों के लिए तैयार रहें। दुख को अपनी संपत्ति बनने दो। दुख ही तुमको सद्–विप्र राज्य स्थापित करने में मदद करेंगे। सद–कार्य करने के लिए तुमको बहस नहीं करनी चाहिए, आपको अच्छा काम करने के लिए दो बार नहीं सोचना चाहिए, लेकिन बोलने या लिखने से पहले ध्यान से सोचें। तुम करो या मरो। मैं अपने पराजित बेटे या बेटी का चेहरा और किसी भी परिस्थिति में नहीं देखना चाहता, हारना हमारे लिए विकल्प नहीं है।

तुम्हारे स्नेहमयी बाबा

As a Soldier you must not search
for worldly pleasure or Comfort. Be
ready for all sorts of sufferings.
Let suffering be your asset. Suffering
will help you in establishing the
Sadvipra raj.
You must not argue — you must
think twice — you should
"do" or "die". I don't want
to see the face of a defeated
son in flesh & blood.

Barhi
27-12-59.

Yours affectionately
"Baba"
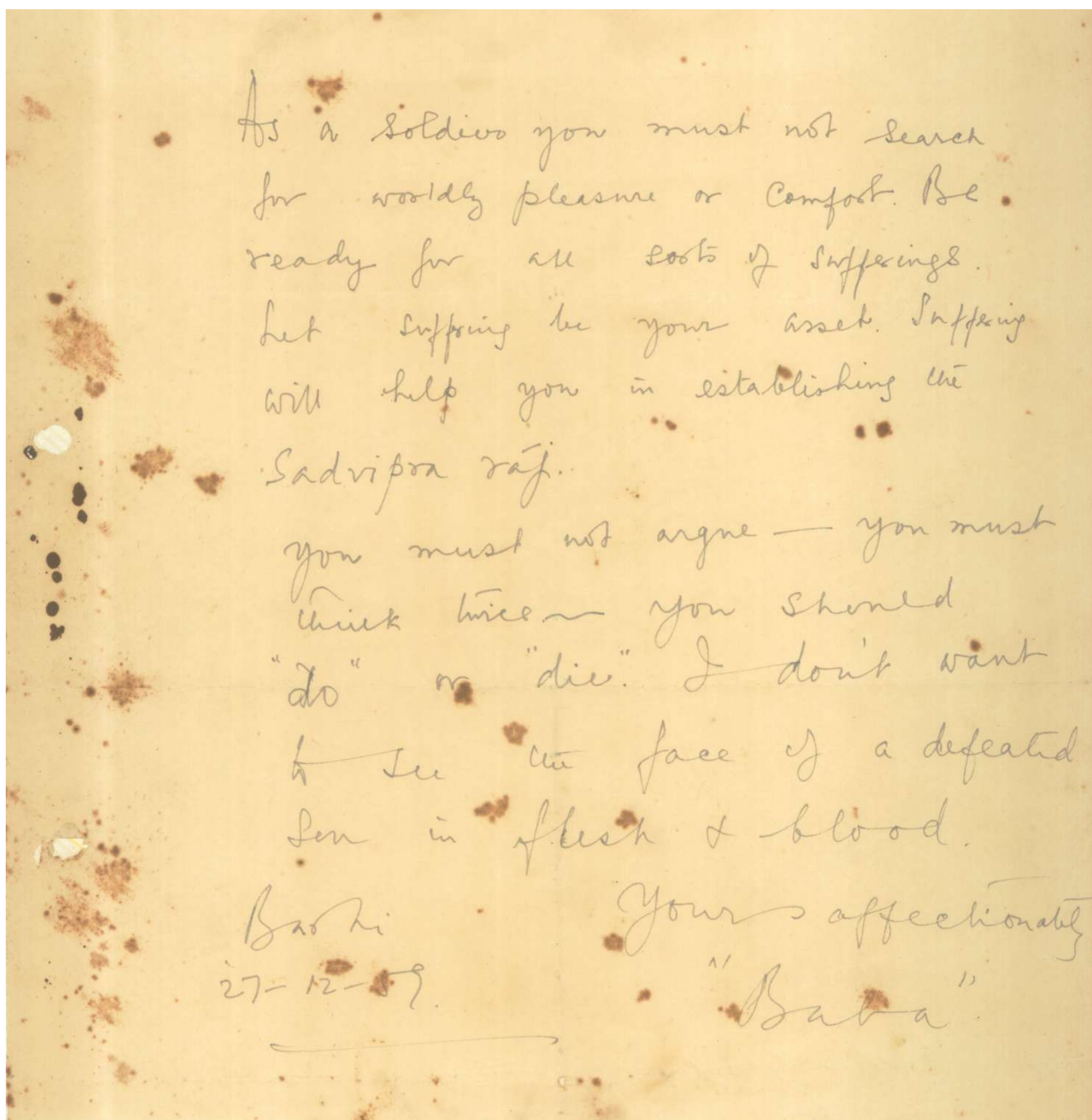
33. प्रथम पूर्णकालिक कार्यकता

१६६१ में बाबा ने १६ परिवारों को जमालपुर बुलाया और उन्हें भारत के १६ राज्यों में से प्रत्येक को अगले महीने के भीतर यात्रा करने के लिए धर्म प्रचार (धर्म का प्रचार) का काम सौंपा। लेकिन जब उन्होंने एक महीने बाद वापस रिपोर्ट की तो एक अपवाद के साथ, वे पारिवारिक प्रतिबद्धताओं के कारण अपने कार्य को पूरा करने में असमर्थ थे। इसलिए अब तेजी से विकसित होने वाले संगठन की जरूरतों को पूरा करने के लिए, बाबा ने नए लोगों की बढ़ती संख्या को देख कर संन्यासियों को फिर से तैयार करना शुरू कर दिया, जो धर्म प्रचार के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रेरित हो गए थे। नए संन्यासी (होल टाइमर) पहले तात्विक बनने का प्रशिक्षण पाते बाद में १६६२ में बाबा ने उन् तात्विकों को अवधूत बनने के लिए दीक्षा देनी शुरू कर दी और अवधूत बनने लिए एक उन्हें उच्च प्रशिक्षण दिया जाता। इस बीच जो गृही आचार्य थे उनसे से कहा गया कि उनका कर्तव्य है कि वे तात्विकों और अवधूतों की आर्थिक रूप से यथा योग्य सहायता करे और धर्म प्रचार कार्य में उनका सहयोग करें।

संपादकीय

मई १६६६ में आनंद पूर्णिमा डी॰एम॰सी॰ के दौरान, बाबा ने घोषणा की कि पहली बार एक अवधूत, आत्मानंदा विदेश में धर्म प्रचार के लिये केन्या जाएंगे। उन्होंने समझाया कि उन्होंने अफ्रीका को सबसे पहले इसलिए चुना है क्योंकि यह सबसे अधिक शोषित और उपेक्षित महाद्वीप था, और उस स्थान को आनंद–मार्ग की सबसे अधिक आवश्यकता थी।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल।

दादा विजयानंद स्वामी रामा के बचपन के दोस्त थे, जो अपनी किताब लिविंग विद द हिमालयन मास्टर्स के लिए प्रसिद्ध थे। दादा ने एक बार कहा था कि वे बाद के वर्षों में अपने पुराने दोस्त से मिले, जिन्होंने उन्हें यह बताया; मालूम है, बहुत से लोग सोचते हैं कि मेरा जीवन सफल रहा है। मैं विश्व प्रसिद्ध हो गया हूं, मेरे कई अनुयायी और आश्रम हैं, और मुझे पैसा भी इतना मिला है कि मैं यह तक नहीं जानता कि इतने पैसों का मैं क्या करूँगा? लेकिन मुझे लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बात में तो मैं असफल रहा हूं। मैं अब बूढ़ा हो गया हूं लेकिन मैं अपनी मृत्यु के बाद अपने मिशन को पूरा करने के लिए मजबूत और समर्पित शिष्य– नहीं बना पाया हूं। आपके गुरु आनंदमूर्ति जी ने ऐसे उच्च–क्षमता वाले समर्पित शिष्यों की एक बड़ी संख्या बनाई है, जिससे आनंद मार्ग संस्था चलती रहेगी। यह उनकी महानता की परिचायक है।"

34. आदर्श (भावादर्श–आइडियालोजी)

आइडिया एंड आइडियोलोजी" पुस्तक में, बाबा आध्यात्मिक विचार–धारा की परिभाषा इस तरह देते है, "आध्यात्मिक विचार–धारा का जन्म मानस स्तर पर जब भाव अथवा आइडिया का आत्मस्थीकरण होता है तो वह 'भावार्दश' यानि कि 'आइडियालोजी' है। भाव का अवतरण विचार या आइडिया से ही होता है। किसी भी जड़वादी राजनीतिक निती–नियमावली को यदि हम भावादर्श (आइडियालोजी) की संज्ञा दे, तो वह इस शब्द का अपप्रयोग होगा। आइडियालोजी शब्द में एक आध्यात्मिक विचार निहित है। आध्यात्मिक सत्ता के साथ समानांतरता बनाए रखते हुए चलने की गति ही भावादर्श (आइडियालोजी) है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि मानसिक–आध्यात्मिक–समानांतरता ही भावादर्श (आइडियोलोजी) है।"

अंतराल में वे प्रायः कहते थे कि "मानव जीवन एक वैचारिक प्रवाह है।" "अर्थात्, मानव जीवन एक मिशन है; जीवन स्वयं एक मिशन है; हमारा अस्तित्व ही एक मिशन है ... जिसमें मानव अस्तित्व की सबसे बड़ी उपलब्धि निहित है; ... इस प्रवाह का प्रारंभिक बिंदु सर्वोच्च सकारात्मकता है, और सर्वोच्च नकारात्मकता से गुजरने के बाद, आप फिर से सर्वोच्च सकारात्मकता पर लौट आएंगे। दूसरे शब्दों में, आप अपने क्रमिक–विकास में मूढ़ पशुता के चरण से सूक्ष्म– मानवता की तरफ आगे बढ़ते हैं। आपका अंतिम गंतव्य अत्यंत शानदार है, और यहां पर केवल कोमल शांत प्रभा ही आपके अस्तित्व के आस–पास होती है, जैसे कि आपने दिव्य प्रभा का सुंदर मुकुट पहन लिया हो। इस–प्रकार इस पथ पर किसी भी प्रकार की पराजय से डरने की गुंजाइश कहां है?"

सात हजार वर्ष पूर्व "आत्ममोक्षार्थम जगतहिताय च" का सूत्र भगवान शिव द्वारा प्रतिपादित हुआ। यह बारहवीं शिवोक्ति है। इसका का अर्थ है कि जगत का हित करते हुए स्वयं को मोक्ष प्राप्ति के लिए तैयार करना। भगवान शिव की अन्य शिक्षाओं के साथ ही शिव की इस उक्ति को बाबा ने विशेष रूप से आनंद मार्ग के दर्शन का मुख्य तत्व बनाया। इस उक्ति का उद्घोष आनंद मार्ग के दर्शन की आत्मा में स्थित ही नहीं परंतु यह उक्ति आनंद मार्ग के कार्य–कलाप

में उसी तरह सम्मिलित है जैसे गुलाब में उसकी भीनी महक।

"आत्मोक्षार्थम३ आप जो भी करेंगे, वह आत्मा के मोक्ष के लिए किया जाएगा। स्वयं के मोक्ष के लिए प्रयासरत रहना होगा। मोक्ष का अर्थ है (निर्विकल्प–समाधि) यानि की शाश्वत मुक्ति" ।

"फिर ठंकीपलं३ आपको अपनी मुक्ति के साथ–साथ दूसरों की सेवा भी करनी होगी। पूरे मानव समाज का हित और उत्कर्ष ही आपका लक्ष्य है।"

इन दो कामों के मध्य तालमेल बिठाना ही मनुष्यों का मिशन है।"

maharlika times

MANILA, PHILIPPINES AUGUST-SEPTEMBER, 1972 VOLUME I — NO. 5

Shrii Shrii Anandamurtijii in DMS

SHRII SHRII ANANDAMURTIJII

IDEOLOGY AND GOAL

IDEOLOGY

IDEOLOGY AS A MIRROR

COURAGE AND POWER

IDEOLOGY AND GOAL

(Continued on page 4)

बाबा की २३ नवंबर, १६७१ क्ड६ का प्रवचन और विचारधारा और लक्ष्य (बाद में नाम बदलकर विचारधारा, लक्ष्य और भक्ति) महालिका टाइम्स में (अगस्त–सितंबर– 1972) में छपता है।

आनंद वाणी आनंद पूर्णिमा १६६१:

अपने भावादर्श (आइडियालोजी) के लिए लड़ो। अपने आप को भावादर्श (आइडियालोजी) के साथ आत्मसात कर लो । भावादर्श (आइडियालोजी) के लिए जियो, भावादर्श (आइडियालोजी) के लिए मौत को भी हंसते हुए स्वीकार करो।"

१ जनवरी, १६७२ को, अगले संदेश में, बाबा ने सामान्य रूप से कहा, "जीवन एक भावादर्श (आइडियालोजी) है। अपने आदर्श के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए प्रस्तुत रहो।"
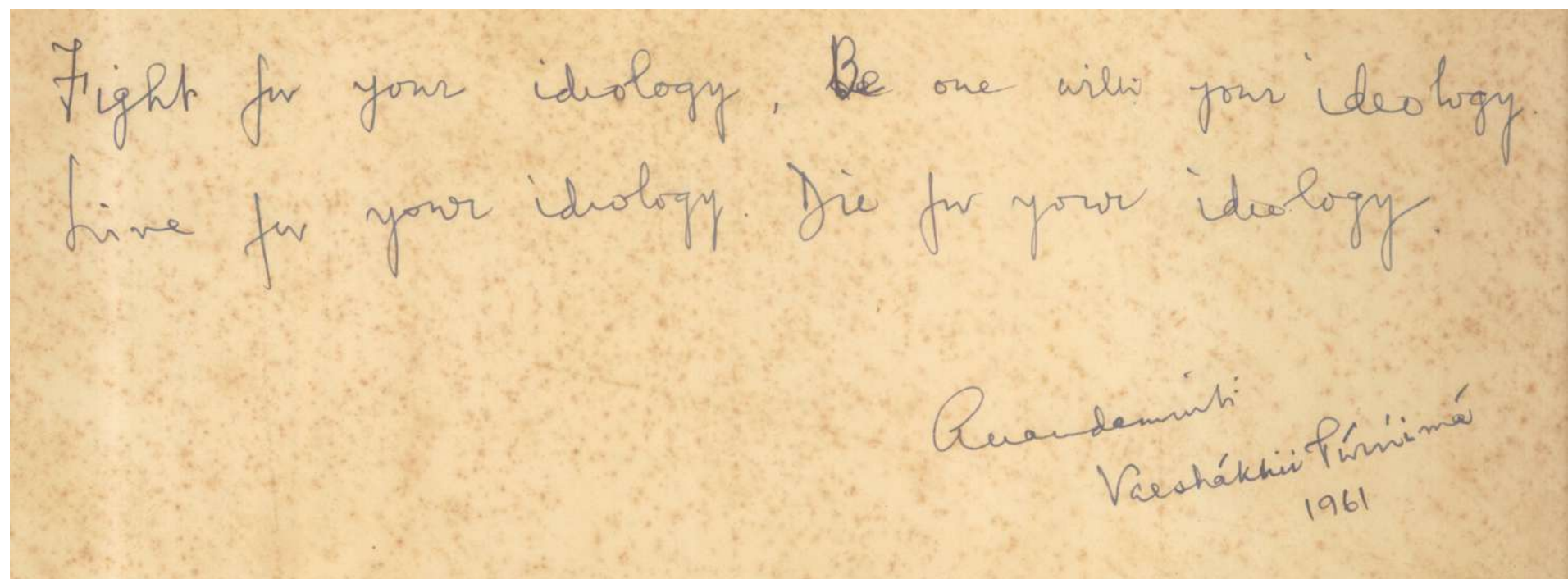
35. आनंद सूत्रम

बाबा ने आनंद मार्ग के शुरु के दिनों में प्रारंभिक दर्शन में आध्यात्मिक और सामाजिक दर्शन का परिचय दिया। उसके बाद "आइडिया और आइडियालोजी" के व्याख्यान दिये जो एक पुस्तक के रूप में १६६१ में प्रकाशित हुए. १६६१ में आनंद सूत्रम के प्रवचन बाबा जमालपुर में बाघ की कब्र पर बैठकर रात को प्रवचन देते थे जिन को लिख लिया जाता था, ये प्रवचन मोमबत्ती को एक काँच के गिलास में रखकर उसकी रोशनी में लिखे गए हैं। अगले वर्ष, आनंद सूत्र पुस्तक १७ जून, १६६२ को प्रकाशित हुई। आनंद मार्ग का मूल दर्शन आनंद सूत्र की पुस्तक में निहित है।

संपादकीया

आनंद–सूत्रम का एक अर्थ है सूत्र जो हमको दिव्य आनंद की दिशा की ओर उन्मुख करते हैं। सूत्रों की परंपरा भारत की सदियों पुरानी और शक्तिशाली परंपरा है जिस में गहरे दार्शनिक सिद्धांत कम शब्दों में गहरे अर्थ प्रस्तुत करते हैं। दूसरे शब्दों में गागर में सागर भर दिया जाता है। सूत्र का शाब्दिक अर्थ है धागा – जहाँ असंख्य विचारशील रत्न एक धागे में बंधे होते हैं। ८५ सूत्र इस पुस्तक में इस तरह लिखे गए थे कि आनंद मार्ग का पूरा दर्शन ८५ सूत्रों में धाराप्रवाह रूप से स्पष्ट हो जाए।
बाबा, श्री श्री आनंद मूर्ति की कलम की नोक से ऐसी ज्वलंत ऊर्जा प्रवाहित हुई जिसने बाबा के जीवन–काल में तत्व–मीमांसा, ज्ञान–मीमांसा विज्ञान, नैतिक–शास्त्र और वृहत–इतिहास की विशद और विविध जानकारी से लबालब साहित्य रचा। इन्हीं पुस्तकों में मूलभूत अध्यात्म–विज्ञान ही समाहित नहीं था परंतु पहली बार ईश्वर–केंद्रित दर्शन के भीतर सामाजिक और आर्थिक अवधारणाओं को समन्वित किया गया। इस नए दर्शन ने प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था की परिकल्पना को जन्म दिया जिस में भौतिक दुनिया को नकार नहीं दिया गया परंतु उस को आपेक्षिक सत्य के रूप में स्वीकार किया गया। बाबा ने कहा कि में अंतिम लक्ष्य की राह पर बढ़ने के लिए मन परमपुरुष के तरह उन्मुख होना चाहिए परंतु कर्म से हम को इस वस्तुगत संसार से समन्वय करके चलना है। इस अद्भुत संयोजन से हर किसी को आर्थिक न्याय मिलेगा। यह दर्शन आर्थिक न्याय पर आधारित है।

आनंद सूत्रम प्रकाशक नोट

सूत्रों के कुछ नमूने।
१–१ शिवसत्यात्मकं ब्रह्म (ब्रह्मा शिव और शक्ति का सम्मिश्रण है)
१–४ परमशिवः पुरुषोत्तमः विश्वस्य केंद्रम (ब्रह्माण्ड के नाभिक में सर्वोच्च चेतना परमशिव या पुरुषोत्तम के रूप में जाना जाता है)
१–२५ भावः भावित्यो : सेतुः तारक ब्रह्म (निर्गुण ब्रह्म और सगुण ब्रह्म के बीच की कड़ी को तारक ब्रह्म कहा जाता है)
2–1 अनुकूलवेदनियम् सुखम् (भावना जो मन के अनूकूल हो उसी को सुख कहा जाता है)
2–2 सुखानुभूतिः परम जीवः
२–३ सुखमनन्तमन्दम् (अनंत सुख ही आनंद है)
2–4 आनन्दम् ब्रह्मा इत्याहु (इस आनंद को ही ब्रह्म कहा जाता है)
2–5 तस्मिन्नुपलब्धे परम त्रिश्नवृति ((ब्रह्म) को प्राप्त होने से, सभी प्यास स्थायी रूप से बुझ जाती है)
२–६ ब्रह्देशप्राणिधानम च धर्म : (महत की चाहत और उसकी ओर ही भागना धर्म है)
२–७ तस्माधर्मः सदाकार्यः।(इसलिए सर्वदा धर्म कि पालन होना चाहिए)
३–१ पंचकोणात्मिक जैवीसत्ता कदलीपुष्पवत (जीवात्मा पाँच कोस का सम्मिश्रण है (मन की परतें), एक पादप पुष्प की तरह (इसकी पंखुड़ियों के साथ)
3–4 मनोविकृतिः विपकपेक्षिता संस्कारः (मन की विकृति अभिव्यक्ति की प्रतीक्षा (यानी क्षमता में प्रतिक्रिया) को संस्कारः के रूप में जाना जाता है।
३–७ हितैसेनाप्रेसितो पवर्गः (मुक्ति के लिए लालसा रखने वाली (दिव्य) द्वारा निर्देशित एक प्रवृती)
३–८ मुक्त्याकांकछाय सद्गुरुप्राप्ति (मुक्ति की तीव्र इच्छा से, व्यक्ति एक सद्गुरु (पूर्ण गुरु) को प्राप्त करता है)
३–६ ब्रह्मैव गुरुरेकः नापरः (केवल ब्रह्मा ही गुरु हैं, कोई और नहीं)
३–१० बाधा सा युसामना शक्तिः सेवयम् स्थापयती लक्षे (बाधाएँ लक्ष्य में मदद करने वाली सेनाएँ हैं)
५–१ वर्णप्रधानता चक्रधारायाम्।(सामाजिक क्रमःविकाश में एक वर्ण हमेशा आगे होता है।)
५–२ चक्रकेन्द्रे सदबिप्रः चक्रयंत्रिका (सामाजिक चक्र के नाभिक में स्थित है, सामाजिक चक्र को सदविप्र नियंत्रित करते हैं)
पांचवें अध्याय के अंत में (बिना संख्या) एक अतिरिक्त सूत्र दिया गया है।
प्रगतिशील उपयोगतत्त्वमीदम सर्वजनहितार्थतम् सर्वजनसुखार्थम् प्रचारितम (यह प्रगतिशील उपभोग सिद्धांत है, जो प्रतीक जीव की प्रसन्नता और सभी के सर्वांगीण कल्याण के लिए प्रस्तावित है)

१६६७ के पहले अंग्रेजी संस्करण आनंद सूत्रम का कवर
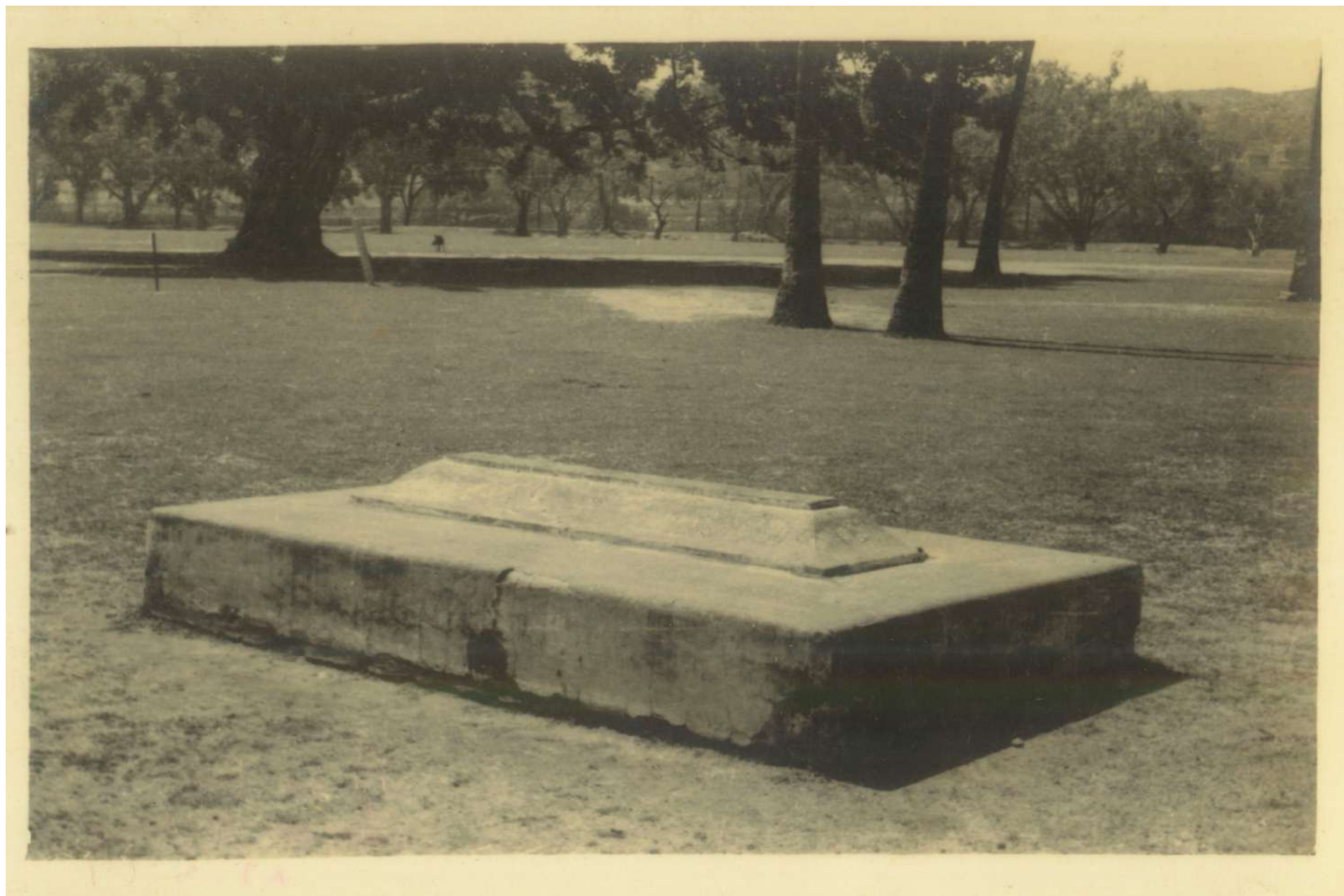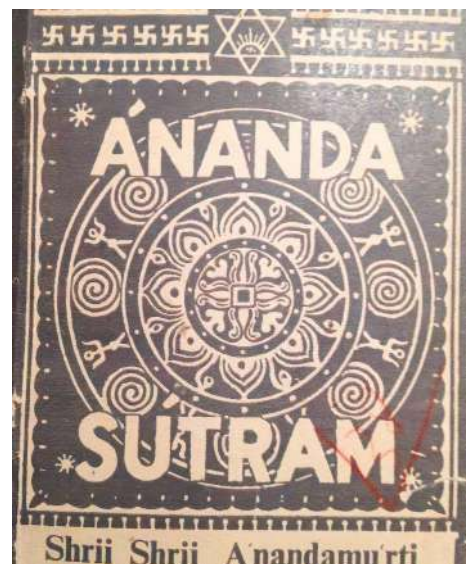
36. आनंद नगर

१९६२ में, बाबा ने मार्ग की बढ़ती गतिविधियों के लिए एक उपयुक्त स्थान खोजने के लिए कई मार्गियों को भूमि के एक बड़े भूखंड की तलाश करने के लिए कहा। उन्होंने, उनको पश्चिम बंगाल और बिहार की सीमा पर जमीन तलाशने के लिए कहा क्योंकि अतीत काल में बहुत से ऋषियों ने इस पावन भूमि पर तपस्या की थी और उस तपस्या के पावन स्पंदन आज भी इस धरती पर विद्यमान है.
राँची के ही एक गृह–आचार्य पुरुलिया निवासी गढ़–जयपुर के पूर्व राजकुमार, रघुनंदन सिंह के मित्र थे। वह कुछ मार्गियों और कुछ सन्यासियों के एक समूह के साथ उनसे मिलने गये थे।
राजा के पास आने के बाद, राजा ने कहा, "मैं पिछले तीन दिनों से यह सपना देख रहा था कि गेरुवा वस्त्रों में कुछ सन्यासी मेरे पास आएंगे और जमीन मांगेंगे। वे मुझे राजा कहते हैं लेकिन मेरे पास न तो राज्य है और न ही पूंजी। एक समय था जब हमारे पास यह सब था। मुझे नहीं पता कि मैं आपकी मदद कैसे कर सकता हूं।" कुछ देर सोचने के बाद, उन्होंने फिर कहा, "कुछ पहाड़ी और पथरीली जमीन मेरी पत्नी श्रीमती प्रफुल्ला कुमारी देवी के नाम पर बागलता मौज़ा में पंजीकृत है, जो यहाँ से थोड़ी दूर है। कृपया एक बार वहां जरूर जाएं और उस जमीन को देखे। अगर यह आपके कुछ काम आ सकती है, तो मैं इस जमीन को आपको दे सकता हूं।"

अगस्त १९६२ में, उनकी पत्नी, जो कि रानी थी उनके द्वारा दान में दी गई १६० एकड़ जमीन आनंद मार्ग प्रचारक संघ के नाम पर पंजीकृत हो गयी।

३६. आनंद नगर

एक साल बाद, ३१ अगस्त, १९६३ को, बाबा ने अपनी डायरी में लिखा, "हमारे पास पुरुलिया जिले के गढ़–जयपुर थाने के बागलता गाँव में आनंद मार्ग की भूमि है, जिसे बाद में 'आनंद नगर' कहा जाएगा।"
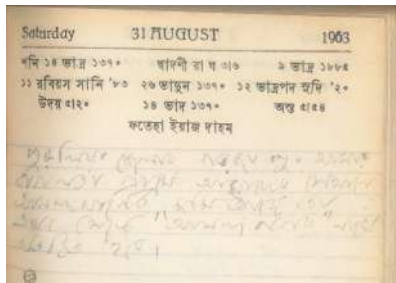
अगले वर्ष, जब केंद्रीय कार्यालय को आनंद नगर स्थानांतरित कर दिया गया, तो उन्होंने रानी प्रफुल्ला कुमारी देवी को अपने पहले आनंद नगर दौरे पर पहली बार धन्यवाद पत्र लिखा।

Ananda Marga Pracaraka Samgha

P.O. JAMALPUR, E. RLY., DIST. MONGHYR (BIHAR)

श्रीमती प्रफुल्ला कुमारी देवी के सहयोग, संवेदना और उदारता के कारण, आनंद नगर की महान परियोजना की एक अच्छी शुरुआत हुई है। मैं हृदय से उनका धन्यवाद देता हूं। उनकी यह उदारता एक सराहनीय कार्य है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है।
आनंद मूर्ति
आनंद नगर
२३ फाल्गुन १३७०
(बंगला तिथि से जो अंग्रेज़ी तिथि से ७ मार्च १९६४ है)
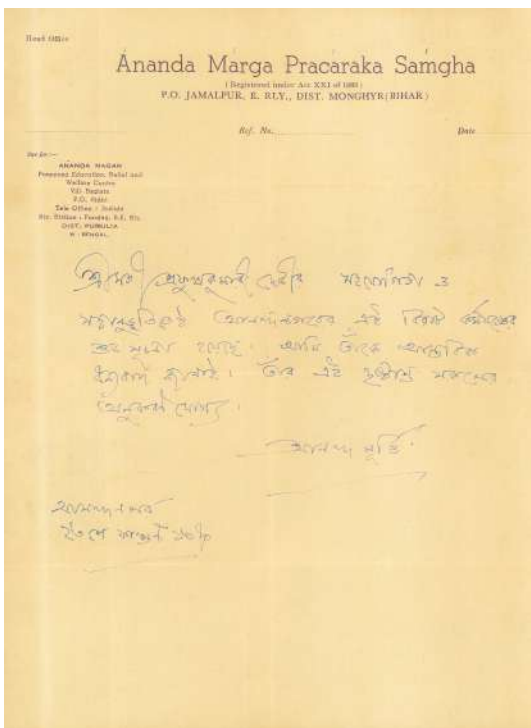
अपनी यात्रा के पहले तीन दिनों के लिए, बाबा जमालपुर में मार्गियों के साथ फील्ड वॉक पर जाते थे और बाबा ने मार्गियों को वहां ऐसे ८४ तंत्र–पीठ दिखाये, जहां अतीत में महा–साधकों ने आध्यात्मिक–साधना करके मुक्ति को प्राप्त किया था। उनकी उपस्थिति की महक, साधना के गहरे स्पंदन आईएएस धरा पर अभी भी मौजूद हैं। बाबा ने उनको अन्य दर्शनीय स्थल भी दिखाए।

१९६४ तक आनंद नगर में फील्ड वॉक

३०/३१दिसंबर १९६६ को, बाबा जमालपुर को छोड़कर उसी दिन दोपहर में आनंद नगर पहुँच गए। विजयोल्लास से गूँजती आवाज में उन्होंने घोषणा की, "मैं आनंद नगर का आनंद मूर्ति हूँ।"

बाबा ने अपनी उपस्थिति से आनंद नगर में विकास कार्यों की गति बढ़ाई। विकास कार्यों में अचानक वृद्धि को देखते हुए, वहां के स्थानीय कम्युनिस्ट नेता शंकित हो गए और अफवाह फैलाने लगे कि मार्गी ग्रामीणों की भूमि पर कब्जा करना चाहते हैं। परिणामस्वरूप, मध्य आनंद नगर में कई हजार हथियारबंद ग्रामीण इकट्ठे हुए और उन्होंने ५ मार्च, १९६७ की सुबह पांच सन्यासियों की निर्मम हत्या कर दी। जब बाबा उनका सामना करने के लिए बाहर आए, तो वे किसी अकथनीय कारण से भाग गए। कई सालों के बीत जाने के बाद, अक्तूबर १९७९ में, बाबा आनंद नगर वापस आए और और भाव विह्वल वाणी में यह संदेश दिया "आनंद नगर एक दिन सारे विश्व के लिए आलोकमय, सार्वभौमिक पथ प्रदर्शक होगा" । उस भाषण के कुछ भाग यहां प्रस्तुत हैं।
"हम बहुत दिनों के बाद फिर आनंद–नगर आए हैं। आनंद–नगर हमारी दुनिया का केंद्र है। आनंद–नगर न केवल एक भौतिक–परिवेश है, परंतु हमारे लिए आनंद–नगर हमारे हृदय–स्थल की पावन भूमि भी है। हमें अपनी क्षमता के अनुसार इसका निर्माण करना होगा। हम सभी को मिल कर इसके विकास के लिए कदम उठाने चाहिए ताकि यह शीघ्र ही विकसित हो जाये, और इस पावन भूमि का प्रकाश जिस के लिए कई महा–आत्माओं ने अपने जीवन का उत्सर्ग किया, उसको पूरी दुनिया देख सके। एक दिन साधना में, त्याग में, तितिक्षा में, संस्कृति में, आनंद–नगर पूरी दुनिया का मार्गदर्शन करेगा। दीर्घकाल के बाद, हम सब यहां एक साथ आए हैं, इससे ज्यादा प्रसन्नता की क्या बात हो सकती है? जैसे ही मैंने आनंद नगर में प्रवेश किया, मेरा हृदय आनंद के अतिरेक से भर गया। जब मैं तुम सब को देख रहा था तो प्रसन्नता मेरे रोम–रोम से छलक रही थी। मुझे जो आनंद मिला इससे मुझे लगता है कि तुम सब को भी उस आनंद की अनुभूति हुई, क्योंकि इतने समय के बाद हम एक साथ मिल कर बैठ पाए हैं। इससे ज्यादा हर्ष का विषय और क्या हो सकता है?"

37. बाबा की डायरियां

बाबा की १९६२, १९६३, १९६४ और १९६५ की डायरियों की मूल प्रतियां अभिलेखागार में संरक्षित हैं।

?कुछ चयनित पृष्ठ
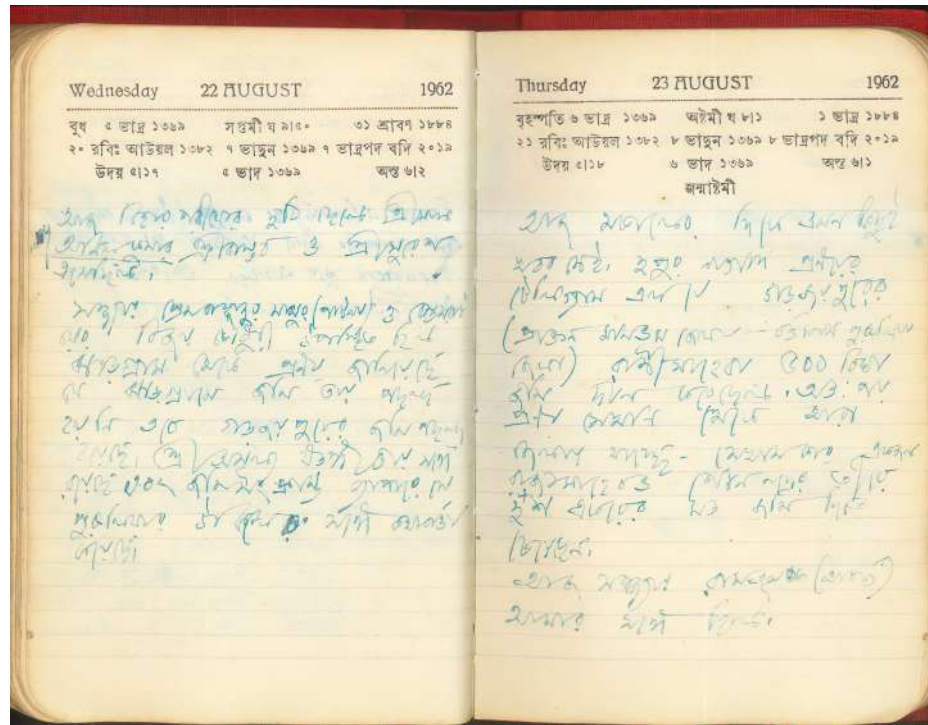
२२ अगस्त १९६२

"बिहार–शरीफ के दो युवक श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव और सुरेश आज आए थे। शाम को प्रेम बहादुर माथुर (पटना) एवं बेगूसराय के विजय चौधरी उपस्थित थे। झाड़ग्राम से प्रणय ने ख़बर भेजी कि उन्हें झाड़ग्राम में जमीन पसंद नहीं आई, लेकिन उन्हें गढ़–जयपुर की ज़मीन पसंद आई है। अमूल्य–रतन षाड़ंगी उनके साथ हैं, और उन्होंने पुरुलिया में वकील से भूमि के विषय बारे में बात की है।"

२३ अगस्त १९६२

"सुबह में कुछ विशेष घटना नहीं हुई। दोपहर में प्रणय का एक तार आया कि गढ़–जयपुर की रानी साहिबा ने (पूर्व में मानभूम जिला, अब पुरुलिया जिला) ५०० बीघा ज़मीन दान में दी है (एक बीघा यानी एकड़ का तिहाई)। फिर प्रणय वहां से आरा जिला जा रहा है– वहां के एक राजा साहब भी करीब दो सौ एकड़ जमीन सोन नदी के किनारे (सोनभद्रा) देना चाहते हैं। राम–तनुक (आचार्य) आज शाम मेरे साथ थे।"
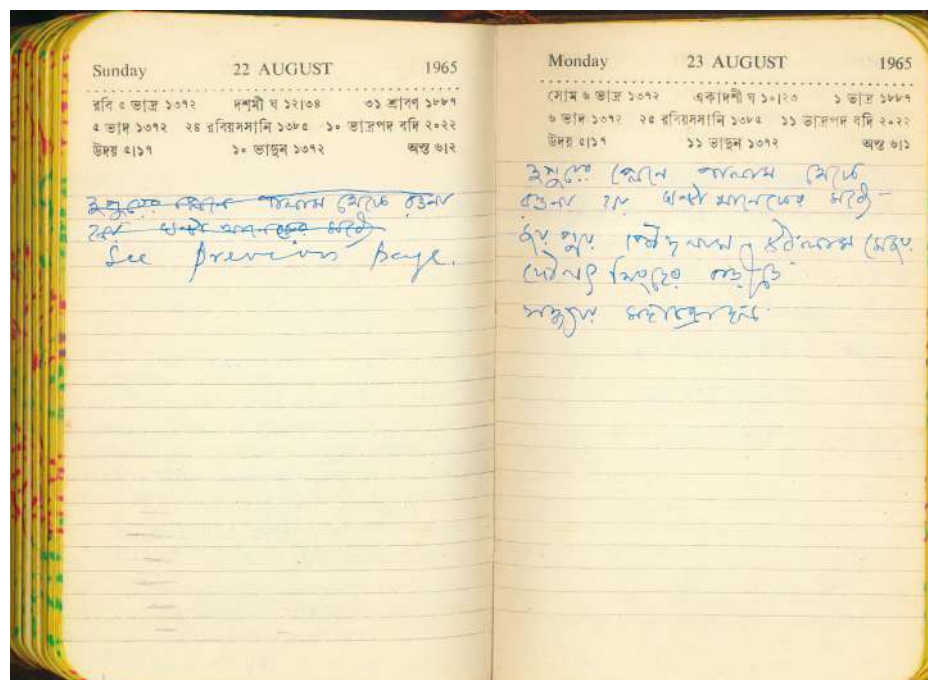
२३ अगस्त १९६५:

"पालम से दोपहर के विमान से जयपुर पहुँचा। मेज़र दौलत सिंह के घर रुका। शाम को महाचक्र आयोजित हुआ।

१९६२ की डायरी के आमुख का पृष्ठ, अंदर का पहला पृष्ठ और व्यक्तिगत ज्ञापन पृष्ठ ।
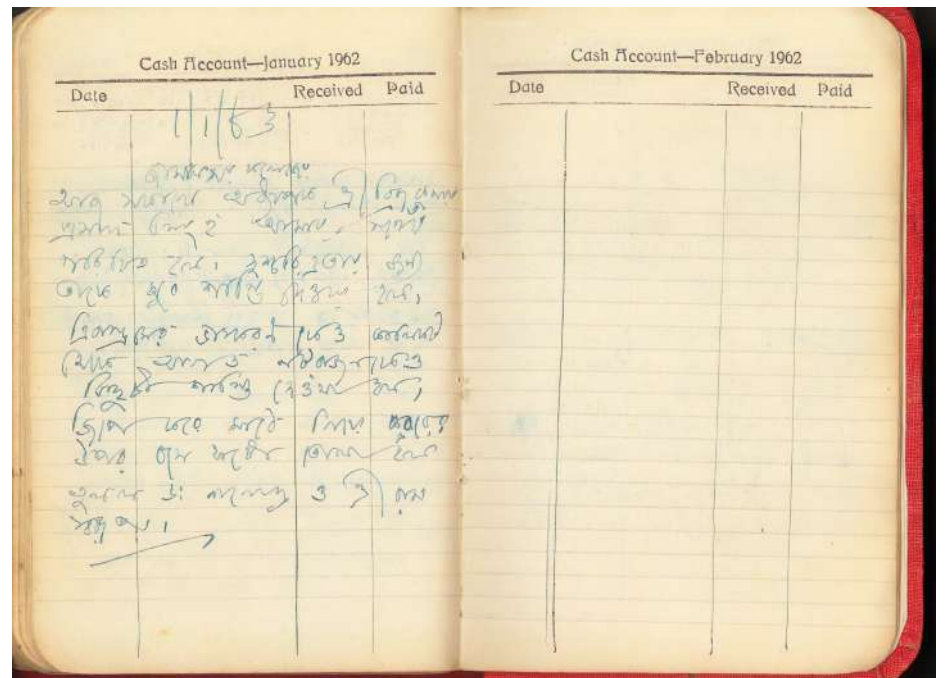
१ जनवरी, १९६३ (1962 की डायरी के कैश अकाउंट पेज पर लिखी हुई आज सुबह जमालपुर कॉलेज के प्रोफेसर श्री विजय कुमार प्रसाद सिंह से परिचय हुआ। उनकी अनैतिकता के लिए उन्हें कड़ी सजा दी गई । कालीकत के नटराजन और त्रिवेंद्रम के भास्करन को भी कुछ सजा दी गई। मैदान के लिए जीप के द्वारा गया। कब्र पर बैठे हुए हम लोगों की कुछ तस्वीरें ली गईं। ये तस्वीरें डा॰ नागेंद्र और श्री राम स्वरूप के द्वारा ली गईं।

बाबा की डायरी में उल्लिखित तस्वीरों में से एक।
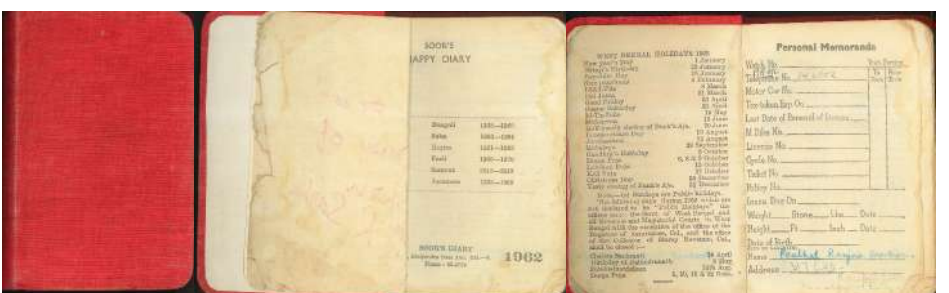
38. बाबा के अंगूठे की छाप और हस्ताक्षर और पासपोर्ट के लिए चित्र।

Form 20 p.

Court Fee

Prabhat Ranjan Sarkar
176, Pataliputra Colony
P.S. Digha. Dist. Patna-13.

Girija Shankar Jaiswal
Advocate

LTI of Sri Prabhat Ranjan Sarkar

LTI of Sri Prabhat Ranjan Sarkar

सहायक कारापाल,
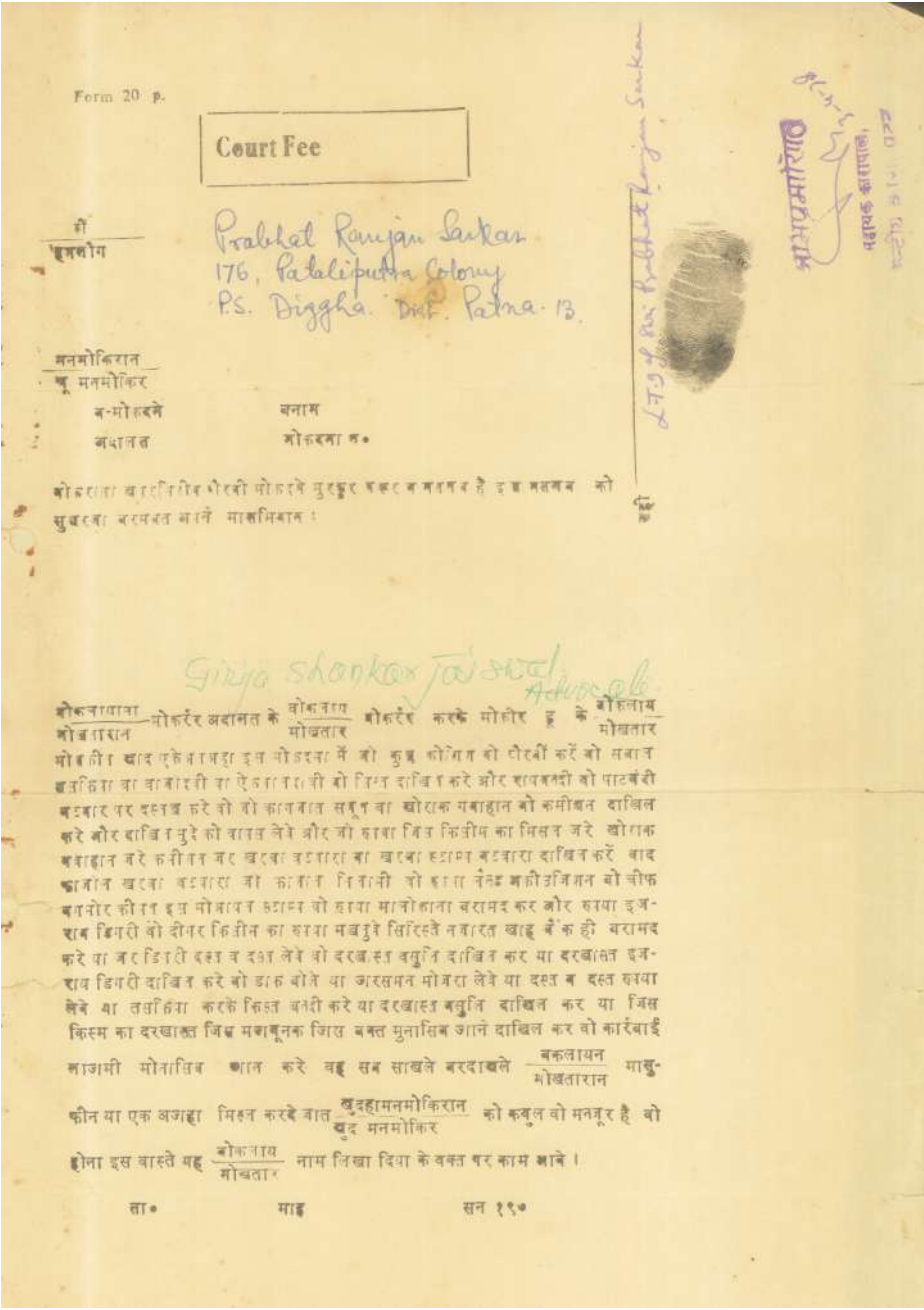
पॉवर ऑफ अटोरनी फॉर्म पर बाबा के हस्ताक्षर

पॉवर ऑफ अटोरनी फॉर्म पर बाबा के अंगूठे के निशान और हस्ताक्षर

1. Shri Prabhat Ranjan Sarkar
Alias Anand murti jee
176, Patliputra Colony
P.S. Digha
Patna 13.

Prabhat Ranjan Sarkar
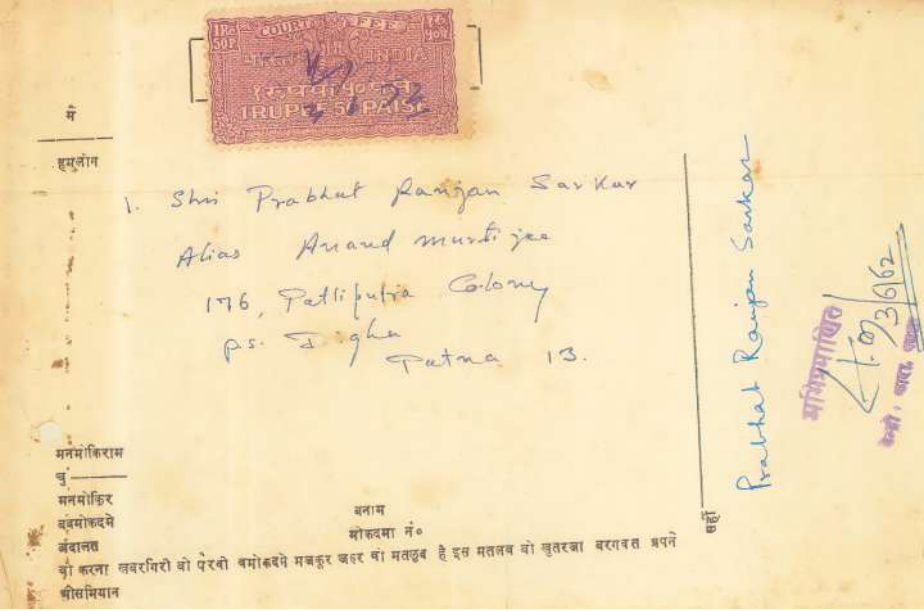
बाबा का यह पासपोर्ट चित्र १६७६ की शुरुआत में मधु–मां, लेक–गार्डन में उनके यूरोपीय दौरे से पहले लिया गया था।

शर्माजी, बाबा के आधिकारिक फोटोग्राफर थे, वे शुरुआती श्वेत–श्याम तस्वीरों के दिनों से बाबा के साथ थे। वे पार्क स्ट्रीट में एक फोटो लैब में काम करते थे और अपनी कमाई से वह अपने परिवार को बनाए रखने में सक्षम थे। जब हम बाबा की रिहाई के बाद विदेश जाने के लिए तैयार हो रहे थे, हमें पासपोर्ट आवेदन के लिए छह तस्वीरों की आवश्यकता थी, इसलिए हमने शर्मा जी को बुलाया। वे लेक–गार्डन में आए, और फोटो लेने के लिए सबसे अच्छी जगह के रूप में रिपोर्टिंग–हॉल से सटे शिवलीला कमरे को चुना, जो बाबा के कमरे के ठीक सामने था। उस समय मैं उस कमरे में रह रहा था। हमने बाबा को सूचित किया था कि वह आने वाला है, फिर भी जब उन्होंने उसे देखा तो बाबा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा "फोटोग्राफर यहाँ क्यों आयें है?"

"बाबा, वह आपके पासपोर्ट तस्वीरें लेने आयें है," मैंने जवाब दिया।

बाबा ने मुस्कुरा कर अपना सिर हिलाया। "ठीक है, लेकिन मैं अपना बहुत सा समय बर्बाद नहीं करना चाहता; इसे जल्दी करना होगा। मुझे फील्ड वॉक के लिए जाना है, और उसके बाद मुझे बहुत सारे काम करने हैं।"

शर्मा जी ने भी मुस्कुरा कर कहा, "बाबा, एक अच्छी तस्वीर लेने में थोड़ा समय तो लगेगा। हमें उचित प्रकाश की व्यवस्था करनी होगी और मुझे कई तस्वीरें निकालनी होंगी।"

बाबा हँसे और शर्मा जी के कहने के अनुसार बैठ गए। शर्मा जी ने फोटो लेने के लिए उचित प्रकाश की व्यवस्था के लिए दो दादाओं से कहा कि वे दो छतरियों को बिल्कुल सटीक कोणों से जोड़–कर रखे। उन्होंने बाबा को सही तरीके से बिठाया और फिर बाबा को बताने लगे किस दिशा में चेहरा घुमाइए फिर मुस्कराइए फिर कहा "बहुत अच्छा, बाबा, बहुत अच्छा, लेकिन क्या आप अपना सिर थोड़ा दायीं ओर मोड़ सकते हैं तो यह तस्वीर और बेहतर हो सकती है। ठीक है बाबा, अब एक बड़ी सी मुस्कान..." बाबा ने उनके निर्देशों का इस तरह पालन किया, जैसे कि वे एक छोटे लड़के हों। इसमें कुछ मिनट और कैमरे में कई प्लेटें लगीं दृ यह कैमरा पुरानी शैली के कैमरों में से एक था – लेकिन उस कैमरे से उन्होंने अच्छी तस्वीरें खींची, और अगले दिन ही उन्होंने तस्वीरों के प्रिंट दे दिए।

एक रात, हमें खबर मिली कि शर्मा जी की मृत्यु हो गई है, हालांकि वे बीमार नहीं थे और किसी भी ज्ञात बीमारी से पीड़ित नहीं थे। जब हमने सुबह बाबा को सूचना दी, तो उन्होंने निःस्वास लेते हुए कहा, "आह, बहुत ही अच्छी आत्मा थी वह। हमें वहां जाकर अपनी श्रद्धा अर्पण करनी चाहिए" उस सुबह फील्ड वॉक पर हम बाबा को काली घाट के श्मशान में ले आए, जहां शव को अंतिम संस्कार के लिए तैयार किया जा रहा था। जब हम वहां पहुंचे, तो सारे मार्गी बस श्रद्धा–समारोह की शुरुआत कर रहे थे। बाबा कार से बाहर निकले और उन्होंने दिवंगत आत्मा को अंतिम–सम्मान दिया। यह एक बहुत ही दुर्लभ घटना थी।

आशुतोष बाबा

39. संगठनात्मक बाबा

१९६३ के अप्रैल में, आनंद नगर के विकास के लिए, बाबा ने संगठन की सामाजिक सेवा परियोजनाओं की देखरेख के लिए ए॰ एम॰ पी॰ एस॰ की एक नई शाखा के गठन की घोषणा की: इरौस (ERAWS) शिक्षा, राहत और कल्याण अनुभाग। सन्यासियों और मर्गियों ने खुद को स्कूल, बाल–सदन और अन्य कल्याणकारी, परियोजनाओं, और आपदा राहत कार्यों में लगा लिया।
१ जनवरी १९६४ को, जमालपुर में पहली दो प्रारम्भिक पाठशालाओं की शुरुआत हुई बाबा के बेटे गौतम जमालपुर की पाठशाला के पहले छात्र थे। ३ मई को लहेरिया–सराय, दरभंगा, बिहार में पहला प्राथमिक स्कूल खोला गया। उस वर्ष बाबा ने आनंद मार्ग शिक्षा परिषद और सेवा धर्म मिशन (SDM) की स्थापना की, और पहला होल टाइमर प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया गया।
२३ मई १९६५ की सुबह, बाबा ने WWD, AMPS के महिला कल्याण विभाग के गठन की घोषणा की। और १९६६ में पहली अवधूतिका, दीदी आनंद भारती (आँटी जी) बनी।
१९६४ और १९६६ के बीच १०० से अधिक जागृतियां और २०० प्राथमिक विद्यालय स्थापित किए गए। १९६८ तक, अकेले आनंद नगर में प्राथमिक स्कूल, एक हाई स्कूल, एक डिग्री कॉलेज, चिल्ड्रेंस होम, एक छात्रावास, एक अस्पताल (आभा सेवा सदन, बाबा की माँ के नाम पर) एक कोपर शरण (न्यू लाइफ असाइलम) थे। प्रकाश–अकादमी (एकेडमी ऑफ लाइट)

अंधे, बहरे और शारीरिक रूप से विकलांगों के लिए) स्थापित की गई। साथ ही आनंद–मार्ग तकनीकी–संस्था (Ananda &Marga Institute of Technology (AMIT)) एक प्रिंटिंग प्रेस और केंद्रीय कार्यालय की सीपना भी हुई।
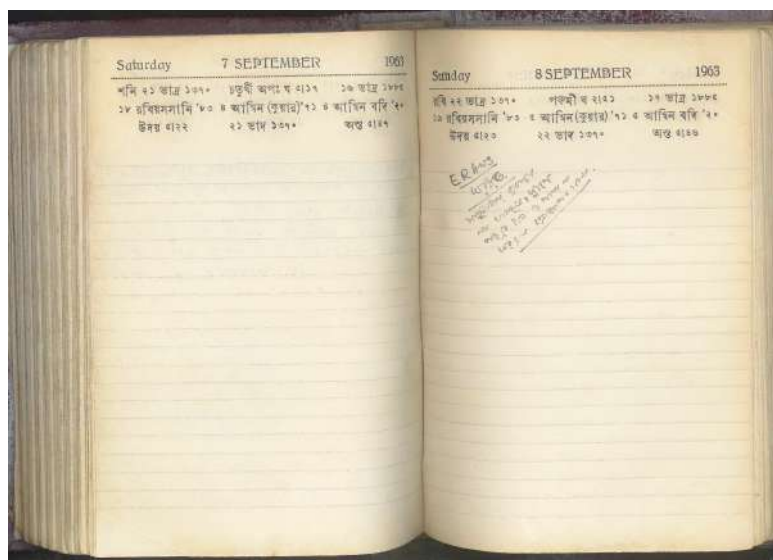
बाबा ERAWS को ८ सितंबर १९६३ की डायरी प्रविष्टि में संदर्भित करते हैं।

प्रारंभिक इराज प्रचार सामग्री
पहली इराज निर्देशिका–पुस्तिका का आमुख
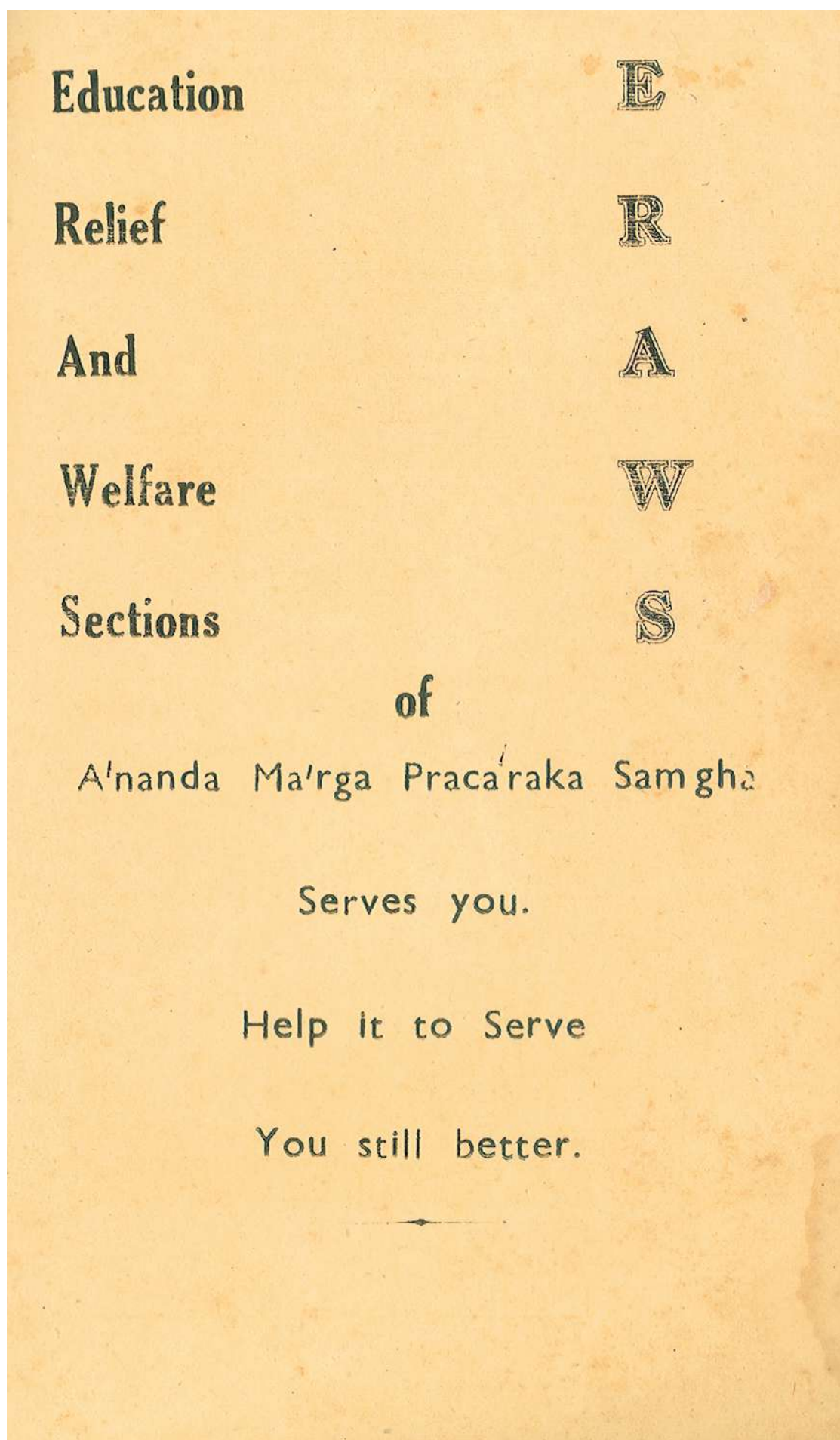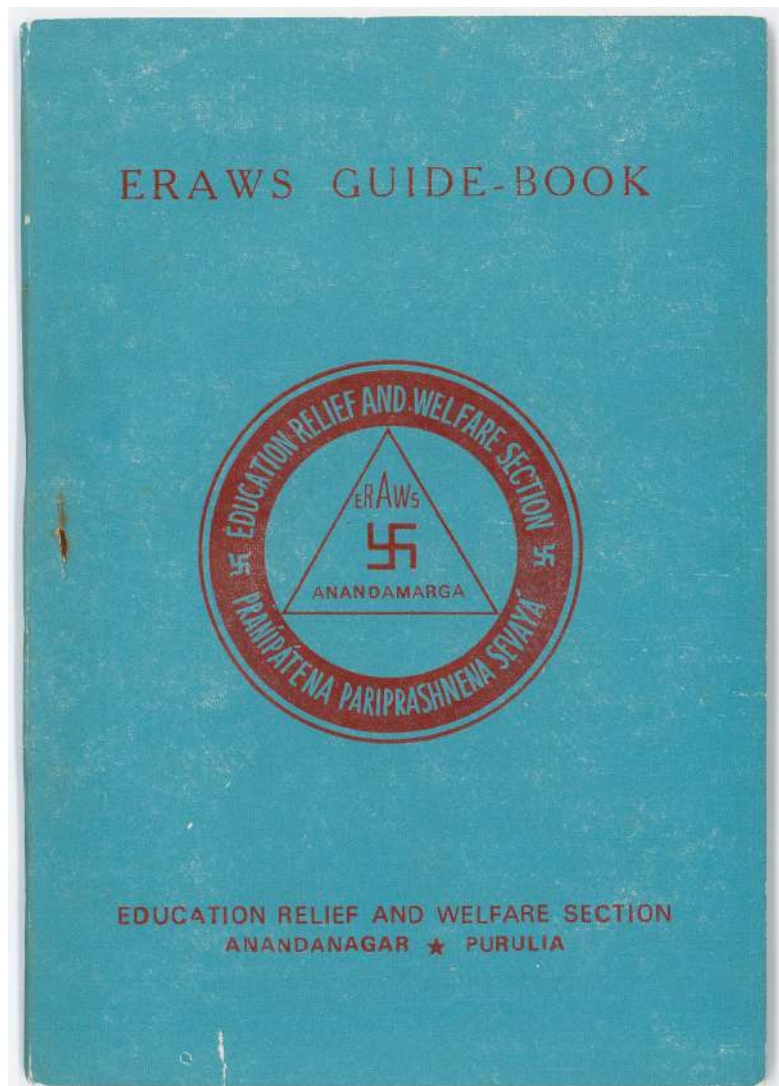
40. शिक्षा, राहत और कल्याण

१६६३ में जब बाबा ने ईराज़ की स्थापना की, तो उन्होंने मार्गियों से कहा, "आनंद मार्ग को शिक्षा में बालकों की सर्वांगीण प्रगति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए; इसका आदर्श वाक्य "स विद्या य विमुक्तये होगा" – अर्थात शिक्षा वह है जो मुक्त करती है। यह यथासंभव सस्ती होनी चाहिए और गांव के स्तर तक विस्तारित होनी चाहिए ताकि बच्चों को दूर तक यात्रा न करनी पड़े। अमीर और गरीब के बीच कोई भेद नहीं किया जाएगा। आनंद–मार्ग राहत अनुभाग, प्राकृतिक और मानव–निर्मित आपदाओं के आवश्यकता के समय मदद करने के लिए एक टीम बनाएगा। यह टीम अप्रत्याशित आपदाओं की अपनी त्वरित प्रतिक्रिया और प्रभावित क्षेत्रों तक पहुँचने की अपनी क्षमता पर गर्व करेगी जहाँ अन्य राहत एजेंसियों नहीं पहुँचती है। सभी चिकित्सा–कर्मियों को इस टीम के वास्तविक सदस्य होने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आपदा के समय में, सभी स्थानीय मार्गियों को खुद को इस खंड का सदस्य मानना चाहिए और सबको स्वयं सेवक बनने के लिए तैयार रहना चाहिए। कल्याण–अनुभाग बच्चों के घरों, चिकित्सा क्लिनिकों इत्यादि जैसे स्थायी कल्याण परियोजनाओं की स्थापना के लिए जिम्मेदार होगा।"
जब बाबा ने प्रत्येक खंड की गतिविधियों का विस्तार करना समाप्त किया, तो उन्होंने सचिवों को काम की देखरेख के लिए नामांकित करने के लिए कहा। प्रणय ने शिक्षा के लिए अवध को नामित किया, राहत के लिए केदार, और कल्याण के लिए डॉ रमेश नामित हुए।
इसके बाद के हफ्तों में, बाबा प्रत्येक नए प्रभारी से मिले और उन्हें अपने विभाग के विकास के लिए दिशा–निर्देश दिए। जब वह डॉ० रमेश से मिले, तो उन्होंने अपनी पहली कल्याण–परियोजना के रूप में बच्चों के घर की स्थापना करने के लिए कहा और उन्हें घर चलाने के बारे में विस्तृत निर्देश दिए।
"बच्चों को कभी भी अनाथ नहीं कहा जाएगा," बाबा ने उन्हें बताया, और हमारे घरों को अनाथालय नहीं कहा जाएगा, क्योंकि इस दुनिया में कोई भी एक अनाथ नहीं है। अन्य बच्चों के घरों में, वे बच्चों को भीख माँगने के लिए भेजते हैं। हमारे घरों में ऐसा नहीं होगा। अगर जरूरत पड़ी तो हमारे कार्यकर्ता भीख मांगेंगे। वे और स्थानीय मार्गी बच्चों की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जिम्मेदार हैं। बच्चों का जीवन स्तर मध्य–वर्गीय मार्गियों और उनके बच्चों जैसा होना चाहिए।"
थोड़े समय के भीतर, पटना में अखोरी हिमाचल प्रसाद की देखरेख में पहले बच्चों का घर खुला, फिर पटना में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक; संबुद्धानंद, पूर्व में असीम; और रांची से डॉ. रमेश। दूसरा घर कुछ समय बाद ही आनंद नगर में खुला, और कुछ ही समय बाद अन्य लोगों ने भी इसका अनुसरण किया।
बाबा ने शिक्षा–विभाग की स्थापना के लिए भी समान प्रोत्साहन दिया। ईराज के उद्घाटन के साथ, स्कूलों का उद्घाटन एक संगठनात्मक प्राथमिकता बन गया। अस्थाना जी की देखरेख में मार्ग के शिक्षकों ने शिक्षा की एक क्रमबद्ध व्यवस्था की और अपने विद्यालयों के लिए एक पाठ्यक्रम विकसित करना शुरू किया। उन्होंने बाबा से मुलाकात की, स्कूलों को चलाने के लिए और शैक्षणिक विधियों के लिए उन्होंने दिशा–निर्देश दिए। बाबा ने बच्चों के घरों के लिए भी दिशा–निर्देश दिये। जैसे कि उम्मीद की जा रही थी, बाबा ने बच्चों की शिक्षा में आध्यात्मिक और नैतिक पहलुओं पर महत्व दिया:
शिक्षा का वास्तविक अर्थ त्रिपक्षीय विकास है – मानव अस्तित्व के भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में एक साथ विकास। यह विकास मानव व्यक्तित्व में सामंजस्य बढ़ाता है। प्रउत की शैक्षिक प्रणाली में, नैतिक शिक्षा और आदर्श वाद के समावेश पर जोर दिया जाना चाहिए – न केवल दर्शन और परंपराओं पर। नैतिकता का अभ्यास सभी स्तरों पर पाठ्यक्रम में सबसे महत्वपूर्ण विषय होना चाहिए। सार्वभौमिकता की भावना को बच्चों में शुरु से जागृत किया जाना चाहिए। शिक्षा में शिष्टाचार और परिष्कृत व्यवहार ही पर्याप्त नहीं हैं परन्तु वास्तविक शिक्षा सृष्टि के लिए प्रेम और करुणा का भाव बालकों में पैदा करती है।"
इसके बाद, जब भी बाबा डी एम सी के दौरे पर निकलते, नए स्कूलों और बाल–सदनों में नियमित रूप से दौरा करना उनके कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा होता।

आनंदमूर्ति : जमालपुर के साल

१६६५, मुंगेर के एजुकेशन ट्रेनिंग कैंप (ETC) में, 'शिक्षा EDUCATION का संक्षिप्त परिचय दिया गया था:
मन का विस्तार अनुशासन, शिष्टाचार, गतिविधि, स्मृति। अंग्रेजी भाषा, उच्चारण के नियम।
सार्वभौमिक
दृष्टिकोण
चरित्र
सक्रिय अभ्यास
विश्वसनीयता
अधिक से अधिक ध्यान
दैवीय (गुरू) कृपा
सुंदर मानसिक स्वभाव

आनंद मार्ग चिल्ड्रेंस होम स्मारिका १६७१
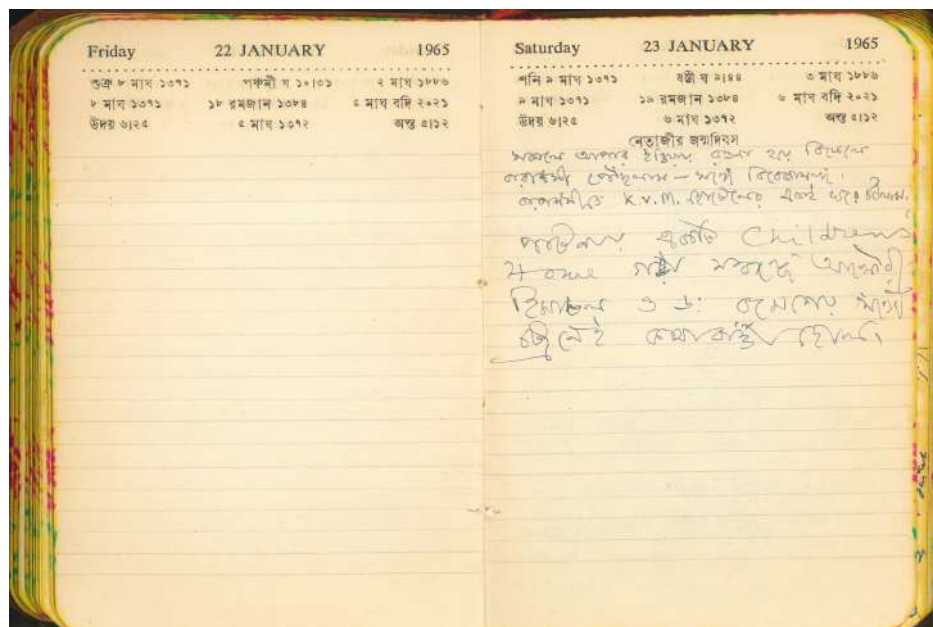
२३ जनवरी १६६५ की अपनी डायरी प्रविष्टि में, बाबा वाराणसी के लिए एक ट्रेन पर एक बैठक (शायद पाठ में एक संदर्भ) के बारे में लिखते हैं जहां उन्होंने डॉ रमेश और अखोरी हिमाचल प्रसाद के साथ पटना में बाल–गृह खोलने पर चर्चा की है।
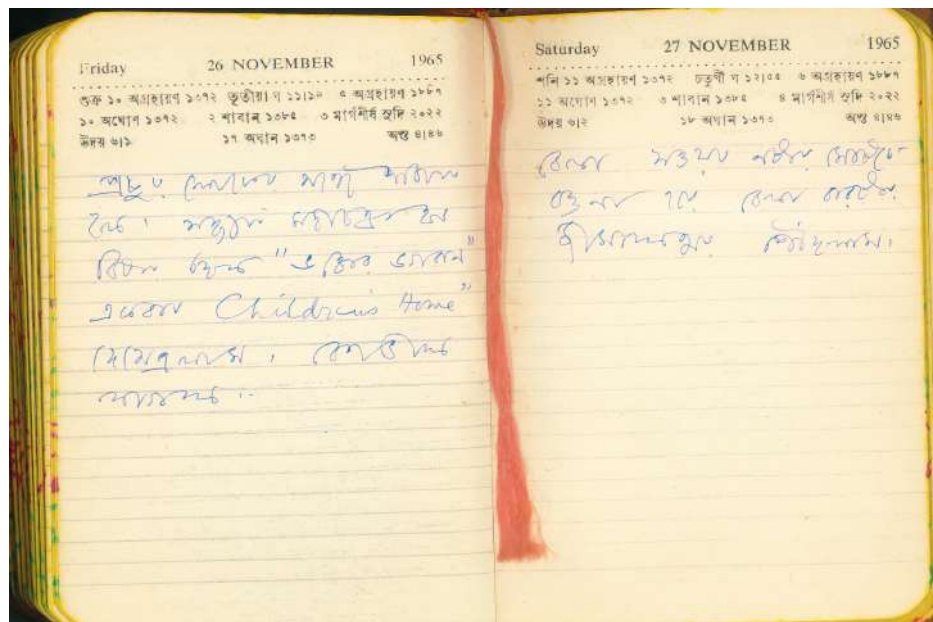
२६ नवंबर १६६५ की अपनी डायरी प्रविष्टि में, बंबई डीएमसी की उस शाम को लिखते है (प्रवचन का विषय 'भक्तों के भगवान' था) और बाल–गृह का दौरा।
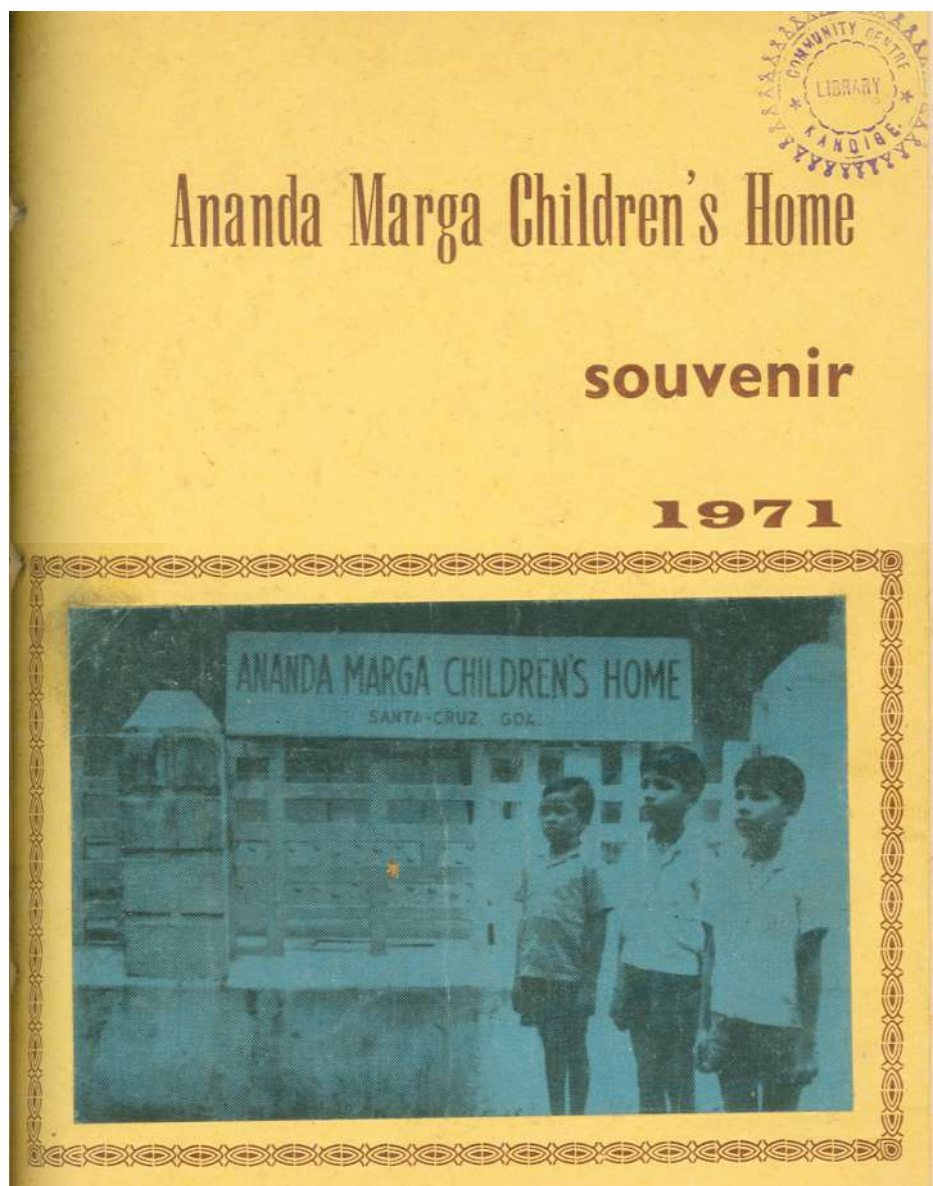
41. बाबा के चरण

१९६४ की होली (जो अब आनंद मार्ग में वसंतोत्सव के रूप में मनाया जाती है) के अवसर पर जमालपुर और आस–पास के भक्तों ने बाबा को चौड़ी सुनहरी थाली पर चरण रखने का अनुरोध किया जिसमें लाल रंग (गुलाल या कुमकुम) पानी में घुला हुआ था.

बाबा के ये पदचिह्न (चरण–कमल) उस पावन अवसर पर उस लाल रंग के घुले हुए पानी में चरण रखवाने और बाहर निकालने पर कागज़ पर छपवाए गए हैं। बीच में बाबा के हस्ताक्षर – 'आनंदमूर्ति' – बाद में जोड़े गये थे। ध्यान दें कि ये बाबा के ये (बाबा के चरण–कमल) पदचिह्न २६ अक्टूबर १९६० को दीदी आनंद करुणा द्वारा बनाए गए पदचिह्नों की छाप जैसे नहीं हैं।
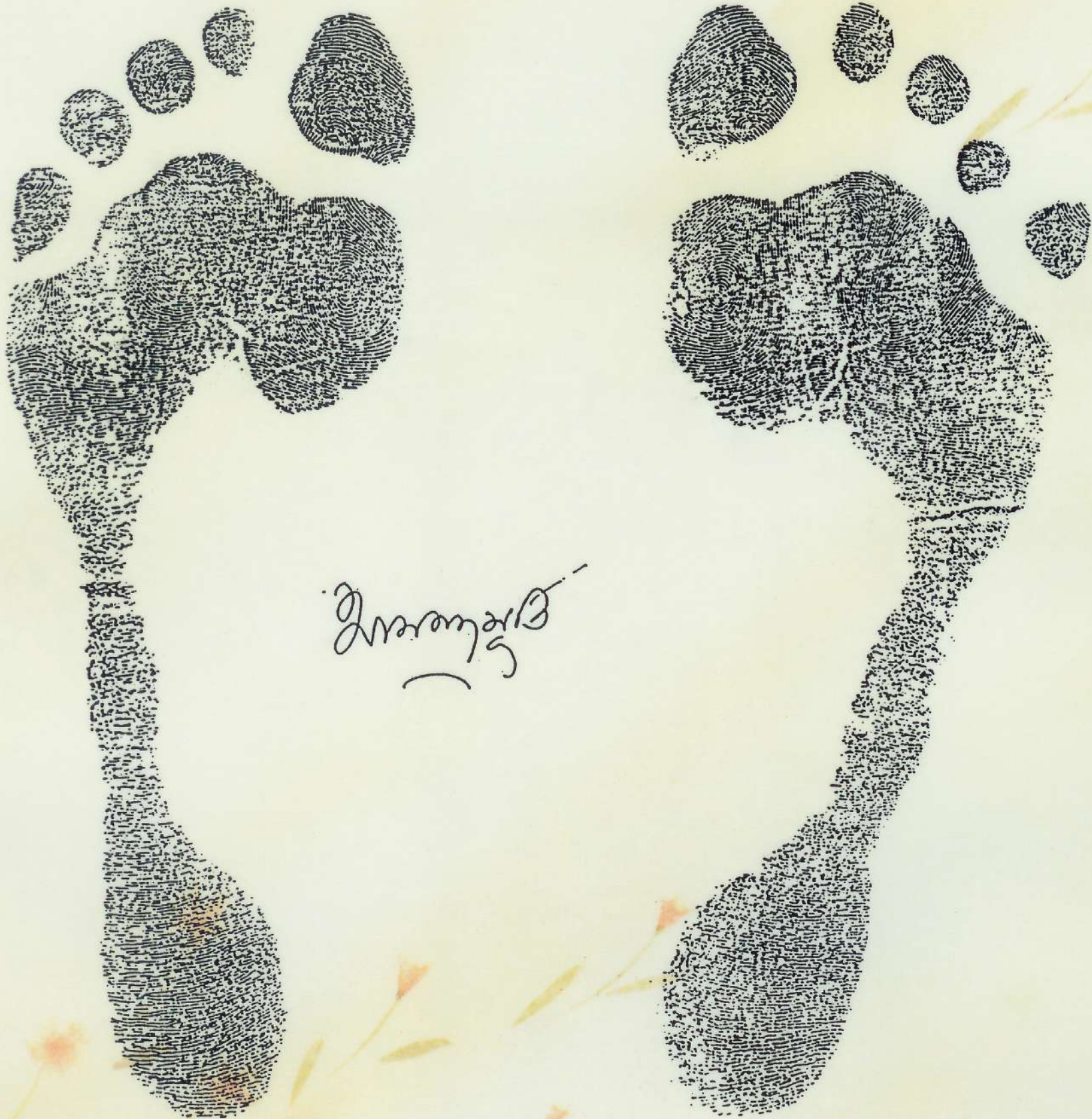
42. बाद कि पारिवारिक तस्वीरें

ये पारिवारिक तस्वीरें १९६० के दशक के मध्य में ली गई थीं। दूसरी तस्वीर, पहली तस्वीर से एक या दो साल बाद खींची गई थी।

दाएं से बाएं (खड़े हुए) पत्नी उमा, कल्याणी सरकार (भाई हिमांशु रंजन की पत्नी) अमल कुमार (बहन हीरा–प्रभा के ज्येष्ठ पुत्र) रूबी यानि की चित्रलेखा (हीरा–प्रभा की सबसे छोटी पुत्री) भाई मानस रंजन, विकास कुमार (बहन हीरा–प्रभा के कनिष्ठ पुत्र)

दाएं से बाएँ (बैठ हुए): भाई हिमांशु रंजन, बाबा, माता आभा रानी, बहन हीरा–प्रभा, भाई सुधांशु–रंजन और भाई मानस–रंजन खड़े हुएः विकास कुमार, (दाएं) कल्याणी, (दाएं से तीसरी) उमा सरकार, (दाएं से चौथी) अमल कुमार (बाएं से तीसरे गौतम को पकड़े हुए) रूबी (बाएं से दूसरी)

बाबा का पूरा जीवन वैराग्य और अनासक्ति के उदाहरणों से भरा पड़ा है। जब वे रेलवे में काम कर रहे थे, तो उन्होंने अपने छोटे भाई को अपना वेतन लेने का अधिकार दे दिया था और उनका अनुज बाबा का वेतन दफ्तर से लेकर उनकी माँ को घर–खर्चे के लिए दे देते थे। उनकी माँ तब उन्हें ज़ेब–खर्च की एक छोटी राशि देती थी, जिसका उपयोग वह ज़रूरतमंदों की सेवा करने या मां के व्रत के दिन फल और फूल खरीदने के लिए करते थे।

यह वक्तव्य बाबा की मां आभा–रानी के द्वारा बाबा के लिए दिया हुआ हैः– "घर पर वह एक बहुत ही कर्तव्यनिष्ठ पुत्र है और पूरी निष्ठा के साथ घर के खर्च का कर्तव्य निभाता है। मैं उसकी उम्र में उस (बाबा) से अधिक आज्ञाकारी पुत्र की कल्पना नहीं कर सकती। अपने मार्ग के कार्यों में जाने से पहले, आज भी वह मेरी अनुमति माँगता है। मुझे मेरे बढ़ती उम्र के कारण पैरों में तेज दर्द होता है। हर रात मेरे दर्द को दूर करने के लिए वह मेरे पैरों की मालिश करता है। ऐसा कोई अवसर नहीं आया जब उसने मेरी इच्छाओं की अवज्ञा की हो। लेकिन मैं भी उसे हमारी किसी भी निजी समस्या से परेशान नहीं करती। मेरे अन्य बच्चे भी सावधान रहते हैं कि वे बब्बू (बाबा का घरेलू नाम) को कभी उनकी समस्याओं से किसी भी तरह परेशान न करें।"

श्री श्री आनंदमूर्ति : एक रहस्य का आगमन

43. चरम निर्देश

वर्ष 1966 में बाबा ने चरम निर्देश दिया। इसमें आनंद मार्ग का सार तत्व निहित है तथा यह भी कि एक आनंद मार्गी को कैसा होना चाहिये। बाबा की सभी प्रकाशित पुस्तकों के प्रारंभ में इसे उद्धृत किया गया है। हर साप्ताहिक धर्मचक्र में साधना के बाद इसका पाठ किया जाता है। हालांकि इसे वर्ष 1966 में दिया गया था, किन्तु इसका प्रथम प्रकाशन 1967 में हुआ। इस बीच मूल बंगाली से इसका विभिन्न दूसरी भाषाओं में अनुवाद किया गया।

जैसा कि मूल संस्करण से स्पष्ट है कि इसे अंग्रेजी में सुप्रीम कमांड का नाम काफी सोच विचार कर दिया। पहले ''वह जो...... प्रयोग किया गया था। इस बीच सिड़नी (अब सुवा) के मार्गियों और कार्य कर्ताओंने भाषा गत सुधार प्रस्तावित किया जिसमें इसे लिंग निरपेक्ष बनाया गया 'वे जो ....उन्होने इसका प्रकाशन नवंबर 1976 के न्यूज लेटर 'प्रणाम' में किया। इसकी एक प्रति बाबा को दिखाई गई। उन्होने इसे अनुमोदित कर दिया, यह कह घर कि पुराना अनुवा अधिक बाइबिलिकल अंग्रेजी में था जबकि संसोधित अनुवाद अधिक आधुनिक है।

Supreme ~~instruction~~ Command ~~direction~~

He Whoever performs Sadhana twice a day regularly, the thought of Param Purusa will certainly arise in his mind at the time of death. Therefore every Ananda margii will have to perform Sadhana twice a day invariably —— Verily is this the Command of the Lord. Without Yama and Niyama, Sadhana is an impossibility; hence, the Lord's command is also to follow Yama and Niyama. ~~His~~ Disobedience to this Command is nothing but to throw ~~himself~~ into the tortures of animal life for crores of years. That no one should undergo torments such as this, that he might be enabled to enjoy the eternal blessedness under the loving shelter of the Lord, it is the bounden duty of every Ananda Margii to endeavour to bring all to the Path of bliss. Verily, is this a part and parcel of Sadhana to lead others along the path of righteousness.

*his liberation is a certainty, a sure guarantee

14/4/66

अलंकृत संस्करण सुवा सेक्टर के न्यूज लेटर प्रणाम में नवम्बर 1976 में प्रकाशित हुआ प्रणाम न्यूज लेटर में नवम्बर 1976 में प्रकाशित अलंकृत संस्करण जहां प्रारंभिक शब्द ''वे जो ......'' पहली बार अंग्रेजी अनुवाद में प्रयोग हुआ।

जो दोनों समय नियमित रूप से साधना करते हैं, मृत्युकाल में परम पुरुष की भावना उनके मन में अवश्य ही जगेगी और निश्चित रूप से उनकी मुक्ति होगी ही। अतः प्रत्येक आनन्द मार्गी को दोनो समय साधना करनी ही होगी। यही है परम पुरुष का निर्देश। यम नियम के बिना साधना नहीं हो सकती। अतः यम नियम का पालन करना भी परम पुरुष का ही निर्देश है। इस निर्देश की अवहेलना करने का अर्थ है कोटि–कोटि वर्षों तक पशुजीवन के क्लेश में दग्ध होना, किसी भी मनुष्य को उस क्लेश में दग्ध होना नही पडे तथा परम पुरूष की स्नेह छाया में सभी आकर शाश्वति शान्ति लाभ करें, इसलिए सभी मनुष्यों को आनन्द मार्ग के कल्याण पथ पर लाने की चेष्टा करना ही प्रत्येक आनन्द मार्गी का कर्तव्य है। दूसरों को सत्पथ का निर्देशन करना साधना का ही अंग है।''

श्री श्री आनन्दमूर्ति

44. व्रज कृष्ण ने वृन्दावन छोड़ा

वर्ष 1966 के अंत में बाबा ने रेल्वे की नौकरी छोड़ दी। इससे पहले उनकी माँ ने उनसे कहा था, ''बुबू मैं जानती हूँ एक दिन तुम मार्ग का काम करने के लिए घर छोड़ दोगे। किन्तु मेरी दो विनितियाँ हैं : तुम रूबी (बहन हीरा प्रभा जो 1950 में विधवा हुई, की सबसे छोटी पुत्री) के विवाह तक गृह त्याग नहीं करोगे और जल्दबाजी में नौकरी नहीं छोड़ोगे। 31 दिसम्बर 1966 को बाबा की भाँजी का विवाह हुआ और उसी दिन उन्होंने जमाल पुर छोड़ दिया। माता की इच्छा का मान रखने के लिये उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र न देकर लंबा अवकाश ले लिया। जमालपुर से उन्होंने आनन्द नगर के लिए प्रस्थान किया। नौकरी पर रहते हुए उन्होंने यह दिखाया कि व्यस्त रहते हुए भी अध्यात्मिक उपलब्धि और समाज सेवा की जा सकती है। जब कार्यकर्ताओं ने मार्ग के लिये पूरा समय देने की प्रार्थना की तो उन्होंने इसे इस शर्त पर स्वीकार किया कि वे उनकी गति के अनुसार चलेंगे। उन्होंने कहा कि उनकी गतिविधियाँ दस गुना बढ़ जानी चाहिये।

श्री श्री आनन्द मूर्ति : एक रहस्य का आर्विभाव

30 दिसम्बर 1966 को जमालपुर छोड़ने के पहले बाबा ने जमालपुर जागृति में धर्म महाचक्र किया। प्रवचन का विषय था ''भागवत धर्म'' : उसी दिन वे अंतिम बार रेल्वे आफिस गये और सहकर्मियों से विदाई ली। अगले दिन 31 दिसम्बर को भान्जी के विवाह के उपरांत उन्होंने घर छोड़ दिया। वे जागृति गये वहाँ मार्गियों से कुछ बात की और फिर रवाना हो गए। जमालपुर की अंतिम सीमा पर उन्होंने कार रुकवाई, उतरकर जमालपुर की दिशा में प्रणाम किया। इसके बाद उन्होने ड्राईवर को आनन्द नगर चलने का निर्देश दिया।

बाबा तेरह वर्ष बाद अक्टूबर 1979 में वहां अंतिम डी.एम.सी. करने जमालपुर वापिस आये। जागृति से उनके पारिवारिक घर तक के डेढ़ किलामीटर लंबे मार्ग पर वे पैदल गए। सड़क के दोनो ओर हजारों की संख्या में लोग उनका स्वागत करने खड़े थे। यह दृश्य कितना सुंदर था। एक महान भक्त क्रांति नाच रही थी और बार–बार समाधि में जा रही थी, ऐसा मैंने पहले कभी नही देखा था। जब हम उसके घर गए तो उसने हमे देखा और कहा ''मेरे बाबा आ गये हैं।'' यह बाबा का अंतिम जमालपुर प्रवास था।

यहाँ बाबा के दो फोटों हैं जिसमें वे मैदान में बैठे है। ये लगभग उसी समय के हैं जब उन्होंने जमालपुर छोड़ा। इनमें यह दिखाई पड़ता है एक एक क्षण के अंतराल कैमरा कोण और प्रका'। के अनुसार कैसे उनकी छवि अलग–अलग दिखाई पड़ती है .... फोटोग्राफ उस समय की प्रथा के अनुसार हाथ से रंगीन किये गये है।

बाद के वर्षो में क्रान्ति दीदी

45. महर्लिका में बाबा (1968)
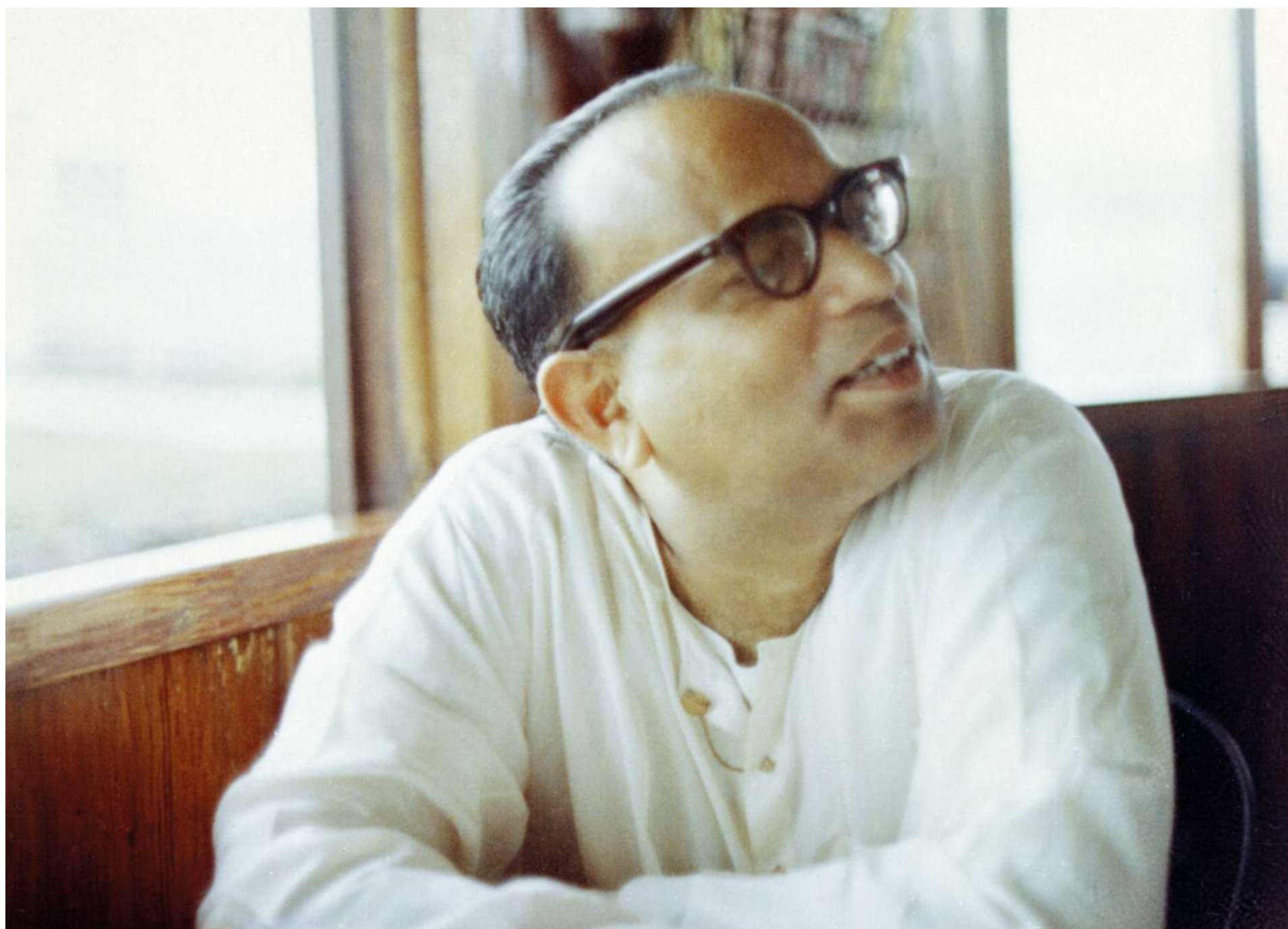
पाइन्स होटल बागुओं में बाबा (फोटो)

आनन्द नगर की 5 मार्च 1967 की घटना के बाद बाबा ने मार्ग का केन्द्रीय कार्यालय राँची स्थानांतरित कर दिया। अगले वर्ष 20 से 27 जून 1968 के बीच उन्होंने फिलीपिंस की यात्रा की जो कि उनकी पहली विदेश यात्रा थी। और यहां आयोजित धर्म महाचक्र भारत के

बाहर पहला धर्ममहाचक्र था। अतिविशिष्ट स्वागत के बाद उन्होंने उपस्थित मार्गियों से कहा, ''इस देश का संस्कृत नाम महर्लिका है (अर्थ : छोटा किन्तु महान)

महर्लिका में पहले दीक्षा लेने वाले मेसानिक पंथ के सदस्य थे। उन्होंने अपने एक सदस्य को व्यष्छिगत रुप से बाबा को अपने देश आने का निमंत्रण देने भेजा। वह भारत के बाहर पहला धर्म महाचक्र 23 जून 1968 को टाफ्ट एवेन्यू मनीला के मेसोनिक टेंपल में हुआ।

प्रवचन का विषय था ''मनुष्यों के ईश्वर''। इस यात्रा में बाबा बागुओ भी गए जो कि एक पहाड़ी शहर है। वहाँ बाबा ने पाईन्स होटल में रात्रि विश्राम किया।

27 जून 1968 को बाबा का विदाई संदेश :—

''अब मैं यह देश छोड़कर जा रहा हूँ और मैं तुम्हें भौतिक रुप से छोड़कर जा रहा हूँ। मेरे पुत्र और पुत्रियों भौतिक रुप से मैं तुम्हें छोड़कर जा रहा हूँ किन्तु मैं तुम्हें भूल नहीं सकता और मानसिक रुप से मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगा। मैं चाहता हूँ कि तुम सभी आदर्श मनुष्य बनो। तुम सभी का अस्तित्व सार्थक हो।इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना। तुम्हारा जीवन शान्तिमय हो।

उन्होंने फिर कहा, ''मेरे पुत्र और पुत्रियों, मुझे एक बात और कहना है, मैं स्वर्ग में नहीं रहता।

मैं क्या हूँ — मुझे यह सच्चाई एक वाक्य में कहना है, मैं तुम्हारा हूँ''

46. साधना वर्ष

वर्ष 1969 में बाबा ने घोषणा की ''यह वर्ष साधना वर्ष है। अगला वर्ष सेमिनार वर्ष होगा। उन्होंने फिर कहा, ''बेशक साधना वर्ष आगे भी अनिश्चित काल तक चलता रहेगा।''

साधना का अर्थ है स्वयं की ''पूर्णता के लिये प्रयास'', वास्तव में आनन्द मार्गियों के लिये साधना एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। वर्ष 1956 में चर्याचर्य के साधना खण्ड में बाबा ने निर्देश दिया – ''स्वस्थ अथवा अस्वस्थ अवस्था में सोकर, बैठकर अथवा गाड़ी में दिन में कम से कम दो बेला पूर्ण ईश्वर–प्रणिधान करना ही होगा। निकट भविष्य में कोई अत्यंत जरुरी काम रहे या न रहे एवं मन चंचल रहे,या न रहे। सभी साधक पहले अस्सी बार गिनकर जप करेंगे और उसके बाद बिना किसी गिनती किये यथा विधि जब तक इच्छा हो इष्ट मंत्र का जप करेंगे।''

इष्ट मंत्र के जप के साथ गुरुमंत्र (द्वितीय पाठ) के अभ्यास से हर क्षण साधना हो जाती है।

''जा बलो जा करो,
कभू भूलो ना को तारे
तार नाम हृदय धरि,
तारइ काज मने करि
आनन्दे डूबिया रहो कर्म सागरे''

आनन्द मार्ग चर्याचर्य भाग–2.

सहजयोग साधना को सभी छह पाठों का दोनों समय नियमित रुप से अभ्यास करने पर सभी का चरम अभीष्ट को प्राप्त करना निश्चित है।

''एक निराकार, अनादि, अनंत परम ब्रम्ह जीवों के एकमात्र अराध्य हैं – वे ही जगत गुरु हैं, आनन्दमूर्ति के नाम रुप के माध्यम से हम लोगों में उन्होंने ही ब्रम्हविद्या का प्रकाश किया है। उनका महातम्य जीवों को समझाना ही होगा।''

'आनन्द मार्ग चर्याचर्य भाग 2

''तुम साधना के क्षेत्र में इसलिये आए हो ताकि अंधकार की कालिमा के परे प्रकाश के साम्राज्य में प्रवेश कर सको। इस अद्भुत क्षेत्र की यात्रा में तुम यशस्वी और विनयी बनो। तुम्हें यात्रा शुभ हो।''

''वेद में ब्रम्ह विज्ञान –2, भाद्र पूर्णिमा 1955–डी.एम.सीआनंदवाणी, आनंद पूर्णिमा 1960 (बाबा ने इसे प्रणय कुमार चटर्जी को लिखवाया और फिर हस्ताक्षर किये)

"Life is a spiritual sadhana and the result of this sadhana is to be offered at the alter of the almighty."

('जीवन एक आध्यात्मिक साधना है और इस साधना का फल परम पुरुष को अर्पित करना है।'')

Life is a spiritual sádhaná and the result of this sádhaná is to be offered at the alter of the Almighty.

जीवन एक आध्यात्मिक साधना है और इस साधना का फल परम पुरुष में समर्पण करना होगा।

জীবন একটি আধ্যাত্মিক সাধনা আর এই সাধনার ফল পরম পুরুষে সমর্পণ করতে হবে।

आनन्दमूर्ति

11-5-60.
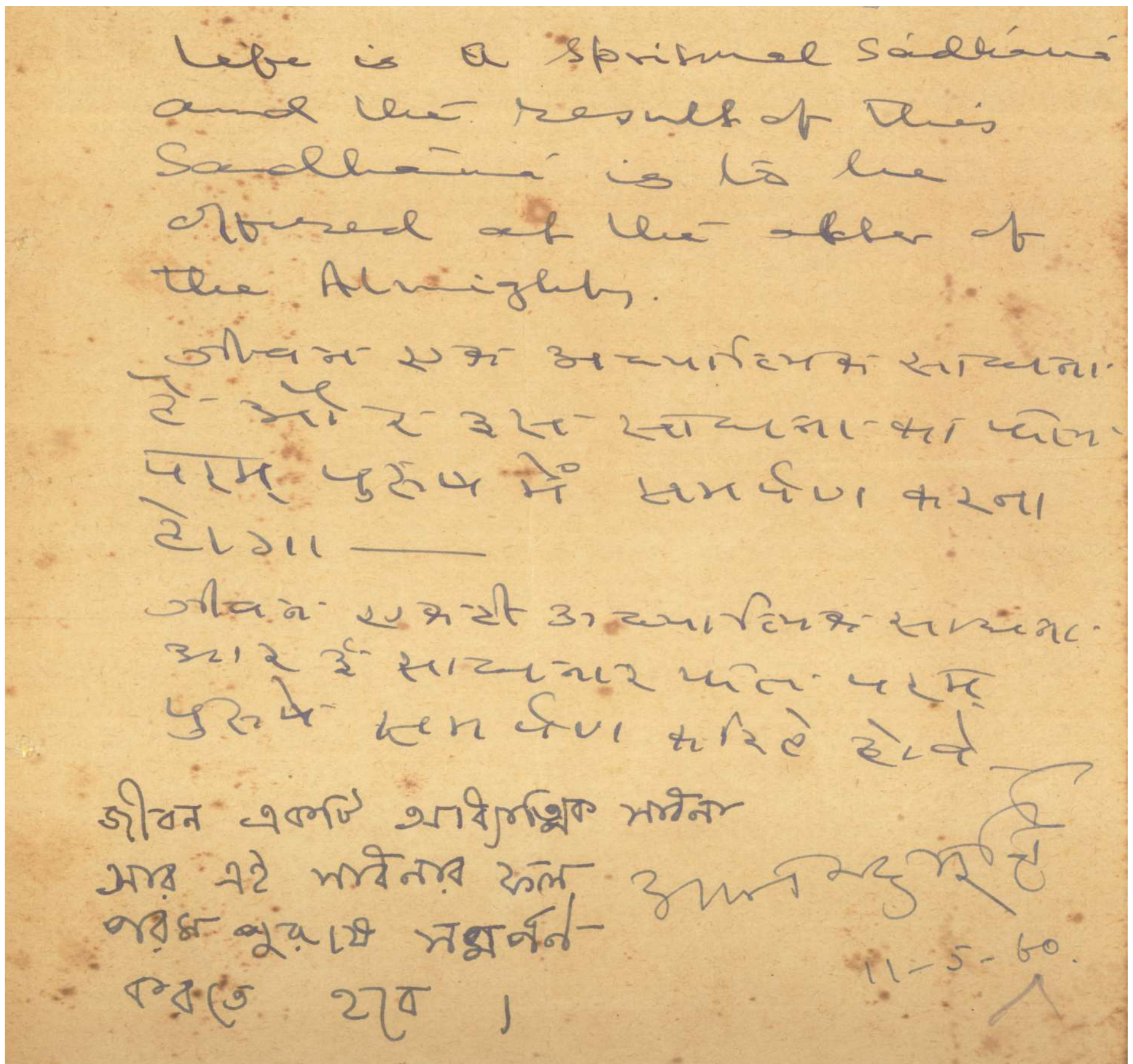
47. महर्लिका में बाबा (1969)

बाबा ने वर्ष 1969 में 20 से 26 अप्रैल के बीच दूसरी बार महर्लिका की यात्रा की। यह उनकी दूसरी विदेश यात्रा थी तथा यहाँ हुआ धर्ममहाचक्र भारत के बाहर दूसरा था।

25 अप्रैल को दोपहर में बाबा ने युवा छात्रों के एक समूह को उनमें से एक के निवास पर दर्शन दिया। अपने प्रवचन में (जो बाद में ''काल और महाकौल'' शीर्षक से प्रकाशित हुआ) उन्होंने समझाया – ''कौल और महाकौल में यह अंतर है कि कौल अपने अंदर सुसुप्त कुल कुंडलिनी को अपनी साधना द्वारा जागृत कर सकता है, और मूल ऋणात्मकता और मूल धनात्मकता को जोड़ सकता है। जबकि महाकौल के पास दूसरों की कुलकुंडलिनी भी जागृत करने की शक्ति होती है। एक कौल साधक दूसरों की कुलकुंडलिनी कभी जागृत नहीं कर सकता; वह अपनी कुलकुंडलिनी जागृत कर सकता/सकती है। महाकौल यदि चाहे तो दूसरों की भी कुलकुंडलिनी जागृत कर सकता है।''

अपनी बात समाप्त कर बाबा ने सामने बैठे एक युवा की ओर देखकर हाथ हिलाया और कहा, ''मेरे बच्चे आनन्द का उपभोग करो।'' वह लड़का धीरे–धीरे पीछे की ओर गिर गया और समाधि में चला गया। बाबा ने दूसरों को पीछे हटने का इशारा किया ताकि उसके लिये जगह बन सके। तब उन लड़को की समझ में आया कि बाबा ने इस युवा लड़के की कुलकुंडलिनी जागृत करने का प्रदर्शन किया था और वे वस्तुतः महाकौल हैं।

अगले दिन 24 अप्रैल, 1969 को फिलीपिंस के मनीला की एक युनिवर्सिटी के हाल में धर्ममहाचक्र हुआ। विषय था ''वृहत की आकांक्षा''।

महाकौल का मनीला में दर्शन तथा मनीला में मैदान भ्रमण

महाकौल का मनीला में दर्शन

मनीला में मैदान भ्रमण

48. अध्यात्मिक प्रदर्शन

वर्ष 1954 के अंत में हुये प्रथम मृत्यु प्रदर्शन के बाद 1960 के वर्ष तक बाबा ने कई अध्यात्मिक प्रदर्शन दिखाये। किन्तु वर्ष 1967 से 1970 तक के वर्ष विशिष्ट रहे। इस अवधि में बाबा ने राँची जागृति में सैकड़ो प्रदर्शन किये। इनमें कुंडलिनी जागरण, कई तरह की समाधियाँ, मनोगत शक्ति (आकल्ट पावर), ब्रम्हाण्ड का स्वभाव, प्रकाशीय शरीर, जीवन–मृत्यु, पूर्वजन्म और संस्कार से संबंधित प्रदर्शन शामिल थे। उन्होंने सुभाषचन्द्र बोस से संबंधित प्रदर्शन कई बार दिखाये जिनमें वे तिब्बत की एक गुफा में साधनारत् दिखे। उन्होने मार्गियों की यह प्रार्थना अस्वीकार कर दी कि सुभाष को मार्ग का प्रचार करने हेतु वापिस बुला लिया जाये।

बाबा : वर्ष 60 के दशक के अंत में वर्ष 1969 को आध्यात्मिक प्रदर्शनों के विषय में एक अज्ञात अमेरिकी मार्गी द्वारा प्रदत्त विवरण।

एक साधक द्वारा दिया गया विवरण जिसने यह विशेष प्रदर्शन देखा प्रदर्शन के बाद मैं सोच में पड़ गया। यह तो निश्चित था कि बाबा के पास अतीन्द्रिय शक्तियाँ हैं। किन्तु क्या वे सर्व शक्तिमान, सर्वज्ञाता गुरू हैं? बाबा तभी जाने के लिये खड़े हो गये। किन्तु वे अचानक फिर वापिस बैठ गये और उन्होने दशरथ जी को उनके स्वयं का पूर्व जीवन देखने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि वे दशरथ जी के मन को सात हजार वर्ष पीछे ले जा रहे हैं। दशरथ जी का शरीर काँपने लगा, चेहरे का रंग बदल गया और उन्हें बहुत पसीना आने लगा। वे बाबा बाबा बाबा पुकारने लगे फिर उन्होंने कहा कि तीव्र प्रकाश के बीच स्थित है। उस प्रकाश के बीच उन्होंने भगवान शिव को साधना मुद्रा में बैठे देखा। फिर उन्होंने दशरथ जी को 3500 वर्ष आगे आने तथा वे क्या देख रहे हैं बतलाने का निर्देश दिया।

दशरथ जी ने कहा कि वे मुकुट पहने एक सुदर्शन व्यष्टि को देख रहे हैं। बाबा ने उन्हें और 3500 वर्ष आगे आने का निर्देश दिया। दशरथ जी ने कहा कि वे बाबा का दीप्तमान रूप देख रहे हैं।

बाबा ने मुस्कुरा कर कहाःदेखो दशरथ मैं पूर्व जन्म में एक राजा था अब गरीब आदमी हूँ।''

1960 के दशक के अन्त में बाबा

49. पराशिवानंद दादा

वर्ष 1969 में बाबा ने दादा परशिवानंद के पूर्व जन्म दिखाने के लिए एक आध्यात्मिक प्रदर्शन दिया। उसी दशक के प्रारंभ में दादा ने आचार्य क्षितिज से दीक्षा ली थी। दीक्षा के बाद बाबा ने उनके पूर्वजन्म की अद्भुत कहानी बताये थे।

वर्ष 1963 में आचार्य क्षितिज और केदारनाथ जी ने राँची के एक विजय कुमार मिश्रा के विषय में सुना। वे काफी पढ़े लिखे थे जो एक सुसंस्कृत परिवार से थे। उनके विषय में कहा जाता था कि वह उन्नत आत्मा हैं। एक दिन दोपहर में आचार्य क्षितिज और केदारनाथ उनसे मिलने गये। बातचीत में उन्होने बताया ''मेरी माँ की कई वर्षो तक कोई संतान नहीं थी। उन्हें भविष्य में भी संतान प्राप्ति की आशा नहीं थी। एक रात उन्होने स्वप्न देखा कि एक महान योगी अपनी साधना पीठ पर बैठे हैं। जब वह उनके पास पहुंची तो उन्होने आशीर्वाद दिया और उन्हें एक नारियल भेंट दिया। उन्होंने कहा कि नारियल खाने पर उन्हें संतान प्राप्ति होगी और वह संतान एक महान् संत होगा। उस स्वप्न के कुछ समय बाद ही मेरी माँ गर्भवती हुई।

क्षितिज जी ने विजय का उत्साहवर्धन कर उन्हें दीक्षा दी। जमालपुर में बाबा के दर्शन के बाद विजय ने आचार्य जी एक पाँव छुये और कहा ''आचार्य जी आपने मेरा जीवन बदल दिया। उस दिन आपका मेरे घर आना मेरा जीवन का निर्णायक मोड़ था। आपकी सहायता से ही मैं सही पथ पा सका। मैंने तय किया है कि मैं सब कुछ छोड़कर अपना जीवन बाबा के लिये अर्पित कर दूंगा''।

9 अप्रैल 1964 को बाबा दुबारा आनन्द नगर आए। क्षितिज और केदारनाथ जी राँची से विजय को भी कार्यक्रम में भाग लेने साथ लेकर गए। जब वे बाबा से मिलने गये तो उन्होंने पूछा कि विजय कहाँ है, उसे यहाँ बुलाओ। क्षितिज जी ने विजय को बुलाया। बाबा ने बैठने को कहा। फिर उन्होने एक कहानी बताना शुरू किया।

बाबा ने कहा, ''तीन सौ वर्ष पूर्व रीवां की सीमा पर एक सिद्ध योगी अपने आश्रम में शिष्यों के साथ रहते थे। उन्हीं शिष्यों में एक किशोर भी था जो एक धनवान राजा की संतान था। वह अध्यात्मिक पथ पर आने के लिए कम आयु में ही ससारिक सुख सुविधाओं का त्याग कर आश्रम आ गया था। यह बालक एक उन्नत आत्मा एवं शुद्ध मन से युक्त था। उसे मीठे फलों को छोड़ कर किसी भी वस्तु से कोई लगाव नहीं था। एक दिन गुरू ने उसे अपने कमरे में बुलाकर कहा कि वह कुछ दिनों के लिए आश्रम से बाहर जा रहे हैं। इस अवधि में आश्रम उसके जिम्मे रहेगा। गुरू ने कहा कि उनकी अनुपस्थिति में आश्रम का कोई नियम टूटना नहीं चाहिए। लड़के ने वादा किया और गुरू अपनी यात्रा पर निकल गए।

गुरू की अनुपस्थिति में रीवां की रानी का आश्रम में आगमन हुआ। वे निःसंतान थीं और उस लड़के की अध्यात्मिक आभा से आकर्षित हुईं। उनके मन में लड़के को दत्तक पुत्र के रूप में अपना कर अपना वारिस बनाने का विचार आया। उन्होंने अपनी इच्छा से उस लड़के को अवगत कराया। किन्तु लड़के ने उन्हें यह कह कर निराश किया, ''माँ मैं राजकुल में पैदा हुआ था मैंने गुरु चरणों में बैठकर साधना करने हेतु सब कुछ त्याग दिया है। वे मुझसे प्रसन्न हैं और मुझे शिक्षा दे रहे हैं। कृपया फिर मुझे पुरानी राहों पर चलने के लिये न कहें। यह संभव नहीं है'' रानी उसके उत्तर से निराश हुई पर उन्होंने उसका निर्णय स्वीकार किया। उन्होंने कुछ स्वर्ण और रजत आभूषण विदाई उपहार के रुप में देना चाहा ताकि आश्रम की सहायता हो सके। किन्तु आश्रम का कड़ा नियम था कि शिष्य गुरू की अनुमति के बिना बाहरी लोगों से कुछ भी स्वीकार नहीं कर सकते थे। उसने रानी को बताया कि वह क्यों उपहार स्वीकार नहीं कर सकता। सुनकर रानी ने कहा, ''मैं तुम्हारी माँ जैसी हूँ मुझसे कोई उपहार स्वीकार करने में तुम्हें आपत्ति नहीं होना चाहिए। यदि तुम आभूषण स्वीकार नहीं कर सकते तो मुझसे कम से कम एक नारियल ले लो।'' लड़का उनको और अधिक निराश करना नहीं चाहता था, फिर उसे नारियल पसंद भी थे। उसने सोचा कि केवल एक नारियल से क्या अन्तर पड़ता है। अतः उसने नारियल लेना स्वीकार कर लिया। रानी ने नारियल को काटकर उसके टुकड़े किये और लड़के को दिए। लड़के ने कुछ टुकड़े खा लिये और शेष गुरू के लिये रख दिये, जिनका किसी भी समय आगमन अपेक्षित था। इसके बाद रानी चली गई। अगले दिन गुरू वापिस आये। आते ही उन्होंने उस शिष्य को अपने कमरे में बुलाया और क्रोधित स्वर में कहा, ''आश्रम का नियम है कि कोई भी शिष्य मेरी अनुमति के बिना कुछ भी स्वीकार नहीं करेगा। तुमने केवल एक नारियल के लिए नियम तोड़ दिया। यदि तुम इन सामान्य नियमों का पालन नहीं कर सकते तो तुम किस प्रकार योग सीख सकते हो ?'' ''शिष्य उदास और व्याकुल होकर गुरू के पास से गया। लंबे समय तक यह गलती उसके मन को व्यथित करती रही। इसके कुछ समय बाद ही उसकी मृत्यु हो गई। इस गलती और इसके कारण उसके मन में पड़े गहन प्रभाव से उसे अगले जन्म में नारियल के वृक्ष के रूप में जन्म लेना पड़ा। और वह उस शरीर में तीन सौ वर्षों तक रहा।'' इस समय तक विजय के आँसू बहने लगे थे। बाबा ने कहा, ''बताओ विजय क्या तुम्हारे जन्म और नारियल में कोई संबंध है ?''

विजय ने कहा, ''हाँ बाबा'' क्षितिज और केदार जी की आँखें भी अश्रुपुरित हो गईं। वे समझ गये थे कि कहानी विजय के विषय में ही थी। फिर बाबा ने कहा, ''तुमने नारियल के वृक्ष के रुप में अपना संस्कार पूरा कर लिया है। तुम्हारी माँ ने भी नारियल वापिस लेकर अपना संस्कार समाप्त कर दिया है। अब परम पुरुष ही तुम्हारी पूरी देखभाल करेंगे।'' विजय ने चुपचाप रोते हुये बाबा को साष्टांग प्रणाम किया और कहा, ''बाबा मुझे शक्ति दो कि मृत्यु तक आपके मिशन की सेवा कर सकूं और मुझे कुछ नहीं चाहिये।'' बाबा ने सामने झुककर विजय के आज्ञा चक्र पर स्पर्श किया। विजय पीछे की ओर लुड़क गया और समाधि में चला गया। बाबा ने दोनों गृही आचार्यो से कहा कि वे उसे एक कंबल से ढ़ंक दें और किसी प्रकार का विघ्न न डालें क्योंकि वह गहन आनंद में है। बाद में अवसर पाकर क्षितिज जी ने बाबा से इस कथा के संबंध में प्रश्न किया, ''उस शिष्य को एक छोटी सी भूल के लिये इतनी बड़ी सजा क्यों भुगतना पड़ा ?''

बाबा ने कहा, ''उसके लिये वह भूल छोटी नहीं थी। अध्यात्म की सीढ़ी पर जो जितना ऊपर पहुंच जाएगा, किसी भूल की सजा उतनी ही अधिक होगी। यदि एक आचार्य और एक सामान्य मार्गी एक ही प्रकार की गलती करें तो आचार्य की सजा अधिक होगी, क्योंकि उसकी जिम्मेदारी अधिक है। वह शिष्य एक महान योगी था, उसने गुरू के निर्देश के विरूद्ध कार्य किया अतः उसे भीषण सजा मिली। यह परम पुरुष की लीला है।''

आनंद मूर्तिः दि जमालपुर इयर्स और लिविंग विद बाबा से लिया गया।

पराशिवानंद दादा ने 29 जून 1984 को शरीर त्याग किया। उनकी मृत्यु के दिन बाबा ने कहा कि उन्होंने आचार्य पराशिवानंद अवधूत को मानव जीवन का परम लक्ष्य प्रदान कर दिया है अर्थात् उन्हें जीवन मृत्यु के बंधन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त हो गया।

50. एमर्ट / एमर्टेल

वर्ष 1963 में इरॉज (म्त्ौंद्ध की स्थापना के बाद और इसकी छत्र छाया में शिक्षा, त्राण एवं जन कल्याण की गतिविधियाँ तीव्र गति से आगे बढ़ी, बाबा ने अपनी 1 जनवरी 1964 की आनन्दवाणी के माध्यम से मार्गियों पर दबाव डाला : ''मनुष्य का आदर्श ही उसे महान् बनाता है। अपनी साधना से, अपनी सेवा से, अपने बलिदान से महान बनो।''

तीन वर्ष बाद वर्ष 1966–67 को बिहार में सूखा पड़ने पर और दिसम्बर 1967 में कोयना नगर भूकम्प त्रासदी होने पर उन्होने आनन्द मार्ग रिलीफ कमेटी का गठन किया। त्राण स्वयं सेवकों को उन्होंने संदेश भेजा, ''यह मत भूलना कि तुम लोगों द्वारा दी गई राहत सामग्री का उतना महत्व नही है जितना उस सांत्वना का है जो उन्हे तुम्हे राहत सामग्री के साथ आया देखकर होती है।यहां तक कि वे लोग जो मर जाते उनके प्राण भी तुम्हे देखकर हुई खुशी और संतोष से बच जायेंगे। अप्रेल 1970 में आनन्द मार्ग रिलीफ टीम का नाम बदलकर आनन्द मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम (एमर्ट) कर दिया गया और यह आपदा राहत और दीर्घावधि के राहत कार्य परियोजनाओं के लिये इरॉज(ERAWS) की त्राण शाखा बन गई। एमर्ट के महिला विभाग को एमर्टेल (AMURTEL) नाम दिया गया (आनन्द मार्ग यूनिवर्सल रिलीफ टीम–लेडीज)। ''मानवता की सेवा ही ईश्वर सेवा है'' यह उक्ति सदा के लिये एमर्ट/एमर्टेल के साथ जुड़ गई।

2 जून 1990 में एमर्ट के एक आयोजन में बाबा ने कहा, ''इस पृथ्वी पर करोड़ों लोग भुखमरी से पीड़ित हैं। एमर्ट को उनके लिये कुछ ठोस कार्यक्रम लेकर आगे आना चाहिये। हमें उन्हें अच्छा भोजन देना होगा, नहीं तो वे कुपोषण का शिकार हो जायेंगे। हम यदि उनके लिये कुछ विशेष नहीं करेंगे तो इन गरीब और पीड़ित लोगों की भूख से पृथ्वी की शान्ति भंग हो जायेगी। जब तुम पूरी पृथ्वी की जिम्मेदारी ले रहे हो तो यह भी तुम्हारा पावन कर्तव्य होगा। इस समस्या का कारण क्या है ? यह अर्थ (वित्त) के दूषित वितरण के कारण है। लंबी अवधि के लिये आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिये प्रउत है किन्तु (वर्तमान) खाद्य की कमी को दूर करना अत्यन्त आवश्यक है। तुम लोग दूसरे के लिये क्या कर रहे हो ? तुम अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा नहीं कर सकते – पूरी पृथ्वी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।''

एमर्ट को इसके सेवा कार्यों के लिये कई सम्मान मिले। वर्ष 1988 में साउथ अफ्रीका में नस्लवाद से पीड़ित लोगों की सेवा और राहत कार्यों के लिये एमर्ट को ह्यूमन राइट्स एवार्ड मिला और 1991 में यूनाइटेड नेशन्स ने एमर्ट को एन. जी.ओ. के रुप में स्वीकार किया।

'समाज सेवा में 1970–71 में आनन्द मार्ग',

एमर्ट की पहली वार्षिक रिपोर्ट एमर्ट सावेनियर, मई 1975 एमर्ट प्रमोशनल पुस्तिका

अद्वेशानन्द दादा एवं मार्गी 1970 में महर्लिका में बाढ़ राहत में कार्य करते हुये।

'समाज सेवा में 1970–71 में आनन्द मार्ग'

SAMGACCHADHVAM SAMVADADHVAM SAMVOMANAMSI JANATAM
DEVABHAGAM YATHA PURVE SAMJANANA UPASATE
SAMANII VA AKUTI SAMANA HRDAYANI VAH
SAMANAM ASTU VO MANO YATHA VAH SUSAHASATI

You all move together, radiate one and the same thought-wave and form a universal mind with all unit minds.

You shall collectively enjoy all the properties of the universe as the sages in olden times used to.

You shall have a common ideal, and all of you shall be inseparable from one another.

Infuse in your minds one common sentiment whereby you may be well united.

SOUVENIR

MAY 1975

CONTENTS

Published by the Secretary on behalf of the Ananda Marga Universal Relief Team, Bungalow No. 5, Jolly Maker Apartments, 95/97, New Cuffe Parade, Bombay: 400 005.
Tel.: 215729.

एमर्ट सेविनीयर मई 1975

51. बाबा नाम केवलम

अक्टूबर 1970 के प्रारंभ में बाबा ने इच्छा व्यक्त की कि वे कुछ दिन राँची की व्यस्तता से दूर प्रकृति की शान्ति में बिताना चाहते हैं। उन्हें राँची और डाल्टनगंज के बीच अमझरिया हिल स्टेशन ले जाना तय हुआ। तद्नुसार बाबा, उमा और गौतम, वन विभाग के गेस्ट हाउस में एक सप्ताह रहने के लिये रवाना हुये। साथ में कुछ मार्गी, सेक्योरिटी इंचार्ज विष्णुदेव और बाबा का रसोइया भी थे।

6 अक्टूबर को सरकारी स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत् मार्गी घासीराम हैजा निरोधक कार्य के सिलसिले में वहाँ आये। उन्हें ज्ञात हो गया कि वहाँ बाबा हैं। उन्होंने स्थानीय मार्गियों को यह सूचना दे दी, जो दूसरे दिन वहाँ आ गये। अगले दिन, 8 अक्टूबर को बाबा गेस्ट हाउस के बरामदे में बैठे थे। उनके साथ दो स्थानीय गृही आचार्य ब्रम्हदेव और राजमोहन भी थे। बाबा दूर आकाश को निहार रहे थे। तभी उन्होंने ब्रम्हदेव जी को ध्यान करने को कहा। फिर बाबा ने कहा, ''ध्यानपूर्वक सुनो। क्या कुछ सुनाई दे रहा है ?'' ब्रम्हदेव ने कहा कि उन्हें कुछ अस्पष्ट मधुर संगीत ध्वनि सुनाई दे रही है।

बाबा ने कहा, ''और ध्यान से सुनो। क्या केवल संगीत की ध्वनि है या साथ में कुछ
शब्द भी हैं।''

''हाँ बाबा, साथ में कुछ शब्द भी हैं।''

बाबा ने कहा, ''ध्यान से सुनो, वे क्या शब्द हैं ?''

''यह ध्वनि कुछ बाबा, बाबा जैसी है।''

''और ध्यान से सुनो''

''यह बाबा नाम'' है।

''और भी ध्यान से सुनो''।

''बाबा नाम केवलम जैसा सुनाई दे रहा है।''

''हाँ तुमने ठीक सुना है'', बाबा ने कहा।

राजमोहन जी ने कहा कि उन्होंने भी यह ध्वनि सुनी किन्तु वे यह नहीं बता सके कि यह कहाँ से आ रही है। तब बाबा ने बताया कि देवयोनि (प्रकाशीय सत्ता) के लोग इस मंत्र को गा रहे हैं। समीप खड़े कुछ मार्गियों ने भी इसे सुना। बाबा के निर्देश पर ब्रम्हदेव ने सभी को बुलाया। तब बाबा ने उन्हें ''बाबा नाम केवलम'' महामंत्र से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि अब से यह कीर्तन मंत्र के रुप में प्रयोग होगा। उन्होंने दर्शाया कि इसे किस तरह गाना है साथ ही इसके साथ प्रयुक्त होने वाले ललित मार्मिक नृत्य का भी परिचय दिया।

अंत में बाबा ने उसी संध्या सामूहिक कीर्तन आयोजित करने का निर्देश दिया। ब्रम्हदेव जी कुछ और लोगों (मार्गी और नान मार्गी दोनो) को इकट्ठा करने आसपास के गाँव में गये और मध्य रात्रि को अखण्ड कीर्तन आरंभ हुआ।

कीर्तन के बीच दस वर्षीय गौतम गेस्ट हाउस से निकल कर बालकनी में खड़ा था। तभी उसका ध्यान बाबा की कार की ओर गया जो कीर्तन पंडाल की ओर बढ़ रही थी। वह चिल्लाया, ''कार चल रही है। सभी देखने उस तरफ आये। बाबा ने कहा, ''कीर्तन का प्रभाव इतना गहन होता है कि चेतन और जड़ सत्तायें सभी उससे आकर्षित होते हैं।

कुछ दिन बाद बाबा ने 14 अक्टूबर (उस वर्ष की दीपावली के दिन) को राँची जागृति में ''बाबा नाम केवलम'' को सिद्ध मंत्र का पवित्र दर्जा दिया।

कलकत्ता में 16 मई 1982 को आनंद पूर्णिमा डी.एम.एस. में बाबा ने कहा :

'मैंने पहले भी कहा है, अब फिर कह रहा हूँ कि कीर्तन की महिमा दर्शाने का समय आ गया है। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि जो साधना में प्रगति चाहते हैं उन्हें अधिक से अधिक कीर्तन करना चाहिये। कीर्तन से मन पवित्र हो जाता है और पवित्र मन से साधना होती है। यदि पांच मिनट के कीर्तन से हुये पवित्र मन से पांच मिनट भी साधना की गई तो साधना बहुत अच्छी होगी – तुम्हारी अध्यात्मिक उन्नति अवश्य होगी और अध्यात्मिक उन्नति से तुम परम चैतन्य के निकट आ सकोगे। तुम उनकी मानसिक तरंगों के संपर्क में आ जाओगे और तुम मानव, पशु ओर उद्भिज जगत की अधिक से अधिक सेवा कर सकोगे।........ तुम लोगों का कल्याण हो।''

किंगस्टर जमैका डी.एम.सी. में, जो कीर्तन दिये जाने के लगभग नौ वर्ष बाद हुआ, भक्तों द्वारा बाबा नाम केवलम का नृत्यगान।

52. ताँडव की पुर्नस्थापना

तांडव एक ताकत के साथ की जाने वाली कसरत है, जिससे साहस और पुरुषत्व में वृद्धि होती है। वर्ष 1971 में बाबा ने इसका अभ्यास पुरुषों की दैनिक कार्यसूची में शामिल कर दिया। इसके सात साल बाद बाबा ने कौशिकी नृत्य दिया। उन्होंने इन दोनों का प्रदर्शन डी. एम.सी. तथा आनन्द मार्ग के अन्य कार्यक्रमों में आवश्यक कर दिया।

ताँडव पर बाबा के कुछ विचारः

''तांडव पूरे शरीर की कसरत है। इससे मस्तिष्क उसके स्नायु कोष मजबूत होते हैं।''

''भगवान शिव ने उस समय के लोगों में अध्यात्मिक एषणा को जागृत किया। उन्होंने उन्हें अध्यात्मिक साधना सिखाई। उन्होंने उनको तंत्र का अभ्यास सिखाया जो कि अध्यात्म का व्यवहारिक पक्ष है। शिव ने उन्हें अध्यात्मिक नृत्य भी सिखाया जो तांडव है।''

''लगभग सात हजार वर्ष पूर्व सदाशिव ने सर्वप्रथम तांडव नृत्य से परिचित कराया। पार्वती ने ललित मार्मिक नृत्य सिखाया। आनन्द मार्ग में ललित मार्मिक नृत्य कीर्तन के साथ किया जाना स्वीकृत है। ललित नृत्य का उपयोग कीर्तन के लिये होगा। यह सम्पूर्ण विश्व में कीर्तन के साथ किया जाने वाला सर्वोत्तम नृत्य है।''

''तांडव के प्रतिपादन के पीछे इस सत्य का संदेश है : ''मैं विनाश के विरूद्ध अनवरत संघर्ष करता रहूंगा।'' एक हाथ में नर मुंड और दूसरे में छुरा पकड़ा जाता है। नरमुंड विनाश का प्रतीक है और छुरा संघर्ष का प्रतीक है। मैं समय, मृत्यु या विनाश से हार नहीं मानूंगा। मैं इन सब के विरूद्ध छुरे से लड़ रहा हूँ।''

''तांडव एक संघर्ष है। यह संघर्ष है मृत्यु के विरुद्ध। मृत्यु नरमुंड द्वारा प्रदर्शित होती है और मनुष्य की संघर्ष की भावना छुरे से दर्शायी जाती है।''

किंग्सटन, जमैका डी0एम0सी0 में बाबा के समक्ष किया गया ताड़व डांस

53. षोड़स निधि

(1) मूत्र त्याग के बाद मूत्र द्वार को पानी से धो लोगे।

(2) पुरुष मूत्र नली के अग्र भाग की त्वचा को हर समय पीछे की ओर खिसका कर रखेंगे।

(3) शरीर के संधि स्थल के रोम कभी नहीं काटोगे।

(4) पुरुष हमेशा लंगोटा का व्यवहार करेंगे।

(5) व्यापक शौच विधि का पालन करोगे।

(6) नियमित स्नान विधि मान कर चलोगे।

(7) सात्विक आहार ग्रहण करोगे।

(8) नियमानुरूप उपवास करोगे।

(9) नियमित रुप से साधना करोगे।

(10) परम आराध्य इष्ट की मर्यादा–रक्षा के लिये अनमनीय कठोरता का पालन करोगे।

(11) आदर्श की पवित्रता, रक्षा के लिये अनमनीय कठोरता का पालन करोगे।

(12) आचरण विधि मानकर चलने के लिये अनमनीय कठोरता का पालन करोगे।

(13) चरम निर्देश की पवित्रता–रक्षा के लिये अनमनीय कठोरता का पालन करोगे।

(14) शपथ वाक्य सर्वदा स्मरण रखोगे।

(15) स्थानीय जागृति के साप्ताहिक धर्मचक्र में नियमित योगदान, आवश्यक कर्तव्य के रूप
में करोगे।

(16) सी.एम.डी. के. (आचरण विधि, सेमिनार, कर्तव्य, कीर्तन) मानकर चलोगे।

1 जनवरी 1976 की वाणी में उन्होंने कहा :

''षोडस विधियों का दृढ़ता से पालन करो। सभी शुभ शक्तियों में एकता करो। अशुभ शक्तियाँ चुप रहने पर बाध्य होंगी।''

वर्ष 1976 की आनंद पूर्णिमा में उन्होने कहा :

''मानवता की भलाई के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये हमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शक्तिशाली होना होगा। जीवन के सभी क्षेत्रों भौतिक, मानसिक, नैतिक, समाजिक और अध्यात्मिक में भलाई के सभी तत्व षोड़स विधि में समाहित हैं। अतः षोड़स विधि का दृढ़ता से पालन करो।''

संपादक

अगले वर्ष बाबा ने मार्गियों के एक समूह से कहा :

''देखो, देखो मेरे बच्चे और बच्चियां अभी षोडस विधि का पूरी तरह पालन नहीं कर रहे हैं तब भी अनैतिक लोग उनसे डर रहे हैं। डर से कांप रहे हैं। किन्तु जब मेरे बच्चे और बच्चियां षोड़स विधि का दृढ़ता से पालन करने लगेंगे तब अनैतिकों की हड़्डियां भी कांप उठेंगी। तुम समझ गये? उन्होंने मुस्कुराते हुये जांघ पर हाथ से ठोकते हुये कहा, ''उनकी हड़्डियां कांपने लगेंगी।''

Period of ____________

16 Points Chart for all-round self-development — Date: 1 2 3 … 31

1. Use of water — using a Shaoca Mantra; washing properly and regularly
2. Foreskin — operated/natural: pulled back
3. Joint hair — cleaned with soap; oiled and combed
4. Langota/Underwear — worn according to system; cleaned daily
5. Vya'paka Shaoca — done properly before sa'dhana/asanas, meals and sleep
6. Bath — done as per system using soap; Pitr Yajina/Mantra with mudra and facing light
7. Food — proper food taken; no. of items taken: morning, noon, evening, night
8. Upava'sa — fasting on specified days: with water, without water
9. Sa'dhana — Guru Mantra applied before every action; performed all lessons each time: morning, noon, evening, night; Asanas done properly: morning, evening; Sarva'tmaka Shaoca: mind, body, dress, bed, environment, observance Social Norms; Tapah: Nr Yajina — Shudrocita Seva, Vaeshyocita Seva, Ks'atriyocita Seva, Viprocita Seva; Bhuta Yajina — animals, plants; Pitr; Adhya'tma Yajina; Sva'dhya'ya
10. Ista — non-compromising strictness and faith regarding the sanctity of Ista
11. A'darsha — non-compromising strictness and faith regarding the sanctity of A'darsha
12. Conduct Rules — non-compromising strictness and faith regarding the sanctity of Conduct Rules
13. Supreme Command — non-compromising strictness and faith regarding the sanctity of the Supreme Command
14. Dharmacakra — attending weekly Dharmacakra; punishment taken as per Carya'carya 1 for missing Dharmacakra
15. Oaths — remembering oaths daily; followed strictly
16. C.S.D.K. — Conduct Rules: followed; No. of sympathizers created by one's conduct; Seminar: increasing knowledge of spiritual philosophy, increasing knowledge of social philosophy, increasing knowledge of mother tongue, increasing knowledge of English, increasing knowledge of local language; Duty: performing one's duty; Kirtan: Lalita, Kaoshiki, Tandava

FIFTEEN SHIILAS

1. Forgiveness
2. Magnanimity of mind
3. Restraint on behaviour and temper
4. Sacrifice for Ideology
5. All-round self-restraint
6. Sweet and smiling behaviour
7. Moral courage
8. Setting an example by individual conduct
9. Keeping aloof from criticism
10. Adherence to Yama and Niyama
11. Confession and punishment
12. Free from anger, hatred and vanity
13. Aloof from talkativeness
14. Structural code of discipline
15. Sense of responsibility

checked by: ____________ **date:** ____________

सुदर्शन चक्र भगवान कृष्ण का एक विशेष वृत्ताकार शस्त्र था। वर्ष जुलाई 1978 में बाबा ने स्वयं के सुदर्शन चक्र के विषय में तृतिय पुरुष के भाव में भास्करानंद दादा से कहा :

''दूसरे गुरुओं की तरह वे धनुषबाण या त्रिशूल के साथ नहीं आये हैं उनका उन्नत दर्शन सभी को समाहित करने का भाव और कड़ा अनुशासन ही सुदर्शन चक्र है। वे इस चक्र का प्रयोग अपने पुत्र और पुत्रियों की सहायता से करते हैं। यह आवश्यक है कि उनके पुत्र और पुत्रियां इस प्रकार उनकी सहायता करने के लिये आंतरिक शक्ति प्राप्त कर लें। षोड़स विधि का दृढ़ता से पालन उन्हें यह आंतरिक शक्ति प्रदान करता है।'''
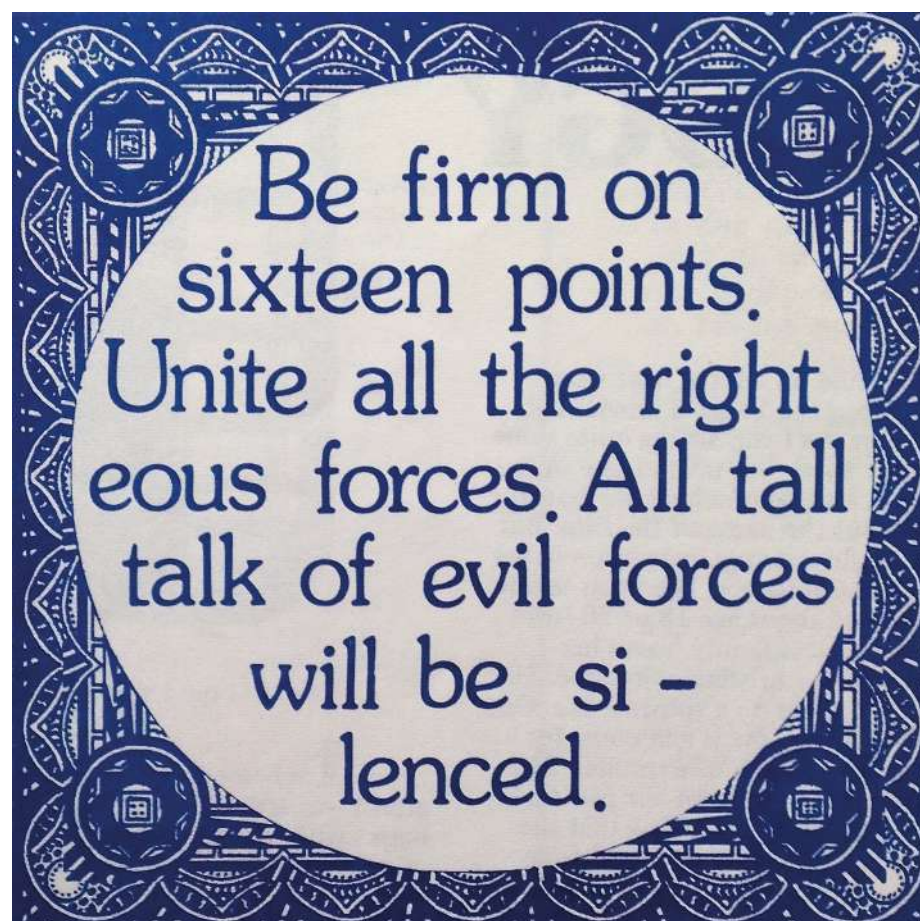
1 जनवरी 1976 को दी गई बाबा की आनन्द वाणी का प्रारंभिक चित्रण

54. विद्रोह और विश्वासघात

भ्रष्टाचार के विरुद्ध बाबा का नैतिक रूख समझौता विहीन था, उन्होंने जातिप्रथा और दहेज जैसी हठधर्मिता का विरोध किया। भारत और दूसरे देशों में हो रहे समाजिक–आर्थिक शोषण के विरोध में उन्होंने प्रउत का दर्शन किया। इन सब कारणों से निहित स्वार्थों द्वारा आनन्द मार्ग का विरोध क्रमशः बढ़ने लगा। यह विरोध विशेष रुप से हिन्दू कट्टर पंथियों, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (एम), सेन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इंनवेस्टिगेसन, प्रधानमंत्री सहित उच्च शासकीय पदों पर बैठे लोगों की ओर से हुआ।

1967 आनन्द पूर्णिमा के अवसर पर जब आनंद नगर में पहला आक्रमण हुआ था, बाबा ने यह आनंद वाणी दी :

''आज पूरी दुनिया में शुभ और अशुभ शक्तियों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया है। जिनके पास अशुभ शक्तियों से लड़ने के लिये नैतिक साहस हैं वे ही इस संघर्ष से पीड़ित पृथ्वी को शांति का मरहम लगा सकते हैं। स्मरण रहे तुम अध्यात्मिक साधक हो। अतः केवल तुम्हें ही इस पृथ्वी को बचाने के कार्य का बीड़ा उठाना होगा।''

वर्ष 1969 में सरकार ने शासकीय कर्मचारियों को आनंद मार्ग में शामिल होने से प्रतिबन्धित करने का प्रयास किया। उनका आधार था कि आनंद मार्ग एक राजनैतिक संगठन है। इसके साथ ही कम्युनिस्टों के मार्ग के कार्यकर्ताओं पर आक्रमण बढ़ने लगे, जिसके कारण कई कार्यकर्ताओं और मार्गियों की मृत्यु हो गई। अंततः बाबा पर भी सी.बी.आई. और पुलिस ने कुछ कार्यकर्ताओं की मृत्यु पर कत्ल के झूठे आरोप लगाये। इस बीच सितम्बर 1971 ने बाबा ने अपने व्यक्तिगत सहायक विशोकानंद को हटा दिया। श्रीमती उमा ने बीच में आकर उन्हें पद पर बनाये रखने का अनुरोध बाबा से किया। किन्तु बाबा ने इंकार कर दिया। इसके बाद उमा और विशोकानन्द ने मार्ग छोड़ दिया। वे अपने साथ कुछ कार्यकर्ताओं और मार्गियों को भी ले गये। बाबा इन सबसे अप्रभावित रहकर अपने मिशन का कार्य करते रहे। रामानंद दादा उनके नये व्यष्टिगत सहायक बने।

दादा रामानन्द में अपने संस्मरण आशुतोष बाबा में लिखा है :
मई 1971 राँची धर्म महाचक्र के कुछ दिन बाद, हमारा स्थानीय गुंडों से संघर्ष हुआ। इसके बाद बाबा को पटना ले जाने का निर्णय हुआ। बाबा के पटना जाने के बाद मैं बंगाल चला गया। वहाँ पूर्वी पाकिस्तान से जो जल्द ही बंगला देश बन गया वहां से लगातार भारी मात्रा में शरणार्थी आ रहे थे। मैंने उनके लिये इक्कीस शरणार्थी शिविर खोले। इन कार्यों में मैं इतना व्यक्त हो गया कि तीन महीने तक मैं बाबा के दर्शन नहीं कर सका। इस बीच संगठन में क्या हो रहा है इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। यह तथ्य कि माधवानंद सरकारी गवाह बन गया है, संगठन में विभाजन आदि की मुझे जानकारी नहीं थी। बाबा को धन्यवाद कि उन्होंने मुझे इन सबसे दूर रखा।

उमा और विशोकानंद के जाने के बाद 1 अक्टूबर को कलकत्ता धर्म महाचक्र योजना के अनुसार हुआ। इसमें मैं बाबा का व्यष्टिगत सहायक था। इसी समय उमा ने एक समानान्तर कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें कुछ कार्यकर्ता सम्मिलित हुये। संगठन में उलझन का माहौल था और मैं आश्चर्यचकित था कि यह किस दिशा में जा रहा है। कुल सैंतीस कार्यकर्ता उमा सरकार के साथ गये जिनमें अवधूत और अवधूतिका दोनों थे। मुझे याद है उस समय सत्यानंद अवधूत बहुत आवेश में थे। धर्म महाचक्र के बाद उमा उस धर्मशाला में गई जहाँ कार्यकर्ता ठहरे हुये थे। उन्होंने बाबा की आलोचना की और उन्हें बाबा का साथ छोड़कर अपने साथ चलने को कहा। सत्यानंद जी बाबा के कमरे में यह सब बताने गये। उन्होंने कहा ''मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता। वे आम लोगों के बीच आप पर हमला कर रहे हैं।'' किन्तु बाबा इससे सर्वथा अप्रभावित रहे। बाबा ने उन्हें समझाया कि परेशान होने का कोई कारण नहीं है। उन्होंने कहा ''शान्त हो जाइये समय आने पर सब साफ हो जाएगा।''

इसके बाद मैंने बाबा के साथ कलकत्ता छोड़ दिया और हम तीन माह के लिये भारत के विभिन्न हिस्सों में धर्म महाचक्र आयोजित करने निकल पड़े। हमें बाद में ज्ञात हुआ कि उमा सरकार पुरी चली गई जहाँ वे सी.बी.आई. के प्रश्रय में हैं। उन्होंने अपने साथ आये कार्यकर्ताओं के साथ एक नया संगठन खड़ा करने का प्रयास किया जो कि अस्थायी रहा। अधिकतर कार्यकर्ता बाबा के पास वापिस आ गये। विशोकानन्द सरकारी गवाह बने रहे।

दो फोटो 1960 के दशक की बाबा उमा और अन्य मार्गियों की साथ आनंद नगर में उमा कालेज 1967

दो फोटो 1960 के दर्शक की बाबा उमा और अन्य मार्गियों की साथ आनंद नगर में

उमा कालेज 1967

55. जयपुर एयर पोट

ये तस्वीरें बाबा के 1971 धर्म महाचक्र दौरे के समय ली गई थी। 18 अक्टूबर को उन्होंने नई दिल्ली से जयपुर होकर मुम्बई जाने के लिये उड़ान भरी। जयपुर में रुकने के दरमियान दर्शन हेतु मार्गियों की भीड़ लग गई। जयपुर एयरपोर्ट के प्रवेश द्वार पर ली गई तस्वीरें उस हर्ष के क्षणों में मार्गियों की भक्ति और बाबा के साथ उनकी अंतरंगता दर्शाती हैं।

इसके पिछले दिन नई दिल्ली धर्म महाचक्र में बाबा ने कहा था :

''परम पुरुष और भक्तों के बीच संबंध मधुर और अंतरंग होता है। भक्त यह स्पष्ट घोषणा करते हैं कि वे परम पुरुष के हैं और परम पुरुष उनके हैं .... परम पुरुष सभी को प्रिय हैं अतः मनुष्य उन्हें बाबा कहते हैं। इसी प्रकार सभी सृष्ट वस्तुएं परम पुरुष को प्रिय हैं अतः परम पुरुष के लिये सभी सृष्ट वस्तुये बाबा हैं ....।'' जब भक्त बाबा नाम केवलम गाते हैं तो परम पुरुष भी बाबा नाम केवलम गाते हैं।

अगले दिन मुंबई धर्म महाचक्र में उन्होंने यह संदेश दियां जैसे परम पुरुष सबके प्रिय हैं उसी तरह सभी परम पुरुष को प्रिय हैं।''

56. बाबा की गिरफ्तारी

बाबा को 29 दिसम्बर 1971 को प्रातःकाल के पूर्व ही गिरफ्तार किया गया। उन्हें पटना और वाराणसी के बीच स्थित बक्सर जेल ले जाया गया और उन पर हत्या की साजिश का अरोप लगाया गया।

अमेरिका के गिरधर याद करते हैं '

हम 27 तारीख की रात में पटना पहुँचे। अगली सुबह बाबा पाटिली पुत्र कालोनी स्थित जागृति में आये उस दिन उन्होने दर्शन दिया। रात्रि में वे पोर्च में बैठे। वहाँ उनके सम्मुख तांडव किया गया। वह 28 तारीख थी। अगली सुबह उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। वे उन्हें गंगा के किनारे स्थित बक्सर जेल ले गये। बक्सर पटना से ट्रेन द्वारा चार पाँच घंटे का रास्ता है। करीब 35 मार्गियों का समूह जिसमें अधिकतर विदेशी थे, ट्रेन द्वारा उन्हें देखने पटना से बक्सर गये। बाबा को बाहर आने दिया गया। वे हमसे बोले :

''अपना कर्तव्य करो। तुम सभी जानते हो कि वह क्या है। हर खाली समय में कीर्तन करो।''
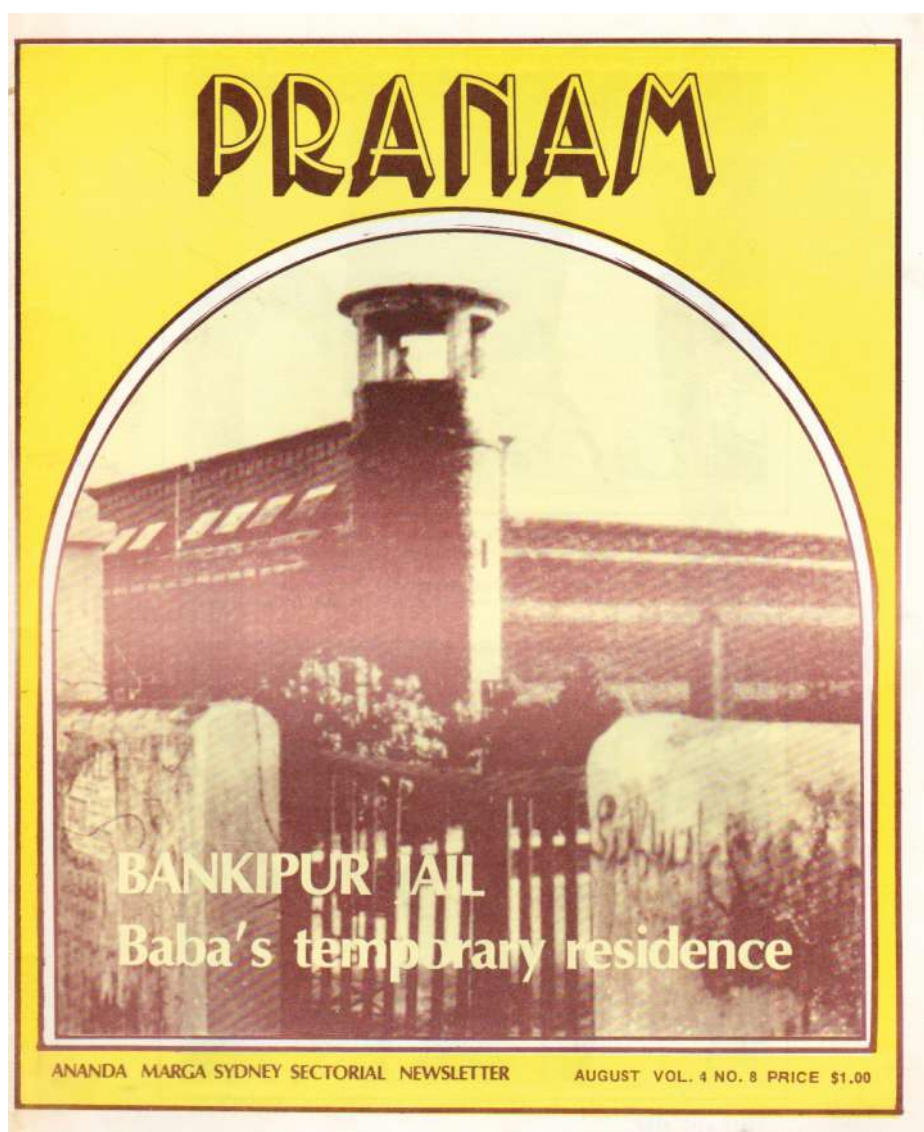
फिर वे पलटे और वापिस अंदर चले गये। दादा धर्मवेदानंद अपने संस्मरण ''ट्रेवल्स विथ द मिस्टिक मास्टर'' में लिखते हैं। फरवरी का महीना था। हमारे विचिता कार्यालय से एक मन हिला देने वाला संदेश आया। बाबा भारत में जेल में हैं। संदेश इस तरह का था :

यद्यपि बाबा को 29 दिसम्बर को गिरफ्तार कर लिया गया था। हमने यह सोचकर आपको सूचना नहीं दी कि वे जल्दी ही रिहा हो जायेंगे। किन्तु अब समय लग रहा है। चार कार्यकर्ताओं सहित उन पर हत्या का षड़यंत्र करने का आरोप है। ये सब आरोप मिथ्या है और सी.बी.आई. द्वारा आनंद मार्ग को खतम करने के उद्देश्य से गढ़े गये हैं। आनंद मार्ग के आदर्श और कार्य सदा ही उन नेता लोगों के लिए खतरा रहे हैं जिन्हें व्यक्तिगत सत्ता की भूख है और जो समाजिक हित की उपेक्षा करते हैं .... अकेले प्रत्यक्ष गवाह विशोकानंद (पूर्व कार्यकर्ता) हैं जो कि दावा करते हैं कि वे स्वयं हत्यारों में से एक हैं। वे जेल जाने की जगह स्वतंत्र हैं और विलासता का जीवन जी रहे हैं। भारतीय कानून में त्रुटि के कारण उनकी गवाही मान्य है। यह त्रुटि एक अपराधी को सह अपराधी के विरुद्ध गवाही देने को मान्यता देती है और उसे सरकारी गवाह कहा जाता है ओर उसके सहयोग के लिये उसे पुरस्कृत किया जाता है।''

वर्ष 1972 के प्रारंभ में जेल के दूषित वातावरण से बाबा को खराब स्वास्थ्य के कारण पटना मेडिकल अस्पताल स्थानांतरित किया गया। एक माह से अधिक वहाँ रहने के बाद उन्हें फिर पटना के बांकीपुर जेल ले जाया गया। वहाँ उन्हें सेल नं. 13 में रखा गया जहाँ ब्रिटिश राज में कुख्यात अपराधियों को रखा जाता था। यह एक कांक्रीट के डिब्बे जैसा सेल था जिसमें कोई खिड़की या हवा आने का कोई रास्ता नहीं था। ठण्ड में फ्रीज जैसा ठंडा और गर्मी में भट्टी की तरह दहकता था।

The Chief of the Army Staff, General S.H.F.J. Manekshaw, being greeted by young boys in Dacca on Dec. 27.

ANAND MARG CHIEF HELD ON MURDER CHARGE

(By Our Staff Reporter)
PATNA, Dec. 29:

MR. Prabhat Ranjan Sarkar, spiritual head of Anand Marg, was arrested today at his Patliputra residence under Sec. 302 I.P.C. (murder).

The arrest was made by the [illegible] police on a complaint lodged by the C.B.I. which was investigating into a number of allegations against the Anand Marg including the murder of about 18 to 20 Avadhoots (Sanyasis of the Marg who have dedicated their lives to it).

Acharya Sarbeshwaranand Avadhoot, General Secretary of the Marg, was also arrested along with his Guru, Mr. Sarkar popularly known as Anand Murtiji, who was to go to Varanasi today to address a Dharm Chkr.

The police later produced them before the S.D.O. Patna Sadar, Miss Radha Singh who rejected their bail petitions. They were forwarded to Buxar Central Jail where they will be lodged.

It is learnt that the C.B.I. has established prima facie case of movement of Anand Murtiji in the murder of some Avadhoots who had voiced their feelings against some of the actions of their 'Guru'. These murders, according to the C.B.I. took place in a planned manner in Singhbhum district.

The C.B.I. is believed to have established the clue of murder of Avadhoot Sadanand and two others near Chandil. Their bodies were disposed of as unidentified [illegible]

[illegible] nection with some disturbances that took place at Ranchi. The police had raided the Anand Marg office there and at other places and had recovered human skulls, which according to the Marg, were kept for "tantra sadhana".

The C.B.I. had raided the Anand Marg headquarters at Pataliputra Colony and seized some papers and unaccounted money amounting to over Rs. 80,000.

The alleged murder of some Avadhoots by their own colleagues caused a serious split in the Anand Marg. Vishokanand Avadhoot, who was the private secretary to Mr. Sarkar, spear-headed the revolt which was later joined by Mr. Sarkar's wife, Mrs. Uma Sarkar.

Mrs. Sarkar deserted the Anand Marg camp and went underground along with her 12-year-old son. Vishokanand and many others also joined them later.

Recently, Mrs. Sarkar had circulated a letter from Calcutta alleging involvement of her husband in the murders. She also alleged that her husband, Anand Murtiji indulged in homo-sexuality.

An inquiry into all these allegations had been entrusted to the C.B.I. by the Union Government which received a number of complaints against the activities of Anand Marg. A team of C.B.I. officials headed by a D.I.G. camped at Patna for months together to complete the investigations.

Yet Another Evidence Of Genocide

KHULNA, Dec. 29: Yet another evidence of genocide by the Pakistani occupation forces has come to light with the discovery of an execution ground at Gollapara near Radio Station here from where a large number of bodies and human skulls have been exhumed.

Though no immediate estimate of the killings at this spot is available, local [illegible]

7-Man Body To Probe Killing Of Intellectuals

DACCA, Dec. 29: A seven-member committee [illegible]

30 दिसम्बर 1971 को इंडियन नेशन में बाबा की गिरफ्तारी को लेकर रिपोर्ट

बांकीपुर सेन्ट्रल जेल, पटना

57. बाबा को जहर दिया जाना और उनका उपवास

12 फरवरी 1973 को बाबा की हत्या का षडयंत्र किया गया। खराब स्वास्थ्य की शिकायत पर जेल का डाक्टर बुलाया गया। उसने सी.बी.आई. के आदेश पर बार्बीटुरेट्स जहर की आदमी को मारने के लिये पर्याप्त खुराक बाबा को यह कहकर दी कि यह दवा पटना सिविल सर्जन द्वारा दी गई है। बाबा के शरीर में ऐंठन होने लगी ओर वे अचेत (कोमा में) हो गये। जब उन्हें होश आया तो वे देख नहीं सकते थे और सिर में भारी दर्द था। कई दिनों के बाद उनकी दृष्टि में आंशिक सधार हआ किन्त दष्टि की कमजोरी उन्हें शेष जीवन बनी रही।

FOR IMMEDIATE RELEASE

NEW YORK, New York, February 28, 1972 -- An assasination attempt has been made on the life of P. R. Sarkar, spiritual head of the largest yoga society in the world. His followers, numbering some eight million, are located in thirty different countries of the world. His personal secretary, Ac. Pranavananda Avadhuta, reported that he was poisoned by food sent through the jail guards and left to die in his small cell at Bankipur Jail, Pantna, India. He was under protection of the C.B.I. (Central Bureau of Intelligence). Jail authorities refused a request by Sarkar for medical assistance, Pranavanananda reported. For five days he remained near death in a semi-concious state; to this date he has received no medical treatment.

P. R. Sarkar's socio-spiritual organization, Ananda Marga, has organized large-scale disaster relief operations and opened over 500 orphanages, hospitals, and schools throughout India. His followers claim he is being held on "concocted" murder charges, "instigated by vested interest groups who view his outspoken ideals and growing support as a threat to their interests. This arrest is the latest in a stormy history of harassment and persecution of his organization." Of the 200 charges which have been filed against him, all but one have been thrown out by the courts.

"We have now abandoned our hope for justice;" said Mr. Paul Fahnestock here today at a news conference, "our peaceful efforts have been met with increasingly brutal rejoinders. We now appeal to the American news media, in its love for Truth, to make an immediate inquiry and investigation into this flagrant oppression. It is our greatest desire that the truth of the matter be revealed to the world community."

बाबा द्वारा विश्व मीडिया को दी गई प्रेस विज्ञप्ति

उस वर्ष मार्च में बाबा ने गवर्नर को कई पत्र लिखकर उन्हें विष दिये जाने की न्यायिक जाँच किये जाने की माँग की। उन्हें किसी पत्र का जवाब नहीं मिला।

बाबा द्वारा बिहार के गवर्नर को लिखे गये कुछ पत्र

To,
The Governor of Bihar,
INDIA

Through Distric Magistrate, Patna.

Sir,

With due respect and humble submission I would like to bring to your kind notice the following facts along with tales of harassment, torture, mal-treatment, poisoning and other inhuman activities done by different agencies of the Government.

1. That I was arrested by C.B.I. (Central Bureau of Investigation) on 29th December 1971 at 6:00 in morning on some charges concocted by C.B.I. with certain malafide and political motive. 28th Dec. 71 being Ekadasi (11th moon) was my fasting day. On the 29th morning after I was arrested by C.B.I. they did not allow me to do my morning duties throughout the day. They did not allow me to do my daily spiritual practice. They did not allow me even to take a single drop of water. They produced me before S.D.O., Patna in the afternoon. My remand order to jail was kept ready in S.D.O.'s office before I was produced in S.D.O.'s chamber (not court). This shows that the S.D.O. decided to send me to jail even before she (the S.D.O. was lady) saw the arrested person. She did not ask me a single question and so I did not get the scope to narrate the tales of torture. I was brought to Buxar Jail (it is in another district) at about 11:00 pm i.e. I had to remain without food and water for about sixty hours at a stretch.

2. Due to unhygienic condition prevailing in jail I became sick and on Feb. 72 I was sent to P.M.C.H. (Patna Medical College Hospital) for treatment. There I was kept under inhuman torture by C.B.I., State C.I.D. and State Police for all the 24 hours upto 3rd April 72. The motive was clear and simple; they wanted to kill me as per secret instruction of C.B.I. In the P.M.C.H. room on. 17 I was forced to remain within four walls of the room for the entire period up to 3rd April. I was not allowed to peep through the window nor to raise the curtain of the door to see the sky. They did not allow me to read news-paper coming from my house. They did not allow me to take food coming from my house and forced me to take unhygienic food prepared by the men of their choice. They did not allow any of my friends and relatives to see me even from a long distance. They created disturbance even in my spiritual practice.

3. I was sent to Bankipur Central Jail in the first week of April 72. Just a few days after my coming here the authorities stopped my interview with my relations and friends. Even now nobody can see me without a written order from the Court of Law.

4. In the first week of June 72 my mother died. I am her first son. As per usage of India the first son is to do the Spiritual observance of the parent. But the cruel and inhuman authorities of Government did neither allow me to see her in her death bed nor did they allow me to do her last rites.

5. In Bankipur Central Jail also authorities stopped my food continuously for fifty hours with the only intention of killing me as per verbal instruction of C.B.I.

6. I am an aged man of above fifty but because of my regulated and routined life I used to maintain a good health. But due to continuous torture by Government authorities in general and Jail Department in particular my health has been ruined. Four persons who used to look after me became eye-sore of the jail authorities. Two of them have been transferred to Daltenganj Jail and two to Buxar Jail, although none of them has got any court case in Daltonganj and Buxar. The only intention of transfer is to keep me alone and kill me conveniently.

7. In the first portion of 1973 they have posted several Sipahis just on the gate of my cell just prevent others to see me. It is clear that they want to kill me secretly and shift the dead body silently with the help of those Sipahis.

8. On 12 Feb. 73 I felt very much unwell in the afternoon. The Jail Doctor came and prescribed certain medicine for Diarrhoea and Dysentry. On the same day at 9:00 pm I again felt unwell. The Doctor was informed and he came at about 10:30. He said that he will be informing the Civil Surgeon, Patna. I requested him to please inform my men also and gave him my residential address and phone number. The Doctor came again at about 11:00 and told me that he has informed the Jailor to send the news to the address of my men. Afterwards I came to know that the jailor did not convey the news to my men and suppressed the fact for reason best known to him.

9. At about 11:00 pm on 12th Feb 73 the Jail Doctor said the Civil Surgeon is not to come to see you but he has prescribed a medicine for you. He administered that so called medicine which was actually a poison. Just after taking the medicine I became sense-less. I came back to senses at about 7:00 am on 13th Feb 73. At that time I was undergoing the following five reactions of that poison. They were:-

i. Extreme weakness throughout the body.
ii. Nervous reaction throughout the body.
iii. Profuse watering from both the eyes.
vi. Extreme pain in brain.
v. Inertness of brain.

On 14th morning I felt the sixth reaction and that is I was unable to see anything clearly even from a short distance. I became almost blind. A few days after that an eye specialist came and said that I was suffering from conjectivities. On 15th night two more specialists came At time my blood pressure was 180/100. On 16th morning my urine was examined, the sugar was +++ (3plus). I have got no doubt I was poisoned on 12th night and all these are reactions of the poison. On 19th Feb. 73 a first class Magistrate was deputed by District Magistrate to record my statement. I have stated that in case of medical treatment the faith of a patient plays a very important role and as I have lost faith in these Government Doctors and as a strong suspicion has been created in my mind that they have poisoned me as per direction of C.B.I., I don't like to be treated by any Doctor selected by Government I want to be treated by my private Doctor.

In the night of 21 Feb. 73 I requested the jail authority verbally and on 27th Feb. 73 in writing to request the District Magistrate, Patna to depute a 1st Class Magistrate to record my statement demanding a judicial probe. I further told them that I want in that Judicial Commission there may be any Judge of Supreme Court or of any other High Court excepting that of Patna High court (because Patna is the place of occurence). But as ill luck would have it, I have not yet been favoured with the presence of a 1st Class Magistrate to record my statement.

In view of the foregoing I would request you to please favour me by appointing a Judicial Commission to go through all the above mentioned complaints and other relevant matters at an early date. I have got strong suspicion that certain black hands are working against me from behind the curtain and some of them are important persons. I want to disclose the names of those important persons before the Judicial Commission.

Yours faithfully
Sd/ - Prabhat Ranjan Sarkar
5 March 1973
Bankipur Central Jail, Patna.

1. Copy to President of India for information and necessary action.
2. Copy to Secretary General, UN.O. for information

SD/ - Prabhat Ranjan Sarkar
5 March 1973

ANANDAMURTIJII SUFFERING FROM THE REACTIONS OF POISONING:

To

The Governor of Bihar,
Patna (India)

Sir,

I would like to bring to your kind notice the fact that from about 9 O'clock yesternight I am suffering from extreme pain in lower portion of my body along with burning sensation but the jail authorities have done no arrangement for my nursing and medical treatment. If such a state of affairs continues and if the jail authorities want to kill me like this, I will have no other alternative but to resort to some other step for which the Government will be solely responsible because of their not doing the needful in response to my timely request.

This is for your kind information and necessary action please.

It may please be added that since 12.2.73 I have been suffering from the reaction of poisoning which was done on 12.2.73 night and I have not been served with a single drop of medicine since 16.2.73.

Yours faithfully,

Sd/-
(Prabhat Ranjan Sarkar)
12/3/73 (12 hours)
Bankipore Central Jail, Patna.

The Governor of Bihar,
Patna, India.

Sir,

As I am a sick man and there is nobody to look after me and at the same time the oppression of the Jail Department has reached its zenity point, I find no other alternative but to stop taking food for an indefinite period.

This is for your information please.

Yours faithfully,
Sd/Prabhat Ranjan Sarkar,
1-4-73.
Bankipore Central Jail,
Patna.

//True Copy//

तब उन्होंने भारत के राष्ट्रपति ओर उच्च सरकारी पदाधिकारियों को पत्र लिखकर जानकारी दी कि अब उनके पास विरोध में उपवास करने के अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प नहीं हैं। यह उपवास 1 अप्रेल 1973 से आरंभ हुआ और उनकी रिहाई 2 अगस्त 1978 तक चला, पाँच वर्ष, चार माह और दो दिन।

We have just received a telegram from the Central Office in India (March 7)

"FROM CENTRAL OFFICE:

BABA UNCONSCIOUS LOWER PORTION PARALYSED - HANDS INACTIVE - VOICE INAUDIBLE - EYES CLOSED - PUBLICIZE COMMUNICATE EVERYONE
- GIRIJANANDA "

Our Bábá has been in jail for over two years now. He has been fasting for almost an entire year. The news we have been receiving from India about His condition and case has been scanty. Today (March 7) we received the above telegram.

About one week ago, we received a newsletter from the Central Office in India. We have been requested to reprint the newsletter and to send it to all sectors. The newsletter will be sent twice a month to keep us up to date on events and to vibrate us with wonderful Bábá stories.

A Bábá story appeared in the newsletter which vibrated us all so much when we read it. I really feel that, in light of Bábá's condition at the present time, the story has taken on even deeper signifigance. HIS LOVE IS ALL
- Liilá

एक टेलीग्राम जिसके द्वारा बाबा को विष दिये जाने का समाचार दिया गया।

इस पूरी अवधि में वे केवल एक कप द्रव्य, साधारणतः दही (जिसमें उनके निर्देशानुसार एक भाग दही और तीन भाग पानी होता था) दिन में दो बार लेते थे। यह उनके निजी सहायक रामानंद दादा द्वारा जेल पहुंचाया जाता था। बाद में जब उनसे पूछा गया कि इतने लंबे उपवास के बावजूद वे कैसे जीवित रहे तो उन्होंने कहा, ''इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है। अंतर केवल इतना है कि जहाँ लोग खाने, पीने की चीजों से ऊर्जा लेते हैं, मैं सीधे सूर्य के प्रकाश से ऊर्जा लेता था।'' वस्तुतः उनके लिये मठे की भी शायद ही आवश्यकता थी। कुछ का मानना है कि वे इसे पाचन अंगों को क्षति से बचाने के लिये लेते थे जबकि कुछ का कहना है कि ऐसा उन्होंने जेल अधिकारियों द्वारा जबरदस्ती खिलाये जाने से बचने के लिये किया।

The Washington Star
SATURDAY,
DECEMBER 27, 1975

Leader Enters 1,001st Day of Protest Fast

Prabhat Rainjan Sarkar, author, philosopher, and spiritual leader of Ananda Marga, an international religious and humanitarian organization, today began fasting for the 1001st consecutive day in the the Bankipur jail in Patna, India.

Sarkar, also known by his spiritual name, Shrii Shrii Anandamurti, has been a political prisoner of the Gandhi regime for the last four years, since December 1971.

YESTERDAY his followers here and in hundreds of other cities fasted and held commemorative meditation meetings, marking the 1,000 days of his fast and to draw further attention to what they feel are injustices toward him and toward their organization.

The 54-year-old spiritual leader has abstained from all solid food since April 1973, after an attempt to poison him while in the jail. He is protesting the denial of basic human rights to himself and to other members of his outlawed religious and humanitarian organization.

He alleges that he and they have been harassed, arrested on false charges, and often tortured by the Indian government.

As a result of the extended fast and poor jail conditions, Sarkar's health continues to deteriorate. He is now unable to sit up and his voice is barely audible.

PRABHAT SABHAR
Trial begins Jan. 4

OLAF OFTEDAL, nutrition expert from Cornell University, said that "it is medically impossible for Mr. Sarkar to still be alive after 1,000 days of fasting on the small quantities of Horlicks (malted milk in water) that he has been taking each day." The profound metabolic changes that could have enabled this unprecedented fast seem to be a product of Sarkar's proficiency in yoga and meditation, his followers say.

After four years of legal maneuvering and numerous delays, his trial is scheduled for Jan. 4 in Patna.

The case, which has been front-page news in India since his arrest, is expected to last several months. Spokesmen here for Ananda Marga feel that, given the current repressive environment in India and in light of the banning of Ananda Marga last summer, "there is little hope that justice will be available."

They cite the numerous irregularities in the proceedings, denial of bail, repeated violations of his rights to see his lawyers, substandard jail conditions, and "the vociferous attacks made in the government-controlled media" as giving faint hope for a fair trial.

THE CASE HAS attracted the attention of the International Human Rights community. Particularly Amnesty International, the United Nations Human Rights Division, the International Commission of Jurists, and the International League for the Rights of Man have been following the case closely for the last three years. Letters from concerned people all over the world prompted the interest.

Ananda Marga emphasizes social service, and is somewhat distinct from other yoga-inspired groups in this respect.

In the Washington area, the organization operates a clothing distribution program, the Emergency Pantry and Canned Food Program, providing food for families and senior citizens in need, and literacy training. A spiritually-based primary school is being opened in Northern Virginia.

A branch of the Ananda Marga Universal Relief Team is active with the local Red Cross, providing first aid and disaster services. Members offer free classes in meditation and relaxation throughout the area.

Headquarters here are at 1354 Montague St. NW.

27 दिसम्बर 1975, वाशिंगटन स्टार में बाबा के उपवास की एक रिपोर्ट

अप्रेल 1973 के दूसरे सप्ताह के करीब उनकी बड़ी बहन हीरा प्रभा ने उनसे कुछ ठोस आहार लेने का आग्रह किया। बाबा ने मुस्कुराते हुये मना किया और कहा, ''मैंने तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं किया किन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा की है और मैं इसे तोड़ना नहीं चाहता। एक दिन मैं निश्चिय ही बाहर आऊँगा और तुम्हारे ही हाथ से अन्न ग्रहण कर उपवास तोडूंगा।''

छह साल बाद 12 फरवरी 1979 (उनको विष दिये जाने की पहली बरसी) की सुबह बाबा ने जनरल दर्शन में आये मार्गियों से कहा, ''मैंने भारत के राष्ट्रपति को पत्र लिखा कि मैं जानता हूँ कि परदे की पीछे कौन से हाथ सक्रिय हैं।'' इसके बाद उन्होंने कहा कि हर वर्ष इस तिथि को मनाया जाएगा। मनाया इसलिये जाएगा क्योंकि वे विष प्रयोग के बाद भी जीवित रहे – और इसे नीलकंठ दिवस के रुप में जाना जाएगा। नीलकंठ का अर्थ है जिसका कंठ नीला हो – शिव का एक नाम।

मार्ग प्रकाशन
मर्हलिका टाइम्स
1973

58. जेल में बाबा

बाबा जेल में दिये गये विष के प्रभाव के कारण कई माह तक बोल पाने में असमर्थ थे। उस काल में वे कुछ बतलाने के लिये अक्षर तालिका का प्रयोग करते थे। जून 1972 में उनकी माँ का देहान्त हो गया, किन्तु उन्हें बड़ा पुत्र होने के नाते उनका अंतिम संस्कार करने का अवसर नहीं दिया गया। बाबा को कई तरह से परेशान किया गया और उस अंधेरी सुरंग में प्रकाश की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी तब भी बाबा मार्गियों और कार्यकर्ताओं को आश्वस्त करते कि अंत में धर्म की ही विजय होगी। अपनी आत्मिक शक्ति और विराट व्यक्तित्व के कारण वे अन्य कैदियों से अलग थे। बाबा जेल के कर्मचारियों को सतत् उनके कार्यपालन हेतु निर्देश देते और चूक होने पर प्रताड़ित करते थे। उनमें से कई के मन में बाबा के प्रति प्रेम व श्रद्धा जागृत हो जाती थी। ऐसे लोगों को जेल प्रशासन द्वारा अन्य जगह स्थानांतरित कर दिया जाता था।

कुछ काल के बाद बाबा के पास छोटे–छोटे समूहों में आकर मिलने की अनुमति दी गई। पूरी दुनिया से मार्गी उनके दर्शन हेतु आने लगे। इन अवसरों पर अनेक आश्चर्य में डाल देने वाली घटनाएं हुईं। यहाँ तक कि कई जेल कर्मचारियों ने कई कहानियाँ सुनाई। जिस डाक्टर ने बाबा को जहर दिया था, उसकी जगह डॉ. धर्मदास कलवार की नियुक्ति हुई। यह कथा उनके द्वारा बताई गई कई कथाओं में एक है – ''जैसे ही मैं बाबा के सेल के पास पहुँचा, मैंने कमरे से हल्की रौशनी आते देखा। जब मैंने अंदर नजर डाली तो देखा कि बाबा हवा में तैरते हुये कमरे की छत के निकट साधना कर रहे हैं। प्रकाश उन्हीं के शरीर से निकल रहा है। मैं आश्चर्यचकित रह गया और कुछ समझ न सका। मैंने पलक झपकते ही देखा बाबा वापिस अपने बिछौने पर साधना की मुद्रा में बैठे हैं। मैंने आश्चर्यचकित होकर कुछ कहा जिस पर बाबा ने कहा कि ''शान्त रहो''।

एक रात जेल अधीक्षक को ऐसा लगा कि बाबा अपने सेल में नहीं हैं। उसने जाँच की तो पाया कि सेल खाली है। फिर उसने देखा कि कुछ प्रकाश किरणें आकाश से आयीं और बाबा के सेल में प्रवेश कर गयीं। उसने फिर देखा तो बाबा सेल में थे। बाबा ने उससे कहा ''मेरे सेल में रात्रि में मत आया करो, मैं बहुत व्यस्त रहता हूँ।'' मार्च 1974 में भारत के विपक्ष के प्रमुख राजनीतिज्ञों का एक समूह बाबा से मिलने आया। बाबा गैर मार्गियों से नहीं मिलते थे लेकिन इस अवसर पर अपवाद के रुप में उन्होंने मिलना स्वीकार किया। उन लोगों ने आग्रह किया कि अपनी प्राण रक्षा के लिये वे उपवास तोड़ दें। लेकिन बाबा ने स्पष्ट कहा कि वे अपने आदर्शों के लिये उपवास कर रहे हैं और उनके आदर्श उनके लिये जीवन से अधिक महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने यह भी कहा कि प्रजातंत्र नैतिकता के अभाव में जीवित नहीं रह सकता और इंदिरा गाँधी के शासन काल में नैतिकता समाप्त कर दी गई है।

1974 में एक स्वतंत्र जाँच कमीशन चक्रवर्ती आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि बाबा को जान बूझ कर बारबिटुरेट्स की अत्यधिक मात्र जेल डाक्टर द्वारा दी गई। पटना के सिविल सर्जन ने भी स्पष्ट कहा कि दवा देने के संबंध में उनसे कोई राय नहीं ली गई।

जनवरी 1975 में बाबा ने छह माह के अन्दर आपात स्थिति के लिये तैयार रहने की चेतावनी दी थी। उन्होने कहा था कि मार्गी दो वर्ष का राशन, दाल, तेल और दूसरी आवश्यक वस्तुयें जमा कर लें। उन्होंने 1971 में ही एक दिन बता दिया था कि ''1975 का समय संगठन के लिये गंभीर संकट का समय होगा। मीलों तक तुम्हें कोई ऐसा नहीं मिलेगा जो स्वीकार करे कि वह आनंद मार्गी है। यह आनंद मार्ग के लिये परीक्षा का समय होगा।''

जून 1975 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी को 1971 के चुनाव में भ्रष्ट आचरण का दोषी पाया। इसके बाद देश में आन्दोलन जैसा माहौल बन गया। आम जनता और विपक्षी नेताओं ने उनसे इस्तीफे की माँग की। किन्तु इससे पहले कि सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट की फैसले की तस्दीक करता, श्रीमती गाँधी ने देशव्यापी आपातकाल की घोषणा कर दी। मीसा, मेन्टेनेन्स आफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट(मार्शल ला) लागू कर दिया गया। दूसरे विपक्षी दलों के साथ आनंद मार्ग और प्रउत यूनीवर्सल को भी प्रतिबंधित घोषित कर दिया गया। हजारों आनंद मार्गियों और इसके सन्यासियों को जेल में डाल कर यातनायें दी गईं। जो बचे उन्हें भूमिगत होना पड़ा। किन्तु बाबा द्वारा छह माह पूर्व दिये गये निर्देश के कारण जेल गये लोगों के परिवार आपातकाल की अवधि में भरण पोषण के संकट से बच गये। इस बीच बाबा का उपवास पूर्ववत् चलता रहा। जेल के सेल की अंधेरी सीलन भरी कोठरी जिसमें हवा के आवागमन की कोई व्यवस्था नहीं थी, उसमें रहते हुये बाबा का स्वास्थ्य तेजी से गिरने लगा। किन्तु उन्होंने न तो उपवास छोड़ा और न झुकने का कोई संकेत दिया।

REGD. NO. H/SD-23

INDIAN HERALD

NATIONAL ENGLISH DAILY

Founder & Editor: THAKUR V. HARI PRASAD

SPECIAL SUPPLEMENT

2 Pages | HYDERABAD, Thursday, June 26, 1975 | PRICE 15 Paise

EMERGENCY DECLARED
JP, Morarji, Advani, Asoka Mehta & Vajpayee arrested

NEW DELHI June 26: The President has declared a state of emergency threatening the security of India "due to internal disturbances".

The emergency declared in 1971 and still in force relates to threat to the security of India from external aggression.

The President signed the order declaring the emergency at about seven this morning. Earlier the Cabinet met at six a.m and considered the situation and approved the recommendation to the President for the declaration of emergency.

Raj Narain, Mody & Chandra Sekhar held

59. दधीचि गण

कहा जाता है कि शिव के रहस्यमय अस्त्र वज्र के निर्माण के लिये महर्षि दधीचि ने मृत्यु का वरण किया था ताकि उनकी हड्डियों से यह अस्त्र बन सके और इसका उपयोग आर्य आततायियों के विरुद्ध हो सके।
5 मार्च 1967 को आनन्द नगर पर हमले के बाद बाबा ने कहा था, ''जब इसाई, इसाइयत के लिये जान देते हैं तो उन्हें मारटायर कहा जाता है, जब मुस्लिम इस्लाम के लिए जान देते है तो उन्हें शहीद कहा जाता है, जब मेरे बच्चे भागवत धर्म के आदर्शों के लिये प्राण न्योछावर करते है तो मैं उन्हें दधीचि कहूँगा।''
पहले दधीचि जिनकी हत्या आनंद नगर में उस स्थान पर हुई जिसे दधीचि पहाड़ी कहा जाता है। ये दधीचि थे दादा अभेदानंद (जो उस समय बाबा के निजी सहायक थे), दादा सच्चिदानंद, अवध कुमार, प्रभास कुमार और भरत कुमार। जिस दिन (5 मार्च) उनकी हत्या हुई उसे दधीचि दिवस के रूप में याद किया जाता है।
उसके बाद के वर्षो में कई आनंद मार्गियों ने धर्म के लिये युद्ध में अपनी जान दी। बाबा की जेल यातना के विरोध में आत्मदाह कर जान देने वालों में प्रमुख हैं – दिव्यानंद जिन्होंने 9 अप्रेल 1973 को प्रातः चार बजे पटना में बिहार विधानसभा के सामने आत्मदाह किया। मार्गियों ने पटना में इस घटना के बाद एक जुलूस निकाला। 21 अप्रेल 1979 को दादा दिनेश्वरानंद ने दिल्ली के पुराने किले के पास आत्मदाह किया।
बाबा की जेल यातना के विरोध में आत्मदाह कर जान देने वालों में प्रमुख हैं – दिव्यानंद जिन्होंने 9 अप्रेल 1973 को प्रातः चार बजे, पटना

इस घटना के बाद एक जुलूस निकाला। 21 अप्रेल 1979 को दादा दिनेश्वरानंद ने दिल्ली के पुराने किले के पास आत्मदाह किया। इस घटना के बाद दिल्ली बोट क्लब में हुए विरोध प्रदर्शन में सैकड़ों मार्गियों को गिरफ्तार किया गया।
दादा अतुलानंद को बाबा के साथ ही कैद किया गया था और वे बाबा के निजी सहायक का कार्य कर रहे थे। उन्होंने 11 सितम्बर 1974 को बाबा को जेल में दी जा रही यातना और उनके साथ उनके सेल में हुए दुर्व्यवहार के विरोध में आत्मदाह किया। उन्होंने अपने स्टोव से मिट्टी तेल निकालकर आग लगाई, यह तेल जान लेने के लिये पर्याप्त नहीं था और उनकी मृत्यु अस्पताल में हुई। सन् 1975 के प्रारम्भ में भागलपुर जेल में कैद दादा त्यागेश्वरानंद को पुलिस द्वारा इतना मारा गया कि उनकी मृत्यु हो गई।

दादा अतुलानंद

दादा दिव्यानंद,

इमरजेंसी समाप्त होने के बाद बाबा को जेल से शीघ्र रिहा कराने हेतु 1978 में आत्मदाह की अंतिम लहर हुई जिसमें इन लोगों ने आत्मदाह किया – दीदी उमा और दादा लोकेश, बर्लिन मे 5 फरवरी, दादा गगन डलास में 17 फरवरी, दीदी असितिमा मनीला में 14 जून औरं 2 अक्टूबर को जिनेवा में शांति दीदी।
कोलकता में टालीगंज के पास स्थित बिजोन पुल पर 30 अप्रेल 1982 को 15 दादा, एक दीदी और एक मार्गी की निर्मम हत्या, कम्युनिस्ट गुंडों ने दिन दहाड़े कर दी। ये दादा थे दादा भावेश्वरानंद, दादा कृपाशिवानंद, दादा कमलेशानंद, दादा प्रशिवानंद, दादा गिरीशानंद, दादा सुर्वेश्वरानंद, दादा आर्तसेवानंद, दादा वेंकटेश्वरानंद, दादा वीरेन्द्र, दादा सुब्रत, दादा मुकुल, दादा सोमनाथ, दादा बलभद्र और दादा व्रजगोपाल। दीदी थीं, दीदी आनंद प्रशेता और मार्गी बंधु थे राम रघुवर। ये हमारे स्कूलों में शिक्षक थे। कम्युनिस्टों ने इन पर यह मिथ्या आरोप लगाकर हमला के लिए उकसाया कि ये लोग बच्चों का अपहरण कर रहे थे।
आज तक इन हत्याओं के लिये किसी को भी गिरफ्तार नही किया गया है।
दादा अजीतानंद को 24 फरवरी 1988 को सिलीगुड़ी जेल में पीट पीटकर मार डाला गया क्योंकि उन्होंने कम्युनिस्टो द्वारा दायर किये गये एक झूठे मुकदमें में सहयोग देने से इंकार कर दिया था।
दादा असीमानंद और चार मार्गी बन्धुओं को 2 अप्रैल 1990 को आनंदनगर में कम्युनिस्टों द्वारा भड़काये गये ग्रामीणों द्वारा मार डाल गया।
दादा करूणाकेतन की 4 जून 1996 को आनंद नगर में पुलिस फायरिंग में मृत्यु हो गई, चार मार्गी भी घायल हुये, जब वे विदेशी मार्गियों के प्रति पुलिस द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे थे। इसके बाद के वर्षों में कम प्रचारित कई घ्टनायें आनंद मार्ग के विरोधियों द्वारा की गई जिसमें कई कार्यकर्ता और मार्गी घायल हुये या उनकी मृत्यु हुई। सन् 1990 के बाद आनंद नगर में सी.पी.आई.एम. द्वारा की गई हिंसा में तीन और दादा मारे गये।

60. फ्री बाबा केंपेन

बाबा के जेल जाने के बाद ही पूरी दुनिया मे फ्री बाबा केंपेन (बाबा को रिहा करो) प्रारंभ की गई। इसका उद्‌देश्य था कि बाबा को जेल में डालकर उन पर हो रहे अन्याय के प्रति दुनिया का ध्यान आकृष्ट करना। इस दिशा में दो देश आस्ट्रेलिया और यू.एस.ए. सक्रिय थे। सिडनी सेक्टर के मार्गियों और कार्यकर्ताओं द्वारा एक शपथ ली गई जो इस आन्दोलन का भावना को दर्शाती है।

''मैं परमब्रम्ह और मार्ग गुरुदेव के नाम पर शपथ लेता हूँ कि मैं बाबा को जब तक जेल से बाहर नहीं लाता तब तक मैं न तो चैन से बैठूंगा और न ही अपनी निजी जरूरतों पर ध्यान दूंगा।''

वाशिंगटन डी.सी. में भी फ्री बाबा केंपेन को काफी सफलता मिली। हमने प्रेस नोट जारी किये, प्रदर्शन किये और यू.एस. कांग्रेस में लाबिंग की। हमें कई सीनेटरों का सहयोग मिला विशेषकर जब हमने उन्हें बताया कि बाबा को कम्युनिस्टों द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है। (शीत युद्ध के उन दिनों आपके द्वारा कम्युनिस्ट कहते ही लोग आपकी बात पर ध्यान देने लगते थे).

फ्री बाबा केंपेन, रैली और दुनिया में विरोध प्रदर्शन (फोटो)

ब्रिटिश वकील एवं क्वीन्स काउंसिल विलियम वेल्स द्वारा श्री श्री आनंद मूर्ति को न्याय दिलाने हेतु वेल्स रिपोर्ट तैयार की गई और इंटरनेशनल कमीशन ऑफ, ज्यूरिस्ट और इंटरनेशनल लीग आफ ह्यूमन राइट्स द्वारा तैयार की गई शेपर्ड रिपोर्ट कांग्रेस की इंटरनेशनल लीग फार ह्यूमन राईट्स को सौंपी गई।

1975 की गर्मियों में जब भारत में इमरजेन्सी लगी ही थी उस समय जेल मे बाबा की हालत बिगड़ने लगी। उस समय फ्री बाबा केंपेन की ओर से वाशिंगटन डी. सी. में यूनिवर्सल फ्रीडम मार्च निकाला गया। इसके अलावा मारलिस्ट ऑफ द वर्ल्ड यूनाइटेड (विश्व के नैतिकवान एक हो) रैली सेनफ्रांसिसको और कैलीफोर्निया में निकाली गई। इनमें देश के सैकड़ों मार्गी बाबा पर हो रहे अत्याचार के विषय में जानकारी देने एकत्र हुये।

चन्द्रशेखरन (यू0एस0ए0)

यूनिवर्सल फ्रीडम मार्च वाशिंगटन डी.सी. में (फोटो)

मॉरलिस्ट ऑफ द वर्ल्ड यूनाइटेड रैली सेनफ्रांसिसको में (फोटो) दादा गगन, लोगों को संबोधित करते हुये। उन्होने बाद में डलास में आत्मदाह किया। (फोटो)

61. बाबा का मुकदमा

बाबा की जुलाई 1972 की फोटो जब उन्हें एम्बुलेंस में बयान देने न्यायालय ले जाया जा रहा था।

बाबा और उनके साथ के चार सहअभियुक्तों पर कोर्ट में मुकदमा इमरजेंसी के दौरान शुरू हुआ। मीसा (एक प्रकार का मार्शल ला) लगने के बाद, बाबा का मुकदमा न्याय के नाम पर एक मजाक बन गया। भय और दबाव डालकर बचाव पक्ष के गवाहों को रोका गया और निर्णय पहले ही तय कर लिया गया। 26 नवम्बर को निर्णय आया जिसमें उन्हें दोषी करार दिया गया।

इसके पूर्व बाबा के वकील नागेश्वर प्रसाद ने रणनीति तैयार की और उन्होंने मनोवैज्ञानिक चाल का प्रयोग करते हुए कोर्ट में बाबा के लिये फॉसी की माँग की। उन्होंने जज से कहा कि वे चाहते हैं कि इस तरह उन्हें इतिहास में महान शहीद का दर्जा मिले। उनकी चाल सफल रही। बाबा और उनके साथ के सह अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा दी गई। सजा की गंभीरता का बाबा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने मुस्कुराते हुए अपने वकील से कहा, ''बाजी अब पलट जाएगी।''

और बाजी पलटने में अधिक समय नहीं लगा। अगले साल अंतर्राष्ट्रीय दबाव के चलते इंदिरा गाँधी ने आम चुनाव करवाने के लिये सहमत हो गई। इमरजेंसी में मार्शल ला के कारण बहुत से लोग प्रभावित हुए थे, अतः लोगों में जबरदस्त असंतोष की लहर थी। इस लहर नें इंदिरा गाँधी को सत्ता से बाहर कर दिया। इसके बाद इमरजेंसी हटाई गई और हजारों मार्गी और कार्यकर्ता लगभग दो वर्ष बाद जेल से आजाद हुए। कॉंग्रेस पार्टी सत्ता से बाहर हो गई और बाबा की अपील पर सुनवाई आरंभ हुई।

4 जुलाई 1978 को उनके और सह अभियुक्तों के विरुद्ध दिया गया निर्णय पलट दिया गया। पटना हाईकोर्ट उन्हें निरपराध पाया और रिहा करने का आदेश दिया।

यह समाचार सुनकर बाबा ने कहा ''रथ को आगे बढ़ाते रहो, विजय तुम्हारे पीछे दौड़ेगी। तुम्हें विजय के पीछे दौड़ने की आवश्यकता नहीं है। ध्यान रहे रथ के पहिये सड़क के कुत्तों के भौकने से नहीं रूकते।''

मार्गियों ने जेल के द्वार से विजय जुलूस निकाला और बाबा ने उन्हें यह संदेश दिया – ''तुम लोग जीवन के हर क्षेत्र में विजयी होगे।''

इसके दो दिन पूर्व जब सब लोग अदालत के निर्णय के प्रति सशंकित थे, बाबा ने कहा था – ''यदि तुम्हें एक मजबूत इमारत बनाना है तो इसकी नींव को बारिश और धूप में रहने देना होगा। इसमे ंसमय लगता है किन्तु इमारत मजबूत और टिकाऊ बनती है।''

Anandamurti And Four Others Convicted

CALCUTTA STATESMAN 27/11/76

PATNA, Nov. 26.—Prabhat Ranjan Sarkar alias Anandamurti, chief of the outlawed Ananda Marg and four of his followers, were today convicted of criminal conspiracy, abetment and murdering six defectors of the Marg in July-August 1970, reports Samachar.

Pronouncing the judgment, the Additional District and Sessions Judge, Mr Radha Ballabh Singh held Sarkar and the four accused guilty under Sections 120-B/302, and 302/109 IPC. The court also held Sarkar guilty under Sections 201/100 IPC.

While two of the accused, Satyanand and Sarveshwaranand, former general secretary of the Marg, were found guilty under Sections 302/120B and 302/109, the other two, Barun Kumar and Pavitra Kumar, were separately held guilty under Sections 302/34 IPC.

The judge in his 245-page judgment observed: "I find that the prosecution has succeeded beyond doubt in bringing home the charges framed against the accused.

According to the prosecution, Sarkar and the others had entered into a criminal conspiracy to kill the defectors at a TISCO bungalow in Jamshedpur on the night of July 28, 1970 According six defectors—Tapeshwaranand, Japeshan-

ANANDA MARG CASE: 5 GIVEN LIFE TERM

Cal. Statesman 30/11/76

PATNA, Nov. 29.—Prabhat Ranjan Sarkar, alias Baba, alias Anandmurti, founder president of the outlawed Ananda Marg, Sarveshwanand, former general secretary, Satyanand, seniormost Avadhoot, and Barun Mukherjee and Pavitra Roy, volunteers, were today sentenced to life imprisonment for criminal conspiracy, abetment, murder of six defectors and for "screening" the evidence, reports Samachar. The court had convicted them on Friday.

Madhavanand, an Avadhoot who turned approver, was ordered to be released by the Additional Sessions Judge, Mr Radha Ballabh Singh. All the accused were present in the court.

Mr Singh, in his judgment, said that the life imprisonment of Sarkar would serve the ends of justice "considering his age, present state of health and loss of reputation which he had already suffered"

As for the other accused, he said: "It is clear that they, no doubt, acquiesced in the execution of the scheme of conspiracy, but under their blind faith in the leadership of Sarkar whom they considered their Marg Guru. That being so, I feel that the ends of justice would be served if they are also awarded life imprisonment".

All the five were awarded the punishment under Sections 302 read with 120-B (murder and criminal conspiracy to commit an offence) and Sections 302 read with 109 of the Indian Penal Code (murders and abetment of an offence). The sentences will run concurrently.

THE INDIAN NATIC

AN INDEPENDENT DAILY

WEDNESDAY, JULY 5, 1978 ASHARDH KRISHNA, 15 SHAKE1900

Anand Murti, 4 others acquitted by Patna High Court

PATNA, July 4:

THE 24-year-old socio-spiritual organisation Ananda Marga with international followings today got a boost when the Patna High Court acquitted its spiritual head Prabhat Ranjan Sarkar alias Anand Murti and four of his followers of charges of criminal conspiracy and murders of six defectors.

62. रहस्यमय महामानव

यह फोटो 13 अक्टूबर 1964 को हवामहल जयपुर में लिया गया था, इसे 'मिस्ट्री मैन' लेख को दिखाने हेतु प्रयोग किया गया था।

वर्ष 1978 में 'इंडिया टूडे नाम द्विपाक्षिक पत्रिका के एक रिपोर्टर ने बाबा से इन्टरव्यू के लिये प्रार्थना की। दादा रामानंद ने उससे जो प्रश्न पूछने हैं, लिखकर देने कहा। बाबा को प्रश्न दिखाने के बाद रामानंद जी ने रिपोर्टर से कहा, ''बाबा कभी इन्टरव्यू के लिये तैयार नहीं होते, किन्तु आपके प्रश्नों का उत्तर देने के लिये वह सहमत हो गये हैं।''

''बाबा ने प्रश्नों के निम्नलिखित उत्तर दिये। ये पत्रिका के 1–15 अगस्त वाले अंक ''द मिस्ट्री मैन'' शीर्षक से प्रकाशित हुए।

प्रश्न – हाईकोर्ट के निर्णय से आप कैसा महसूस कर रहे हैं? आपके दुनिया भर में फैले लाखों अनुयायियों ने इसे 'धर्म की विजय' के रूप में मनाया है। लेकिन आपने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। आपके एक अनुयायी ने कहा कि आप क्योंकि निर्विकार हैं इसलिये यह समाचार आपने शान्त भाव से लिया। क्या ये सही है कि आप किसी बात पर प्रतिक्रिया नहीं देते और यदि ऐसा है तो क्यों ?

उत्तर – धर्म की विजय एक स्वभाविक क्रिया है। और हर स्वाभाविक चीज को सामान्य शान्त भाव से स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न – आपके अनुयायियों का आरोप है कि आपको और आपके संगठन को एक संस्था द्वारा दुष्प्रचार का शिकार बनाया गया ताकि आपके संगठन को नष्ट किया जा सके। विगत सात वर्षों से आपके जेल में रहने के दौरान आपके संगठन को काफी नुकसान हुआ। अब जबकि आप सभी आरोपों से बरी हो गए हैं, आप कैसे लोगों के मन में बनी भ्राँति दूर करेंगे और संगठन को पुर्नस्थापित करेंगे ?

उत्तर – हम परमात्मा को विषयी रख संसार के साथ सामंजस्य बिठाते हुए अपने मानवतावादी कर्तव्य करते रहेंगे।

प्रश्न – आपके और सामान्य जनता के बीच संवाद की कमी के कारण पहले भी काफी भ्रम रहा है। क्या अब आप सोचते हैं कि सामान्य जनता से संवाद आवश्यक है ताकि कोई भ्रम न रहे ? आपने अभी तक एकांत जीवन क्यों जिया है ?

उत्तर – मेरी सामान्य जनता से संपर्क की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि समाज सेवा का
वास्तविक कार्य संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाता है मैं इसमें सहयोग मात्र देता हूँ।

प्रश्न – जिस गति से आनंदमार्ग का पश्चिम के देशों में प्रसार हुआ है और बड़ी संख्या में लोग इससे आकृष्ट हुए हैं उससे यह भ्रम फैला है कि इसे किसी विदेशी संस्था द्वारा प्रायोजित किया गया है। आपके द्वारा के.जी.बी. और सी.बी.आई. पर तो आरोप लगाया गया किन्तु सी.आई.ए. का नाम नहीं लिया गया इससे और भ्रम फैला है। इस आरोप पर आपका क्या कहना है ?

उत्तर – मुझे नहीं पता कि क्या सी.आई.ए. ने आनंद मार्ग को कोई नुकसान पहुंचाया है। यदि
सबूतों के साथ ऐसी बात मेरी जानकारी में आती है तो मैं उसकी भी निन्दा करूँगा। किसी संगठन के प्रति मेरी कोई कमजोरी नहीं है। स्पष्ट रूप से अच्छे लोगों की प्रशंसा और बुरे लोगों की निन्दा होना चाहिए।

प्रश्न – ऐसा आरोप है कि आप राजनैतिक शक्ति पर कब्जा करके दुनिया में सद्विप्र राज स्थापना करना चाहते हैं। हालांकि कोर्ट में इसका खंडन किया गया था। कोर्ट में जो किताबें संदर्भ के रूप में दी गई थी उससे भी आपका यह मन्तव्य प्रकट हुआ कि ''हिंसा जीवन का सार तत्व है'', आप इस तथ्य पर क्या कहेंगे?

उत्तर – मैंने जो कोर्ट में कहा वह अंतिम है। मैंने जो शब्द प्रयोग किया वह सद्विप्र समाज है न कि सद्विप्र राज। राज(शासन) समाज का एक छोटा सा हिस्सा है। हिंसा के विषय में अपना दृष्टिकोण मैं पहले ही स्पष्ट कर चुका हूँ। आवश्यक नहीं कि हमेशा हिंसा हो। हिंसा की मेरी परिभाषा अहिंसा के साथ रह सकती है।

प्रश्न – क्या आपकी कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा है ? क्या आप मानते हैं भ्रष्टाचार हटे बिना आपकी पसंद का समाज नहीं बन सकता। और ऐसे समाज की स्थापना आप कैसे करना चाहते हैं ? जब तक आप सक्रिय राजनीति में भाग न लें यह कैसे संभव है ?

उत्तर – मेरी कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा नहीं है। समाज के हित में मैंने प्रउत का सिद्धान्त दिया है। इस सिद्धान्त को चाहने वाले इसे स्थापित करेंगे।

प्रश्न – आपके प्रजातंत्र के विषय में क्या विचार हैं ?

उत्तर – प्रजातंत्र के सफल होने के लिये वोट देने वालो के 51 प्रतिशत में निम्न कारक होना आवश्यक है – नैतिकता, शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक जागरूकता। अन्यथा यह लोगों को बेवकूफ बनाने का जरिया होगा।

63. बाबा की रिहाई

दो अगस्त 1978 लगभग 7 साल जेल में रहने के बाद, बाबा की जेल से रिहाई हुई। इस बीच उन्हें ऐसा विष दिया गया जो किसी के भी प्राण ले सकता था, और उन्होंने 5 साल से अधिक का विरोधस्वरुप उपवास किया। अंततः वह दिन आया जिसका प्रत्येक आनंद मार्गी को इंतजार था। हजारों की संख्या में मार्गी और सामान्य नागरिक बाबा को जेल से बाहर आते देखने के लिये जमा हुए थे। यहाँ आने वाली ट्रेने ठसाठस भरी हुई थीं। लोग रेल के अंदर और ऊपर भी सवार थे। कुछ गाँव के पूरे के पूरे लोग आ गये थे। पुलिस ने स्टेशन से जेल आने वाले मार्ग को अवरोधित कर दिया था। दुकाने और कार्यालय बन्द हो गए थे। जेल से जागृति तक सड़कों पर लोगों की भीड़ थी।

दोपहर में एक बजे बाबा को रिहा किया गया। यह अति भावनात्मक स्वागत था। लोग कई तरह से अपनी खुशी प्रकट कर रहे थे, कुछ तो हाथी पर सवार थे। लोग बाबा की कार के पीछे दौड़ते हुए उन पर पुष्प वर्षा कर रहे थे तथा 'परम पिता बाबा की जय' का नारा लगा रहे थे। इस तरह यह जूलूस जेल से पाटलीपुत्र कालोनी स्थित बाबा के निवास पर पहुँचा।

उस दिन दोपहर में बाबा ने पांच वर्ष अवधि के बाद अपनी बड़ी बहन हीरा प्रभा के हाथों से ठोस आसर ग्रहण कर अपना उपवास तोड़ा। वर्ष 1973 में जब वे बाबा से उपवास तोड़ने का अनुरोध करने गई थीं तो बाबा ने उनसे वादा किया था कि वे उन्हीं के हाथों उपवास तोड़ेंगे।

अगले दिन निवास के सामने एक पंडाल बनाया गया जो मार्गियों से भर गया। अधिकांश के नेत्र अश्रुपूरित थे। बाबा ने जेल से रिहाई के बाद पहला प्रवचन दिया 'भय रहित होकर जियो', जिसे बाद में डी.एम.सी प्रवचन घोषित कर दिया गया।

उसी माह बाद में बाबा ने कहा, ''जब मैं जेल में था तो कई लोगों ने मुझे बदनाम किया अब ये ही लोग मेरी प्रसंशा कर रहे हैं। किन्तु मैं उनकी निंदा से अप्रभावित था और अब मुझे उनकी प्रसंशा भी नहीं चाहिये।''

2 अगस्त 1988 को उनके जेल से रिहा होने की दसवीं वर्षगाँठ पर उन्होंने एक विशेष प्रवचन दिया। उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं :

''हम किसी को हानि नहीं पहुँचाना चाहते। किन्तु अधार्मिक लोग तुम्हारे विरुद्ध बल प्रयोग करते हैं तो तुम्हें भी आत्मरक्षा हेतु बल प्रयोग करना होगा। यह हिंसा नहीं है, यह प्रतिरोध है। जिन्होंने हमारा विरोध किया, उनका दयनीय अंत हुआ और वे धूल धुसरित हो गए।''

''अन्याय के पथ पर चलने वाले सोचते हैं कि उन्हें अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने का अधिकार है। एक महिला का विचार था कि वह सत्ता की शक्ति से कुछ भी कर सकती है। जब पाप की प्रतिक्रिया तुरंत नहीं मिलती तो पापी सोचने लगते हैं कि और पाप करके भी वे बच जायेंगे, किन्तु सत्ता की ऊँचाई पर पहुंचने का यह अर्थ नहीं है कि वे वास्तव में बड़ी ऊँचाई पर पहुँच गये। उनकी स्थिति धोबी के कपड़ों की तरह होती है जिन्हें काफी ऊँचाई पर
उठाया जाता है और फिर पटक दिया जाता है।''

''शासन द्वारा तीन हजार पांच सौ मार्गी और सन्यासियों को गिरफ्तार किया गया। ये सभी निर्दोष थे। किन्तु राजनैतिक नेताओं को इनके विरुद्ध बल प्रयोग करने में कोई हिचक नहीं हुई।'' ''जब मैं रिहा हुआ तो तुम्हें याद होगा कि एक लम्बा जुलूस निकला था। भीड़ देखकर जेल अधिकारियों ने मुझसे कहा था कि यदि रिहा होने पर ऐसा स्वागत जुलूस निकले तो वे भी जेल जाने को तैयार हैं।''

''जेल में मुझे बहुत प्रताड़ना सहना पड़ा। रिहाई के समय मैं चल भी नहीं सकता था मुझे व्हील चेयर का प्रयोग करना पड़ता था। मैं नहीं चाहता कि किसी और को मुझ जैसा कष्ट सहना पड़े। किन्तु धर्म के लिये संघर्ष मे यदि कुछ कष्ट भी उठाना पड़े तो तुम्हे स्वीकार करना चाहिये। तुम फूल तोड़ने जाओगे तो हो सकता है कि काँटे चुभ जाएं। तुम्हें यह सांत्वना रहेगी कि तुम्हारे संघर्ष की परिणिति निश्चित ही धर्म की विजय के रुप में होगी। हमारी राह क्लिष्ट–अक्लिष्ट है – आरंभ में कष्ट होगा पर अंत में नहीं होगा।

''धर्म ही विजय का कारण होता है। तुम यदि जम्मू एक्सप्रेस की एक सीट पर बैठ जाओ तो स्वाभाविक रूप से तुम वहाँ पहुंच जाओगे। इसी तरह यदि तुम धर्म की राह पकड़ोगे तो निश्चय ही विजयी होगे।''

'भय रहित होकर जियो'(लिव विद आउट फियर) बाबा का 3 अगस्त 1978 का प्रवचन जो सिडनी सेक्टर की समाचार पत्रिका प्रणाम में प्रकाशित हुआ।

बाबा की रिहाई के दृश्य : (फोटो)

बाबा 3 अगस्त 1978 को प्रवचन देते हुए (फोटो)
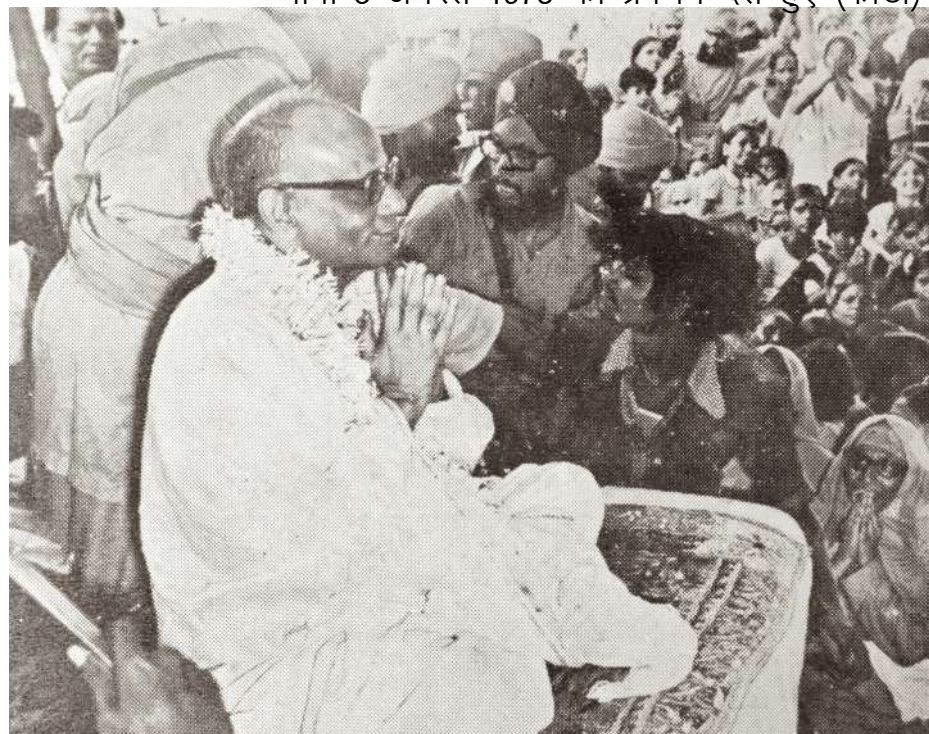
64. कौशिकी नृत्य

6 सितम्बर 1978 को बाबा ने कौशिकी नृत्य प्रदान किया (मन के विस्तार के लिये नृत्य) यह नृत्य स्त्री और पुरुष दोनों के लिए उपयोगी है। यह व्यायाम भी है और औषधि भी। इसका भाव रहस्यवाद की गहराईयों से जुड़ा है; जो अणुसत्ता और वृहत सत्ता के बीच संबंध स्थापित करता है तथा अंततः परम पुरुष से जोड़ देता है। उन्होंने इससे 22 भौतिक और मानसिक स्वास्थ्य में होने वाले लाभ बताये। इसके बाद से डी.एम.सी. और अन्य मार्गीय विशेष अवसरों पर इसका प्रदर्शन होने लगा। इसे आसन के बाद किया जाता है।

''सही क्रम इस प्रकार है : ललित नृत्य (कीर्तन), साधना, आसन, कौशिकी और अन्त में पुरुषों के लिए तांडव। कौशिकी के संबंध में कुछ और बाबा द्वारा दिया गया विवरण :—

''सदाशिव ने सर्वप्रथम तांडव नृत्य प्रदान किया और जहाँ तक कौशिकी का संबंध है इसे मैंने 6 सितम्बर 1978 को दिया। दरअसल तांडव और कौशिकी दोनों नृत्य की अपेक्षा शारीरिक व्यायाम के रूप में अधिक उपयोगी हैं।''

''महिलाओं के लिये तांडव से मिलते जुलते एक नृत्य की जरूरत थी, कौशिकी इस आवश्यकता की पूर्ति करेगा। मुझे आशा है तुम लोग इसे सीख गये होगे। इससे तुम्हारे शरीर, मन और आत्मा, सभी को लाभ मिलेगा।''

'महिलाओं के लिये उनकी दैहिक संरचना के कारण तांडव का अभ्यास उचित नहीं है। लेकिन उन्हें भी कुछ आवश्यकता है। मैंने पटना में महिलाओं के लिये एक नये प्रकार के नृत्य–व्यायाम का आविष्कार किया जिसे मैंने कौशिकी नृत्य नाम दिया। लाभ की दृष्टि से कौशिकी, तांडव जितना ही महत्वपूर्ण है।''

''मैंने 6 सितम्बर 1978 को कौशिकी का अविष्कार किया। यह नृत्य व्यायाम भी है और बाईस बीमारियों का इलाज भी। यह लगभग सभी महिला रोगों के लिये औषधि है। कई पुरुषों की बीमारी में भी यह उपयोगी है। यह लीवर संबंधी कई रोगों की दवा है। इससे महिलाओं का प्रसव सुरक्षित होता है। यह वृद्धावस्था के आगमन को रोकता है। इस प्रकार यह एक दवा है।''

''कौशिकी का संबंध व्यष्टि के अंतर्मन से है ..... नृत्य और कीर्तन के द्वारा अंतर्मन का विशेष भाव बाहर आ जाता है अर्थात् अंर्तमन के विशेष भाव का इससे प्रगटीकरण होता है। यह विशेष प्रकार का कीर्तन के साथ नृत्य कौशिकी कहलाता है। कोष का अर्थ है आंतरिक मैं। और इसीलिये मनुष्य के मानसिक और अध्यात्मिक क्षेत्र में इस नृत्य की अत्यंत महत्ता है।''

तुम लोग जानते ही हो कि ललित मार्मिक विशुद्ध अध्यात्मिक नृत्य है और कौशिकी मनसाध्यात्मिक नृत्य है। यह मानसिक क्षेत्र से आरम्भ होकर अध्यात्मिक क्षेत्र तक पहुंचाता है और तांडव भौतिक — मनसाध्यात्मिक है।

जमैका डीएमसी में बाबा के सम्मुख किया गया कौशिकी नृत्य (फोटो)

65. जेल के बाद प्रवचन

जेल से रिहा होने के बाद तीन माह तक बाबा 244 पाटिलीपुत्र कालोनी में रहे। हालांकि उपवास और जेल की कठिन स्थितियों के कारण उन्हें शारीरिक कमजोरी थी, किन्तु उन्होंने सीधे कार्य करना आरंभ कर दिया। जैसे सात साल का कारावास बगीचे में टहलने जैसा था। पटना प्रवास के दौरान उन्होंने लगभग 100 प्रवचन दिये। इसके बाद अक्टूबर 1978 के अंत में उन्होंने अपना मुख्यालय कोलकाता बना लिया। इसके बाद 1990 तक उन्होंने लगभग 700 प्रवचन दिये। इनमें से अधिकांश कोलकाता में दिये। कई प्रवचन देश के विभिन्न भागों में दिये, और कई उनके विश्व भ्रमण के दौरान दिये गये। श्रोताओं की मातृभाषा के अनुरूप ये प्रवचन बंगाली या हिन्दी में दिये गये। कुछ अंग्रेजी में भी थे। कई प्रवचनों के प्रारंभ या मध्य में उन्होंने प्रवचन का सार तत्व अंग्रेजी में बता दिया। इनमें अधिकांश प्रवचन टेप रिकार्डर पर रिकार्ड किये गये, जो कि हमारे संग्रह में है। इनमें से कई को आनंद वचनामृतम श्रृंखला में संग्रहित किया गया है।

कोलकाता का बाबा अर्काइव

A member of the Ananda Marg telling photographers not take pictures of Mr P. R. Sarkar, the Marg leader, on his ar val at Calcutta airport on Saturday.—Statesman. (Report on ba page)

जनरल दर्शन (फोटो)

66. बाबा का विश्व भ्रमण

महर्लिका के दो बार भ्रमण के पश्चात्, बाबा ने मई और जून 1979 के बीच विश्व भ्रमण किया। इसमें वे स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी, नीदरलैंड, स्वीडन, स्पेन और फ्रांस गये। भारत के बाहर उनका तीसरा डी.एम.सी. आनंद पूर्णिमा के अवसर पर हुआ। इसका आयोजन स्विट्जरलैण्ड की अल्पाइन पर्वत श्रृंखला के गाँव फीश्च में हुआ, जहाँ वे एक सप्ताह तक रूके।

टिमर्न जर्मनी के आयोजन को उन्होंने धर्म महा सम्मेलन घोषित कर दिया। ऐसा केवल तीसरी बार हुआ जब उनकी उपस्थिति के बाद भी आयोजन को धर्म महा सम्मेलन घोषित किया गया।

उस वर्ष अगस्त में वे थाईलैण्ड और ताइवान गये। उन्हें तीसरी बार महर्लिका भी जाना था किन्तु फिलीपिंस की मार्कोस सरकार ने उन्हें देश में प्रवेश देने से मना कर दिया। मार्गियों को इससे बड़ी निराशा हुई। बाबा इसकी जगह बैंकाक, थाईलैंड में ही कुछ दिन और रुक गये। फिर वे करीब दो सप्ताह के लिये ताईवान गये। यहाँ उन्होंने भारत के बाहर का चौथा डी.एम.सी., ताई पी में दिया। फिर सितम्बर में वे भारत के बाहर के अपने अंतिम टूर के लिये निकले। इस बार वे ग्रीस, इसराईल, तुर्की, आईसलैंड, जर्मनी, जमैका और वेनेजुएला गये। इस बार डी.एम.सी. का आयोजन हैफा, रेकजविक, किंगस्टन और केराकस में हुआ।

6 मई 1979 को संध्या 8 बजकर 20 मिनट पर बाबा को जिनेवा एयरपोर्ट पर उतरना था। पूरे महाद्वीप से लगभग सात सौ मार्गी वहाँ एकत्रित थे। कुछ कारणों से बाबा के वायुयान को आने में दो घंटा देर हो गई। भक्त गण इस बीच कीर्तन, गायन और नृत्य करते रहे।

कीर्तन से वातावरण में बिजली के करेंट जैसा प्रभाव था। ऐसे वातावरण में भक्त अपने गुरू की प्रतीक्षा कर रहे थे, जिन्होंने उनके जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया था। जब वे दृष्टिमान हुये, तो समय जैसे रूक गया। वहाँ न कोई भूत था, न वर्तमान और न भविष्य। वहाँ केवल बाबा थे और हर भक्त ने गुरू शिष्य के व्यक्तिगत संबंध को अनुभव किया।

कई मार्गी बाबा को प्रथम बार देख रहे थे, कुछ उन्हें सात वर्षो बाद देख रहे थे। नजदीक आने पर आनंदाश्रु आँखों से बहने लगे। कुछ उनका नाम लेकर जोर जोर से रो रहे थे जबकि अन्य शान्ति से उन्हें निहार रहे थे। बाबा मुस्कान के साथ मार्गियों की दोनों ओर कतार के बीच आगे बढ़े और फिर सबके सामने एक कुर्सी पर बैठ गये। फिर उन्होने कहा, ''देखो मैंने अपना वचन पूरा किया। दो वर्ष पूर्व मैंने वादा किया था कि पहला अवसर मिलते ही मैं स्विट्जरलैंड आऊँगा। देखो मैं आ गया। मैं हमेशा अपना वचन पूरा करता हूँ।''

बाबा फियस्क में / बाबा का जिनेवा एयरपोर्ट पर स्वागत (फोटो)

बाबा का प्रवचन सुनते यूरोप के मार्गी / बाबा प्रवचन देते हुए। (फोटो)

67. फियस्क में बाबा

बाबा कार की ओर जाते हुए (फोटो)

बाबा का स्विट्जरलैंड के फियस्क का दौरा उसमें भाग लेने वाले भाग्यशाली लोगों के लिए आनंददायक अवसर था। सुन्दर अल्प पहाड़ियों के बीच यूरोप और दुनिया के अन्य भागों से आये मार्गियों का प्रसन्नता से भरपूर सम्मेलन हुआ, जिसके मध्यमणि बाबा ही थे। वे ही सबके आकर्षण के केन्द्र थे। वहाँ एक ही गति थी, एक ही ताल थी और एक ही भावना थी ''बाबा आ गए हैं, बाबा यहाँ हैं, बाबा हमारे साथ हैं !''

प्रति दिन जनरल दर्शन और प्रवचन होता। पहाड़ी मार्गो में बाबा भ्रमण के लिए जाते। व्यक्तिगत सम्पर्क ओर वैवाहिक आशीर्वाद भी होता। पहली बार भारत के बाहर आनंद पूर्णिमा मनाई गई। फियस्क का एक आकर्षण पहाड़ के ढ़ाल और हिमनद पर चलने वाली केबल कार है। वहाँ बाबा ने बताया कि अल्प पहाड़ियों पर ही पृथ्वी पर प्रथम जीवन प्रारंभ हुआ था। बाबा के लकड़ी के मकान के बाहर हमेशा मार्गियों के झुंड बाबा नाम केवलम कीर्तन गाते रहते थे।

बाबा के कार के अंदर का दृश्य, भैरवी चक्र जिस पर वे बैठते है।

बाबा का डी.एम.सी. प्रवचन (भारत से बाहर तीसरा), 12 मई 1979 को हुआ। विषय था, ''माइक्रोकाजम एण्ड इट्स आब्जेक्ट ऑफ आइडियेसन'' (अणु सत्ता और इसके चिन्तन का विषय)। अगले दिन जो उनके फियस्क प्रवास का अंतिम दिन था उन्होंने जनरल दर्शन का निम्न शब्दों के साथ समापन किया :

''आज जब समाज पतन और भ्रष्टाचार की गर्त में है, विभाजनकारी और तामसिक शक्तियाँ हावी हैं, परम पुरुष इससे अप्रभावित नहीं रह सकते। लोगों की भावानाएँ, उनकी करुण पुकार, उनकी आवश्यकतायें वे सुनते हैं और तब वे तारक ब्रम्ह के रूप में आते हैं। तारक का अर्थ है मुक्ति प्रदान करने वाला और ये तारक ब्रम्ह सृष्ट जगत के बाबा हैं। उन्हीं के लिए भक्त बाबा नाम केवलम गाते हैं।

हालांकि बाबा के कोलकाता लौअने पर वहां हुआ डी.एम.सी. उस वर्ष की आनंद पूर्णिमा का अधिकारिक डी.एम.सी. माना गया।

फियास्क डी0एम0सी0

फील्ड वाक के दृश्य

पहाड़ पर भक्तों से घिरे बाबा (फोटो)

68. बाबा टिमर्न और बर्लिन की दीवार पर

चार रात्रि तक (19 मई से 22 मई 1979) तक बाबा पी.एम.एस.ए. (प्रोग्रेसिव मेन्स स्प्रिचुअल एसोसिएशन – एस.डी.एम की एक शाखा) के वैश्विक केन्द्र टिमर्न, जर्मनी में रहे। अंतिम रात वे पास के शहर हेन्नोवर भी गये थे जहाँ सायंकालीन दर्शन हुआ था। यह केन्द्र 1974 में खरीदा गया था तब उन्होंने इसका नाम विद्य ासागर दिया था। यह भारत के बाहर अकेली ऐसी जायदाद है जहाँ बाबा ने पैर रखा और यह अभी भी हमारी है और यह भारत के बाहर अकेली जगह है जहाँ बाबा ने अवधूत दीक्षा दी। यहाँ उन्होंने चार जनरल दर्शन दिये और उनकी उपस्थिति मे एक विरला आयोजन हुआ जिसे उन्होंने धर्म महा सम्मेलन घोषित कर दिया।

टिमर्न में बाबा ने कहा, ''मैंने वातावरण में एक विशेष अध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाहित कर दी है जो कि धरती, पानी और पेड़–पौधों में उतर रही है। अंततः यह ऊर्जा मनुष्य के शरीर और मन में प्रवेश कर जाएगी।''

दादा दिव्यलोकेशानंद,

कुछ साल बाद 22 दिसम्बर 1985 को एक रविवार के दर्शन में बाबा ने टिमर्न के विषय में कुछ कहा था जिसका बाद में 'शब्द चयनिका'' में उल्लेख हुआ।

बाबा ने कहा : ''मैं पश्चिम जर्मनी के टिमर्न गाँव में ठहरा था.... वे प्रसन्नता भरे दिन थे। मैं यह जानता हूँ कि ये सुनहरे दिन गुजर जाते हैं और सदा के लिये खो जाते हैं किन्तु उनकी सुनहरी यादें रह जाती हैं। पूर्वी जर्मनी की सीमा इस गाँव के निकट ही है। उस दिशा में खुला मैदान और कुछ पेड़ हैं। सायंकालीन भ्रमण के बाद मैं एक पेड़ के नीचे बैठ गया। सूर्य डूब चुका था किन्तु कुछ धुंधलका बाकी था। मैंने हिरणों को देखा जो स्वतंत्र रुप से पूर्वी जर्मनी से पश्चिम जर्मनी और पश्चिम जर्मनी से पूर्वी जर्मनी आ जा रहे थे। उन्हें आने जाने से किसी प्रकार की रोक टोक नहीं है। उनपर लोगों को विश्वास है इसलिए उनके लिए वीसा और पासपोर्ट का झंझट नहीं है। वे धोखा देना नहीं जानते। उन्हें काल्पनिक सीमा स्वीकार नहीं है। वे न तो अपने मन में कोई बेईमानी, भेदभाव को जगह देते और न ही किसी दूसरे के साथ ऐसा करते। शायद इसीलिये लोगों ने उनके लिये पासपोर्ट, वीसा की व्यवस्था नहीं रखी है।''

टिमर्न यात्रा के कुछ दिन पूर्व 17 मई 1979 को मार्गी बाबा को पश्चिम बर्लिन के क्रूजबर्ग में स्थित जर्मनी को विभाजित करने वाली दीवार देखने लेकर गए थे। वहाँ उन्होंने कहा, ''यह दीवार एक विनाशकारी युद्ध से उत्पन्न हुई है और यह एक जीवंत समाज को कृत्रिम रूप से विभाजित करती है। इस देश का विभाजन भी कृत्रिम है। ऐसी स्थिति देर तक नहीं रह सकती। जल्दी ही पूर्व और पश्चिम जर्मनी एक हो जायेंगे।

''बाबा ने 20 मई 1979 को डी.एम.सी. प्रवचन दिया। विषय था 'दि नाउमेनल कॉज एण्ड पर्सनल गॉड' (प्रकृत कारण और वैयष्टिक ईश्वर), यह एक उचित विषय था (इसका शीर्षक बाबा ने स्वयं दिया) उस स्थान को ध्यान में रखते हुये। क्योंकि जर्मन दार्शनिक एमेनुअल केंट का नाउमेनान यूरोप में एक बड़ा दार्शनिक विचार है। संध्या में उन्होंने शिव के सफलता के सात सूत्र के विषय में बतलाया।

संपादकों की ओर से –

''सफलता के सात सूत्रों में छठवाँ सूत्र संतुलित आहार का महत्व दर्शाता है – उन्होंने विशेष रुप से कहा कि अधिक खाना अच्छा नहीं है। सफलता के सात सूत्र का प्रवचन देने के बाद बाबा अपने कमरे में चले गए। बहुत से पूर्णकालिक कार्यकर्ता जो अभी तक कार्य में संलग्न थे, भोजन के लिये नीचे चले गए। देर हो चुकी थी अतः उन्होंने जल्दी जल्दी खाना शुरू किया। तभी अचानक उन्होंने ऊपर देखा जहाँ कमरे के बाहर बाबा खड़े थे। वे मुस्कुरा रहे थे। सभी क्षण भर के लिए रुक गए.... बाबा ने परिहास के लहजे में कहा ''अब छठवाँ सूत्र भूल मत जाना''। सभी लोग हंस पड़े।

बाबा फियस्क में–

बाबा ने जब टिमर्न से बिदा ली तो उनकी आँखों में आँसू थे (दूसरा ऐसा अवसर तब था जब वे बोध गया गये थे जहाँ उन्होंने बुद्ध के दृढ़ संकल्प की प्रसंशा की थी।) जाते समय उन्होंने कहा ''कभी कभी किसी जगह से जाना परम पुरुष के लिये भी मुश्किल हो जाता है।''

दादा दिव्यलोकेशानन्द

टिमर्न में बाबा के साथ भ्रमण

1970 में टिमर्न में आनंद पूर्णिमा उत्सव आयोजन (फोटो)

69. बाबा रोट्टरडम मं

जब रोट्टरडम में बाबा का विमान धरती छूने जा रहा था, आकाश एक पूरे इन्द्रधनुष से सुशोभित था जो अपने रंगों की छटा बिखेर रहा था। जैसे बाबा अपने स्वागत में सूर्य के रहस्यों को खोल रहे हों। उनके इर्द गिर्द सौ लोगों की अव्यवस्थित भीड़ थी और बीच में वे शांति की मूर्ति थे। शहर के मध्य स्थित उस छोटे किन्तु सुंदर मकान में लोग ठसाठस भरे हुए थे। मकान में दो वृत्ताकार ऊपर जाने की सीढ़ियाँ थीं। बाई तरफ वाली सीढ़ी मार्गियों की ओर थी और दांई तरफ वाली सीढ़ी बाबा के कमरे को जाती थी। सीढ़ियाँ इतनी सकरी थीं कि केवल एक या अधिकतम दो लोग ही उन पर एक साथ चढ़ सकते थे। शुरू में इससे अव्यवस्था फैली पर शीघ्र ही सब कुछ सामान्य हो गया। सहयोग और स्वीकृति के माहौल में शीघ्र ही लोगों की बीच एक सुंदर भावना और अपनत्व विकसित हो गया।

फियस्क में बाबा मई 1979 में बाबा यूरोप के तूफानी दौरे पर थे और हालैंड जा रहे थे। वहाँ रोट्टरडम की जिस पुरानी जागृति में उन्हें ठहराया जाना था, वहाँ दो समस्यायें थीं। एक तो उनके प्रयोग के लिये निजी स्नानगृह नहीं था और दूसरा प्रवचन कक्ष के नीचे ही एक पब था जहाँ जोर जोर से पाप संगीत चलता रहता था।

बाथरूम का जीर्णोद्वार कर वहाँ एक शावर लगाया गया। किन्तु जल्दबाजी में किया गया काम ठीक ढ़ंग से नहीं हुआ। पहले ही दिन जब बाबा नहा रहे थे तो शावर से पानी का रिसाव नीचे पब में हो गया। द्वार पर लगी घंटी सुन मैं बाहर आया तो पब वाले को गुस्से में तमतमाया हुआ देखा। उसने मुझे अपने कमरे में देखने का इशारा किया; जहाँ मैंने देखा कि रिसते हुए पानी ने कई संगीत यंत्रो को बरबाद कर दिया था। प्रतिरोध में पब मालिक ने जागृति जाने वाली पानी की लाइन को बंद कर दिया, यानि की विपत्ति ! इसका अर्थ न केवल बाबा के लिये बल्कि उपस्थित सौ मार्गियों के लिए भी पानी बंद। और यह रविवार की दोपहर में हुआ। मैंने बड़ी मुश्किल से एक स्थानीय प्लंबर को पकड़ा जो जागृति आने को तैयार हुआ, लेकिन वह पिया हुआ था और उससे शराब की दुर्गंध आ रही थी। हम उसके दोनो ओर अगरबत्ती जलाकर उसे बाथरूम ले गए। दुर्भाग्य से प्लम्बर ने बताया कि बिना फर्श तोड़े मरम्मत संभव नहीं – यानि बड़ा काम ! अब क्या किया जाए। देर हो रही थी। मिस्त्री पिया हुआ था और उसके पास सही औजार भी नहीं थे। वह चला गया। सौभाग्य से इंग्लैण्ड के एक मार्गी भाई ने समस्या का हल निकाला। वे तल घर में गये जहाँ अग्निशामक का मुख्य नल था। उसे उन्होंने जागृति की पानी आपूर्ति करने वाली पाइप लाईन से जोड़ दिया। यह कैसा हुआ, यह एक तकनीकी रहस्य ही रहा। अगले दिन सही प्लम्बर आया और उसने पानी की व्यवस्था को दुरूस्त किया और बाबा का प्रवचन बिना पाप संगीत बजे शांति से सम्पन्न हुआ। ''और अच्छी बात यह रही कि बाबा जो इस नाटक का आनंद ले रहे थे उन्होंने अपना प्रवास तीन दिन के लिये बढ़ा दिया। हम लोग भाग्यशाली रहे।''

माधवी (नीदरलैण्ड) बाबा के साथ मैदान भ्रमण में करीब पन्द्रह भक्त साथ गए .... बाबा ने बताया कि लगभग 3000 वर्ष पहले हालैण्ड के पूर्वज स्केंडिनेविया से आए थे। उन्होंने यह भी बताया कि हालैंड के लोगों का जल से गहरा रिश्ता है।

एक जगह बाबा रुक कर एक बेंच पर बैठ गए और एक प्रश्न किया ''क्या भय की भावना होने का कोई कारण है ? फिर उन्होंने स्वयं ही उत्तर दिया ''किसी भी प्रकार की हीन भावना होने का कोई कारण नहीं है।'' फिर उन्होंने एक दीदी से एक गीत गाने को कहा। उसने शर्माते हुए कहा, ''नहीं बाबा''। बाबा ने उससे कई बार कहा कि वह कोई भी हीन भावना न रखे किन्तु वे गा नही सकीं। एक दूसरी दीदी जो बाद में दीदी आनंद साधना हो गई, ने कहा ''पर बाबा हमारे अंदर कई तरह ही हीनमन्यता है, उन्हें हम कैसे हटाएँ''? तब बाबा ने उत्तर दिया, क्या मैं तुम्हें रहस्य बताऊँ ? फिर कुछ रूककर उन्होंने कहा, ''कीर्तन''

बाबा फियस्क में एक अन्य मैदान भ्रमण में बाबा ने रूक कर मेरी आँखों में देखा। ऐसा लगा कि वे लम्बे समय तक देखते रहे, जबकि कुछ सेकंड ही हुए होंगे। फिर वे बोले... ''तुम जानते हो, मैं हर एक और प्रत्येक सत्ता से प्यार करता हूँ!'' ''उनके उत्तर से मुझे महसूस हुआ कि उनका प्रकाश और प्यार सभी के लिए है और मानवता की भलाई के लिए उनकी भावना हम जितना समझते है, उससे कही अधिक है।''

गोविन्द (यू.के.)

बाबा रोट्टरडम जागृति के बाहर मार्गियों के साथ (फोटो)

70. प्रशिक्षुओं को संदेश

स्वीडन के प्रशिक्षण मठ की स्थापना 1976 में हुई थी। जब बाबा 1979 में स्वीडन आए
तो प्रशिक्षुओं को उनसे मिलाने स्टाकहोम लाया गया।
उन्होने यह संदेश दिया : ''जिस राह का तुम लोग निर्माण कर रहे हो उसके तुम्हीं अग्रदूत हो। इसके लिए तुम्हें संघर्ष करना होगा और पूरे प्रयास के साथ कार्य करना होगा। तुम यह राह दूसरों के लिए बना रहे हो; वे इसका लाभ उठाऐंगे और बिना किसी बाधा के इस पर चल सकेंगे। अग्रदूत बनने के लिए कष्ट सहना होगा। क्या तुम लोग इसके लिए तैयार हो ? ''हाँ बाबा, उन सब ने उत्तर दिया।''
''कुछ बुरा करना आसान है, किन्तु कुछ बड़ा और आदर्श करने के लिए नैतिक साहस की आवश्यकता होती है। दूसरों को सही राह पर लाने के लिये अध्यात्मिक बल की भी आवश्यकता है। प्रशिक्षण के दरमियान तुम्हें नैतिक और अध्यात्मिक शक्ति अपने अंदर पैदा करना है। अब तुम्हें अपनी व्यष्टिगत सुविधाओं और आवश्यकताओं के विषय में नहीं सोचना है। अपने विषय में न सोचकर दूसरों की सहायता करना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम्हें दुख झेल रही मानवता की सेवा करना है। कल्याणमस्तु',
यह कपड़ा जिस पर स्वास्तिक बना हुआ है, जिस पर बैठकर स्टाकहोम में बाबा ने दो दर्शन दिये : 27 मई संध्या में 'दि चांस टू बी वन विद हिम' और 28 मई संध्या में 'एन एक्सप्रेशन इज नेव्हर ऐलोन'.

बाबा का स्टॉकहोम एयरपोर्ट पर आगमन (फोटो)

71. एटलॉन्टिस, वेस्ट ऑफ ईबेरिया

मई 1979 के अंत में बाबा ने वेलेन्सिया और स्पेन का दो दिवसीय दौरा किया। दादा धर्मवेदानंद को बाबा के प्रवचनो को लिपिबद्ध करने का दायित्व दिया गया था। उनकी किताब 'ट्रेवल्स विद द मिस्टिक मास्टर' से कुछ उद्धरणः शाम को हम शहर के बाहर समुद्र तट पर टहल रहे थे, बाबा ने कहा, ''पुराना एटलांटिस पानी में डूब चुका है। केवल स्पेन, पुर्तगाल, आयरलैंड और आइसलैंड के कुछ हिस्से शेष हैं।'' वेलेन्सिया एयरपोर्ट पर हम उड़ान की प्रतीक्षा कर रहे थे, तब भी मैं बाबा की बातों को लिपिबद्ध कर रहा था। बाबा ने कहा ''बास्क की खाड़ी मूल रूप से एटलांटिस का हिस्सा थी – इसीलिये यह इतनी उथली है। जहाँ भी समुद्र उथला होता है वहाँ विशाल लहरें बनती हैं। प्रशान्त महासागर बहुत गहरा है – कई जगह तो छह मील से भी ज्यादा गहरा है – वहाँ लहर छोटी बनती हैं (जो मनुष्य कम जानता है वह बातें बड़ी बड़ी करता है) इबेरिया के तटीय क्षेत्रों का सांस्कृतिक, भूगर्भीय, जैव वैज्ञानिक एवं अन्य सर्वेक्षण किया जाना चाहिये ताकि एटलांटिस के विषय में नई जानकारी प्राप्त हो सके। भौतिक रुप से मैं यहाँ पहली बार आया हूँ पर मानसिक रुप से मैं पहले भी आ चुका हूँ''

विमान में भी उन्होंने कहना जारी रखा ''इबेरिया का भूतकाल गौरवमय था, इसका वर्तमान धूमिल है, किन्तु भविष्य प्रखर सूर्य किरणों जैसा उज्जवल है। मैं यहाँ के लोगों से बहुत प्यार करता हूँ। स्पेनिश और पुर्तगीज की मिश्रित भाषा इबेरियन भाषा कहलाती है। आज भी कुछ स्पेनिश उपभाषाओं और मानक स्पेनिश भाषा में इतना अंतर है जितना स्पेनिश और पुर्तगीज भाषा में भी नहीं है। यदि यूराप की साझा व्यापार व्यवस्था यूरोप के सभी देशों में लागू हो जाए तो स्पेन और पुर्तगाल दोनों को लाभ होगा।''

जैसे ही बाबा ने यह वाक्य कहा मैंने अपनी डायरी में benefitted (बेनीफिटेड) शब्द लिखा। हालांकि उन्होंने नहीं देखा कि मैंने क्या लिखा पर उन्होने कहा, ''धर्मवेदानंद 'benefited (बेनीफिटेड) की स्पेलिंग (हिज्जे) क्या होगी? मैंने कहा 'BENEFITTED' ''नहीं, हालांकि नियम यह है कि अर्धस्वर के साथ दोहरा व्यंजन होता है पर यहाँ यह अपवाद है और इसमें एक ही टी होगा'' बाद में मैंने अपनी डायरी का अवलोकन किया, मैंने लगभग बीस पन्नों में यह इकलौती गलती की थी और बाबा ने इसे बिना देखे पकड़ लिया।

बाबा फियस्क में बाबा ने कई अवसरों पर एटलांटिस की आश्चर्यजनक संस्कृति का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है कि एटलांटिस बहुत बड़ा महाद्वीप था। यह इबेरिया से जुड़ा हुआ था। उन दिनों जिब्राल्टर अफ्रीका से जुड़ा हुआ था। एक बहुत बड़े भूकम्प के कारण एटलांटिस गायब हो गया और सहारा का रेगिस्तान अस्तित्व में आया। पहले सहारा समुद्र के अंदर था। इसी कारण वहाँ तेल मिलता है। बाबा ने फिर कहा कि एटलांटिस की बहुत विकसित संस्कृति थी।

फियास्क में बाबा

स्टॉकहोम में एयरपोर्ट की पट्टी पर बाबा मैदान भ्रमण के लिये गए। वहाँ बाबा ने कहा कि स्केन्डिनेविया की प्राचीन संस्कृति एटलांटिस संस्कृति से जुड़ी हुई थी। यह कहते समय ऐसा लग रहा था मानों पूरा दृश्य उनके सम्मुख उपस्थित है। उन्होंने बताया कि स्केन्डिनेविया के क्षेत्र में पहले गर्म जलवायु थी, वस्तुतः यह भूमध्य रेखा के समीप था, किन्तु उसके बाद उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव अपनी जगह से हटने के कारण यह परिवर्तन हुआ। बाबा ने यह भी बताया कि हम जहाँ टहल रहे हैं वहीं सीप के तरह के जानवर पाये जाते थे। (बाद में अन्य श्रोतों से इसकी पुष्टि हुई कि यह क्षेत्र एक समय में समुद्र था)।

वेंलेंसिया में मैदान भ्रमण करते समय बाबा की वार्ता जिसकी टेप रिकार्डिंग की गई थी:

''मध्य युग में यूरोप में तीन सह–संस्कृतियाँ थीं। प्रूसियन, दूसरी लैटनिक (इटली, फ्रांस) और तीसरी इबेरियन। इबेरिया का अर्थ है स्पेन, पुर्तगाल और बास्क (जिसका कुछ भाग फ्रांस और कुछ भाग स्पेन में था) और इबेरिया के पश्चिम में एटलांटिस का विशाल महाद्वीप था ...... एटलांटिस इबेरियन प्रायद्वीप का विस्तृत हिस्सा था।

(किसी ने पूछा : ''बाबा क्या एटलांटिस उतना उन्नत था जैसा लोग कहते हैं ?) ''लोग कुछ वास्तविकता और कुछ कल्पना के आधार पर अपनी बात कहते हैं। एक उचित सर्वेक्षण होना चाहिए।'' (किसी ने पूछा : बाबा क्या एटलांटिस और मिश्र में कोई संबंध है ?) ''देखो, प्राचीन दुनिया में चार अलग–अलग संस्कृतियाँ थीं : द्रविड–भारतीय संस्कृति, चीनी संस्कृति, मिश्री संस्कृति और एटलांटिस संस्कृति ..... हालांकि मानवता की संस्कृति एक ही है, केवल खाने और नाचने गाने के तरीकों में स्थानीय फर्क है। केवल अभ्यिक्ति के ढ़ंग अलग–अलग हैं। अभी भी मानव संस्कृति एक है ..... सभी का रक्त लाल है।

बाबा बेलंसिया में (फोटो) /बाबा के बांये जो नमस्कार कर रहे हैं वे बाद में दादा द्विव्यलोकेशानंद बने।
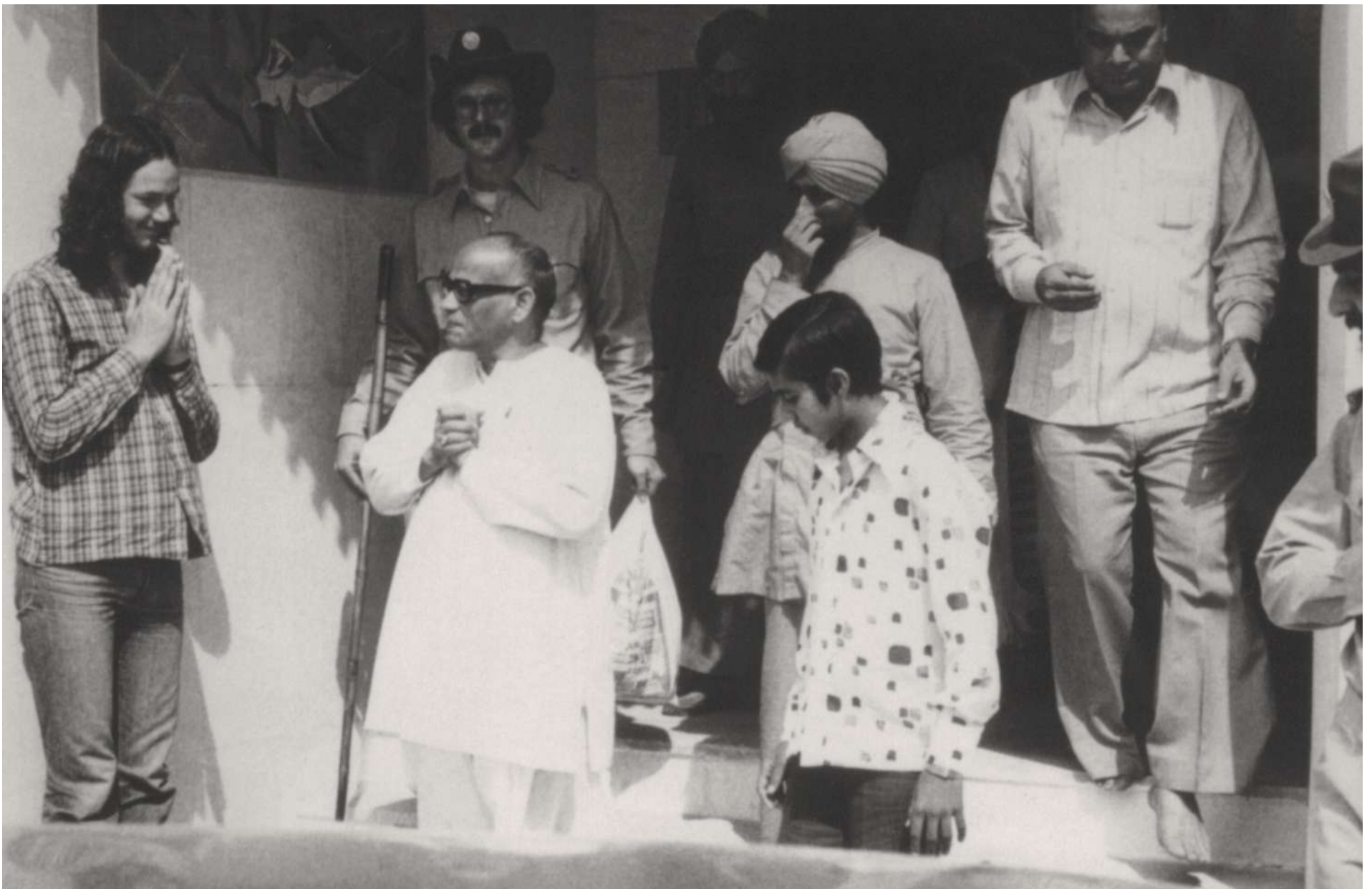
72. बाबा लियोन में

बाबा के लियोन, फ्रांस की जागृति में सप्ताहांत के लिये आने के पहले मैंने (जैसा दादा बेदप्रज्ञानंद ने बताया) जागृति के उस कमरे को झांक कर देखा वहाँ उन्हें ठहराया जाना था। सभी कुछ ठीक था : उनका बिस्तर, लिखने का टेबल, दीवार पर प्रतीक। आश्चर्यजनक रूप से मैंने कमरे में एक तरंग का अनुभव किया जो बिजली के करेंट जैसी थी।

बाबा आये और हमने उनका स्वागत किया और उन्हें उनके कमरे में पहुँचा दिया। वहाँ फ्रांस और यूरोप के दूसरे भागों से लगभग सौ भक्त उनके दर्शन के लिए आए थे। लेकिन अभी एक नाटक बाकी था। उन्होंने सभी आचार्यों को एक मीटिंग के लिए बुलाया। हम सब उस छोटे से कमरे में आ गए। तब उन्होंने एक बच्चे जैसा चेहरा बनाया जिसका प्रिय खिलौना गुम गया हो और कहा "मैं पेरिस क्षेत्र के कार्य से खुश नहीं हूँ।" अतः इस शाम उनका दर्शन नहीं होगा।

रीजनल सेक्रेटरी होने के नाते यह मेरा दायित्व था कि कल तक मैं स्थिति संभाल लूं। मुझे फ्रांस में संतोषजनक कार्य होने की रिपोर्ट देना था तथा बाबा को आश्वस्त करना था कि भविष्य में और अच्छा कार्य होगा। रिपोर्ट का एक महत्वपूर्ण बिन्दु था भुक्ति प्रधानों की सूची। अपने सेक्टोरयल सेक्रटरी करुणानंद दादा के निर्देश पर मैंने बढ़ा चढ़ाकर सूची बना दी जिसके अनुसार क्षेत्र के सभी 32 जिलों में भुक्तिप्रधान कार्यरत हैं।

जब मैने यह रिपोर्ट ईराज के केन्द्रीय सचिव को सौंपी तो सूची देखकर उन्होंने कहा कि "क्या तुम इसे और बढ़ा नहीं सकते।" मुझे हंसी आ गई क्योंकि रिपोर्ट वैसे भी सच्चाई से कोसों दूर थी।यह युक्ति काम कर गई। अगले दिन बाबा ने दर्शन और तीन प्रवचनों में पहला प्रवचन दिया। उन्होंने फिर कार्यकर्ताओं की मीटिंग बुलाई। हम सभी आचार्य फिर उनके कमरे में इकट्ठा हो गए और वे प्रगति की रिपोर्ट लेने लगे। उन्होंने धर्मवेदानंद दादा से पूछा,

"तुम्हारे विभाग के कितने कार्यालय पेरिस रीजन में खुले हैं?" दादा ने उत्तर दिया, "तीन बाबा" "क्या ? सिर्फ तीन ? क्या तुमने इतने सारे मुक्तिप्रधान लोगों से सहायता नही ली ? तब दादा ने शरारती नजरों से मेरी ओर देखा और कहा "मुझे लगता है उनमें से कुछ भुक्ति प्रधान अधिक सक्रिय नहीं है।"

उस रात्रि हम बाबा को रोन नदी के किनारे घुमाने के लिए लेकर गए। वातावरण पूरी तरह के अध्यात्मिक तरंग से परिपूरित था। दैवीय प्रेम की धारा उनसे हम लोगों तक और हम लोगों से उन तक प्रवाहित थी। बाबा एक सुन्दर मुस्कान के साथ हम लोगों को निहार रहे थे। उनकी मुस्कान के आगे और किसी मुस्कान की कल्पना भी नहीं की जा सकती। बाबा नदी को इस तरह देख रहे थे जैसे अनंत काल उनकी नजरों के सामने हो। फिर वे हमारी ओर मुड़े और बोले कि हमें समाज के उन लोगों के हितों की भी रक्षा करना है जो अपना दुख बता भी नहीं पाते, वे लोग जो कठिनाई सहते हैं और अपना दुखदर्द बताने में भी सक्षम नहीं है।

पियास्क में बाबा

अगले दिन बहुत सुबह बाबा को इटली के लिए उड़ान भरना था। सीढ़ी उतरकर जब वे कार की ओर जा रहे थे तब एक भक्त ने पूछा कि क्या वे फिर आयेंगे ? बाबा ने विनोदपूर्वक उत्तर दिया, "मैं सोचता हूँ कि फिर आऊँगा। अच्छा बताओ क्या मै फिर आउं?" कई लोगों ने उत्साहपूर्वक कहा, "हाँ बाबा!" तब उन्होंने मुस्कुरा कर कहा, "हाँ किन्तु आने से तुम लोगों को कितना कष्ट उठाना पड़ता है।"

Paraphrased from *Brooklyn to Benares and Back*

उस सप्ताहांत में भक्तों ने बाबा के सानिध्य का आनंद लिया। उसके बाद बाबा और उनके साथ आए लोग एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए जहाँ से उन्हें मिलानो , इटली के लिए विमान पकड़ना था। बाबा के जाने के बाद मैं किचन में कुछ कार्यकर्ताओं के साथ था। हम बाबा, उनके साथ आए आचार्यों और लगभग सौ मार्गियों का आतिथ्य करते करते थक गए थे। पूरी जगह अस्त व्यस्त थी। तभी अचानक एक फोन आया। "बाबा फिर वापिस आ गए हैं।" बिना एक क्षण का विलंब किए हम फिर हरकत में आ गए। हम तुरंत कार में सवार हुए तथा बाबा और उनके साथ गए लोगों को वापिस जागृति ले आए। यहां हमने उनके सानिध्य में एक और दिन बिताया।

लिओन से बाबा ने मिलानो के लिए उड़ान भरी थी। उनके पास वैध वीसा होने के बावजूद सभी लोगों को इटली में प्रवेश देने को इंकार कर दिया गया और वापिस लिओन भेज दिया गया। लिओन आने पर बाबा ने धर्मवेदानंद दादा से पूछा "बताओ धर्मवेदानंद इस तरह के निर्वासन से क्या अच्छी बात निकलकर आएगी।"

मुझे यह प्रश्न सुनकर आश्चर्य हुआ। कुछ क्षण सोच कर मैंने उत्तर दिया, "बाबा, सही सही तो मुझे नहीं मालूम। पर मेरा अनुमान है कि सैकड़ों भक्त जो मिलानो में आपकी प्रतीक्षा कर रहे थे वे अत्यधिक निराश होंगे। उनमें अपनी ही सरकार के प्रति कटुता की भावना आ गई होगी। वे समझ गए होंगे कि व्यवस्था कितनी भ्रष्ट है। परिणामस्वरुप वे और अधिक मेहनत से काम करने के लिए उत्साहित होंगे ताकि अध्यात्मिक नैतिकता पर आधारित समाज का निर्माण हो सके।" उन्होने कहा, "हाँ, तुमने कुछ तो समझ लिया है।"

अगली सुबह हम फिर बाबा को वापिस भारत की यात्रा के लिए एयरपोर्ट ले गए। वे जाँच काउण्टर की ओर बढ़े, उनके पीछे एक सहायक थे जो एक बैग लेकर चल रहे थे, जिस पर लिखा था 'पी.आर. सरकार'। मैंने आश्चर्य के साथ सोचा कि किस तरह एक छोटे कद के और साधारण वस्त्र भूषा वाले इस मानव का दुनिया में इतना अधिक प्रभाव पड़ सकता है। रहस्यमय गुरू के साथ यात्रा वापिस जागृति में बाकी मार्गी उनके कमरे में गए और वहाँ साधना की। मैं अपने आफिस में गया जहाँ बाबा के भ्रमण के दौरान उनके व्यष्टिगत सचिव रामानंद दादा ठहरे थे। वहाँ धर्मवेदानंद दादा फर्श पर थककर सोए हुए थे। पिछले महीने भर वे बाबा के साथ रहे थे। बाबा की सुरक्षा और मैदान भ्रमण का जिम्मा उन्हीं पर था। वे सोए हुए थे, किन्तु उनका मन तब भी बीते हुए दिनों के कार्यकलापों में उलझा हुआ था। वे नीद में ही बात करने लगे और जोर से बोल उठे "आज हम बाबा को मैदान भ्रमण के लिए कहाँ ले जायेंगे ?" मैंने मजाक में कहा, "आज हम उन्हें रोन नदी के किनारे ले जायेंगे।"

धर्मवेदानंद जी ने नींद में ही उत्तर दिया, "नहीं, वहाँ वे कल जा चुके हैं। हम उन्हें वहाँ नहीं ले जा सकते।"

सम्पादक की ओर से : दो सप्ताह बाद, मेन्ज, पश्चिम जर्मनी, इटली के समाचार : इटली के मार्केन्डेय जी और अन्य मार्गियों ने उन कारणों की जाँच की जो बाबा और उनकी टीम के निर्वासन(डिपोर्टेसन) के पीछे थे। जांच के प्रारंभ में ही यह सिद्ध हो गया कि निर्वासन की प्रार्थना एक आंतरिक धार्मिक समूह की ओर से आई थी, जिसका नाम बाबा ने लिया था। उस संस्था के एक अधिकारी ने बताया कि उसने निर्वासन की प्रार्थना इटली की सरकार तक पहुंचा कर केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है, निर्वासन के कारण का उसे पता नहीं। उसे ऐसा करने के लिये धार्मिक संस्था के एक उच्चाधिकारी ने निर्देश दिया था।

अंततः इस तरह की जानकारी मिली कि यह निर्देश उस धार्मिक संस्था के सर्वोच्च अधिकारी की आंतरिक परिषद् की ओर से आया था। जब वे धार्मिक संस्था एक अत्यंत उच्च अधिकारी से मिले तो उसने कहा, "मुझे दुःख है किन्तु मैं न तो उक्त आदेश का श्रोत बता सकता हूं और न इसका कारण।

बाबा लियोन में दर्शन देते हुए (फोटो)

73. बाबा बैंकाक में

बाबा ने अपना दूसरा वर्ल्ड टूर बैंकाक, थाईलैण्ड से शुरू किया।

''मैं सौभाग्यशाली था कि जब बाबा थाईलैंड आए तो मुझे उनका ड्राइवर बनने था अवसर प्राप्त हुआ। बैंकाक में मैं अकेला मार्गी था किसके पास कार थी ....! उन दिनो सीआई.ए. उनको भारत के सबसे खतरनाक लोगों में एक मानती थी...........! जब मैंने उनका एयरपोर्ट पर स्वागत किया तो वे मुझे धोती कुर्ता धारण किये हुए अत्यंत साधारण व्यष्टि लगे। हम एयरपोर्ट से सुखमवित की ओर चले जहाँ उन्हें एक भारतीय मार्गी श्याम बंग के घर ठहरना था। बंग जी बैंकाक की एक कंपनी में काम करते थे। रास्ते में मैंने देखा कि बाबा रास्ते के साइन बोर्ड जो थाई भाषा में थे, उन्हें न केवल पढ़ रहे थे, बल्कि उनका थाई भाषा का उच्चारण एकदम सही था.........! मुझे बाबा की थाई भाषा समझने की अलौकिक क्षमता पर आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या तुम्हें थाईलैण्ड का मूल नाम मालूम है? मैंने कहा, ''श्याम बाबा''। उन्होनें फिर पूछा, ''क्या तुमको इसका अर्थ मालूम है'' ? मैंने कहा ''नहीं बाबा''। उन्होंने बताया कि इसका अर्थ है श्यामला, (गहरा हरा)। जब मैंने उनसे पूछा कि उन्हें फिलीपीन्स में प्रवेश क्यों नहीं दिया गया तो बाबा ने मेरी ओर देखा और कहा ''सी.आई.ए. मुझे समझ नहीं पाई।''

क्रिसादा, टूवर्ड्स ए ब्राइट फ्यूचर से।

उनके आने के बाद अगस्त 1979 की सुबह, बाबा ने कहा :

''हमारा समाज एक है और यह मैं अपने बचपन से कहता आया हूँ – यह मानव समाज एक है .....! हम जब किसी व्यष्टि से मिलने जाते हैं तो हमें ध्यान रखना चाहिये कि हम सब एक ही वर्ग के हैं, एक ही पंथ के हैं, एक ही समुदाय के हैं, एक ही धर्म के हैं और एक ही परिवार के हैं। हमारा एक दूसरे के साथ यह परम पारिवारिक बंधन है। न कोई तुमसे बड़ा है और न कोई छोटा। तुम हर किसी को इसलिये आदर देते हो कि वे सभी परम सत्ता की ही अभिव्यक्ति हैं .....। आशा है तुम सब ने इसे समझ लिया है? एक बड़ा प्रेम पूर्ण भाव। अतः मेरा मत है कि मानव समाज एक है, जिसका विभाजन नही हो सकता। हर कोई परम पुरुष की प्रेमपूर्ण अभिव्यक्ति है, जिसको तुम नमस्कार करके आदर देते हो।''

सम्पादक गण :

(13 अगस्त की गहरी अंधेरी और तांत्रिक तरंग युक्त रात्रि में फील्डवाक के बीच बाबा ने बताया कि क्यों उन्हें कई देशों में प्रवेश नहीं दिया गया और कई देशों से निर्वासित (डिपोर्ट) किया गया।) ''वे कहते हैं मैं खतरनाक आदमी हूँ। मैं खतरनाक आदमी नहीं हूँ, मैं मजबूत मनुष्य जरूर हूँ। मैं केवल पांच फीट दो इंच ऊँचा हूँ और वे मुझसे भयभीत हैं। तुम जानते हो मछली की दुकान से कैसी दुर्गन्ध आती है ? ओह ! कुछ लोगों को यह गंध पसंद आती है। स्वार्थ की मछली जैसी दुर्गन्ध जिन्हें पसंद आती है वे ही मुझसे डरते हैं। स्वार्थी होना एक मानसिक रोग है और वे जानते हैं कि प्रउत में स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं है।''

(एक और फील्ड वाक में) एक युवा थाई मार्गी जो संगीतकार था उसने पूछा कि भविष्य का संगीत किस तरह का होगा ? बाबा ने बताना शुरू किया कि सभी देशों का लोक संगीत सामान्य संगीत होता है जिसे सुनना आसान होता है। लोक संगीत से ऊपर शास्त्रीय संगीत होता है जिसका मतलब है परिष्कृत संगीत। इसके बाद उन्होंने पश्चिमी शास्त्रीय संगीत, भारतीय शास्त्रीय संगीत और चीनी शास्त्रीय संगीत का उल्लेख किया। भजन या भक्तिगीत जो अध्यात्मिक होते हैं, वे शास्त्रीय संगीत का उच्च प्रकार हैं। शास्त्रीय संगीत से भी ऊँचा है कीर्तन – संगीत जो तुम्हें अपने में समाहित कर लेता है।

कीर्तन सुनने में समय का बोध नहीं रहता, तुम खाना भूल जाते हो, सोना भूल जाते हो। तुम संगीत में डूब जाते हो। उन्होंने कहा कि इससे ऊपर केवल ईश्वर है। इसी कारण भजन सुनने के बाद तुम्हारा मन अन्य शास्त्रीय संगीत नहीं सुनना चाहता; और कीर्तन सुनने के बाद तुम और भजन सुनना नहीं चाहते, तुम केवल साधना करना चाहते हो। यदि तुम कुछ नई संगीत रचना करना चाहते हो तो तुम्हें यह साधना के बाद करना चाहिए।

दादा महेश्वरानंद बैंकाक में श्याम बंग के निवास पर बाबा

74. बाबा ताइवान में

फियस्क में एक फील्डवॉक में ओम प्रकाश ने बाबा से पूछा कि वे ताइवान कब आयेंगे ? बाबा ने कहा वे आयेंगे लेकिन उन्होंने कब आयेगें, यह नहीं बताया। बाबा ने उस वर्ष बाद में – 15 अगस्त 1979 को ताई पी आकर अपना वादा पूरा किया। इस बार वे ताइवान सरकार के विशिष्ठ अतिथि बन कर आए। मार्गियों को दो सप्ताह तक उनके सानिध्य का असवर मिला। यह उनके द्वारा भारत के बाहर एक बार में बिताया गया सबसे लंबा समय था। इस बीच उन्होंने केवल ताई पी में ही दस जनरल दर्शन दिये। इसके साथ ही एक एक दर्शन उन्होंने ताइचुंग और काओसियुंग में दिया। 17 अगस्त 1979 को डी.एम.सी का आयोजन हुआ जहाँ प्रवचन का विषय था ''मैन एंड हिज आइडियोलाजिकल डेसीडर्टम'' (मनुष्य और उसका आदर्शगत अभीष्ट)। कुछ उद्धरण :

''सभी मनुष्य एक ही पिता, परमपिता की संतान हैं,'' अतः उनमें किसी तरह का भेदभाव नहीं होना चाहिए। मानव जीवन पशु जीवन से अलग एक आदर्शगत बहाव है ...... अतः प्रत्येक मनुष्य को यह विशेष दर्जा बनाए रखने के लिये हर संभव प्रयास करना चाहिए। यह हमारा प्रथम कर्तव्य है, यह हमारा मूलभूत कर्तव्य है। यह आदर्शगत बहाव हर हालत में जारी रहना चाहिए। परम पुरुष चरम लक्ष्य हैं .... मानव जीवन के चरम अभीष्ट हैं ..... तुम अपनी सभी अच्छी बुरी वृत्तियों के साथ परम पुरुष से प्यार करते हो, तो तुम्हारे मन का यह सामूहिक प्रवाह भक्ति है। अपनी भक्ति से वह परम पद पाया जा सकता है ..... परम पुरुष की प्राप्ति हो सकती है ...... सभी मनुष्यों की अध्यात्मिक गति का चरम लक्ष्य अभीष्ट की ओर आदर्शगत प्रवाह है। हमें यह सदैव याद रखना चाहिये।''

20 अगस्त को ताइचुंग में बाबा ने मार्गियों से कहा :

''तुम्हें हमेशा याद रखना चाहिये कि तुम परम पुरुष की संतान हो और उनके साथ एक होना तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उनकी गोद में बैठना तुम्हारा जन्म सिद्ध अधिकार है। इस अधिकार से तुम्हें कोई वंचित नहीं कर सकता। इसलिये जान कर या बिना जाने, चेतन रूप से या अनजाने में तुम्हें उनकी ओर बढ़ना है और उनके साथ एक होना है।

यही मानवता का पथ है और यही वह मुख्य कारक है जो मनुष्यों को पशुओं से अलग करता है। तुम्हारा पथ अध्यात्म का पथ है। जब तुम्हें मनुष्य शरीर प्राप्त करने का सुअवसर मिला है तो पूर्णरुप से मनुष्य बनों और अपने तथा परमपुरुष के बीच की दूरी को कम करते जाओ और अंत में उनके साथ एक हो जाओ।''

उस दोपहर में ताईचुंग से बिदा होते समय उन्होंने कहा : इस चिरसम्मानित भूभाग का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है ...... तुम्हें अपनी महान संस्कृति से कदापि दूर नहीं होना चाहिये। मुझे इस भूमि से शुभकामना मिली, और मैं इसके उज्जवल भविष्य के प्रति पूर्णतः आस्वस्त हूँ। उनके ऐसा कहने पर मार्गियों की आँखों से आंसू बहने लगे।

ताईचुंग में एक पालकी को बाबा को ले जाने के लिए कुर्सी बनाया गया।

बाबा और उनकी टीम के सदस्य वाई पी एयर पोर्ट के वी.आई.पी कमरे में जहाँ उनका अति विशिष्ट स्वागत हुआ। फोटो

डी एम सी की तैयारियां ताई पेई. डी.एम.सी में बाबा

75. बाबा काहिरा सेक्टर में

सितम्बर 1979 में बाबा ने उनको वर्ल्डटूर के अंतिम भाग में ग्रीस, इसराइल और तुर्की का भ्रमण किया। इस दौरे में उन्होंने एथेन्स में एक जनरल दर्शन दिया, हैफा में दो और इस्तांबुल में तीन जनरल दर्शन दिये। 14 सितम्बर को हैफा के आयोजन को उन्होंने डी एम सी घोषित किया जहाँ प्रवचन पर विषय था ''सब्जेक्टिव एप्रोज एण्ड ऑबजेक्टिव एडजस्टमेंट'' कुछ उद्धरण –

''प्रत्येक वस्तु परम चेतना का ही परिवर्तित रूप है। और जब सब कुछ परम सत्ता का परिवर्तित रूप है तो सभी को यह अनुभव होगा या होना चाहिये कि इस विश्व का सभी कुछ अध्यात्मिक है। कुछ भी भौतिक या मानसिक नहीं है। जो भी है वह सब कुछ ब्रम्हाण्डीय अनुभूति का नृत्य है।''

''और जब किसी को इस चरम सत्ता की इस सर्वव्याप्त सच्चाई की अनुभूति हो जाती है, तो उसे पूर्ण मानसिक संतुलन प्राप्त हो जाता है, उसे परम आनंद की प्राप्ति होती है। स्थाई मुक्ति का यही एक मार्ग है। दूसरा कोई विकल्प नहीं है। इसलिए याद रखो कि जीवन भक्ति से प्रारंभ हो और भक्ति पर ही समाप्त हो।''

इसराइल में बाबा ने कई बार कहा कि मधुर साधना का आरंभ यहीं हुआ था। राजा सोलोमन के समय में वे लोग पहाड़ियों पर जाकर साधना किया करते थे। बाबा ने मधुर साधना को औपचारिक रुप दिया। उन्होंने बताया कि शैव तंत्र का एक मुख्य केन्द्र इसराइल में था।

बाबा के साथ :

''हैफा में बाबा माउंट कारमेल के एक अपार्टमेन्ट में रुके। वहाँ एक बाथरुम बाबा के लिये था और एक दादा लोगों के लिये। दीदियों के लिये कोई व्यवस्था नहीं थी। पडोस में एक वृद्ध यहूदी महिला रहती थी, जिसकी मातृभाषा यिदि्दश थी। दीदियाँ उसके बाथरुम का प्रयोग करने लगीं। जब कार्यक्रम समाप्त हो गया तो दीदियां उसको धन्यवाद देने गईं। महिला ने उनको घर के अन्दर बुलाया और एक विशेष बात बताई। उसने बताया कि बाबा उसके पास आये थे। उन्होंने उसके साथ यिदि्दस भाषा में बात की तथा इस बात के लिये आभार व्यक्त किया कि उसने अपना बाथरूम दीदियों को प्रयोग करने दिया। सुरक्षा कारणों से बाबा का कमरा हमेशा निगरानी में था और किसी ने उस समय बाबा को बाहर जाते नहीं देखा।''

कल्याणी (इस्तांबुल)

हैफा में बाबा

बाबा हैफा में भैरवी चक्र पर बैठे हुये

इस्तांबुल के बेसिक्ट्स पार्क में फील्ड वाथ (फोटो)

76. आईस लैंड में बाबा

आईस लैंड की अंजली देवी ने बाबा से 24 जनवरी 1977 को जेल में मुलाकात की थी। उनसे पूछा था ,'' क्या आप आईस लैंड आऐंगे''? बाबा का उत्तर था '', क्यों नही, वे सब मेरे अपने हैं।'' वे आईस लैंड आये और ओसलो में भी अविनाश जी के घर एक रात रूके। बाबा ने टिप्पणी की '', आईस लैंड में बर्फ नहीं है और ग्रीन लैंड हरा नही है। आईस लैंड दहकती हुए लावा की चट्टानों से बना है और ग्रीन लैंड बर्फ के कंबल से ढ़का हुआ है।

टूवर्ड्स ए ब्राइट फ्यूचर

बाबा ने यूरोप दौरे में आइस लैंड को डी.एम.सी. के लिये चुना। इस स्थान पर पहुंचना यूरोप के मार्गियों थे लिये आसान नहीं था और आइस लैंड में यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा मार्गियों की संख्या भी कम थी । बाबा ने वहां डी.एम.सी. आयोजित करने के पीछे कोई कारण नही बताया किन्तु हमारा अनुमान था कि इसके पीछे कोई आध्यात्यिक कारण रहा होगा। यह मध्यरात्रि के सूर्य वाला देश निश्चित ही कुछ अलग है। कुछ रहस्य वादियों ने लिखा है कि आइस लैंड पृथ्वी के सर्वाधिक उर्जावान केन्द्रों में एक हैं। बाबा ने केवल इतना कहा कि आइस लैंड प्राचीन एटंलांटिस भूमि का वह भाग है जो डूबने से बच गया।

हम लगभग एक दर्जन कार्यकर्ता बाबा के कमरे में थे और उनके परिहास पर हंसे जा रहे थे। तभी बाबा ने रूद्रेश्वरानंद दादा की और देखा, जो कि जन्म से फ्रेंच भाषी है और उनसे उनकी मातृभाषा (फ्रेंच) में बात करना प्रारंभ कर दिया। हम लोगों को तो कुछ समझ मे नहीं आया पर रूद्रेश्वरानंद जी बाबा के इस फ्रेंच प्रमोद पर हंस–हंस कर लोट पोट हो रहे थे। बाद में मुझे पता चला कि बाबा कमरे मे उपस्थित वस्तुओं और लोगों की आपस में परिहास जनक तुलना कर रहे थे। यह फ्रेंच सत्र लगभग दस मिनट चला।

बाद में मैंने रूद्रेश्वरानंद जी पूछा '', बाबा का फ्रेंच उच्चारण कैसा था''? उन्होंने कहा '',मुझसे कहीं अच्छा। बाबा एकदम सटीक पेरिस वाले उच्चारण में बोल रहे थे, जबकि मैं पेरिस से दूर पला बढ़ा हूं। मुझे लगता है उनका फ्रेंच शब्द भंडार भी मुझसे ज्यादा है।'' ''तब वे इतनी अच्छी फ्रेंच कैसे जानते हैं।'' 'रूद्रेश्वरानंद जी ने कहा, ''निश्चित रूप से कास्मिक 'फनी बोन' के साथ उनका गुप्त संबंध है।''

ट्रेवल्स विद द मिस्ट्रिक मास्टर से

18 सितम्बर 1979 को रेक्जाविक में बाबा का डी.एम.सी. प्रवचन, मानव जीवन और उसका लक्ष्य था, इसमें उन्होंने कहा –:

''एक बार मैंने कहा था कि 'डेसीडर्टम' शब्द हमेशा एक वचन में रहना चाहिये और कभी 'डेसीड्र्टा' नही होना चाहिये, क्योंकि लक्ष्य एक इकाई संख्या हैं डेसीड्र्टम' का कोई भी बहुवचन नही हो सकता हैं और दूसरी बात यह है कि तुम्हारा प्रयास भक्ति आधारित होना चाहिये। तुम उन्हे पुस्तक के संस्करणों या किताबी कीड़े बन कर प्राप्त नही कर सकते।''

उन्होंने निष्कर्ष निकाला –:

''जैसा कि सार्वभौमिक मैं, सर्वोच्च निर्माता, सर्वोच्च जनरेटर है, इस ब्रम्हांड में सभी कुछ उनकी संतान है, और वह पूर्वज है। वह परम पिता है। तुम्हारा उस चरम सत्ता से पारिवारिक संबंध है, न कि औपचारिक बाहरी रिश्ता। वह तुम्हारा है। और तुम्हे यह भी याद रखना चाहिए कि उसके लिए कुछ भी बाहरी नही हैं। सब कुछ भीतर है। अतः तुम उसके द्वारा बनाए गए हो और तुम उसी में हो। और क्योंकि वह तुम्हारा चरम लक्ष्य है, अंत में तुम उसके साथ रहोगे, उसके साथ एक होगे। इसके लिए तुमको किसी विशेष शिक्षा की आवश्यकता नही है, दर्शन ज्ञान की आवश्यकता नही हैं और किसी बाहरी विशेषता की आवश्यकता नही हैं चरम वैश्विक सत्ता के लिए सर्वोच्च प्यार तुमको उसके साथ एक कर देगा।

बाबा रिक्जाविक में डी.एम.सी. प्रवचन देते हुए।

77. जमैका में बाबा

बाबा को अपने अंतिम विश्व दौरे के अंत में संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा करना था, लेकिन उनके अमेरिकी वीसा को अस्वीकार कर दिया गया। इसलिए इसके स्थान पर जमैका (न्यूयार्क सेक्टर का हिस्सा) में एक डी.एम.सी. की व्यवस्था की गई। उन्होंने 20 सितम्बर 1979 को किंगस्टन के लिए उड़ान भरी। यहाँ उन्होंने तीन जनरल दर्शन दिए, एक रिनाषा यूनिवर्सल संबोधन दिया। डी.एमसी. का आयोजन फ्रांसिस्कन सिस्टर्स इमाकुलेट कंसेप्सन कान्वेंट में हुआ। वे फील्ड वाक पर होप बोरनिकल गार्डन तथा वेस्ट इंडीज विश्वविद्यालय गए जहां उन्होंने वेस्ट इंडीज द्वीपों, उनकी संस्कृति, वहां की वनस्पतियों और जीवों के बारे में बात की।

22 सितम्बर को किंगस्टन में बाबा का आर.यू. प्रवचन डॉगमा एण्ड ह्यूमन इंटलेक्ट (भावजड़ता एवं मनुष्य की बुद्धि) इन वाक्यों के साथ समाप्त हुआ ''मैं चाहता हूं कि मेरे लड़के और लड़कियां जो बौद्धिक रुप से विकसित है या बौद्धिक विकास चाहते हैं, उन्हें मानव समाज की बौद्धिक प्रगति को प्रोत्साहित करना चाहिए। यह अंततः मानव समाज की सभी तरह की प्रगति में सहायक होगा। मुझे आशा है कि तुम लड़के और लड़कियों, बौद्धिक प्रगति की उपयोगिता को महसूस करोंगे और हर नगर और यहां तक कि बड़े गांव में भी आर.यू. क्लब शुरू करोगे।''

अगली सुबह बाबा ने कहा :–

''तुम लड़के और लड़कियों, तुम अध्यात्मिक साधकों को हमेशा याद रखना चाहिए कि तुम्हें कभी भी भावजड़ता (क्वहउं) की वेदी पर आत्मसमर्पण नहीं करना है। अतीत में भावजड़ता नें कई विवादास्पद प्रवत्तियां पैदा कीं। तुम्हारा नारा होना चाहिए, भावजड़ता अब और नहीं। भावजड़ता अब और नहीं। अपने आपको भावजड़ता की सीमाओं के ऊपर स्थापित करो और माननीय गौरव की उत्कृष्टता में स्थापित हो।''

उस शाम को उन्होंने अपना डी.एम.सी. प्रवचन 'परमपुरुष द ग्रेट' दिया।

''विराट परम पुरुष हमारे परम आश्रय हैं। हम उनके ऊपर आश्रित हैं, उनमें आश्रय लेते हैं और अंत में उनके परम नाभिकीय केन्द्र में शरण लेंगें। कोई और विकल्प नहीं है। मनुष्य जितनी जल्दी इस तथ्य को जान ले, उतना अच्छा है। अतः यह कहा जाता है कि आध्यात्मिक पथ, चरम ऋणात्मकता से चरम धनात्मकता की ओर जाने वाला मार्ग, बुद्धिजीवियों का पथ है, जो बुद्धिमानों के लिए है, चालाक लोगों के लिए है, चतुर लोगों के लिए है। तो यह कहा जाता है कि भक्त इस ब्रम्हाण्ड में सबसे चतुर व्यष्टि हैं। तुम्हें इस तथ्य को सदा याद रखना चाहिए।

बाबा का काफिला बाबा डी.एम.सी. में होप बाटनिकल गार्डन में फील्ड वाक ।

78. वेनेजुएला में बाबा

बाबा के अंतिम विश्व दौरें का अंतिम पड़ाव कराकस, वेनेजुएला था, जहां उन्होंने तीन जनरल दर्शन और एक डी.एम.सी. दिया।

आचार्य विश्वामित्र दादा का याद करते हैं जब वे बाबा के साथ बाटनिकल गार्डन फील्ड वाक पर गए।

दादा रामानंद बाबा को बाग की सीढ़ियां उतरने में सहायता कर रहे थे। आधी दूरी के बाद बाबा रुक गए। उन्होंने हमारी ओर देखा और बोले ''मुझे अभी भी सहारे की आवश्यकता इसलिए है कि जेल में मुझे विष दिया गया, जिससे मेरी नेत्र ज्योति पर बुरा असर पड़ा। किन्तु वे सफल नहीं हुए, बताओ क्या वे सफल हुए? हम सबने कहा, ''नहीं बाबा वे सफल नहीं हुए''।

एक और प्राणी उद्यान में फील्ड बाबा की घटना आचार्य विश्वामित्र याद करते हैः

''प्रेम और स्नेह की वह तरंग जो बाबा से उत्सरित हो रही थी वह जबरदस्त थी। हम मगरमच्छों के नजदीक स `चल रहे थे और एक एग्रेट पक्षी मगरमच्छ के दांत से मांस निकालकर खा रहा था। बाबा ने कहा, ''देखते हो, पक्षी और मगरमच्छ के बीच समझौता है; पक्षी को मांस मिलता है और मगरमच्छ के दांतों की सफाई होती है। समन्वित सहयोग का यह एक अच्छा उदाहरण है'।

मैंने कहा कि नीली व्हेल प्रजाति की मछलियां लुप्त होन वाली है। बाबा ने कहा, ''मेरे बच्चे, एक दिन नीले आंखों और सुनहरे बालों वाले लोग भी एक दिन विलुप्त हो जायेंगे। लोग दूसरे ग्रहों में यहां आयेंगे और हमारी सभ्यता के खंडहरों का निरीक्षण करेंगे और कहेंगे कि एक समय यहां बहुत ही उन्नत सभ्यता थी जो बहुत ऊंची इमारतों का निर्माण करती थी, उनके पास उन्नत तकनीक थी। लेकिन वे साथ–साथ रहना नहीं सीख पाए। मेरे बच्चे, क्या तुम चाहते हो कि इतिहास इस तरह पढ़ा जाए? ''मैंने कहा, ''नहीं बाबा हमें आपके मिशन को स्थापित करना है।'' और उन्होंने कहा, ''बहुत अच्छा मेरे पुत्र।'' 26 सितम्बर, 1979 को ''पाथ आफ साल्वेसन'' (मुक्ति का मार्ग) शीर्षक से उनका डी.एम.सी. प्रवचन निम्न शब्दों के साथ सम्पन्न हुआ–ः

''आध्यात्मिक साधकों, तुमको याद रखना चाहिए कि परम पुरुष तुम्हारे साथ है, उनकी कृपा तुम्हारे साथ है और तुम सभी उनके प्यारे बच्चे हो। तुमको परमपिता को लेकर कोई भी भय की भावना विकसित नहीं करना चाहिए। तुमको याद रखना चाहिए कि वे परम पिता हैं। वे तुमकों सदा से बुला रहे हैं और तुमको उचित प्रत्युत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए।''

और अगले दिन अपने अंतिम जनरल दर्शन में उन्होंने कहा, ''इस क्षण से तुम अपनी पिछली गलतियों को भूल जाओ ...... और अपने जीवन को परम पुरुष के आदर्श बच्चे के रुप में नये सिरे से शुरु करो। चरम लक्ष्य की ओर तुम्हारी गति सुंदर होना चाहिए। पूरा मानव समाज उत्सुकता से तुम्हारा इंतजार कर रहा है। तुम मानव सभ्यता के मशाल वाहक हो। तुम अग्रणी हो, तुम एक नई सभ्यता के अग्रदूत हो।

79. मार्ग गुरू क्वार्टर्स

जहाँ भी बाबा रूके, उनके निवास को एम. जी (मार्ग गुरू) क्वार्टर के रुप में जाना जाता था। वे मधु उपसर्ग के साथ प्रत्येक का अलग–अलग संस्कृत नाम देते थे। अपने जीवन के उत्तरार्ध में उन्होंने ज्यादातर समय कोलकाता में बिताया। उनके मुख्य निवास मधुमालंच लेक गार्डन और मधुकोरक तिलजला में थे। आनंद नगर डी.एम.सी. के दौरान वे वहां स्थित मधु कर्णिका में रूकते थे। अपनी यात्राओं में वे अन्य एम.जी. क्वार्टरों में रूकते थे।

4 मार्च, 1979 को बाबा ने नये खरीदे गए घर में कदम रखा और इसका नाम मधुमालंच रखा। उन्होंने वहां 3794 प्रभात संगीत संगीतों की रचना की, 147 श्रद्धालुओं को माइक्रोवाइटा साधना, 570 कार्यकर्ताओं को अवधूत दीक्षा दी और हजारों को व्यक्तिगत संपर्क (च्ब्) दिया। उस समय केन्द्रीय कार्यालय लेक गार्डन से थोड़ी दूरी पर जोधपुर पार्क में था और वे रोज सुबह दस बजे वहां जाते थे।

संपादक

कई वर्षों तक बाबा लेक गार्डन में रहे। यह दुनिया भर के पेड़–पौधों से आकाश तक भर गया था। इनका कल्याण बाबा को आनंदित करता था। यहां कितने ही भक्तों ने स्वयं को उनके चरणों में रख दिया। यहां कितने ही सारे भक्त धूप में खड़े होकर, बरसते पानी में गीत गाते हुए उनके प्रातःकालीन और सायंकालीन भ्रमण के दौरान प्रतीक्षारत रहते। यहां कितने ही भक्तों ने जाना कि उनकी एक झलक या एक शब्द का अनुभव कैसा होता है। उन्होंने जाना कि उनकी हृदयस्पर्शी कोमलता की अनुभूति में सिसकने का अनुभव कैसा होता है। यहां कितने ही भक्तों को उन्हें माला भेंट करने का सौभाग्य मिला, वे अभिभूत होकर बाबा का मधुर स्वर सुनते, ''तुम यह मेरे ही लिए लाए हो?'' ''ओह हां बाबा केवल आपके लिए।'' वे यह कहते और प्रेम और तद्जनित वंदना से उन्हें धीरे–धीरे अंदर जाते देखते।''

गायत्री मधुकोरक का निर्माण तिलजला के नये केन्द्रीय कार्यालय के परिसर में किया गया। डब्ल्यू.डब्ल्यू. डी. कार्यालय का निर्माण भी इसी परिसर के निकट किया गया। बाबा 17 मई 1981 को पहली बार मधुकोरक में रूके। उन्होंने वहा 602 प्रभात संगीत के गीतों की रचना की, आठ साधकों को माइक्रोवाइटा साधना सिखाई, 215 आचार्यों को अवधूत दीक्षा दी। इसके अतिरिक्त बहुत से मार्गियों और कार्यकर्ताओं को व्यष्टिगत संपर्क दिया।

जब आनंद नगर में डी.एम.सी. होता था, बाबा मधुकर्णिका में रहते थे। वहां उन्होंने 142 प्रभात संगीत के गीतों की रचना की।

1989 के प्रारम्भ में मधुमाधवी के नाम से एम.जी.क्वार्टर का निर्माण विष्णुपुर में किया गया जो आनंद नगर और कोलकाता के रास्ते में आधी दूरी पर स्थित है। यह बाबा की कोलकाता से आनंद नगर यात्रा के बीच रात्रि विश्राम के प्रयोजन से किया गया। यहां वह 26 मई और 30 जून 1989 और 30 मई और 5 जून 1990 को रहे।

मधुकोरक, तिलजला में बाबा टहलते हुए।

80. नारी जाति को संदेश

You as the most dignified section of human society do something for the universal human beings.

Baba.
12/12/79.
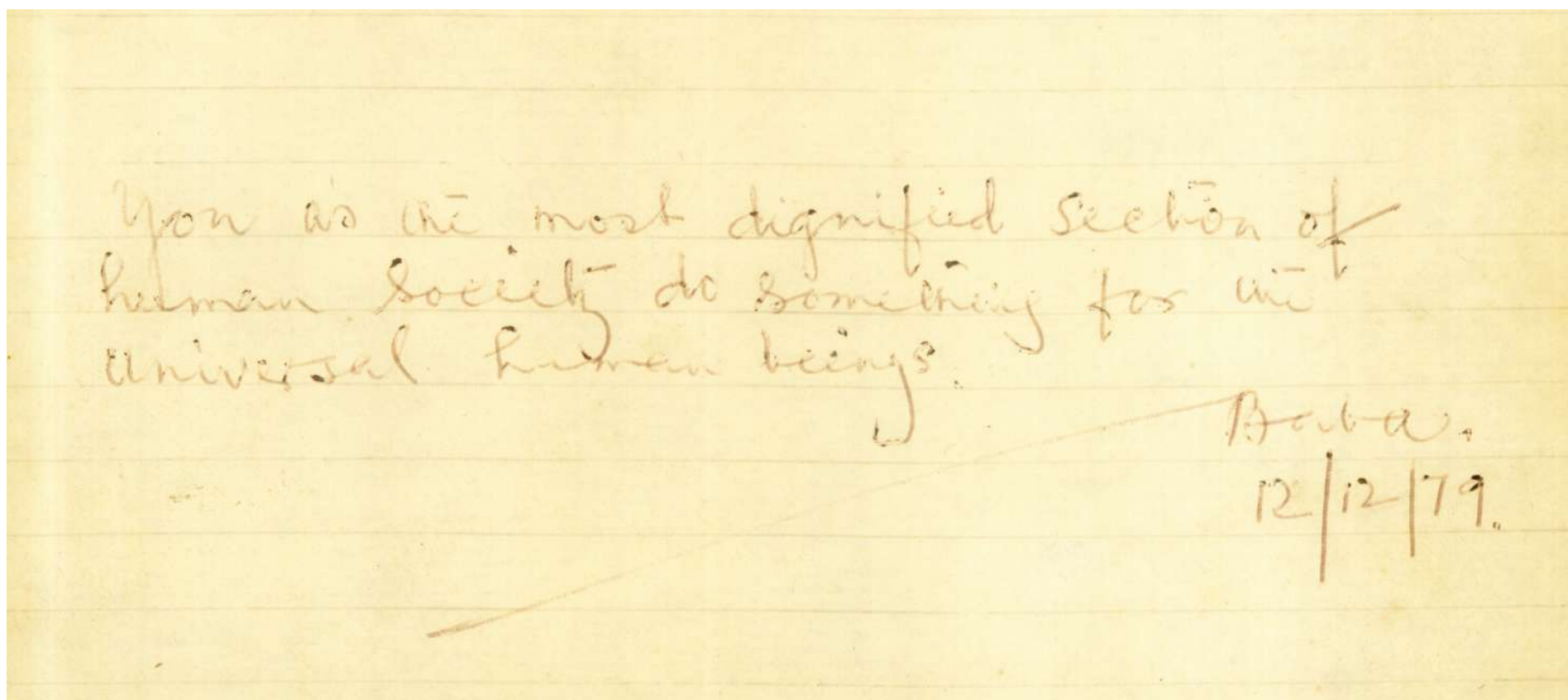
बाबा की अंतिम ज्ञात तस्वीर

12 दिसम्बर 1979 को बाबा ने साउथ एंड पार्क, कोलकाता में महिला कल्याण विभाग के केन्द्रीय कार्यालय का दौरा किया, जहां उन्होंने आगन्तुकों की पुस्तक में कुछ नोट लिखा उसी दिन बाद में उन्होंने कहा :

''जब मैंने डब्ल्यू.डब्ल्यू.डी. कार्यालय का दौरा किया तो मैंने क्या कहा ?

मैंने क्या लिखा, इसे पढ़ो तो'' तब किसी ने पढ़ा ''तुम मानव समाज के सबसे गरिमापूर्ण विभाग के रुप में सार्वभौमिक मानव जाति के लिए कुछ करो।'' बाबा जारी रखते हैं, ''क्यों गरिमापूर्ण ? सब कुछ विस्तार में समझाया जाना चाहिए। सभी मनुष्य अलग–अलग दर्पणों पर एक ही प्रतिबिम्ब की इकाई प्रस्तुति है। और वे दर्पण कौन से हैं? इकाई मन। बहुत से इकाई मन है और वह प्रतिबिंबित परम चेतना है (जीवात्मा)। इकाई मन वह दर्पण है और प्रतिबिंबित जीवात्मा या अणु चैतन्य है। तो इस तरह सभी प्रतिष्ठित है और सभी पवित्र प्राणी है।''

''किन्तु तुम जानते हो, यह पवित्रता या प्रतिष्ठा आध्यात्मिक स्तर में है और इसलिए जहां तक सांसारिक स्तर का संबंध है, गरिमा, पवित्रता (और सेवा) पर निर्भर करती है। और पवित्रता कुछ और पर निर्भर करती है। जब लोग किसी विशेष मनुष्य के संपर्क में आते हैं जिसका जीवन परम इष्ट की ओर गति के कारण, उच्चता प्राप्त कर चुका है तो लोग उसे पवित्र मानते हैं। किस तरह? एक पवित्र अस्तित्व के रुप में। और जब वे उस पवित्र अस्तित्व से, उस पवित्र व्यष्टि से निस्वार्थ सेवा प्राप्त करते हैं तब वह पवित्र व्यष्टि न केवल पवित्र बल्कि प्रतिष्ठित भी हो जाता है।''

आत्मकथा वाली कथा जैसी कि 1976 में प्रकाशित एक पुस्तिका में बताई गई थी, इस समर्पण के साथ – ''हमारे प्रिय बाबा जो अपने अनन्त प्रेम के साथ हमारे जीवन के हर पल को पूर्णता के लिए निर्देशित और प्रेरित कर रहे हैं।'' ''मैंने तुम बच्चियों को मानव समाज के गरिमापूर्ण अंग के रुप में संबोधित किया है। और मैं आशा करता हूँ कि समाज का यह प्रतिष्ठा पूर्ण वर्ग अपने कार्यों के द्वारा, दुखी मानवता की निस्वार्थ सेवा के द्वारा अधिक से अधिक गौरवमय होगा। यही मैं चाहता हूँ। और इसी कारण मैंने ऐसा लिखा।'' हॉल छोड़कर जाते हुये बाबा ने कहा, ''मैं आशा करता हूं कि मेरी बच्चियां संतुष्ट हैं।''

81. प्लांट प्रोग्राम और गार्डन टूर्स

संपादक

बाबा ने लेक गार्डन के मधुमालंच में स्थानांतरित होने के तुरंत बाद एक संग्रहालय के साथ–साथ पौधों और पेड़ों का एक अनूठा संग्रह शुरू किया। इसे बाद में तिलजला के मधुकोरक और आनंद नगर के मधुकर्णिका में विस्तारित किया गया। वे पौधों की देखभाल की निगरानी करते थे, उनकी खेती के बारे में सलाह देते थे। उनकी उत्पत्ति, इतिहास, उनके औषधीय गुण और अन्य उपयोगों का खुलासा करते थे। उन्हें उनके वनस्पति नामों के अलावा संस्कृत नाम देते थे। 1980 में उन्होंने महीने में दो बार उद्यान और संग्रहालय के दौरे का संचालन शुरू किया। प्रत्येक दौरे में दस से बीस लोगों का छोटा समूह होता था। कभी कभी वे गैर मार्गियों को भी शामिल करते थे, जिन्हें वे मार्गियों और कार्यकर्ताओं के साथ मंजूरी देते थे।

1981 में वैश्विक पौधा विनमय कार्यक्रम शुरू हुआ। जब भी कोई मार्गी या पूर्ण कालिक कार्यकर्ता कोलकाता आते तो उनसे उम्मीद की जाती थी कि वे अपने क्षेत्र से पौधे लेकर आएं, तभी उन्हें बाबा को देखने की अनुमति मिलती थी। भारत के बाहर वे आठ विभागों (सेक्टर्स) और दिल्ली सेक्टर के दस विभागों में से प्रत्येक को प्रतिमाह केन्द्रीय कार्यालय में लगभग 600 पौधे जमा करना पड़ता था।

इसके अलावा कोलकाता रिपोर्टिंग के लिये आए कार्यकर्ता को कई अतिरिक्त पौधे देने पड़ते थे। हर माह लगभग 13000 पौधे लाये जाते थे।

मार्ग गुरु ने वेनेजुएला के कराकस में एक सप्ताह बिताया। एक दिन वे एक विशाल पेड़ के पास से गुजरे, जिसने उनका ध्यान आकर्षित किया। यह पेड़ इस अर्थ में विशेष था कि इसमें फूल सामान्य लाल की बजाए सुनहरे थे। मार्ग गुरू की इस असामान्य प्रजाति में रूचि थी। उन्होंने आनंद करूणा अवधूतिका से कहा कि इसके बीज को संग्रह करना है। वे अपने साथ कुछ बीज भारत ले आई। ग्यारह पौधों को अंकुरित किया और उनमें से एक को मार्ग गुरू ने अपने हाथों से मधुमालंच में लगाया। यदि आप उस बगीचे में जाते हैं तो आपको घर से दांई ओर एक विशाल पेड़ दिखाई देगा। यह उस हरे भरे बगीचे के ऊपर छाया हुआ है और पड़ोस के पेड़ों में सबसे ऊंचा है। आनंद मूर्ति की एज आई न्यू हिम।

मधुमालंच में एक बगीचे के दौरे का आयोजन करते बाबा।

82. बाबा का म्यूजियम

मधुमांलंच, लेक गार्डन में बाबा का संग्रहालय स्मृति चिन्हों से भरा पड़ा है। उनमें से कई स्थानीय कला और संस्कृति के बेशकीमती नमूने हैं। इन्हें बाबा को दुनिया भर के भक्तों द्वारा दिया गया है। आनंद नगर और विश्व के अन्य भागों से प्राप्त जीवाश्म हैं। दो मान्यता प्राप्त कलाकृतियाँ हैंः भगवान शिव के जीवन पर चित्रों की शिव लीला श्रृंखला और भगवान कृष्ण लीला श्रृंखला।

1980 में बाबा ने शिव लीला श्रृंखला के लिए मानिक बंन्दोपाध्याय को अनुबंधित किया जो`शांति निकेतन के विश्व भारती विश्व विद्यालय में कला निकाय में प्राध्यापक थे। प्रथम तल के संग्रहालय कक्ष में अन्य चित्रों के ऊपर की दीवारों पर बाईस चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। दीदी आनंदरामा द्वारा तीन चित्रों के इन प्रिंटों को डिजिटल रुप में बहाल किया गया है।

मूल चित्र शीर्षक इस तरह है,

9 अष्टावक्र को योग शिक्षा दान (शिव अष्टावक्र को योग सिखाते हुए)

11 शिव भरत मुनि को गीत और लय की कला सिखाते हुए।

16 धर्म प्रचार करते शिव

संपादक गण–

जब उद्यान परिक्रमा पूरी हो जाती तो बाबा सभी को छत पर लेकर जाते थे ताकि उन्हें ब्रम्ह कमल, अन्य ठंडे मौसम वाले पौधें और ग्रीन हाउस दिखाया जा सके। फिर हम पहली मंजिल के कमरे में उतरते थे, जहां संग्रहालय के अधिकांश सामान कांच की आलमारियों में रखे गए थे। इनमें कुछ सबसे दिलचस्प जीवाश्म भी थे। तब बाबा वहां बैठकर एक गिलास नारियल पानी पीते थे। वे अपने मेहमानों से कुछ देर बातचीत करते, यह पूछते कि उन्हें इस दौरे में आनंद आया या नहीं। फिर वे मुझे कृष्ण लीला और शिव लीला प्रदर्शित करने के लिए कहते। .... वे दोनों के बारे में कुछ जानकारी देते। ''अब तुम अपनी आंखों से शिव और कृष्ण के जीवन की विभिन्न घटनाओं को देखोगे।'' तब वे आराम करने के लिए अपने कमरे में चले जाते ओर मैं टूर प्रतिभागियों को कृष्ण लीला और शिव लीला दिखाकर दौरे को समाप्त करता था।

ऊपर : शिवलीला 9, 11 और 16

नीचे : संग्रह के कुछ नमूने

83. धर्म समीक्षा

1981 की गर्मियों में, मई से जुलाई तक बाबा ने मार्गियों और दुनिया भर के आचार्यो (पूर्णकालिक कार्यकर्ता) को एक अभूतपूर्व आध्यात्मिक समीक्षा के लिये बुलाया जिसे धर्म समीक्षा कहा गया। सामूहिक सत्रों में वे लोग उनके सामने एक एक करके खड़े हो जाते थे और वह उनके पिछले कर्मो और वर्तमान संस्कारों की जांच करते थे। उनकी भविष्य की आध्यात्मिक प्रगति के लिए सुधारात्मक उपायों का प्रबंध भी करते थे।

संपादक

आध्यात्मिक साधक उनके सामने जाकर साष्टांग करने के उपरांत खड़े हो जाते थे। यह एक पूर्ण स्कैन की तरह था जिसमें बाबा न केवल शारीरिक बीमारियों बल्कि पूरे जीवन को देखते थे। वे दोषों को इंगित करते थे, कभी कभी संस्कारों को हटाने के लिये कुछ हल्के शारीरिक दंड देते थे। व्यष्टिगत शारीरिक आसनों को निर्धारित करते, साथ ही साथ अन्य विशिष्ठ निर्देश देते थे। आम तौर पर आचार्य विजयानंद ही उन बातों को लिखते थे, और बाद में संबंधित साधक का मार्गदर्शन करते थे।

टूवर्ड्स ए ब्राइट फ्यूचर

25 जुलाई 1981 को बाबा ने धर्म समीक्षा के विषय में जानकारी देते हुए कहा, (कुछ भाग) :

''धर्म समीक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवों (इकाई प्राणियों) को दग्धबीज बनाना है ....। मानव सभ्यता के पन्द्रह हजार वर्षों की पूरी अवधि में इस तरह की धर्म समीक्षा नहीं हुई।...... जो लोग यहां इकट्ठा हुए हैं, वे निश्चित रुप से अच्छे लोग हैं। तुममें से कुछ पांच हजार या दस हजार मील की दूरी से आए है। कुछ आसपास से आए हैं। यहां आपके इकट्ठा होने के पीछे निश्चत रुप से कुछ सूक्ष्म कारण है। तुम सभी अच्छे लोग हो, निश्चित रुप से औसत से बेहतर। इसीलिये तुम आए हो। हांलांकि कई अन्य हैं जो पास में रहते हैं, वे नहीं आए। मेरी राय में परम पुरुष को इन अच्छे लोगों के लिए कुछ करना चाहिए। ...... तो यदि परम पुरुष इन इकाई प्राणियों के कुछ पापों को दूर करते हैं तो वे भारी भार से राहत महसूस करेंगे और हल्का महसूस करेंगे। पाप और संस्कार से मुक्त ये लोग कई बड़े काम कर सकते हैं वे अपने सामूहिक प्रयासों से इस पृथ्वी पर स्वर्ग ले आऐंगे.....। इसलिये धर्म समीक्षा पिछले पन्द्रह हजार वर्षों की सबसे युगांतकारी घटना हे।''

उत्तरी स्वीडन की बहन अरुणा बाबा के सामने खड़ी थीं। उसका नाम, कर्तव्य, आदि औपचारिक बातें पूछने के बाद महासचिव ने उससे सोलह विधियों के बारे में पूछना शुरु किया। बाबा ने कहा, ''उसके आचरण के विषय में कोई सवाल पूछने की जरुरत नहीं है।'' वह पूरी कोशिश कर रही है।'' हम सब चकित थे। यहपहला अवसर था जब किसी मार्गी को आलोचना रहित घोषित किया गया। मैंने अरुणा के चेहरे की ओर देखा। इस तरह की टिप्पणी से कोई भी अहंकार से फूल सकता था। किन्तु उसके साथ ऐसा नहीं हुआ। उसकी आँखों में आंसू झलकने लगे। वह अपने बाबा के साथ होने के आनंदातिरेक में खो गई।

ट्रेवल्स विद द मिस्टिक मास्टर

धर्म समीक्षा कोलकाता के जोधपुर पार्क स्थित कार्यालय की पहली मंजिल पर आयोजित की गई थी। यह उस भवन के बाहरी हिस्से का दृश्य है।

84. नव्यमानवता वाद

31 दिसम्बर 1981 को आनंद नगर में बाबा ने पहली बार सम समाज तत्व (सामाजिक समानता) के सिद्धान्त की अवधारणा पर प्रवचन दिया। यही ''बुद्धि की मुक्ति नव्यमानवता'' पुस्तक का हिस्सा बना। अगले वर्ष के प्रारंभ में भी उन्होंने नव्यमानवतावाद के सामजिक सिद्धान्त पर प्रवचन जारी रखें। उन्होंने 21 फरवरी से 29 मार्च 1982 तक रविवार को देने वाले प्रवचनों में उस पुस्तक के शेष भाग दिए।

संपादक

लेकिन वास्तव में वे इस वर्ष पहले से ही नया मानवतावाद या नव्य मानवता वाद शब्द का प्रयोग कर रहे थे। 'बुद्धि की मुक्ति नव्य मानवतावाद' के प्रकाशन के छह वर्ष बाद उन्होंने एक अन्य श्रृंखला के प्रकाशन के लिए कहा जिसमें नव्यमानवता से संबंधित उनके अन्य प्रवचन भी शामिल हों ऐसे प्रवचन जो 'बुद्धि की मुक्ति' से पहले के थे और वे प्रवचन के 'बुद्धि की मुक्ति' के बाद के थे, और वे भी जो भविषय में आ सकते थे। उस श्रृंखला के दो भाग – संक्षेप में नव्य मानवता वाद भाग 1 और भाग 2 के जीवन काल में ही प्रकशित हो गए थे।

नव्य मानवता संक्षेप में पर प्रकाशक की टिप्पणी

बाबा की अपनी लिखावट जो दिनांक 8 जनवरी 1961 में लिखा गया, यह बाबा द्वारा प्रदत्त नव्यमानवतावाद की धारणा जो उक्त शब्द (नव्य मानवता वाद) का प्रयोग करने के पहले उन्होंने दिया। बुद्धि की मुक्ति नव्यमानवता वाद के कुछ उद्धरण : (लघु प्रदर्शनी संस्करण)

बबा द्वारा अपने हाथ से दिनांक 08 जनवरी 1961 को लखित यह नियोह्यूमेनिज्म शब्द का परिचय देने से पूर्व नियोह्यूमेनिज्म की संकल्पना को बताते हुए।
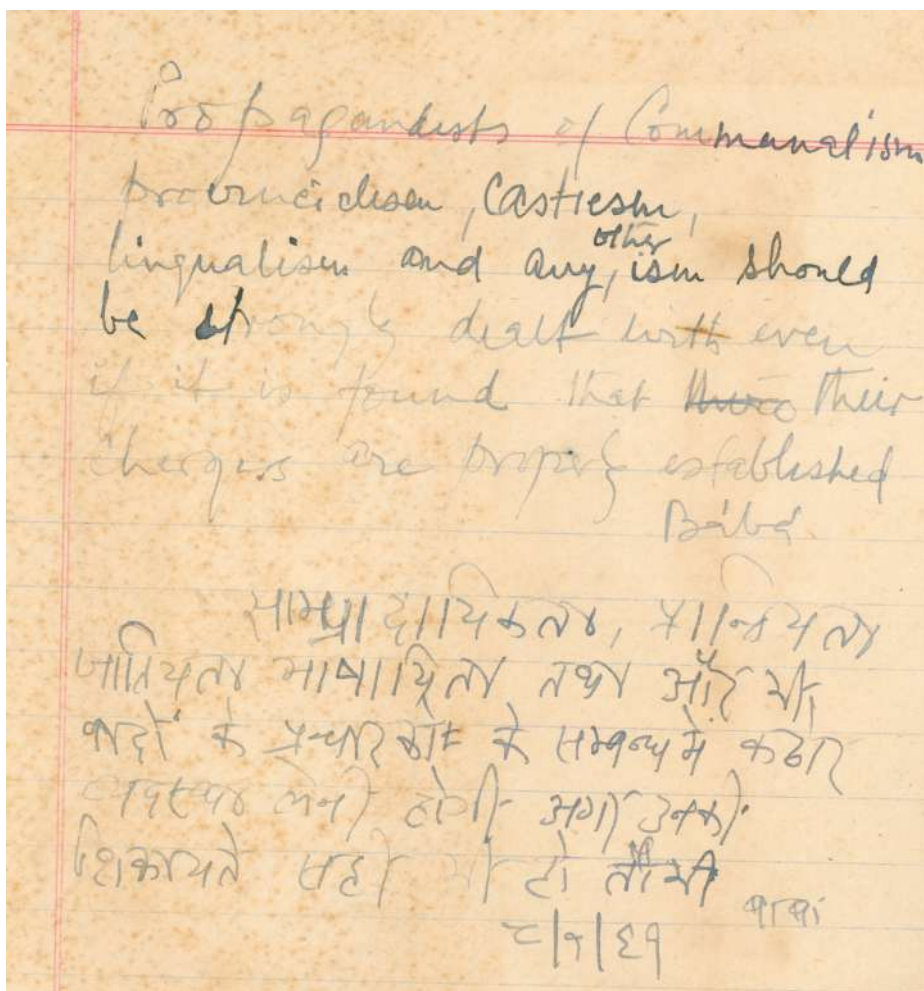
''जब नव्यमानवता की अंर्तनिहित भावना इस ब्रम्हाण्ड के चेतन से लेकर निर्जीव तक विस्तारित हो– इसे मैंने नव्यमानवता वाद नाम दिया है।
यह नव्य मानवतावाद मानवता को सार्वभौमिकता के उच्च स्तर पर ले जाएगा, इस ब्रम्हाण्ड के सभी प्राणियों के लिए प्रेम का पंथ।''

12 फरवरी 1992 कोलकाता

''मानवता एक निरंतर और शाश्वत श्रोत से प्रेरित होना चाहिए, जिसे मैं नव्यमानवता वाद कहता हूँ ?''

28 फरवरी 1982 कोलकाता

''जितना अधिक मनुष्य नव्यमानवतावाद में स्थापित होंगे, वे उतना ही अधिक बाहरी दुनिया के रंगों की बजाय अपने आंतरिक मन के रंगों में लीन रहेंगे।''

9 मार्च 1982 कोलकाता

''नव्य मानवता वाद क्या है ? नव्यमानवता वाद अतीत का मानवतावाद हैं, वर्तमान का मानवता वाद है और नई व्याख्या के अनुसार – भविष्य का मानवता वाद है। नव्य मानवता वाद नई प्रेरणा देगा और मानव अस्तित्व की धारणा को नया अर्थ देगा। नव्य मानवता लोगों को यह समझने में मदद करेगा कि इस ब्रम्हाण्ड में सबसे विचारशील और बुद्धिमान प्राणी के रुप में मनुष्य को पूरे ब्रम्हाण्ड की देखभाल करने की महान जिम्मेदारी को स्वीकार करना होगा; लोगों को यह स्वीकार करना होगा कि पूरे ब्रम्हाण्ड की जिम्मेदारी उन पर टिकी है। नव्यमानवता वाद के अनुसार अंतिम और चरम लक्ष्य है अपने व्यष्टिगत अस्तित्व के केन्द्र को सार्वभौमिक अस्तित्व के केन्द्र से मिला देना। परिणामस्वरुप इकाई जीव का संपूर्ण अस्तित्व नियंत्रण करने वाले सार्वभौमिक अस्तित्व के केन्द्र के साथ मिलकर एक हो जाता है और यह नव्य मानवता वाद का उच्त्तम अभिव्यक्ति होगी।''

29 मार्च 1982 कोलकाता

कई साल बाद, 13 अप्रैल 1988 को बाबा ने कहा:
किसी भी संकीर्ण वाद (इज्म) को सार्वभौमिकता में बदला जा सकता है और यह सभी को तभी स्वीकार्य होगा, जब सभी भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक बाधायें उस वाद (इज्म) की परिधि से हटा दी गई हो। यह एक नवीन विचार है जिसे मैंने बुद्धि की मुक्ति नव्यमानवता वाद नामक पुस्तक में समझाया है। इस नये विचार को ध्यान में रखते हुए, उस पुस्तक में नव्य मानवता वाद शब्द का प्रयोग किया गया है।
एक बार अपनी फील्ड वाक के बाद, बाबा लेक गार्डन निवास में सीढ़ियां चढ़ रहे थे। वे रुके और प्रश्न किया? नव्य मानवता वाद क्या है ? किसी ने उत्तर नहीं दिया। उन्होंने तब कहा, ''जब मानव हृदय का प्रेम संपूर्ण जीवित और निर्जीव जगत को गले लगाने के लिए होता है तो यह नव्यमानवता वाद है।''

टूवर्ड्स ए ब्राइटर फ्यूचर

85. प्रभात संगीत

14 सितम्बर 1992 को बिहार के देवघर में बाबा ने अपने पहले प्रभात संगीत की रचना की (नई सुबह के गीत)। संगीत का अर्थ है, स्वर, वाद्य यंत्र और नृत्य का संयोजन। इसके साथ उन्होंने प्रभात जोड़ा, जैसी कि प्रथा है कि संगीत के घराने के साथ कवि का नाम जोड़ा जाता है । प्रभात का अर्थ प्रातः काल भी होता है अतः प्रभात संगीत, संगीत के नये युग के प्रभात को दर्शाता है। तीन महीने के अन्दर बाबा ने 150 से अधिक गीतों की रचना कर दी। और अगले आठ वर्षों में उन्होंने 5000 से अधिक गीत लिखे, जो कि इसके पहले के किसी भी गीतकार से अधिक है। उन्होंने कुल 5019 (5018+01) गीत लिखे।

संपादक

अधिकांश गीत बंगाली भाषा में रचे गये, किन्तु अन्य चालीस से अधिक भाषाओं में भी उन्होंने गीत लिखे यथा अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, मगही, मैथिली और अंगिका। प्रभात संगीत न केवल भारत की महत्वपूर्ण शास्त्रीय और लोक शैलियों का प्रतिनिधित्व करता है बल्कि पहली बार फारसी, स्कैंडिनेवियाई, मध्यपूर्वी, चीनी और दुनिया की अन्य महत्वपूर्ण शैलियों को भी प्रस्तुत किया गया है। इस प्रस्तुति में हमें भक्ति गीत (मिस्टिक गीत), आध्यात्मिक जागरण के गीत, प्रकृति के गीत, सामाजिक पुनरुत्थान के गीत, लोक गीत, बच्चों के गीत आदि मिलते हैं। उन्होंने विभिन्न अवसरों जैसे विवाह, जन्मदिन और सार्वजनिक त्यौहारों से संबंधित गीतों की रचना भी की है।

जल्दी ही प्रभात संगीत (कई बार नृत्य के साथ) आनंद मार्ग के लगभग सभी आयोजनों का अभिन्न अंग बन गया। यदि बड़ा अवसर होता, जैसे कि धर्ममहाचक्र तो गीतकार की इच्छा थी कि ऐसे अवसर पर बंगाली गीतों का अंग्रेजी और हिन्दी में अनुवाद किया जाए। आचार्य विजयानंद अवधूत अंग्रेजी अनुवाद करने और उसे उपस्थित जनसमुदाय के समक्ष पढ़ने की जिम्मेदारी लेते और आचार्य चन्द्रनाथ हिन्दी की जिम्मेदारी लेते थे।

हर वर्ष बीतने के साथ ही प्रभात संगीत की लोकप्रियता नये स्तर को छू रही है और संगीत जगत की कई प्रतिष्ठित हस्तियाँ अब उनकी रिकार्डिंग में लगी हुई हैं।

प्रभात संगीत प्रकाशक की टिप्पणी

दादा केशवानंद ने मुझे बताया कि बाबा के शरीर छोड़ने से कुछ दिन पहले डॉक्टरों ने आपात कालीन वार्ड में उनसे कोई काम न करने का अनुरोध किया था, क्योंकि यह उनके स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। जब एक डॉक्टर ने कड़ी आपत्ति जताई तो बाबा ने उत्तर दिया, ''प्रभात संगीत रचना में मुझे कोई विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं है। इसी तरह जब मैं शब्द चयनिका (उनका भाषाकोश) लिखता हूँ तो यह एक अविरल अभिव्यक्ति होती है। इन प्रक्रियाओं को मेरा काम समझने के बजाय तुम्हें इन्हें मेरी प्रसन्नता कहना चाहिए।'' केशवानंद जी ने बाबा से पूछा कि वे किसको कार्य की संज्ञा देते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया, ''जब मैंने आनंद मार्ग, प्रउत या माइक्रोवाइटा, नव्य मानवता वाद के विचार की परिकल्पना की, तो इन क्रांतिकारी मूल अवधारणाओं की रचना में थोड़ा परिश्रम लगा।''

''टैव्हल्स विद द मिस्टिक मास्टर''

यही वह अवसर था जब केशवानंद दादा ने एक और प्रश्न किया, ''आपके किस काम ने आपका सबसे अधिक समय और ऊर्जा ली ?'' और बाबा ने उत्तर दिया कि प्रतीक का डिजाइन करने में उन्हें सबसे अधिक समय और परिश्रम लगा।

देखें 20, बाबा प्रतीक का डिजाइन बनाते हुए। हारमोनियम के साथ प्रभात संगीत गाते हुए मार्गी । दशरथ दादा दायीं ओर

86. इतिहास के दौरे

25 सितम्बर 1960 को परिनिर्वाण मंदिर के सामने बाबा खड़े हुए।

वर्षों से डी.एम.सी. दौरों के दरमियान बाबा अक्सर ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्थलों का दौरा करते थे। अन्य अवसरों के अलावा 1962 की फरवरी में वे बौद्ध और जैन पुरातत्व अवशेषों की खोज के लिए दो सप्ताह तक रांची में रहे थे, अपने 1966 के भारत दौरे में वे अक्सर प्राचीन मंदिरों और ऐसे ही अन्य स्थानों का चयन अपनी फील्ड वाक के लिए करते थे। आनंद नगर में अपने प्रवास के दौरान उन्होंने विशेष ऐतिहासिक जगहों जैसे अस्थि पहाड़, नवचक्र गुफा के विषय में बताया। राढ़ की प्राचीन भूमि के बारे में (जहां आनंद नगर स्थित है) उन्होंने कहा, ''राढ़ इस गोंडवाना लैंड का सबसे पुराना हिस्सा है जो समुद्र के ऊपर रह पाया – यही मनुष्य की जन्म स्थल है। राढ़ में आनंद नगर की पहाड़ियाँ भी कम से कम तीस करोड़ वर्ष पुरानी है। उस समय हिमालय नहीं बना था। और यह कहा जाता है कि उन पहाड़ियों में से एक (बलामू) को उन्होंने एक समय में हिमालय से ऊंचा होना बताया था।

संपादक

1979 के बाद के कुछ वर्षों में उन्होंने कार द्वारा कई थका देने वाली यात्रायें कीं। इन दौरों का मुख्य उद्देश्य हालांकि आध्यात्मिक सभाओं को संबोधित करना होता था, पर समय मिलने पर वे और उनके दौरे के साथी अक्सर दूरस्थ स्थानों पर पहुंच जाते और स्थानीय साधारण लोगों से घुल मिल जाते। ऐसे समय वे अपने साथियों को उन जगहों और वहां के लोगों के इतिहास के बारे में बताते थे, जो मौजूदा इतिहास के पन्नों में उपलब्ध नहीं है। .... 1984 में एक उल्लेखनीय दौरे के बाद उन्होंने ऐसे दौरों को इतिहास की यात्रायें कहना शुरू कर दिया।

प्रकाशक की टिप्पणी के साथ इतिहास

1984 के पहले चार महीनों में उत्तर भारत के अपने दौरे पर बाबा ने कई ऐतिहासिक स्थलों का दौरा किया और प्रत्येक क्षेत्र के भूले हुए इतिहास और स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक विरासत के विषय में बताया। इतिहास के प्रोफेसर आचार्य रघुनाथ उस दौरे में उनके साथ थे और उन्हें बाबा की टिप्पणियों को लिखने का काम सौंपा गया था। ये संस्मरण 1984 में 'इतिहास पर पी.आर. सरकार' शीर्षक से प्रकाशित हुए।

बाबा द्वारा खींचा गया आर्यों के आक्रमण का नक्शा।

1987 में बाबा ने निर्देश दिया था कि वर्ण विज्ञान, वर्ण विचित्रा और शब्द चयनिका के ऐतिहासिक अंशों को 'पथ चलते इति कथा' नामक एक नई पुस्तक में संकलित किया जाय। पुस्तक के समर्पण में यह कहा गया : ''उन लोगों को जिन्हें राह पर मिलने पर सहानुभूतिपूर्वक नहीं देखा गया और अगर अपवाद स्वरुप देखा गया तो जातिच्युत की तरह, ऐसे लोगों के सम्मान में मैंने ये कुछ शब्द लिखे हैं। मैंने लिखा है क्योंकि मैं इस ब्रम्हाण्ड की समस्त रचनाओं से प्यार करता हूँ। ये सब जीवंत हैं और मनुष्यों, पशु–पक्षी, पेड़, लता, फूल और फलों के साथ स्पंदित हैं। मैं किसी भी भौतिक दूरी या अवरोध को स्वीकार नहीं करता। सभी मेरे अपने लोग हैं। उन लोगों को मैं यह पुस्तक सौंपता हूँ। यदि वे इसे मुस्कुराते हुए स्वीकार करते हैं तो मुझे प्रसन्नता होगी।''

मद्रास फील्ड वाक, 1966

87. अपने जीवन के विभिन्न

अपने जीवन के विभिन्न चरणों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में बाबा की दैनिक दिनचर्या भिन्न भिन्न थी। हर सुबह दो से तीन घंटे और हर शाम को एक से ढ़ाई घंटे साधना; फील्ड वाक दिन में कम से कम एक बार (बाद के वर्षो में अक्सर दिन में दो बार), विभिन्न प्रकार के संगठनात्मक कार्य करना और इसी बीच रिपोर्ट लेना और संगठन संबंधी समाचार लेना', व्यष्टिगत संपर्क देना, जनरल दर्शन; विभिन्न विषयों पर श्रुत लेख देना, जनरल दर्शन के प्रवचनों को स्पष्ट या विस्तृत करना, प्रभात संगीत देना, इसके अतिरिक्त दैनन्दिन के आवश्यक कार्य जैसे स्नान करना, खाना और सोना। ये बाद वाले कार्यों में वे कम से कम समय देते थे और कई बार अन्य कार्यों के साथ करते थे यथा श्रुत लेख देना, प्रभात संगीत देना इत्यादि। अन्य कार्य भक्तों पर ध्यान देना, उन्हें व्यष्टिगत सलाह देना जब वे उनकी चरण सेवा कर रहे होते थे।

बाबा ने एक बार कहा था ''प्रणाली (सिस्टम) के बिना गति खतरनाक है और गति के बिना प्रणाली बेकार है।'' उन्होंने कहा, ''सब कुछ सिस्टम के अनुसार ही होना चाहिए। मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई जब मैं बर्फ में नंगे पांव था, स्विटजरलैण्ड में, बल्कि मेरे पैर गर्म थे। एक प्रणाली बनाओ। मैंने पांच वर्ष, चार महीने, दो दिन तक कोई भोजन नहीं किया और मुझे कोई कठिनाई अनुभव नहीं हुई। जब दिल्ली से विशेष चिकित्सा दल आया तो डॉक्टर ने कहा, बाबा का दिल हमारी तुलना में अधिक मजबूत है। न तो स्मृति में कोई कमी थी न ही मस्तिष्क की कोई समस्या। जब मैं एक दिन का शिशु था तब से ही मेरी स्मरण शक्ति प्रबल थी। मुझे सब कुछ याद रहता है।''

आनंद नगर में मधु कर्णिका की छत पर टहलते हुए बाबा जब बाबा कोलकाता में रहते थे, हम उन्हें अक्सर फील्ड वाक के लिए वनस्पति उद्यान या सुंदरवन जैसी जगहां` पर ले जाया करते थे। उदाहरण के लिए ब्लू फोटो जिसमें बाबा नाव के एक कमरे के अंदर बैठे हैं, वह हुगली नदी पार करते समय लिया गया था, जब हम उन्हें वनस्पति उद्यान ले जा रहे थे। अगर जगह कुछ दूर होती जैसे सुंदरवन तो हमें एक दिन पहले बाबा को सूचित करना होता था, और उनकी अनुमति लेनी होती थी। लेकिन हमारा सबसे नियमित गंतव्य स्थल रवीन्द्र सरोवर था, जो गोल पार्क के पास एक बड़ी सी झील है और यह छायादार पैदल मार्ग से घिरा है। यह लेक गार्डन स्थित घर से कुछ ही दूरी पर था और पैदल चलने के लिए सुखद स्थान था, विशेष कर रात में जब हमारे पास कम समय होता था और हम उन्हें पास के ही इलाके में ले जा सकते थे।

आशुतोष बाबा

''ब्लू फोटो'', नाव पर हुगली नदी पार करते समय लिया गया जब वे फील्ड वाक पर वनस्पति उद्यान जा रहे थे।

मधु करनिका आनन्दनगर की छत पर टहलते हुए बाबा

88. व्यष्टिगत संपर्क

बाबा के साथ व्यष्टिगत संपर्क शिष्य के जीवन के सर्वोच्च आनंदप्रद और बेशकीमती अनुभवों में एक था। सामाजिक प्रतिबंध और औचित्य के कारण हालांकि बाबा इसे केवल पुरुष शिष्यों को स्वयं देते थे। उन निजी बैठकों में वे संस्कार को अपने ऊपर लेकर शिष्य के मन को ऊंचा उठा देते और इस प्रकार उसे अत्यधिक आध्यात्मिक बढ़ावा देते। बाबा उसे अपनी गोद में बैठा लेते और उसे एक प्यार करने वाले पिता की तरह प्यार से दुलार करते या उसकी आंखों में गहराई से देखते हुए कहते, ''मानवता की सेवा करो, मेरे बेटे।'' शिष्य एक नवीन और उत्प्रेरित मनुष्य बनकर निकलता।

तुम बाबा के कमरे में प्रवेश करोगे, साष्टांग प्रणाम करोगे और उनके सामने बैठोगे। बाबा तुम्हारा नाम पूछेंगे कहां से आए हो, पोस्टिंग, ड्यूटी क्या है आदि। फिर वे अपनी सर्वज्ञ दृष्टि से तुम्हारे मन के भीतर देखेंगे और तुम्हारे अतीत से कुछ खोद निकालेंगे। वे सब कुछ जानते हैं, यहाँ तक उन बातों को भी जिन्हें तुम भूल गए होगे। उनसे कुछ भी छिपा नहीं है। वे गलतियों के लिए डाटेंगे और संभव है अपनी छड़ी से सजा भी दें। तब वे किसी तरह की प्रतिबद्धता के लिए कहेंगे, तुम्हें बेहतर बनाने के लिए, आदर्श व्यष्टि बनाने के लिए, पीड़ित मानवता की सेवा के लिए। फिर वे तुम्हें ऐसे प्रेम और स्नेह से सराबोर कर देंगे जो किसी भी संस्कारिक रिश्ते में संभव नहीं है। अंत में वे तुम्हारे आज्ञा चक्र पर अपने अंगूठे के साथ सहस्त्रार चक्र पर उंगलियां रखकर आशीर्वाद देते थे।

संपादक

1960 में बाबा की गोरखपुर यात्रा के दौरान, प्रतापादित्य ने बाबा से पूछा कि वे किसी के अतीत के बारे में इतना कैसे जान लेते हैं। बाबा ने उत्तर दिया, 'प्रतापादित्य यदि तुम अपने चेतन मन को अपने कारण मन जितना सूक्ष्म बना लो तो तुम किसी के मन की गहरी गुफा में प्रवेश कर सकते हो और उस मन द्वारा किये गए भी अनुभवों को जान सकते हो। सब कुछ कारण मन में संग्रहित है। यदि तुम अपने मन को पर्याप्त सूक्ष्म बना लेते हो तो तुम सब कुछ जान सकते हो।''

'आनंद मूर्ति : दि जमालपुर इयस

31 मई 1962 को बाबा की डायरी प्रविष्ट :
''सुबह जागृति गया। मधुबनी के नरेन्द्र कुमार को पर्सनल कान्टेक्ट दिया। श्रमिक समस्या पर क्लास ली। दफ्तर भी गया। स्वास्थ्य ठीक है पर कुछ कमजोरी है। शाम को डुंमरांव का सत्यनारायण जबलपुर से आया था। कई अन्य लोग भी उपस्थित थे।''

व्यष्टिगत संपर्क के बाद बाबा द्वारा एक शिष्य को दिये गए हस्तलिखित नोट के कुछ टुकड़े। नीचे लिखा है, पी.सी. के बाद श्री नंदन को दिए गए निर्देश।
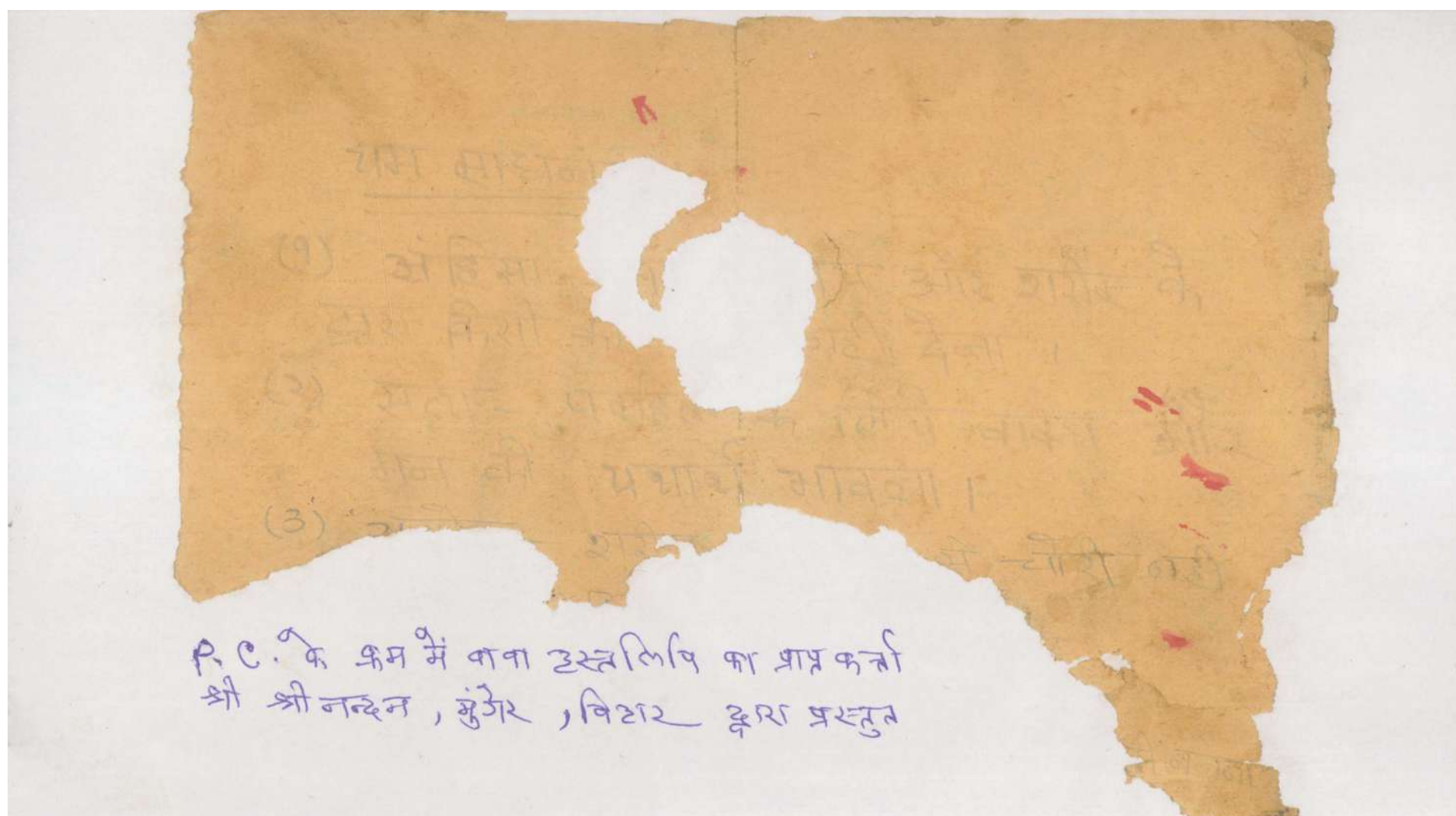
89. क्रांतिकारी विवाह

बाबा ने क्रांतिकारी विवाह की अपनी अवधारणा को इस प्रकार समझाया,''विभिन्न नस्लों और विभिन्न संस्कृतियों को अलग करने वाली बाधाओं को तोड़ने का सबसे आसान और सबसे अच्छा तरीका है अंर्तजातीय और अंर्तसंस्कृति विवाह। मान लो भिन्न जाति का लड़का और लड़की विवाह करते हैं। यह उनकी अपनी जाति की भावना को भंग करने में सहायता करेगा और उनके बच्चों की कोई जाति नहीं होगी। मान लो यहां का लड़का इंग्लैण्ड की लड़की से विवाह करता है, वह इंग्लैण्ड को बर्बाद होते देखना कभी नहीं चाहेगा और इसके विपरीत (भारत की हानि) होते भी नहीं देखना चाहेगा। न ही उनके बच्चों में अंग्रेजी विरोधी या भारत विरोधी भावनायें होंगी। यह इन बाधाओं को तोड़ने का सबसे आसान तरीका है।''

आनंद मूर्ति : द जमालपुर इयर्स

1957 में जमालपुर में बाबा ने कहा था :

आनंद मार्ग में सभी वंशों, जातियों या पंथों के लोग सामूहिक कार्यों में समान रुप से भाग लेते हैं। समुदाय, जाति, नस्ल या राष्ट्र ये ही वे मुख्य कारक हैं जिन्हें विवाह करते समय देखा जाता है। आनंद मार्ग में मनुष्यों के बीच इन तुच्छ अंतरों को कोई मान्यता नहीं दी गई है। ''आनंद मार्ग में पुरुषों और महिलाओं दोनों की समान जिम्मेदारी है। जो विधि विवाह के लिए निर्धारित की गई है उसमें महिला और पुरुष दोनों को समान जिम्मेदारी लेनी होगी। महिलाओं और पुरुषों को एक समान माना जाता है और पुरुषों को महिलाओं से बेहतर मानने का प्रश्न ही नहीं है।''

बाबा की डायरी प्रविष्टि, 24 मार्च 1963

''शशि रंजन दिल्ली से आए हैं। उनसे संसद मे एक विधेयक पारित करने के संबंध में चर्चा हुई ताकि विभिन्न धर्मो से आए लोग बिना किसी बाधा के मार्ग के सिद्धान्तों के अनुसार विवाह कर सकें।''

17 अक्टूबर 1959 को उन्होंने कहा :

''यह सामाजिक अन्याय (दहेज प्रथा का) महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता देकर तथा अंर्तजातीय और अंर्तराष्ट्रीय विवाह को प्रोत्साहित करके हटाया जा सकता है। वर्तमान समय में इस तरह के आंदोलन की तत्काल आवश्यकता हे।''

और 15 अक्टूबर 1978 को उन्होंने पटना में कहा :

''हालांकि यह किसी आचार संहिता मे नहीं लिखा गया है पर मेरा निश्चित मत है कि कोई व्यष्टि स्वयं का या भाई, बहन, बेटे, बेटियों का विवाह क्रांतिकारी विवाह के अनुसार करने में विफल रहता है तो ऐसे व्यष्टि को आचार्य/आचार्या नहीं बनने देना चाहिये। इस तरह उनके आचार्य/आचार्या बनने का रास्ता बंद हो जायेगा और वे आचार्य/आचार्या के अधिकारों का लाभ नहीं ले पायेंगे। दूसरे शब्दों में जिन्होंने क्रांतिकारी विवाह पद्धति से विवाह किया है, उन्हें तथा जो विवाह के बाद आनंद मार्ग में आए उन्हें भी अपने भाइयों और बहनों के क्रांतिकारी विवाह की व्यवस्था करना चाहिए। और यदि उनके भाई बहन पहले से विवाहित हैं तो कम से कम उन्हें अपने बेटों और बेटियों के क्रांतिकारी विवाह की व्यवस्था करना चाहिए। मेरे विचार में यह वास्तव में तार्किक कदम है। हमारे संगठन में पाखंडियों के लिए कोई जगह नहीं है।'' अपने जीवन के अंतिम समय की ओर, अगस्त 1990 में बाबा ने केशवानंद दादा से पूछा, ''आनंद मार्ग का सबसे बड़ा व्यवहारिक योगदान क्या है ?'' दादा ने अलग अलग नाम लिए, (प्रउत, माइक्रोवाइटा, ऐमर्ट, आदि) जिन्हें बाबा ने सही उत्तर के रुप में स्वीकार नहीं किया। तब उनके मन में क्रांतिकारी विवाह का विचार कौंध गया। बाबा ने कहा,'' हां कांतिकारी विवाह आनंद मार्ग का सबसे बड़ा व्यावहारिक योगदान है।'' क्योंकि यह मानव समाज में जाति, धर्म और अन्य विभाजनकारी बाधाओं को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कई दूसरे सूत्रों के अनुसार भी एकाधिक बार बाबा ने कहा कि आनंद मार्ग को एमर्ट, बाबा नाम केवलम कीर्तन और क्रांतिकारी विवाह के माध्यम से जाना जाएगा।

14 दिसम्बर, 1987 को बाबा ने राँची के एक अच्छे मार्गी परिवार के लड़के किंशुक को गोद लिया, जिनका पूर्व नाम रजत दत्ता था और जिन्होंने आनंद नगर में 1966 से 1974 तक शिक्षा प्राप्त की थी। आचार्य किंशुक का विवाह आचार्य हर प्रसाद की सबसे छोटी पुत्री तनुका से 12 दिसम्बर 1989 को हुआ। बाबा विवाह में उपस्थित थे और उन्होंने विवाह को आशीर्वाद दिया।

90. डी. एम. सी.

धर्म महाचक्र सबसे औपचारिक आध्यात्मिक अवसर होते थे जब बाबा मार्ग गुरू के रुप उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते थे। यह केवल उनकी शारीरिक उपस्थिति में ही होता था। बाबा द्वारा वराभय मुद्रा देने पर डी.एम. सीमाना जाता था। अन्यथा उन्हें धर्म महा सम्मेलन के रुप में घोषित किया जाता था। उनकी उपस्थिति पर भी ऐसे तीन मौके आए जब आयोजन को धर्म महा सम्मेलन घोषित किया गया, एक जर्मनी के टिमरन में और दो भारत में। निम्न क्रमानुसार आयोजन होता थाः

पंडाल में बाबा का आगमन, बाबा को माला पहनाना, प्रभात संगीत का गायन, बाबा द्वारा नव विवाहितों को आशीर्वाद देना, बाबा द्वारा पुरूस्कार वितरण, उनके समक्ष कौशिकी और तांडव नृत्य की प्रस्तुति, प्रभात संगीत का गायन, बाबा का डी.एम.सी. प्रवचन, संगच्छद्वं गायन, गुरूपूजा बाबा द्वारा वराभय मुद्रा देना, बाबा का आशीर्वाद और आवर्त कीर्तन के बीच बाबा द्वारा पंडाल से जाना।

बाबा ने अपने जीवन में लगभग 350 डी.एम.सी. दिये – एक बार केवल वर्ष 1966 में ही 39 डी.एम.सी. दिए। वर्तमान में हमारे पास रिकार्ड में 215 डी.एम. सीप्रवचन है। दूसरे या तो दर्ज नहीं किये गए, मिले नहीं या गुम हो गए।

बाबा के 1 जनवरी 1989 को आनंद नगर में हुए डी.एम.सी. का विषय था ''बायोलॉजिकल ट्रांस्फारमेशन एसोसियेटेड विद साइकिक मेटामारफोसिस एण्ड वाइस वर्सा'' था। इस प्रवचन का निम्नलिखित के साथ समापन हुआ।

अतः तुम्हारा भविष्य उज्जवल है न केवल उज्जवल बल्कि गारंटीकृत है। सभी प्रकार की भावजड़ता से मुक्त एक नया आध्यात्मिक जीवन निकट भविष्य में अवश्य आएगा। अंर्तमुखता के इस चरण में परम पुरुष के इस शाश्वत खेल में जिसमें सभी भौतिक, मानसिक सत्तायें आगे की ओर अग्रसर हैं, एक दिन मानसिक क्षेत्र आध्यात्मिक रुप में उन्नत होगा और अणु चेतना भूमाचेतना के साथ मिलकर एक हो जाएगी। परम पुरुष भी उस शुभ दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे तुम्हारे साथ है – वे तुम्हें उचित दिशा प्रदान करेंगे, ताकि सार्वभौमिक सृष्टि की मुक्ति के सुसमाचार के साथ तुम बिना किसी कठिनाई के अपने लक्ष्य तक पहुंच जाओगे। ''वे वही करेंगे जो आवश्यक है। तुम उनकी आज्ञा का पालन करते जाओ, उनका कार्य करते जाओ और अपनी पूरी ऊर्जा से उनके कथन के अनुसार चलो। तुम्हारे अच्छे कार्यों और आध्यात्मिक गतिविधियों द्वारा उनकी अंर्तमुखी सोच की गति को तेज कर दो। उस सुनहरे दिन को जल्द से जल्द आने दो ओर अपने जीवन को उज्जवल बनाओ।''

डी.एम.सी. 1 जनवरी 1989, आनंद नगर में / डी.एम.सी. 4 जून 1989, आनंद नगर में
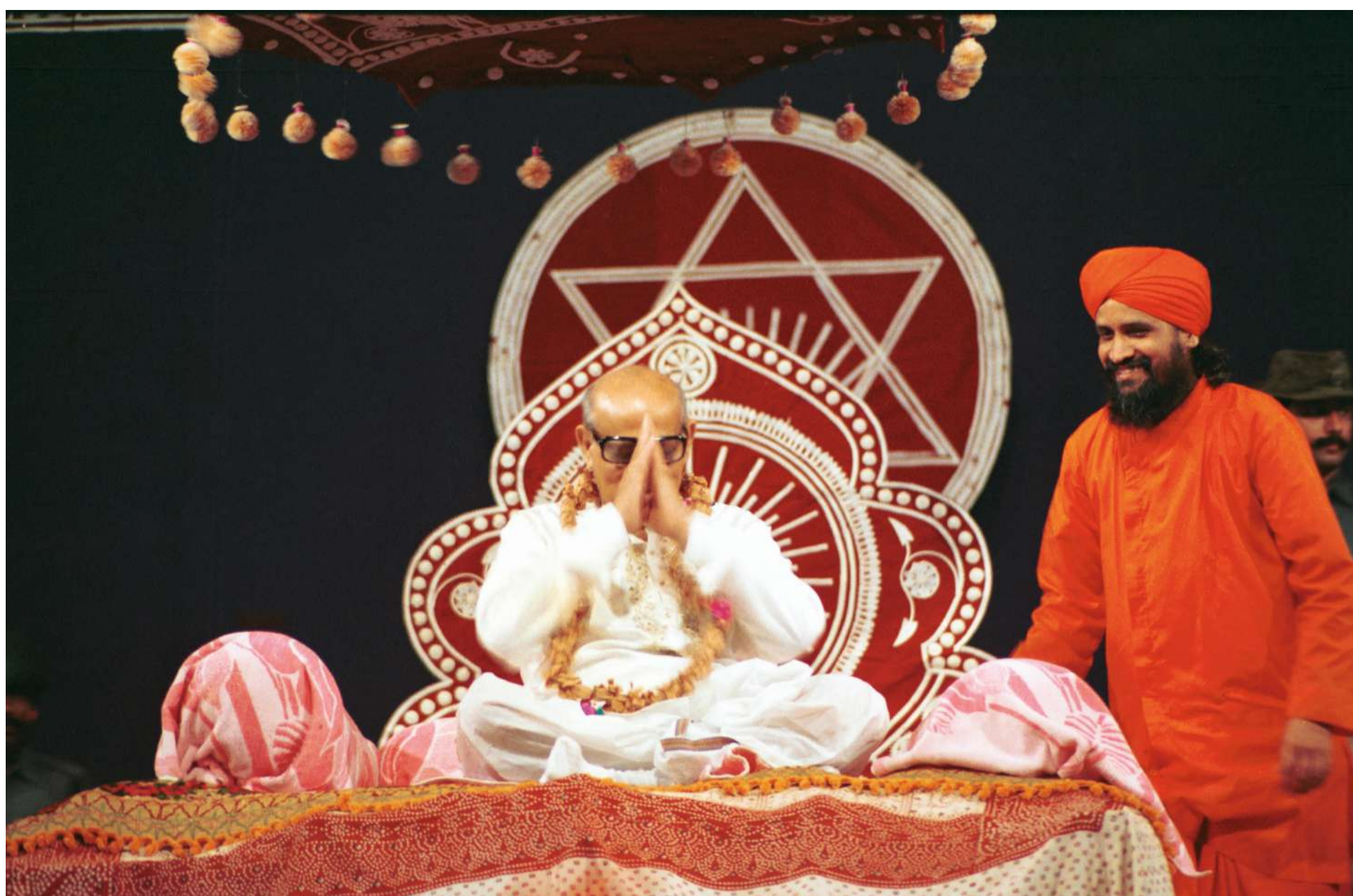
91. वराभय मुद्रा

वराभय मुद्रा निर्भयता और कृपा प्रदान करने वाला भाव है जो वर और अभय मुद्रा का संयोजन है। बांयीं जांघ के ऊपर बांया हाथ रहता है, हथेली ऊपर की ओर रहती है। यह वर मुद्रा कहलाती है। जबकि दांया हाथ ऊपर कंधे तक उठाया जाता हे, और हथेली बाहर की ओर रहती है। यह अभय मुद्रा कहलाती है।

बाबा कहते हैं :

''....... अभय का अर्थ है निर्भीकता। जब हम सृजन और विनाश की माया का सामना करते हैं तो चरम सत्ता हमसे कहती है, 'घबराओ मत, डरो मत, दुबारा सृजन अवश्य होगा...। यदि कोई अपने मन को वराभय मुद्रा पर केन्द्रित करता है तो कर्ण धमनी और अन्य तंत्रिका कोशिकाओं तथा नियंत्रक कोशिकाओं पर धनात्मक माइक्रोवाइटा का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है....। साधक को कही और न देखकर इन्हीं दो मुद्राओं को देखना चाहिए।'' माइक्रोवाइटा इन दोनों मुद्राओं के माध्यम से निःसृत होता है। यह एक आंतरिक रहस्य है।''

बाबा आमतौर पर वराभय मुद्रा डी.एम.सी. प्रवचन के पहले या इस विशेष आशीर्वाद के बाद दिया करते थेः

सर्वेत्र सुखिनः भवन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु न कश्चिद् दुखम आप्नुयात्
ओम शान्तिः ओम शान्तिः ओम शान्तिः

उन्होंने 4 जून 1989 में 'कल्ट, इन्फेरेन्स एण्ड प्रोपेन्सिटी' प्रवचन के बाद आशीर्वाद का यह अनुवाद दिया।

(उस अवसर पर उनके वराभय मुद्रा देने से संबंधित तस्वीर ली गई):

सभी लोग सुखी हों, सभी लोग भौतिक या मानसिक व्याधियों से मुक्त हों। सभी लोग सबका उज्ज्वल पक्ष देखें; किसी को भी परिस्थिति के दबाव में कष्ट उठाना नहीं पड़े. .... ओम शान्तिः ओम शान्तिः ओम शान्तिः''

जब बाबा वराभय मुद्रा देते थे तो वे नमस्कार से प्रारंभ करते थे, फिर वे अपने हाथों को अलग करते थे। बायीं जांघ के ऊपर बायां हाथ रखते थे, हथेली ऊपर की ओर रखते थे, और दाहिना हाथ ऊपर कंधे तक उठाते थे और हथेली बाहर की ओर रखते थे।

यह वर्णन मुद्रा के अनेक प्राप्तकर्ताओं को अनुभवों में से एक है :

''अचानक ऐसा अनुभव हुआ कि एक बड़ी लहर मेरे शरीर पर छा गई है। मुझे लगा मेरा मन अत्यंत विस्तृत हो गया है। मुझे लगा कि बाबा अनंत का एक छोटा सा कोना खोल रहे हैं और इसका प्रवाह पूर्ण रुप से मेरे ऊपर हो रहा है। मेरे शरीर का हर कोष आनंद से स्पंदित हो उठा। मुझे बेहद रोना आया और मैंने पहली बार अनुभव किया कि कृपा क्या होती है।''

आनंद नगर में 4 जून 1989 को बाबा 'कल्ट, इन्फेरेन्स एण्ड प्रोपेन्सिटी' प्रवचन के बाद (मुद्रा पूरी नहीं बनी है) गति में वराभय मुद्रा देते हुए। छठे पाठ में प्रयुक्त होने वाली वराभय मुद्रा तस्वीर के दो संस्करण हैं : अजीत विश्वास (बाबा के ममेरे भाई ननकू) के घर पर 1940 में पहली बार ली गई, और 1960 के दशक में दूसरी बार रतन एण्ड कंपनी के फोटोग्राफिक स्टूडियो कोलकाता में लिया गया था। दोनों तस्वीरों में जानुस्पर्श मुद्रा (दोनों हाथों को घुटने पर टिकाते हुए, हथेलियों को ऊपर की ओर रखते हुए) की तस्वीरें भी शामिल हैं। बहुचर्चित जेन्टलमैन फोटो जो बाबा की कई पुस्तकों के प्रारंभ के पन्नों पर है, उसे भी दूसरे (1960) सत्र के दौरान लिया गया था। बाबा ने स्वयं इसे जेन्टलमैन फोटो का नाम दिया।

बाबा की आनंद नगर में 1 जनवरी 1988 को डी.एम.सी. में वराभय मुद्रा थे पहले (बांये) और तुरंत बाद में (दांये) की तस्वीर (मुद्रा दिखाना प्रतिबंधित होने के कारण इसे नहीं दिखाया जा सकता है) 1990 के डी.एम.सी. की तस्वीरें भी देखें। डी.एम.सी. में बाबा की वराभय मुद्रा देने के पहले और बाद की तस्वीरें।
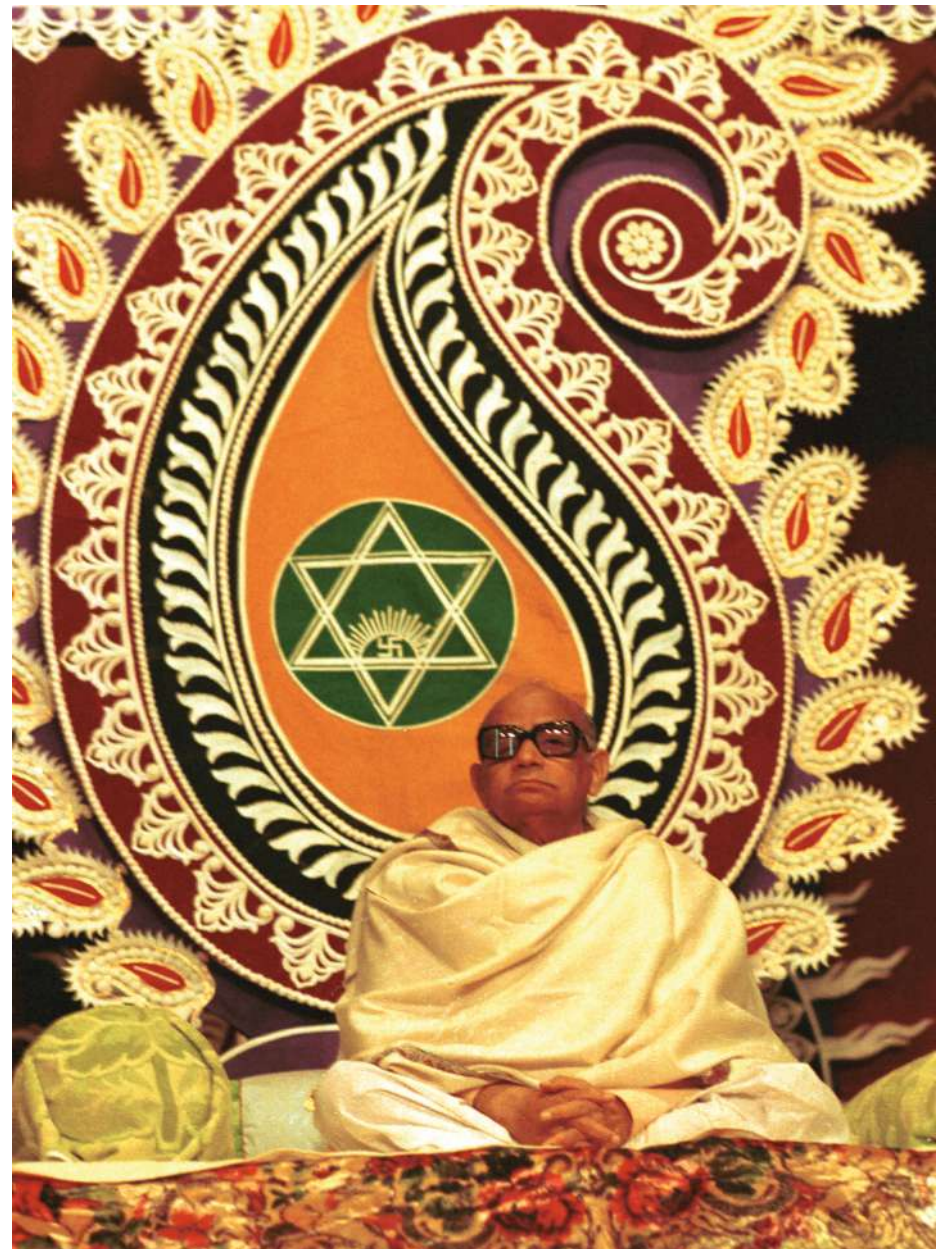
92. रिर्पोटिंग

जैसे जैसे संगठन बढ़ता गया बाबा ने रिर्पोटिंग की व्यवस्था का निर्माण किया। शुरुआत में विभागों के क्रमानुसार पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं से रिपोर्ट ली जाती थी। लेकिन बाद में विशेष जिम्मेदारी (जैसे भुक्ति प्रधान) वाले मार्गियों से भी रिपोर्ट ली जाने लगी। इसी क्रम में स्थायी पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की भी रिर्पोटिंग होने लगी। अंततः रिपोर्टिंग सत्रों को आर.डी.एस. (रिव्यू, डिफेक्ट, साल्यूसन) का नाम दिया गया।

संपादक

जब बाबा रिपोर्टिंग के लिये आते थे तो आचार्य लोग खड़े हो जाते थे और आम तौर पर पूरे रिपोर्टिंग सत्र के दौरान खड़े ही रहते थे। कभी–कभी यदि सत्र लम्बा चलता तो बाबा उन्हें बैठने के लिये कहते थे। आम तौर पर बाबा उन लोगों का नाम पढ़ने के लिए कहते जिन्हें रिपोर्ट देना होता था। महासचिव उन लोगों की घोषणा करते, जैसे – एस.एस. मनीला सेक्टर यदि रिपोर्टिंग संक्टर स्तर पर होती, या बी.पी. हुगली, यदि रिपोर्टिंग भुक्ति प्रधानों की होती।

एक निश्चित क्रम था : पहले ईराज फिर एस.डी.एम, पी.यू., सेवादल और अंत में शेष विभाग। बाबा उनसे प्रश्न पूछते थे और सदा उन कार्यकर्ताओं को पकड़ते थे, जिन्होंने नियमों का उल्लंघन किया होता था। तथा उन्हें सबके सामने उजागर कर देते थे। फिर वे स्वयं उन्हें सजा देते या मैं उनके निर्देश के अनुसार सजा देता था। हर किसी में कुछ न कुछ कमियाँ होती हैं इसलिये हमेशा कोई न कोई होता था जिसे उसके दोषपूर्ण कार्य की सजा मिलती थी। जिन लोगों का कार्य अपूर्ण होता, उन्हें लिखकर देना होता था कि एक निश्चित अवधि में कार्य पूरा कर लेंगे, यह अवधि भी आम तौर पर एक दिन की ही होती थी।

जब बाबा बोल रहे होते तो एक निश्चित शिष्टाचार का पालन करना होता था – मैं एक उदाहरण देता हूँ : नियम था कि जब बाबा बोलेंगे तो कोई बीच में व्यवधान नहीं डालेगा। आपको तभी बोलना है जब आपको इसके लिए संकेत दिया गया हो। एक बार बाबा एक अभारतीय दादा से पूछ रहे थे अंग्रेजी में रोटी बनाने हेतु आटा और पानी मिलाकर गूंथने की क्रिया को क्या कहते हैं ? बाबा ने कई बार पूछा किन्तु उस दादा को शब्द याद नहीं आया। तब एक भारतीय दादा ने बीच में बोलते हुए इस शब्द को बता दिया। ''बाबा शब्द नीड (ज्ञदमंक) है।'' बाबा तुरंत क्रोधित हो गये। ''मैंने तुमसे नहीं पूछा। मैंने इस लड़के से पूछा था, मैं उसे कुछ सिखाना चाहता था। यह उसकी भाषा है। वह शब्द जानता है किन्तु उसे याद नहीं आ रहा था। तुम बीच में क्यों बोले ?'' बाबा ने मेरे जरिये उसे नियम का उल्लंघन करने के लिए दंडित किया। उन्होंने मुझसे कहा ''उसे मारो, और जोर से मारो''।

आशुतोष बाबा

बाबा : हमारा उद्देश्य सुधारना है, दंड देना नहीं। हम किसी को परेशान नहीं करना चाहते हैं। एक बार जब उन्हें गलती का एहसास हो जाता है तो मामला समाप्त हो जाता है। मैं मजबूत हूं और सख्त भी, लेकिन मैं तुमसे प्यार करता हूं। तुम नहीं जानते कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं किन्तु मैं सख्त भी हूं।

अज्ञात श्रोत

बाद में मुझे एक वरिष्ठ कार्यकर्ता से पूछने का मौका मिला कि कैसे हर कोई बाबा की प्रताड़ना को सह लेता है। उन्होंने कहा, ''हम तंत्र की लंबी परंपरा से जानते हैं कि गुरु के पास अपने शिष्य को पशु जीवन से वीर जीवन, और वीर जीवन से दिव्य जीवन तक उत्थान करने की जिम्मेदारी होती है। इसे प्राप्त करने के लिए गुरू को व्यवहार में बेहद कड़वे औरे बेहद मीठे के बीच उतार–चढ़ाव करना पड़ता है। यह हर शिष्य के मामले में अलग अलग होता है।

''अधिक महत्वपूर्ण यह है कि बाबा ने हमें निर्देश दिया कि अधीनस्थ आचार्यो के साथ कैसा व्यवहार किया जाए। उन्होंने कहा कि हम जो कड़ाई बरतते है तो कड़ाई के हर दस हिस्से के लिए हमें कम से कम ग्यारह हिस्से प्यार देना चाहिए। उनके मामले में मुझे लगता है कि वे जितनी सख्ती करते थे उसकी उनके असीम प्यार से कोई तुलना ही नहीं हो सकती। बाबा का अस्तित्व ही हमारे लिए है, वे अपने लिए कुछ नहीं करते। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि बाबा के विषय में मेरी राय को कोई सही समझता है या गलत ? क्योंकि यह मेरा दैनिक अनुभव है। यही कारण है कि कड़े व्यवहार की कोई सीमा मेरे साथ उनके रिश्ते को हिला नहीं सकती।''

सबकी अलग–अलग जरूरतें हैं – अपना रास्ता है। इन वर्षों में मैंने देखा कि बाबा कुछ दादा लोगों को कठोर रूप से डांटते थे, कुछ को एक भी डांट नहीं मिली, जबकि अधिकांश बीच में थे। दीदियों के साथ बर्ताव में वे कभी उनके शरीर पर नहीं मारते थे। उन्होंने केवल अपनी खुली हथेली पर उनकी छड़ी को महसूस किया। फिर भी हालांकि उनका शारीरिक दर्द नगण्य था लेकिन इससे उन्हें दादा लोगों के ही समान स्वयं को बदलने और समर्पण करने की प्रेरणा मिलती थी।

ट्रैवल्स विद द मिस्टिक मास्टर

रिपोर्टिंग सत्र, जून 1986 तिलजला में।

93. जीते जागते विश्वकोंशं, भाषाविद् और दूरदशी

अपने आरंभ के दिनों में बाबा को एक जीवित विश्व कोष के रुप में जाना जाता था। बाद के वर्षो में मार्ग गुरु के रुप में उन्होने सचमुच एक विश्वकोश लिखा। रविवार को दर्शन परंपरा की शुरूआत 1980 में नमामि कृष्ण सुंदरम् के साथ हुई, फिर 1981 में बुद्धि की मुक्ति नव्यमानवता वाद और नमः शिवाय शांताय 1982 में दिया गया। 9 सितम्बर 1985 से उन्होंने रविवार के दर्शनों में एक असाधारण श्रृंखला प्रारंभ की जो अगले पांच वर्षों तक चली और अंततः शब्द चयनिका के 26 खंड (शब्दों का संग्रह) की रचना हुई।

संपादक

मूल रुप से शब्द चयनिका एक श्रृंखला है जो बंगाली के भाषा विज्ञान और भाषाशास्त्र के लिए समर्पित है किन्तु यह इससे कहीं अधिक है। लेखक शब्द का उपयोग मानवीय ज्ञान के विभिन्न परिदृश्यों–इतिहास, भूगोल, चिकित्सा, विज्ञान, कला, धर्म, दर्शन की अनूठी यात्रा पर ले जाने के लिये करते हैं। और इस प्रक्रिया में उनके अपने ज्ञान की अमिट मुहर नये विचारों के साथ हमारे अनुभव को समृद्ध करती है। यह हमें अपनी मानवीय विरासत को इस तरह देखने में सक्षम करती है जैसा पहले कभी नहीं हुआ। अधिकांश महान् लेखकों की तरह वे परिपूर्ण कथाकार हैं। जिनके पास कथाओं का कभी समाप्त न होने वाला श्रोत है, स्वयं के अनुभव और अनुभूत कहानियां है जो पाठक को बांध लेती है और उसे मानवीय ज्ञान के बाग में ले जाती है, और ऐसा करते हुए लेखक एक ऐसी (बंगाली) भाषा को परिष्कृत और विकसित करते हैं जो दुनिया की पांचवीं सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है और अपनी महान् पूर्वज संस्कृत की निकटतम जीवित भाषा है।

शब्द चयनिका पर प्रकाशित टिप्पणियाँ

शब्द चयनिका के प्रवचन देने से पहले, बाबा ने जून से नवंबर 1953 तक वर्ण विज्ञान, इसके बाद 1984–85 में आठ खंडों की वर्ण विचित्रा दी। बंगाल के एक प्रख्यात विद्वान ने कर्ण विचित्रा के कुछ अध्यायों को पढ़ने के बाद अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। : ''मैं आश्चर्य चकित हूँ। यह किताबी ज्ञान की अभिव्यक्ति नहीं है। यह मेरे लिए एक इलहाम की तरह है।'' 1979 में जर्मनी के हनोवर में बाबा ने कहा था, ''वर्ष 1980 के बाद से सामूहिक मनोविज्ञान में कुछ बड़े बदलाव की तुम उम्मीद कर सकते हो, और वर्ष 2000 से क्रांतिकारी बदलाव शुरू हो जाएगा।''

26 मई 1984 को उन्होंने कहा : ''मानवता एक नये युग की दहलीज पर है। और 1987 के अक्टूबर में एक भुक्ति प्रधान रिर्पोटिंग में उन्होंने कहा, ''हमने नये युग की सीमा को पार कर लिया है।'' गिरधर जो उस समय उनके सामने बैठा था, उसने बताया ''उन्होंने हमें बताया कि हमारा काम यह पता लगाना है कि उस नये युग में कैसे जीना है। उन्होंने हमें एक आदर्श दे दिया है किन्तु हमें यह पता लगाना चाहिए कि व्यवहारिक रूप से इसे कैसे अमल में लाना है।'' दादा प्रणवात्मकानंद के अनुसार बाबा ने एक बार सुभाष नाइक (मुंबई) को कहा था : ''जब कास्मिक माईंड यह सोचेगा कि ईश्वर केन्द्रित दर्शन की स्थापना का समय आ गया है, तो सभी इकाई मन उसी के अनुसार सोचना प्रारंभ कर देंगे। अभी असंभव लगता है तब वह एक स्वाभाविक बात हो जाएगी।''

संपादक गण

एक रात जब बाबा एक फील्ड वाक से लौटे तो हमने उनके लिए प्रभात संगीत गाना शुरू किया। बाबा बैठे नहीं, वे खड़े रहे और हमसे एक प्राचीन भाषा में बात करने लगे, जिसमें कई गहरी और असामान्य ध्वनियाँ थीं। फिर उन्होंने कहा, ''इस भाषा को दस हजार वर्षों से नहीं सुना गया है।'' गहरी आवाज में बोलना जारी रखते हुए, बाबा ने कहा, ''वह क्षण जब तुम परम पुरुष के प्रथम बार संपर्क में आते हों, वह इतना पुरातन है कि इसे याद नहीं रखा जा सकता।'' उन्होंने इन अंतिम शब्दों का लंबा उच्चारण करके बताया। तब रात्रि कालीन वायु को अंर्तज्ञान से तरंगित करते और हमें अचंभित करते हुए बाबा अपने घर के अंदर चले गए।
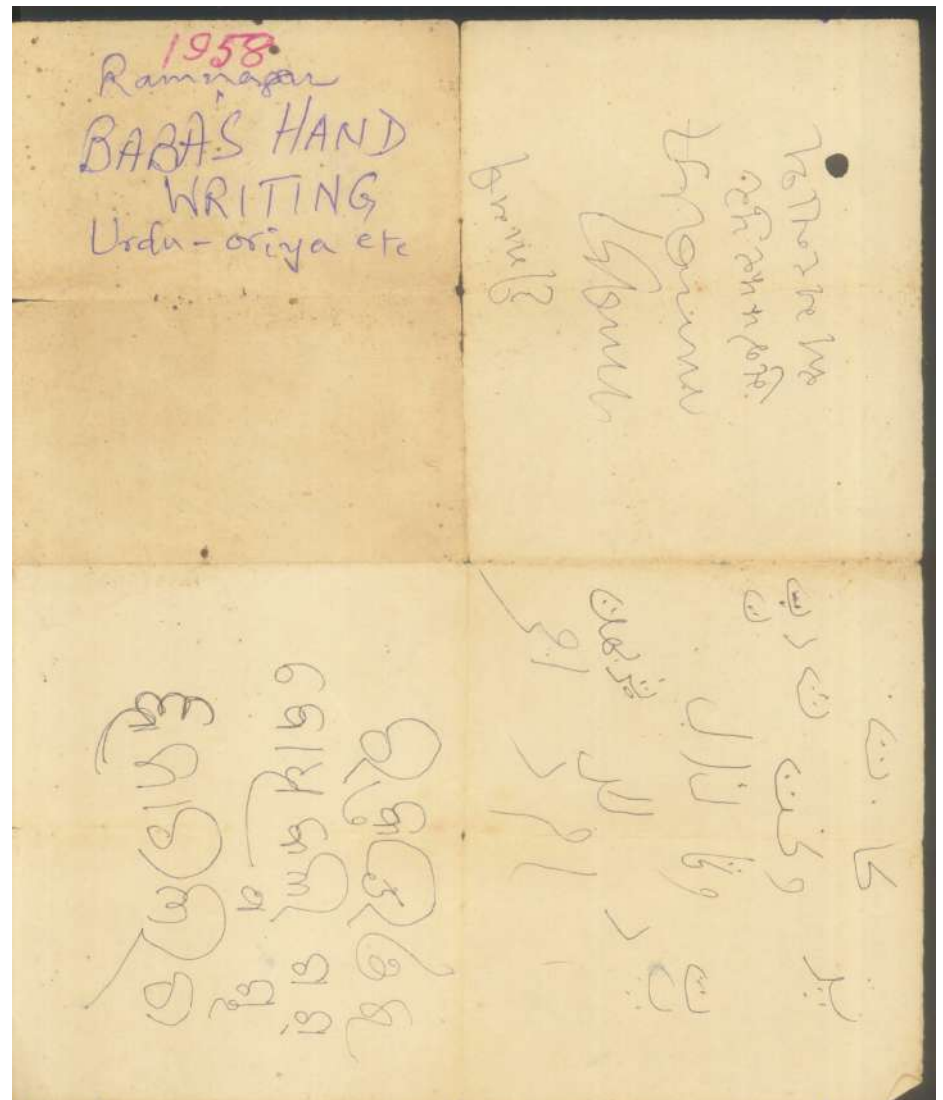
उर्दू, उड़िया और एक अन्य अज्ञात लिपि में बाबा की लिखावट। बाबा ने लिखा कि इस समाचार पत्र का शीर्षक मूल मैथिली लिपि में होना चाहिए। (शीर्षक दायीं ओर बाबा द्वारा लिखित) और शीर्षक के नीचे उन्होंने बंगला लिपि में एक उपशीर्षक लिखा है: ''एक मात्र मैथिली दैनिक''।

दिनांक 24 जुलाई 1983 को बाबा ने श्री हर्ष लिपि में राजा हर्षवर्धन का नाम लिखा जो लगभग 1500 वर्ष पूर्व हुए थे। 1981 में उन्होंने कहा, ''प्राचीन ब्राम्ही लिपि का परिवर्तित रूप श्री हर्ष लिपि है। इसे राजा हर्षवर्धन के नाम पर श्री हर्ष लिपि कहा गया। एक मुहर जो बाद में मिली वह इसी श्री हर्ष लिपि में है। वर्ग कोष्टक की हस्तलिपि इस तरह है :

(30 जून 1950 को पाटिलीपुत्र कालोनी में बाबा द्वारा लिखा गया; यह लिपि के विकास के संबंध में है।) अमूल्य रतन सारंगी
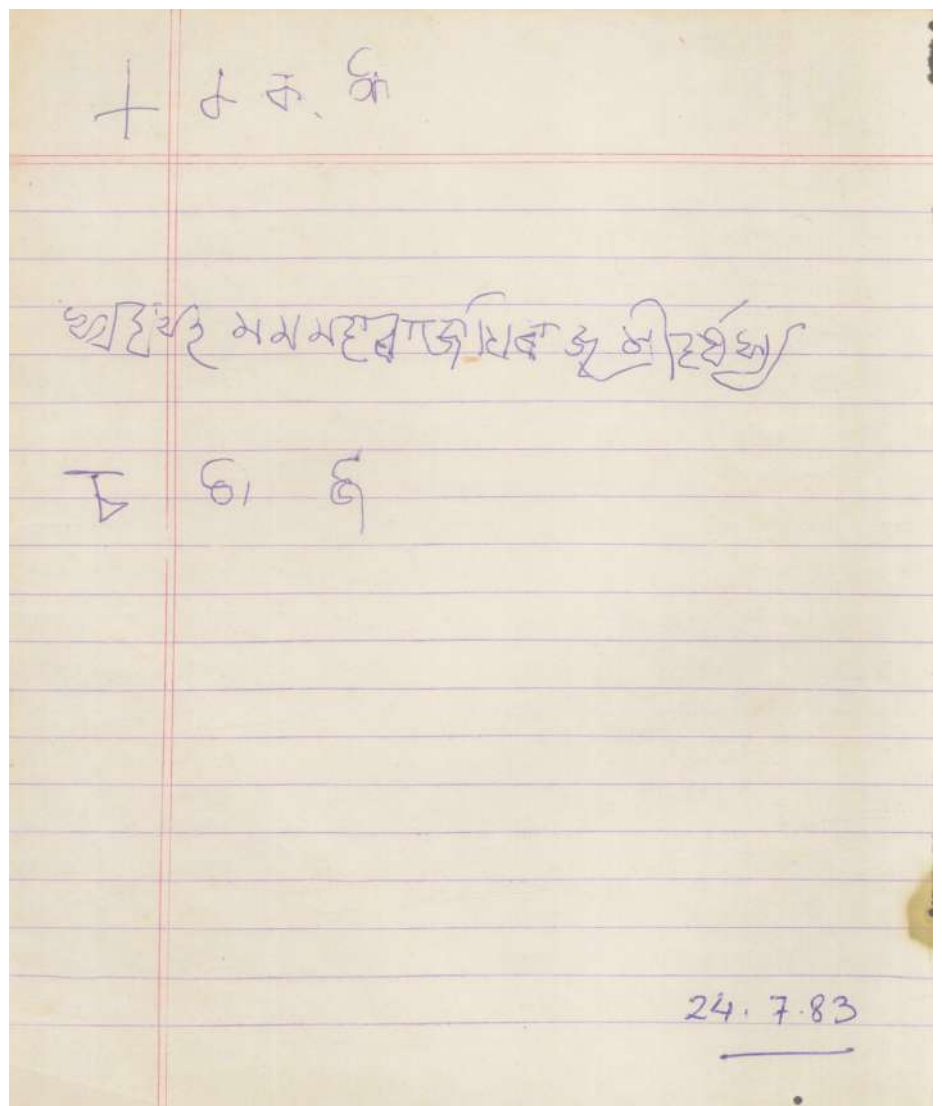
94. तिलजला बाढ़

सितम्बर 1986 में तिलजला में दिल्ली सेक्टर आर.डी.एस. (समीक्षा, दोष, समाधान) के दौरान बारश से पूरे वी.आई.पी. नगर क्षेत्र में बाढ़ आ गई थी। आचार्यों ने एमर्ट और ऐमर्टेल के बैनर तले राहत कार्य प्रारंभ किया, जिससे आसपास के स्थानीय लोगों को आपदा से राहत मिली। जो लोग बाढ़ में फंसे हुए थे उन्हें ऊंची भूमि पर पहुंचाया गया। फिर उन्होंने भोजन और आपूर्ति का वितरण किया तथा समीप के पूर्वी मेट्रोपोलिटन बाई पास पर एक मुफ्त रसोई की व्यवस्था की गई जिससे हजारों लोगों को भोजन दिया गया। उस समय यह निर्णय लिया गया कि बाबा की सुरक्षा के लिए उन्हें तिलजला स्थित उनके निवास मधुकोरक से निकाल कर लेक गार्डन स्थित निवास मधुमालंच ले जाया जाय। बाबा ने तब तक वहां से निकलने से इंकार कर दिया जब तक कि आसपास के लोग सुरक्षित जगह नहीं पहुंच जाते तथा उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा नहीं किया जाता। ऐसा होने के बाद ही उन्होंने सहमति दी।

25 सितम्बर को तिलजला से बाबा का निकलना एक मार्मिक दृश्य था। वे एक गोन्डोला नाव में बैठ गए, जबकि कार्यकर्ता और मार्गियों ने नाव को बाईपास रोड़ पर सीने से ऊंचे पानी से होते हुए बाहर निकाला। वहां से एक विशेष बस द्वारा वे लेक गार्डन गए।

95. आर. यू. प्रवचन

बाबा के रिनाशा यूनिवर्सल प्रवचन अध्यक्षीय संबोधन हुआ करते थे। 26 जनवरी 1958 को त्रिमुहान, डी.एम.सी. में पहला आर.यू. अध्यक्षीय संबोधन हुआ। इस प्रवचन का विषय 'आज की समस्या' था। हमारे वर्तमान रिकार्ड में 26 अन्य आर.यूप्रवचन उपलब्ध हैं। शेष को संभवतः ढूंढा जाना है। उपलब्ध संबोधन में ये हैं; 'विज्ञान और जनसंख्या नियंत्रण', 'तंत्र और भारतीय आर्य सभ्यता', 'सभ्यता का भविष्य', 'माइक्रोवाइटम ब्रम्हाण्डीय तत्व का रहस्यमय विसर्जन', 'सभ्यता का भविष्य', डाइमेंशन्स आफ माइक्रोसाइकिक लौंगिंग और मैटर एण्ड एब्सट्रैक्ट। आखिरी बार, 2 जून 1990 आनंद नगर में दिया गया प्रवचन 'द माईंड ग्रोथ इन मैग्नीट्यूड' था। उस प्रवचन का अंतिम भाग इस तरह था : ''केवल वे विचार तरंग जो आध्यात्मिक स्तर से निकलती है, मानवता को भावजड़ता के विनाशकारी प्रभाव से बचायेंगी। उस प्रभाव से जो मनुष्यों को मनुष्य से अलग करता है, जो मानव समाज का एक अस्तित्व होने में बाधा डालता है। युक्तिकरण की यह प्रक्रिया मानव मन के हर पहलू को पुर्नगठित करने की मानवीय क्षमता को विकसित कर होना चाहिए। समस्या विचित्र है किन्तु निकट भविष्य में हमें इसे हल करना चाहिए और क्योंकि इसने कई समस्यायें उत्पन्न की हैं, मानव समाज को कई बार विभाजित किया है – कई लड़ाईयों और कितने ही युद्धों को जन्म दिया है। यह समस्या पूरे ब्रम्हाण्ड की शांति को भंग कर सकती है।'' इसलिए हमें इस समस्या को हल करना होगा और जीवन के तीनों स्तरों भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक पर एक नये विश्व का निर्माण करना होगा। मुझे आशा है कि बच्चे और बच्चियों, तुम्हारे सामूहिक प्रयास से इस संबंध में कुछ ठोस कार्य होगा। तुम तुच्छ प्राणी नही हो, तुम परम पिता परमात्मा की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति हो। इसलिये तुम्हें तुरंत कुछ ठोस करना होगा। समस्या का तुरंत हल चाहिए।''

बाबा आर. यू. प्रवचन 'द मांईड ग्रोज इन मैग्नीट्यूड' देते हुए।

96. माइक्रोवाइटा

कोलकाता में 31 दिसम्बर 1986 को बाबा ने माइक्रोवाइटा विज्ञान की शुरूआत की। उनके अनुसार यह वर्तमान मनुष्य की बौद्धिक क्षमता से 200 वर्ष आगे का विज्ञान है। ''भूमातत्व का रहस्यमय उत्सर्जन'' आर. यू. प्रवचनों में युगान्तकारी है।

उस प्रवचन का अंश :

''ऐसी सत्ताऐं है जो भौतिक और मानसिक दोनों अभिव्यक्तियों के दायरे में आती हैं, जो परमाणुओं, इलेक्ट्रानों या प्रोटानों से भी तुलना में छोटी या सूक्ष्म होती है, और मानसिक क्षेत्र में चित्त (ectoplasm) से भी सूक्ष्म हो सकती है। ऐसी वस्तुओं या इन सत्ताओं के लिये मैं माइक्रोवाइट्म का प्रयोग करता हूँ। ये माइक्रोवाइटम या बहुवचन में माइक्रोवाईटा प्रोटोप्लाज्मिक क्रम से नहीं है और इस तरह उनका कार्बन अणुओं या कार्बन परमाणुओं से बहुत कम संबंध है, जिन्हें इस ब्रम्हाण्ड में प्रारंभिक बिन्दु या जीवन के प्रारंभिक चरण के रूप में माना जाता है। जहां तक भौतिकता का प्रश्न है माइक्रोवाईटा की स्थिति चित्त और इलेक्ट्रान के बीच की है, लेकिन न तो वे चित्त है और न ही इलेक्ट्रान।

''किसी वस्तु या विषय के बारे में जब हम यह जानते हैं कि उसका अस्तित्व तो है किन्तु उसकी विशेषतायें और अन्य विवरण हमें ज्ञात नहीं तो हम कहते हैं यह रहस्यमय है। इसलिए माइक्रोवाईटा के बारे में हम कह सकते हैं कि वे रहस्यमय हैं। वे प्रोटोप्लाज्मिक क्रम में नहीं हैं, इसलिए उनके प्रोटोजाइक संरचना या मोटोजोइक संरचना होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वे कुछ रहस्यमय है।

अब, इस माइक्रोवाइटम या माईक्रोवाइटा के विषय में व्यापक शोध कार्य होना चाहिए। हमारा यह कार्य बड़ा है और हमें बिना किसी देरी के माईक्रावाइटा के विषय में शोधकार्य शुरू कर देना है। ऐसा न होने पर आधुनिक समाज में कई समस्याओं का समाधान अच्छे तरीके से नहीं हो पाएगा। जिस तरह प्रमा (समतुल्यता और संतुलन) बौद्धिकता या बौद्धिक खोज के क्षेत्र में अनिवार्यता है, उसी प्रकार माइक्रोवाईटा पर उच्च बौद्धिक क्षमता का अनुसन्धान कार्य अत्यंत आवश्यक है। ......

वह दिन अवश्य आयेगा जब मनुष्य का इन माइक्रोवाईटा पर उचित नियंत्रण होगा।''

''मुझे लगता है, हमारी आध्यात्मिक साधना से बल्कि हमारी मौलिक मानसिक, आध्यात्मिक साधना से सभी स्तरों पर समझने की शक्ति विकसित होगी। हमारे समझने की शक्ति भी विकसित होगी और उस विकसित शक्ति के साथ हम इन माइक्रोवाइटा के सभी रहस्यों को जान पायेंगे।''

अगले ढ़ाई वर्षों में 1986 के प्रथम प्रवचन से जून 1989 के अंत तक बाबा ने इस नवीन विज्ञान पर लगभग बीस और प्रवचन दिये जिसमें उनका अंतिम चाक बोर्ड से मिनार था, 'माइक्रोवाईटा' और 'कास्मोलाजी' जो 10 जून 1989 को दिया गया। इसे उन्होंने ''सोच की एक नई दिशा .... एक नया दार्शनिक दृष्टिकोण ......दार्शनिक विचार का नया स्कूल'' कहा। वर्ष 1988 में उन्होंने माइक्रोवाइटा अनुसंधान के लिए माइक्रोवाईटा उप समिति का गठन किया। उन्होंने एक बार इस समिति को बताया :

''अब पृथ्वी के नियंत्रण के लिए चरम सत्ता द्वारा धनात्मक माइक्रोवाईटा को रखा गया है। यहां तक कि सर्वाधिक आघात पहुंचाने वाली घटनाओं के बाद भी यह पृथ्वी केवल उज्जवल भविष्य की ओर ही बढ़ेगी और मानवता को धार्मिक आनंद की प्राप्ति होगी।''

15 जुलाई 1988 को बाबा ने घोषणा की कि वे एक विशेष प्रकार की साधना—माईक्रोवाईटा साधना कुछ चुने हुए भक्तों को देंगे। इन भक्तों को दुनिया के विभिन्न हिस्से से बुलाया गया था, जिन्हें इसे प्राप्त करने के लिये एक निश्चित समयाविधि के अंदर पहुंचना था। 15 जुलाई 1988 से 9 मार्च 1989 तक 155 मार्गियों और कार्यकर्ताओं को माइक्रोवाईटा साधना दी गई। उन्हें यह बाबा से व्यष्टिगत रुप से प्राप्त करना था, क्योंकि इसमें माइक्रोवाईटा का प्रयोग करना था जो केवल बाबा ही प्रदान कर सकते थे। माइक्रोवाइटा विज्ञान के आधार पर बाबा ने अपने दत्तक पुत्र किंशुक को हर्बल दवाओं और सौंदर्य प्रसाधनों के सूत्र सिखाए और इसको बनाने की बारीकियाँ बताई। उस समय से आचार्य किंशुक रंजन सरकार अन्य संगठनात्मक कर्तव्यों के अलावा माइक्रोवाइटा स्वास्थ्य उत्पादों के व्यवसायिक उत्पादन और वितरण की जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

10 जून 1989 को बाबा ने अपना अंतिम चाक बोर्ड सेमिनार ' माइक्रोवाइटा एण्ड कास्मोलॉजी' दिया। वे चार्ट पर निर्देश देते रहे जिसे शंभू शिवानंद दादा ने ब्लैक बोर्ड पर लिखा।
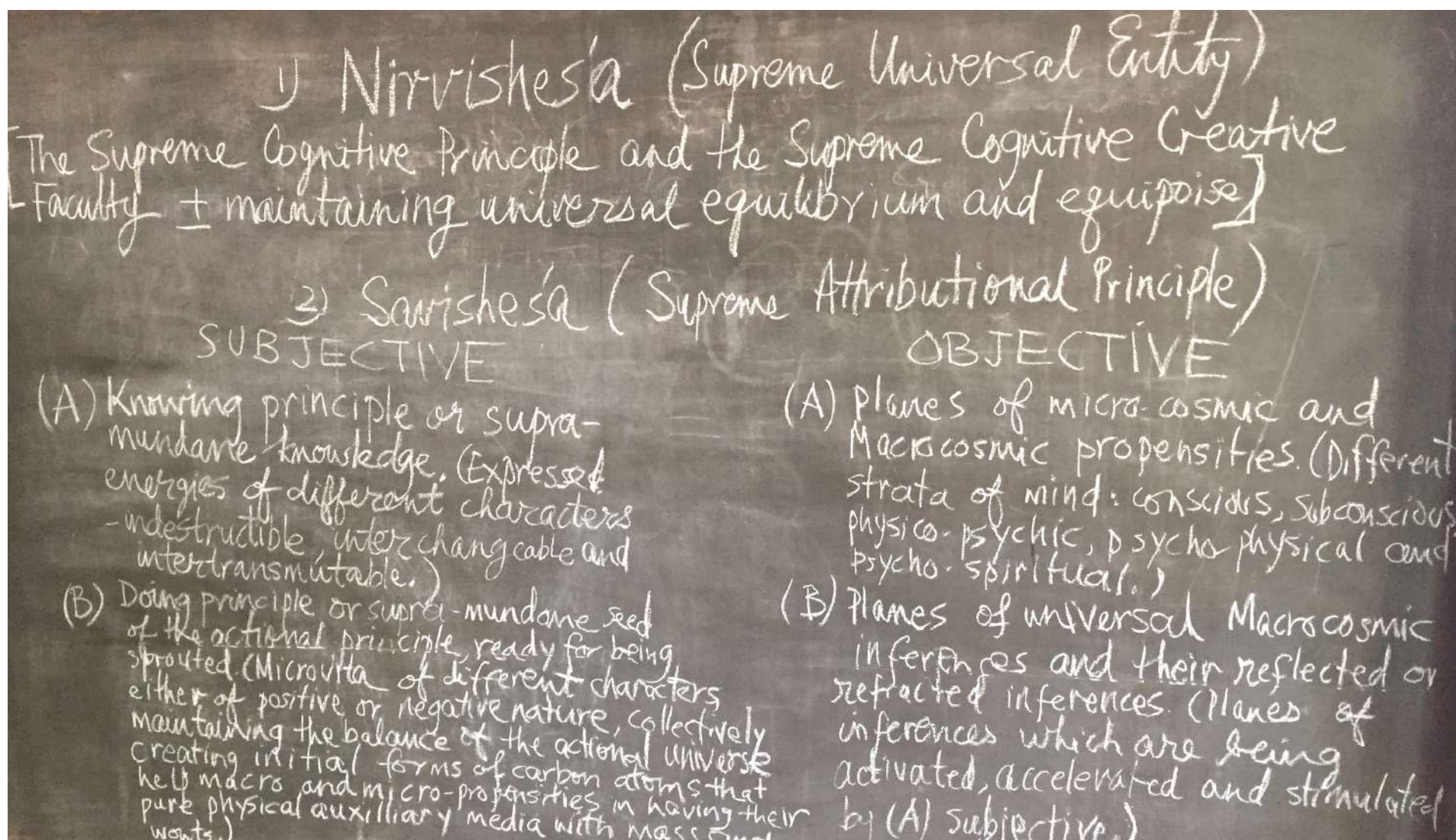
97. मास्टर यूनिट, खेती और परिस्थितिकी

1984 के जून में बाबा ने चेतावनी दी थी, ''मनुष्यों को सतर्क रहना चाहिए। उन्हें परिस्थितिकी के अनुसार अपने विचारों, योजनाओं और गतिविधियों का पुनर्गठन करना चाहिए और कोई विकल्प नहीं है।''

1987 के अंत से 1990 के मध्य तक उन्हांने` खेती और पारिस्थितिकी पर कई बातें बताईं, उनमे से कई को असीमानंद दादा ने लिपिबद्ध कर लिया था। दादा ने स्वयं कृषि वैज्ञानिक का प्रशिक्षण लिया था। 2 अप्रैल 1990 को उनकी कम्युनिस्टों द्वारा हत्या कर दी गई। इस कारण दादा 'आइडियल फार्मिंग भाग–2 के प्रकाशन के कार्य की देखरेख स्वयं नहीं कर पाएं। बाबा द्वारा फरवरी, मार्च 1988 और मार्च 1989 में दिये गये प्रवचनों और दादा द्वारा तैयार किये गए लेखों (notes) के आधार पर इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ। फरवरी 1988 में बाबा ने महत्वपूर्ण फसलों, फसल सम्मिश्रण, रोटेसन और एकीकृत खेती के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत निर्देश दिये, और उसी मार्च में झील और नदियों के किनारे वृक्षारोपण के बारे में बताया था। एक साल बाद उन्होंने जल संरक्षण पर एक प्रवचन दिया जिसमें वैश्विक जलसंकट और सूखे के कारणों को रेखांकित किया। उन्होंने सिंचाई के सर्वोत्तम तरीकों को बताया। उन्होंने नदियों पर छोटे बांध (चेक डैम), छोटे तालाबों ओर झीलों के निर्माण की पैरवी की, जहाँ प्राकृतिक जल संसाधन नहीं हैं। उन्होंने अल्प वर्षा के समय में सतही जल संरक्षण के लिए वनीकरण, विशेषकर नदियों, तालाबों, झीलो के किनारे, करने पर जोर दिया। वर्ष 1960 में प्रारंभ से लेकर आज तक इन वर्षों में आनंद नगर की हरियाली बाबा द्वारा सुझाए गए जल संरक्षण उपायों के प्रभावकारी होने का प्रमाण है।

असीमानंद दादा

1987 में मास्टर यूनिट कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। मास्टर यूनिट, ग्रामीण बहुउद्देशीय विकास केन्द्रों का मॉडल थीं। उस समय तक आनंद नगर ही मॉडल था, लेकिन बाद के वर्षों में कई और मास्टर यूनिट स्थापित किये गए। 10 नवंबर 1989 को बाबा ने मास्टर यूनिट इकाइयों पर प्रवचन दिया। कुछ अंश : ''मास्टर यूनिट आनंद नगर के लघु रुप होंगे : मास्टर यूनिट का संस्कृत नाम चक्र नेमि है, जिसका अर्थ है चक्र का केन्द्र। मैं चाहता हूँ कि सभी मास्टर यूनिट सभी प्रकार से आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर हों।

''मास्टर यूनिट विशेष रुप से शिक्षा, संस्कृति, अर्थशास्त्र और आध्यात्मिक उत्थान से संबंधित सेवाओं का विस्तार करेंगी। ये मास्टर यूनिट सभी मनुष्यों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए काम करेंगी। पहले मनुष्यों का भविष्य और फिर सभी जीवों का भविष्य सुधारने के लिये काम करेंगी। ऐसा करते समय वे किसी जाति, पंथ, रंग और राष्ट्रीयता की बाधाओं की परवाह नहीं करेंगी। मानवता किसी कृत्रिम अवरोध को नहीं मानती।''

''एक आदर्श मास्टर यूनिट की प्राथमिक आवश्यकतायें क्या हैं ? ये पांच हैं, जो प्रउत की पांच न्यूनतम आवश्यकताओं के अनुरूप हैं। सबसे पहले वर्ष भर के लिए पर्याप्त भोजन की व्यवस्था हो। दूसरे वस्त्रों के लिये पर्याप्त रेशों का उत्पादन हो। तीसरा सभी मास्टर यूनिट में प्राथमिक और इसके आगे के स्कूल शुरू होना चाहिए। चौथा सामान्य और विशेष चिकित्सा इकाइयों की स्थापना होना चाहिए। इन चिकित्सा यूनिट को वैकल्पिक चिकित्सा उपचारों पर विशेष जोर देना चाहिए। ...... और पांचवा, मास्टर यूनिट को अत्यंत गरीब लोगों के लिए घर बनाने की योजनाएं शुरू करना चाहिए।''

''हमारा मास्टर यूनिट कार्यक्रम पूर्वी उदात्तता और पश्चिमी गतिशीलता का संयोजन है।'

असीमानंद दादा

98. आनंद मार्ग गुरूकुल

जिस तरह गुरू का अर्थ है 'अंधेरे को हटाने वाला', गुरूकुल का अर्थ है एक संस्थान जो अपने छात्रों के मन से अज्ञानता के अंधेरे को दूर करता है।

7 सितम्बर 1990 को बाबा ने शिक्षा की प्राचीन आश्रम शैली के आधार पर आनंद मार्ग गुरूकुल की स्थापना की और कुलपति का दायित्व शंभूशिवानंद दादा को दिया। कुछ दिनों बाद बाबा ने उनसे पूछा, 'क्या तुम इस जिम्मेदारी का दायरा समझते हो, जो मैंने तुम्हें दी है ?'' हालांकि दादा को उनके कार्य के विषय में मालूम नहीं था, फिर भी उन्होंने जबाब दिया,'' हां, बाबा।'' बाबा ने पूछा ''क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूँ?'' दादा ने जवाब दिया,'' हां बाबा।'' अंत में बाबा ने पूछा, ''क्या तुम काम कर पाओगे?'' अब दादा को ज्ञात नहीं था कि वे काम करपायेंगे या नहीं, किन्तु उन्होंने जवाब दिया,'' हां बाबा, आपकी कृपा से।'' यही जवाब था जिसे सुनने का बाबा इंतजार कर रहे थे। फिर वे मुस्कुराए और बोले, ''मैंने पहले ही तुम्हारा अधिकांश काम कर दिया हे।''

बाबा ने निर्देश दिया कि आनंद मार्ग गुरूकुल, आनंद मार्ग शिक्षा प्रणाली के लिए मंच का काम करेगा। और कुछ ही समय बाद उन्होंने गुरूकुल को विकसित करने के लिए 46 संकायों को सूचीबद्ध किया।

4 मई 1986 को शब्द चयनिका के एक प्रवचन में बाबा ने कुलपति के अर्थ के बारे में बताया था; 3 सितंबर 1989 को उन्होंने गुरूकुल के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के विषय में बात की थी; 22 और 29 सितम्बर 1990 को उन्होंने गुरूकुल के कई संकायों जैसे चिकित्सा विज्ञान, भूगोल, भूविज्ञान, खनन, इतिहास और दर्शन के लिए दिशा निर्देश दिए; और 29 सितंबर 1990 को उन्होंने गुरूकुल के इतिहास और उसकी कार्य योजना पर एक प्रवचन दिया।

उस अंतिम प्रवचन के कुछ अंशः ''यदि मनुष्य गंभीरता से विचार करे तो वे छोटे–बड़े सभी कार्यों को एक जुट होकर सुंदर तरीके से कर सकते हैं। काम थोड़े समय में और बहुत कम मेहनत से पूरा किया जा सकता है। लोगों के कल्याण को प्रभावित किया जा सकता है। ऐसे एकजुटता से काम करने और शैक्षणिक और अनुसंधान उद्देश्यों के लिए गुरूकुल की स्थापना की है। इस योजना में कई जिम्मेदार व्यष्टियों को शामिल किया गया है। ...... मैं यह भी घोषणा करता हूं कि गुरूकुल की स्थापना नहीं होने जा रही है बल्कि यह स्थापित हो गया है। तुम सभी इसे मजबूत करो और सामूहिक प्रयासों से इसकी प्रगति सुनिश्चित करो। ..... सामूहिक सहयोग से इसे स्थापित करना सभी का दायित्व है। इस शुभ क्षण से तुम्हें व्यष्टिगत और सामूहिक रूप से प्रगति करने का संकल्प लेना चाहिए और पृथ्वी पर एक नये समाज का निर्माण करना चाहिए।'' दादा भास्करानंद के अनुसार बाबा ने कहा, ''यदि कोई परियोजना है जो मेरे सभी कार्यक्रमों को शामिल करती है, तो वह गुरूकुल है।''

दादा शंभूशिवानंद 1990 के दशक के प्रारंभ में।

99. बाबा का देह त्याग

बाबा ने एक बार कहा था, ''जब मेरा कार्य समाप्त हो जायेगा तो मैं तुरंत चला जाऊंगा।'' एक भी अतिरिक्त पल के लिए नहीं रूकूंगा।''

वर्ष 1990 तक वे मधुमेह और उच्च रक्तचाप सहित कई स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित हो गए थे। ये उन्हें विष दिये जाने के बाद के प्रभाव थे। अत्यधिक काम का बोझ भी एक कारण था। उन्हें दो बार हृदयाघात का सामना करना पड़ा था जिसके इलाज के लिए उन्हें वुडलैण्ड अस्पताल में भरती होना पड़ा था। वहां एक दिन उन्होने कहा, ''भविष्य आ चुका है। लालिमा युक्त प्रभात आ चुका है। केवल अपना कर्तव्य निभाते जाओ। काम तो पूर्ण हो चुका है।''

इस संसार से अपने प्रस्थान के पूर्व बाबा द्वारा दिये गये संकेतों में यह प्रथम था। संकेतों के बावजूद उन्होंने ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर दिया कि 20 अक्टूबर 1990 को उनके प्रस्थान की पूर्व संध्या तक इन संकेतों के महत्व का किसी को आभास तक नहीं मिला। उसी शाम (पूर्व संध्या) उन्होने प्रउत के कार्यकताओं और मार्गियों के रिपोर्टिंग सत्र के दौरान हर किसी से सीने पर हाथ रखकर यह शपथ दोहराने को कहा जो कुछ दिन पूर्व आनंद मार्ग सेवा दल कार्यकर्ताओं को उन्होंने दिलाई थी;

''मेरी समस्त ऊर्जा, मेरा संपूर्ण मन, मेरे सभी विचार और कार्य मानव समाज की सामूहिक उन्नति के लिए होंगे, अन्य जीवों और अविकसित वस्तुओं की उपेक्षा किये बिना, इसी क्षण से लेकर पृथ्वी पर मेरे अंतिम समय तक। ''क्या मैं तुम पर निर्भर हो सकता हूँ,'' उन्होने पूछा। ''हां बाबा'', सबने उत्तर दिया।

फिर उन्होने साम्प्रदायिकता के खतरों के विषय में बताया और फिर रवीन्द्रनाथ टैगोर की ये पंक्तियां उद्धृत कीः ''सर्प हर जगह विष उगल रहे हैं। शांति के सिद्धांत खोखला मजाक लगते है। इसलिए इस दुनिया से जाने की पूर्व संध्या पर मैं उन सब लोगों का आव्हान करता हूं जो हर घर में इन मनुष्य शरीरधारी राक्षसों से लड़ने की तैयारी कर रहे हैं।''

उन्होंने फिर कहा, ''सर्प हर जगह विष उगल रहे हैं। ऐसे नाजुक मोड़ पर क्या हमें शांति के सिद्धांतों का प्रचार करना चाहिए ? नहीं नहीं नही ! इसलिए दुनिया से जाने से पहले ......'' अचानक सभी को ऐसा लगा कि बाबा के दुनिया से प्रस्थान का समय निकट है।

तभी वे बोले :– ''....... रवीन्द्र नाथ ने कहा''

सभी ने राहत की सांस ली (जो बाद में गलत साबित हुई)

''......... मैंने इन राक्षसों के विरूद्ध लड़ने के लिए आवश्यक तैयारी कर दी है। तुम सब लोग समझ रहे हो न ?''

''हां बाबा'' सभी ने कहा।

''जो रवीन्द्रनाथ ने 60 वर्ष पूर्व कहा था वह इस बीसवीं सदी के अंतिम भाग में भी सच है । क्या तुम लोग समझ गये '' ?

''हां बाबा'' उन्होने उत्तर दिया।

जैसा कि आनंद मूर्तिः जमालपुर इयर्स में वर्णित है, दादा केशवानंद याद करते हैं कि अगले दिन, 21 अक्टूबर 1990 को क्या हुआ :

''अंतिम दिन, उनके स्वास्थ्य में वास्तव में सुधार हुआ था। लंबे समय के बाद उनका स्वास्थ्य ठीक था। सुबह के समय सब कुछ सामान्य था। वे उसी तीव्र गति से काम कर रहे थे जैसा वे पिछले कुछ महीनों में कर रहे थे। पिछली रात उन्होंने अंतिम दो प्रभात संगीत के गीतों की रचना की थी। वे अपनी आध्यात्मिक साधना पूरी करने प्रातः तीन बजे उठे। बाद में उन्होंने विभिन्न विभागों में काम की समीक्षा की और सेविंग करते हुए, कुछ निर्देश दिये; यह भी उनके व्यस्त कार्यक्रम का हिस्सा था। वे हमसे सदा कहा करते थे तुम्हें काम करते करते मरने के लिए तैयार रहना है और इससे भी बेहतर है मरते मरते काम करना।

दोपहर, में दो बजे से पहले उन्होंने कहा, ''मैं सोचना चाहता हूँ।'' मैंने दरवाजा बंद किया और विचार करने लगा कि उन्होंने पहले कभी भी ऐसा नहीं कहा था। कुछ मिनटों के बाद उन्होंने मुझे बुलाया। मेरा मानना है उस अवधि में उन्होंने सभी योजनाओं की समीक्षा की और निश्चिंत हुए कि कुछ भी करने के शेष नहीं बचा है। उन्होंने मुझे नये अवधूतों में से एक को भेजने के लिए कहा। उन्होंने उस दादा के साथ एक घंटा अकेले बिताया। यह उनका अंतिम कार्य था। उसके बाद उन्होने मझसे कहा, ''अब मैं आराम करना चाहता हूँ।'' ऐसे शब्द भी उन्होंने पहले कभी नहीं बोले थे। करीब पांच मिनट बाद उन्होंने काल बेल बजाई। जब मैं आया तो उन्होंने अपनी छाती को इशारा करते हुए कहा 'हृदय'। मैं (मार्गी) डाक्टरों को लाने भागा। वे जल्द ही आ गए..... लेकिन जब उन्होंने उनकी नाड़ी देखी तो उनके चेहरे का रंग उड़ गया। उनकी जीवन शक्ति चली गई थी। बाबा ने अपना शरीर छोड़ दिया था। समय दोपहर 3:23 था। पांच दिन बाद हजारों भक्त तिलजला के परिसर में दाह संस्कार के लिए एकत्रित हुए। एक बड़ा प्रतीक बनाया गया था जिस पर बाबा का पार्थिक शरीर रखा गया। चंदन की चिता जलाई गई। एक कबूतरों का झुंड ठीक ऊपर वृत्त बनाकर उड़ने लगा, मानों नमस्कार कर रहे हों। यहां तक कि प्रकृति ने कुछ क्षणों के लिए बारिस के रुप में आंसू बहाए। फिर आग की लपटें बढ़ीं और धीरे–धीरे तारक ब्रम्ह महासंभूति का पंच भौतिक शरीर पांच तत्वों में विलीन हो गया।

एक बार बाबा जेल में थे, उन्होंने कहा था, '' यह भौतिक शरीर मैं नहीं हूँ। यदि तुम मुझे जानना चाहते हो तो मेरे मिशन के लिये काम करो, क्योंकि मैंने स्वयं को अपने मिशन में मिला दिया है। मैं तुम्हारे हृदय के भीतर हूं और तुम मेरे हृदय के भीतर हो। केवल भक्ति ही मेरी भौतिक मौजूदगी का अनुभव करा सकती है।'' उन्होंने एक बार यह भी कहा था, ''अतीत में मैंने साधकों को आनंद की अवस्था प्राप्त करने में सहायता की थी, वर्तमान में भी साधकों की सहायता का रहा हूँ, और भविष्य में जब मैं शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं रहूंगा, तब भी अन्य माध्यमों से उनकी सहायता करता रहूंगा।''

श्रोत असत्यापित, 26 अक्टूबर 1990 को बाबा का अंतिम संस्कार।

100. बाबा की जीवनी

1969 में शिष्यों के एक छोटे समूह को बाबा की जीवनी लिखने का विचार आया। जब वे बैठे और लिखना शुरू किया, तब उन्हें एहसास हुआ कि वे वास्तव में उनके जीवन के बारे में कितना कम जानते हैं। इसलिए उन्होंने उनसे संपर्क कर अपनी आत्मकथा लिखने का अनुरोध किया। पहले तो बाबा ने यह कहते हुए मना कर दिया कि उनके पास ऐसी चीजों के लिए समय नहीं है। लेकिन बार बार आग्रह के बाद आखिर वे इसके लिए सहमत हुए। अगले दिन नियमित रविवार दर्शन में उन्हीं शिष्यों को आश्चर्य हुआ जब बाबा ने घोषणा की कि उन्होंने अपनी आत्मकथा पूरी कर ली है।

''क्या तुम लोग इसे देखना चाहते हो ?'' उनके भक्तों ने एक दूसरे को देखा, वे आश्चर्य चकित थे कि अपनी कार्य करने की द्रुत गति के बावजूद वे कैसे इतनी जल्दी अपनी आत्मकथा पूरी कर पाये। बाबा ने उन्हें अपनी खाट के समीप बुलाया और एक कागज सौंप दिया। इस पर उनकी हस्तलिपि में लिखा गया एक वाक्य थाः–

"I was a mystery, I am a mystery, and I shall always remain a mystery"

''मैं एक रहस्य था, मैं एक रहस्य हूं और सदैव एक रहस्य रहूंगा।''

आनंद मूर्ति : जमालपुर इयर्स

P.R. SARKAR INSTITUTE

पी.आर. सरकार इंस्टीट्यूट (www.prsinstitute.org) आनंद मार्ग गुरुकुल द्वारा प्रारंभ किया गया है जिसका उद्देंश्य है श्री प्रभात रंजन सरकार की शिक्षाओं और विचारों पर शोध करना। पी.आर.एस.आई. के पास श्री पी. आर. सरकार की कृतियों और संबंधित संसाधनों, शोध एवं विकांस के मंच तथा प्रगतिशील शिक्षा माध्यमों पर विस्तृत आनलाईन डाटा बेस है।

ananda marga

आनंद मार्ग (www.anandamarga.org) एक भूमंडलीय आध्यात्मिक एवं समाजसेवी संगठन है। यह आध्यात्मिक साधना, एवं समाज सेवा हेतु समर्पित है। इसकी स्थापना 1955 में श्री श्री आनंद मूर्ति (श्री प्रभात रंजन सरकार) द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य है आत्म ज्ञान (वैयष्टिक मुक्ति) और जगत का कल्याण : सभी मनुष्यों, जीव जन्तु एवं वनस्पति जगत की भौतिक, मानसिक और आ यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति। यह अपने विश्वव्यापी साधना केन्द्रों एवं सेवा मूलक परियोजनाओं के जरिये आनंद मार्ग साधना हेतु निर्देश, योग एवं अन्य स्वविकाश की विधियों की जानकारी अव्यवसायिक स्तर पर उपलब्ध कराता है। यह आपद स्थिति में राहत कार्य, स्कूल, चिल्ड्रन होम, चिकित्सा केन्द्रों, आध्यात्मिक पारिस्थितिकी ग्रामों और अन्य सामाजिक विकास परियोजनाओं के जरिये कार्य करता है।